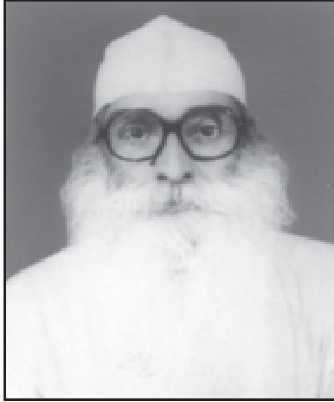
मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध





कमलधर दास
(संकलन कर्ता)
आँफिसर ग्रेड I (रिटायर्ड)
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
दरभंगा।

(धर्मपत्नी : श्रीमती प्रभा दास)
'सावित्री सत्य आश्रम'
ग्राम ओ पोस्ट खेराजपुर
(वाया डी.एम.सी. पी.ओ.)
ज़िला : दरभंगा, पिन 846003

प्रकाशक : **कमलधर दास**
'सावित्री सत्य आश्रम'
ग्राम ओ पोस्ट खेराजपुर
(वाया डी.एम.सी.पी.ओ.)
ज़िला-दरभंगा, पिन-846003
फोन-06272-240039
मोबाइल-9693456031
मोबाइल-9472638048
मोबाइल-9470243322

संस्करण : प्रथम (१०००), २००८ ई०

मुद्रक : शेखर प्रकाशन, पटना - 24

आवरण : अभय कुमार झा, पटना–3, **मो० :** 09304429215

मूल्य : २२५/- (दुइ सै पचीस (भारतीय) टाका मात्र)

MAITHIL KARN KAYASTHAK
GOTRA, PRAVAR, MOOL AA
VAIVAHIK SAMBANDH
by

- Kamaldhar Das



जे सम्पूर्ण मानवताक जन्म देनिहारि छथि, मायक रूप में त 'माय' छथिये जे बहिनिक रूप में से हो 'माय' छथि, पत्नीक रूप में से हो 'माय' छथि आ कन्याक रूप में से हो 'माय' छथि। पृथ्वीक सब पुरुष चाहे ओ 'नर' होथि वा 'नारायण', स्त्रियेक बच्चा छथि। नर जहिना स्त्रीयेक कोखि स अवतार लैत छथि, नारायणों तहिना स्त्रीयेक (प्रकृतियेक) कोखि स अवतरित छथि। स्त्री नहिं त सृष्टिक कल्पना तक नहि कयल जा सकैछ। तैं माय कैं पिता सँ एक पिण्ड बेसी देल जाइत छैन्ह।

हमरा लोकनि कैं प्रत्येक स्त्री के सम्मान आ हुनका हितक रक्षे करक चाही; कोनो स्थिति में उपेक्षा आ अपमान कदापि नहिं, कदापि नहिं, कदापि नहि! आ इएह थीक मानवता, आ मिथिला किंवा भारतक आदर्श!

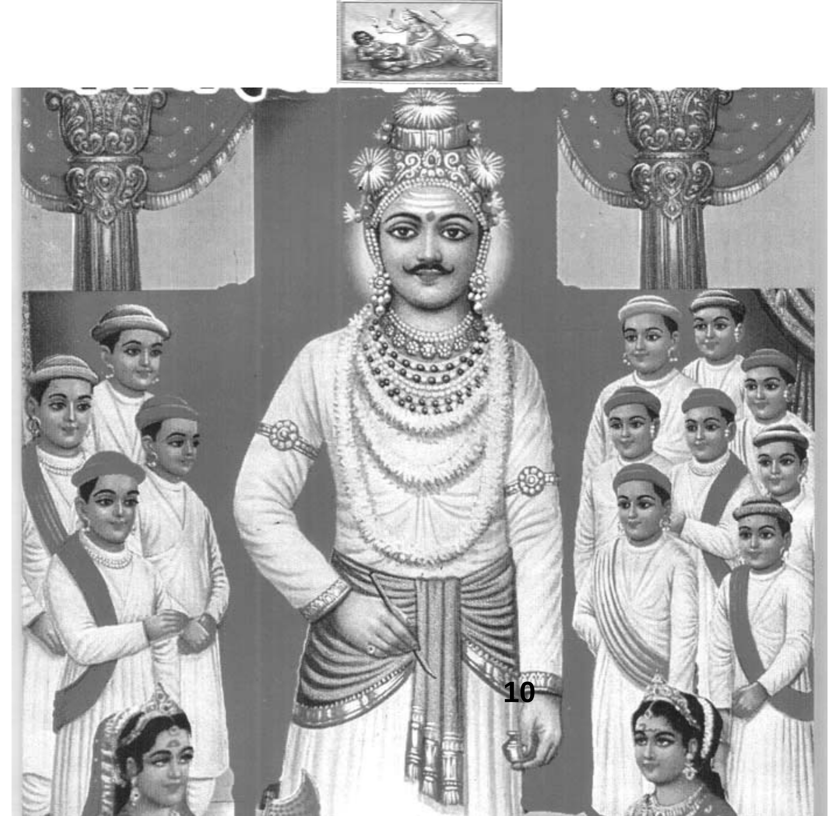
कमलधर दास

“पोथी में अछि”



भानु (श्रीवास्तव) विभानु (सुरध्वज) विश्वभानु (कर्ण) वीर्यभानु (निगम)

चारु (माथुर) सुचारु (गौड़) चित्रचारु {अष्ठाना (ऐठाना)} मतिमान (सक्सेना) चारुस्त (बाल्मीक) हिमवान (अम्बष्ठ) चित्र (भटनागर) अतिन्द्रिय (कुलश्रेष्ठ)



चित्रगुप्तक विस्तृत वंश परिचय एहि सँ आगूक पृष्ठ पर अछि। एतत्सन्दर्भित विषय—वस्तु निम्नलिखित ग्रन्थ सब मे पाओल जाइछ :—

१. पद्म पुराण	११. वृहस्पति स्मृति
२. स्कन्द पुराण	१२. गौतम स्मृति
३. मत्स्य पुराण	१३. महाभारत
४. भविष्य पुराण	१४. मृच्छकटिक नाटक
५. गरुड़ पुराण	१५. मुद्रा राक्षस नाटक
६. विष्णु पुराण	१६. नैषद चरित्र नाटक
७. विष्णु स्मृति	१७. दस कुमार चरित्र नाटक
८. पराशर स्मृति	१८. अपरहलायुध
९. याज्ञवल्क्य स्मृति	१९. हेमचन्द्र
१०. नारद स्मृति	२०. अमरकोष

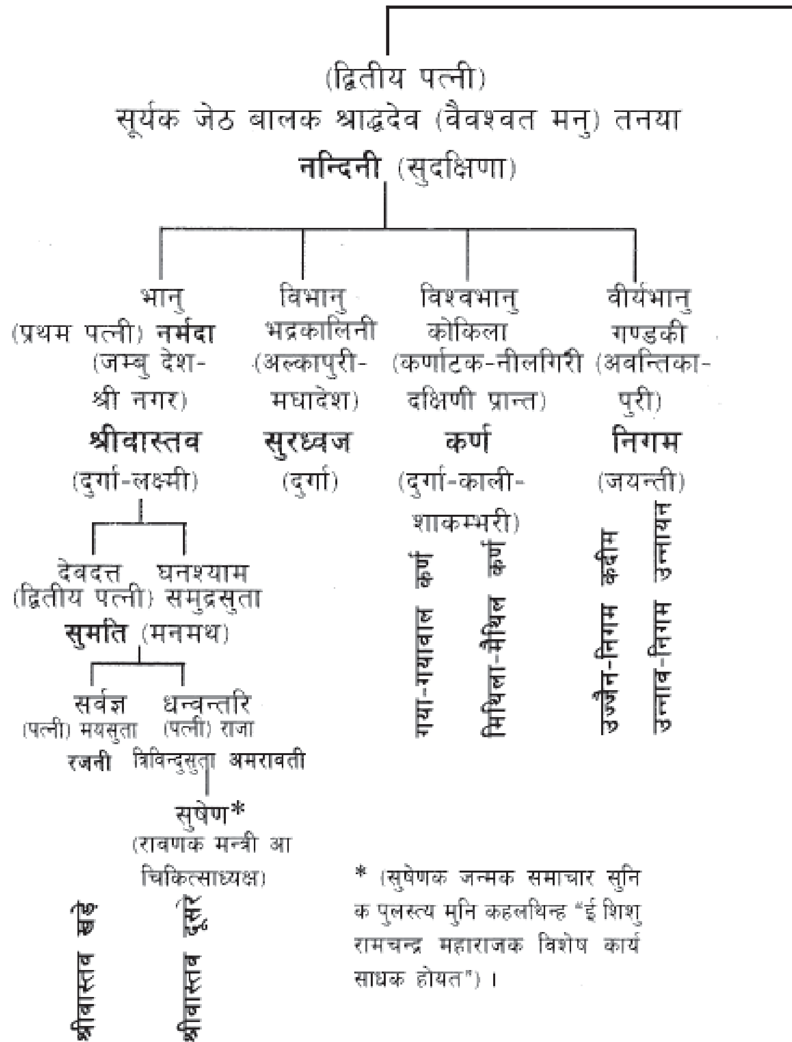
कायस्थक पर्य्यायी संज्ञा : लेखक, लिपिकर, अक्षर जीवक, अक्षर चण, अक्षर चुञ्च आ लिपिकार।

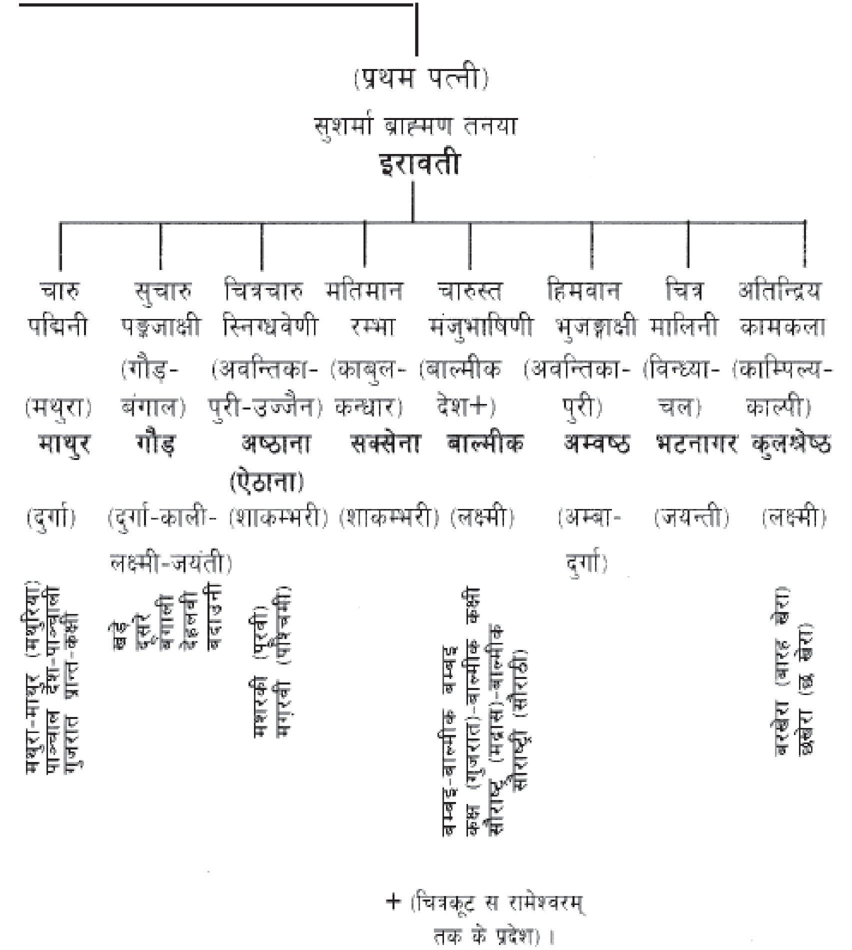
हलायुधे :— लेखकस्याल्लिपिकर: कायस्थोऽक्षरजीवक: ।
हेमचन्द्रे :— लेखकेऽक्षर पूर्व्वास्युच्चरण जीवक चुञ्चव: ।
अमरकोषे :— जिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षर चुञ्चुश्च लेखके ।

दू विभाग : १. चित्रगुप्तवंशीय
२. (दालभ्य गोत्रीय) चन्द्रसेन वंशीय

श्री ब्रह्माजी
(काया सँ उत्पन्न)

श्री चित्रगुप्त जी (तैं कायस्थ)
(पत्नीद्वय)





वि. द्र. : चित्रगुप्तक बारहो बालक कैं बारह 'नागकन्या' सँ विवाह भेल छलैन्ह।

लेखक (कमलधर दास)क वंश-परिचय (पञ्जी सँ) वीअर वंश (डेरा आहिल)

श्री रत्नदेव ठक्कुर (बीज पुरुष)

।

श्री नरदेव ठक्कुर

।

श्री ब्रह्मदेव ठक्कुर

।

श्री राउत रजदेव ठक्कुर

।

श्री धीरेश्वर ठक्कुर

।

श्री गोविन्द ठक्कुर

।

श्री शंकर ठक्कुर

।

श्री थेघ ठक्कुर

।

श्री मणिकर ठक्कुर

।

श्री हरिकर ठक्कुर

।

श्री मधुसूदन ठक्कुर (आहिल)

।

श्री देवकीनन्दन दास

।

श्री हरिजीव दास

।

श्री दुल्लहराम दास

श्री दुल्लहराम दास

।

श्री खड्ग नारायण दास

।

श्री आनन्द सिंह दास

।

श्री भवानी दत्त दास

।

श्री जालपा दत्त दास

।

श्री उमराव सिंह दास

।

श्री बुन्नीलाल दास

।

श्री सत्य नारायण दास

।

श्री कमलधर दास →



श्री रवि शंकर दास — श्री हरि शंकर दास

श्री आकाश देव

परिचय :-

वीअर सँ आहिल डेरा वास खेराजपुर श्री सत्य नारायण दासक बालक बुन्नीलाल दासक पौत्र उमराव सिंह दासक प्रपौत्र मातृक गढ़कव सँ सिमरा डेरा वास नारायणपुर लक्ष्मी नारायण दासक दौहित्र भैया लाल दासक प्रदौहित्र मातृ मातृक वंसतपुर सँ जोंकी डेरा वास पैरा गणेश दत्तक दौहित्रीक पुत्र मातामहीक मातृक वीअर सँ पघारी डेरा वास सिमरी बैजू लाल दासक दौहित्रीक दौहित्र पितृ मातृक माण्डिच्य सँ सुपौल डेरा वास बलौर खेयाली दासक दौहित्रक पुत्र पितामहीक मातृक वीअर सँ तारालाही डेरा वास निज ठाकुर सिंह दासक दौहित्रीक पौत्र पितामहक मातृक बलाइन सँ मधेपुर डेरा वास खड़ौआ राम सिंह दासक दौहित्रक पौत्र मातामहक मातृक वीअर सँ बरहेता डेरा वास नवानी भाइनाथ दासक दौहित्रक दौहित्र । **शुभम् ।**

कै-
लास
शि
ख
र
सँ
'ज्ञान-गंगा'

एहि पोथीक प्रति :-

"जिनका नहिं छनि ज्ञान
पर हुनका नहिं छनि ज्ञान
जे हुनका नहिं छनि ज्ञान
से महा मूर्ख अज्ञान
तिनका अंक लगबियौन
किछु पाइयो दऽ होअय
त झट स बाट देखबियौन

जिनका नहिं छनि ज्ञान
किन्तु छनि हुनका एतवा ज्ञान
कि हुनका नहिं छनि ज्ञान
लोक ओ छथि निश्चित सज्ञान
तिनका अंक लगबियौन
ज्ञान-ज्योति दऽ हुनका
अहाँ सुलोक बनबियौन

जिनका सब छनि ज्ञान
पर हुनका नहिं छनि ज्ञान
जे हुनका सब छनि ज्ञान
तिनका शक्ति-पुञ्ज अहाँ जानि
हुनका अंक लगबियौन
सुप्त-शक्ति दर्शा क हुनका
सृजन मार्ग पर लबियौन

जिनका सब छनि ज्ञान
आ इहो पूर्ण छनि ज्ञान
जे हुनका सब छनि ज्ञान
छथि पण्डित ओएह महान
गुरु अहाँ हुनके बनबियौन
चरण-धूलि हुनकर लऽ
निज मस्तक के सजबियौन"

कैं एहि पोथी पर अननिहार
भगीरथ
छथि हैदरपुर निवासी
बाबू श्री बद्रीनाथ दास जी -
सहायक क्षेत्रीय निदेशक (अवकाश प्राप्त)
ई. एस. आई.कॉलोनी, पटना ।

प्रस्तावना (विषय-प्रवेश)

कतिपय अपरिहार्य कारणवश हम पढ़ि लिखि नहिं सकलहुँ । मात्र कोनहुना साक्षर छी । महात्मा कबीर, महा नीतिज्ञ चाणक्य, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, श्री बंकिम चन्द्र, श्री शरत्चन्द्र, श्री प्रेमचन्द, श्री राहुल सांकृत्यायन, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी आ प्रो० हरिमोहन झा लोकनि सँ (साहित्यक द्वारा) प्रभावित हमर विचार, आचार आ जीवन अछि। हमर व्यक्तिगत जीवन (Private life) यद्यपि उपरोक्त अपरिहार्य कारणें वाल्यावस्थहिं स अत्यन्त आत्म-क्लेशपूर्ण आ उदास रहल (फलतः हमरा शिक्षा नहिं भेटि सकल) किन्तु अपना एहि उदासी के आवरण देवाक हेतु सतत लोक सब स आमोद-प्रमोद करवाक एकटा मुखौटा लगौने रहैत छी जाहि स हम स्वयं प्रसन्नचित्त रहवाक प्रयासक संग लोको सब के प्रसन्न रखैत छी । पत्नी 'प्रभा' अपार गम्भीर स्वभावक भेटलीह आ धियोपुता सब आदर्श विचार आचारक आ तैं जीवनक तीन पन त जेना-तेना बीति गेल आ आब चारिम पन चलि रहल अछि। चुँकि हमरा अपना में कोनो संस्कार, क्षमता आ कार्यकलापक अपगति कहियो स नहिं अछि फलतः हम समाज के आइ तक किछु दऽ नहिं सकलियै । हँ, एकर ठीक विपरीत हमर समस्त जीवन समाजेक साहाय्य सँ बीतल । हम समाजक ऋणी छी आ तैं एतद्वारा समस्त समाजक प्रति हृदय स आभार व्यक्त करैत छी !

ई पोथी जे हम तैयार कयल अछि अपने लोकनिक सेवा में, यथार्थ पूछी त एहि में यद्यपि छप्पन वर्षक श्रम त हमरे थीक किन्तु तकर श्रेय निःसन्देह आ निश्चित रूपें ओही महानुभावे लोकनि कैं छैन्ह जिनका लोकनिक नाम एहि पोथीक अन्त में छपल सूची में वर्णित अछि कारण जे ई सब गोटे परम सुजान, समाज शास्त्रक परम ज्ञाता आ अन्वेषी तथा समाजक पथ प्रदर्शक आ कल्याणकारी व्यक्ति छलाह आ

छथि आ हिनके लोकनिक आशीर्वाद आओर शुभ कामना स्वरुप हमरा ई गोत्र-कथा लिखवाक प्रेरणा आ साहस भेटल । हम एहि सब व्यक्तिक प्रति हृदय स आभार व्यक्त करैत छी !

जखन हम बहुत छोट बच्चा रही तखनहिं स अपन पिताक संग लहेरियासराय-सैदनगर काली मन्दिर पर पञ्जीकार श्री अशर्फीलाल मल्लिक (अवस्था लगभग ७७-७८ वर्ष) क ओतय बराबरि जाइत-अबैत रही, ओनहुना आ सिध्यान्तोक अवसर पर । ओ मन्दिर हमर ग्रामीण आ कुल-पुरोहित लोकनि यथा श्री वेदानन्द मिश्र, श्री जयकान्त मिश्र ओ श्री श्रीकान्त मिश्रक थिकैन्ह आ ओतय मैथिल कर्ण कायस्थक पञ्जीकार लोकनिक कै पुश्त उपरे स आश्रय रहैत ऐलैन्ह अछि । उक्त काली मन्दिरक पुजेगरी सतलखा निवासी पं० श्री मुकुटधारी मिश्र छलाह जे संस्कृतक उद्भट विद्वान आ हमरा गामक संस्कृत पाठशाला में प्रधानाध्यापक से हो छलाह । उक्त मन्दिर परक बैसार में बूढ़ लोकनि कैं पञ्जीकारक संग सिध्यान्त, कथा-वार्ता, शुद्ध, परिचय, उतेढ़, मूल, डेरा, वास, व्यक्ति, गोत्र, प्रवर, समधि-समधियारे, इत्यादिक गपशप करैत बरमहल सुनैत छलियैन्ह । कोनो-कोनो बात त मोटामोटी बुझवो करियै, किन्तु अधिक बात हमरा समझ-बूझ स बाहरे रहैत छल, जे सब बात, बहुत बाद में वयस भेला पर शनैः शनैः बुझय लगलियैक । "काश्यप" गोत्रक अलावेओ कोनो गोत्र मैथिल कर्ण कायस्थ के होइत छैक से ज्ञान हमरा जनैत, पूर्वक की कहव, एखनहुँ समाज में एके पाइ लोक कैं बूझल हेतैक; पौने सोलह आना लोक के इएह बूझल छैक जे कर्ण कायस्थ के "काश्यप" गोत्र 'सर्वे-तसदीक' छै।

जून सन् १९५२ ई. में पटना सिद्धार्थ प्रेस गेल रही बरहेताक श्री हरि शंकर लाल दास जी स भेंट करय । काउन्टर परक व्यक्ति कहलैन्ह जे बैठिये, वे अन्दर में हैं, बुला देते हैं । ई कहि ओ भीतर गेलाह आ तकरा दस मिनटक अभ्यन्तर काउन्टर पर टटके छपि क राखल एक थाक पोथी (प्रत्येक चारि पन्ना अर्थात् आठ पृष्ठक) पर नजरि पड़ल आ परम आश्चर्य चकित भै ओहि में स एक टा ल क आद्योपान्त पढ़ि गेलहुँ ! आ पढ़ि क ततेक विस्मय भेल जकर वर्णन नहि कऽ सकैत

छी ! हरिशंकर बाबू से हो विस्मिंत छलाह ओ पोथी देखि जे श्री भोला लाल दास जी द्वारा छपावय हेतु प्रेस में आयल छल । हम तत्काले दू आना में एक प्रति कीनि लेल । ऐहि पोथीक नाम थिकैक "मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी" । सर्वप्रथम एहि पोथीक आठो पृष्ठ हम अपना पोथीक आदिये में अपने लोकनिक सूचनार्थ छपा रहल छी । कृपया सर्व प्रथम एहि पोथी कें पढ़ि लेल जाओ ।

एहि पोथीक प्रामाणिकताक सन्दर्भ में कमलाकर भट्ट रचित ग्रन्थ "सुकमलाकर" क उल्लेख छैक । बहुत तकला हेरलाक बादो बहुत दिन तक "सुकमलाकर" दरभंगा लक्ष्मेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी, बनारस हिन्दू विश्व विद्यालयान्तर्गत सेन्ट्रल लाइब्रेरी, कलकत्ता नेशनल लाइब्रेरी, कत्तहु नहिं भेटल । नवम्बर सन् १९६१ में हमर ट्रान्सफ़र मधुबनी स इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भेल । जतय एक टा बड़ पैघ संस्था "कायस्थ पाठशाला" (जकरा अभ्यन्तर कैएक टा डिग्री कॉलेज यथा सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, कुल भास्कर आश्रम आदि छैक) आ जकर लाइब्रेरी बहुत समृद्ध छैक आ तत्तहि अत्यन्त जर्जर स्थिति में हम "सुकमलाकर" देखल (जकर रचना काल शाके १२३९ सन् १३१८ ईस्वी छल) । उक्त पोथी स अपना पोथी के मिलौला पर पौलहुं जे सब गोट गोत्र आ मूल त मिलि गेल किन्तु लगभग २०० मूल जे "सुकमलाकर" में त छल पृथक-पृथक गोत्रक अभ्यन्तर किन्तु हमरा एहि पोथी में नहिं छल जकरा हम फराके एक कागत पर नोट कऽ लेल । एतय उक्त "कायस्थ पाठशाला" क विषय में बूझू । कर्नाट प्रमार वंशक राजा श्री बल्लालदेव कुलावतंश राजा श्री नान्यदेव (दक्षिण नीलगिरि प्रान्तक राजा) जे महमुद गजनवीक घोर उत्पात स व्याकुल भ क यथासाध्य धन सम्पत्ति तथा किछु प्रधान-प्रधान आमात्य, अन्य कर्मचारी आ परिजन–पुरजनक संग कर्नाटक स (शाके १०१८) सन् १०९७ इस्वी में पाटलीपुत्र, आ ओतहु स वनसमाकूल तपस्या भूमि 'मिथिला' आबि जनकपुर रोड (पुपरी) स्टेशनक क्षेत्र में कोइली ग्राम में विश्राम कयलैन्ह आओर तकरा काते में अपन राज प्रासाद बनाय जा वसलाह जाहि गाम कें हुनके नाम पर (कोइली) "नान्यपुर" कहल जाइछ, ताही नान्यपुर

इस्टेटक ई. "कायस्थ पाठशाला" इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में ओही युग स स्थापित अछि । अस्तु ।

पञ्जीकार बाबू श्री अशर्फीलाल मल्लिक अपन प्रपितामहक (जिनकर नाम आब दुर्भाग्यवश हमरा विस्मरण भऽ गेल अछि) पाँजि स ताल पत्र (ताड़क पात) पर मिथिलाक्षर ('वैदेही' लिपि जकरा बंगाल में "शारदा लिपि" कहल जाइत अछि) में लिखल चारि टा अंश (Portion) यथा, (१) "मंगलाचरण" (गणेश प्रार्थना आ भगवती वन्दना जे संस्कृत में छल आ जकरा पढ़वा में बीस मिनट लगैत छलैक), (२) "शान्ति मंत्र पाठ" (ई हो वेद सँ उधृत २९ टा ऋचा संस्कृते में छल आ पढ़वा में लगभग पचीस मिनट लगैत छलैक), (३) "गोत्राध्याय" (संस्कृत में स्तोत्र रूप में रचित, जाहि में लगभग छेयालिस-सैंतालिस गोत्रक वृहत इतिहास छल आ जकरो पढ़वा में प्रायः आधा घंटा स कम नहिं लगैत छलैक) आ (४) "प्रवराध्याय" (संस्कृते में - पढ़वा में लगभग बीस-पचीस मिनट) बाहर क क अनने छलाह आ पं० श्री मुकुटधारी मिश्र (उपरोक्त प्रधानाध्यापक आ काली मन्दिरक पुजेगरी) कैं देने छलथिन्ह मैथिली में अनुवाद करक हेतु । एहि पण्डित जी सँ उक्त पोथी हमर पितामह बाबू श्री बुन्नी लाल दास, जे खेराजपुर* अठगामाक लगभग पाँच दसक तक अध्यक्ष रहलाह, पढ़ि क कण्ठस्थ करवाक हेतु माँगि क नेने रहथिन्ह जे पोथी (Portion) हमरा पितामहक अप्रील सन् १९४३ में मृत्यु भऽ गेलाक बादो, हमरा घर में सन् १९६५ तक उपलब्ध छल; सन् १९६६ में दिवारक प्रकोप में ओ माटि भै गेल । जखन एहि पोथी स अपना संगक पोथी के आ फराक क एक कागत पर नोट कयल लगभग २०० मूल-गोत्र स मिलाओल त पौलहुं जे " सुकमलाकर" ग्रंथ स "गोत्राध्याय' ओ "प्रवराध्याय" अक्षर-अक्षर आ शब्द-शब्द मिलि गेल आ तकरा हम परम प्रमाणिक आओर पूर्ण विश्वसनीय बुझलहुं ।

* पंजीक अनुसार मिथिला भरि में सब स पैघ (आकार आ गामक संख्या में, 'दस' गामक; सन् १९३५ में एक टा गाम फराक भऽ गेलाक बादो औखन 'नौ' गामक संख्या में) आ विशिष्ट (जे आठ गाम 'देयाद' आ एक गाम 'भगिनमान' अठगामा "खेराजपुर अठगामा" ।

सम्प्रति अपन संकलित एहि पोथी में हम (१) गोत्रक अभ्यन्तर मूल (वर्ण-क्रम में) , (२) विवाह में पृथक-पृथक वर आ कन्याक पृथक-पृथक 'मूल' आ 'गोत्र' के पढ़बयवला "प्रवराध्याय'' आ (३) मूल (वर्ण क्रम में) क गोत्र आ प्रवर के उल्लेख कऽ रहल छी। कोष्ट में जतवा मूल देल गेल अछि, वस्तुतः, हमरा अध्ययनक अनुसार, ओहि मूलक पुरान नाम थीक जकर समय बितलाक पश्चात् समय-समय पर अपभ्रंश भ क सम्प्रति ई नाम अछि।

बाल्यावस्था स किशोरावस्था तक में पञ्जीकार श्री जीवछ लाल दास जी आ श्री अवध लाल दास जी (सिमरा), श्री अशर्फीलाल मल्लिक जी (गंधवारि) आ श्री जयबल्लभ मल्लिक जी (शिविपट्टी) द्वारा पढ़ाओल गेल अनेक सिध्यान्त सुनने छी जाहि में ओ लोकनि प्रथम चरण में 'मंगलाचरण', दोसर चरण में 'शान्ति-मंत्र पाठ', तेसर चरण में 'गोत्राध्याय' आ चारिम आ अन्तिम चरण में 'सिध्यान्त' पढ़वैत छलाह । लोक धैर्यपूर्वक तीन स साढ़े तीन घंटा शान्ति पूर्वक बैस क एक-एक शब्द सुनैत छल निःशब्द वातावरण (Pindrop silence) में। अस्वजन-पत्र में पूर्व में प्रथम पाराग्राफ में गोत्र-निर्णयक प्रमाण-पत्र आ तखन दोसर पाराग्राफ में अस्वजन होयवाक प्रमाण-पत्र लिखाइत छल। विवाह काल मड़वा पर 'मंगलाचरण', 'शांति-मंत्र' पाठ आ तखन 'गोत्र-प्रवराध्याय' (जकरा जानकारीक अभाव में सम्प्रति 'गोत्राध्याय' कहल जाइत अछि) पढ़ाओल जाइत छल। सिध्यान्त काल मंगलाचरण आ शांति मंत्र पाठ करैत त हम पञ्जीकार श्री श्यामसुन्दर दास जी स हालो तक सुनैत छलहुँ जावत तक ओ जीवित छलाह।

ई मंगलाचरण, शांति-मंत्र, गोत्राध्याय, प्रवराध्याय आ सिध्यान्त पञ्जी-प्रथाक आदिये स समस्त मिथिला भरिक सब पञ्जीकारक सब मूलक पाँजि में ताड़क पात (ताल-पत्र) पर लिखल रहैत छल। सिध्यान्त स सम्बन्धित एक टा अवधारणा जे शिव-मन्दिर परिसर छोड़ि आन कोनो देवी-देवताक मन्दिर परिसर में हो, से हो बात सब पाँजि में उल्लिखित छल। एहि अवधारणा में एक टा तथ्य छल जे शिव (शंकर;

महादेव) संहारक देवता छथि, तैं । औखन बाबा-धाम में विवाह पार्वती-मन्दिर परिसर में होइत अछि; बाबाक मन्दिर परिसर में नहिं।

सिध्यान्त त लहेरिया सराय कन्हैया मिश्र पोखरि-शंकर मंदिर पर एहि हेतु होवय लागल जे उक्त मंदिर पर श्री नन्द किशोर दासजी पञ्जीकार (हैदरपुर) क डेरा (आश्रय) छलैन्ह (बहुत हाल में) आ ओतय अपन एक भाइ आ धियापुताक संग रहैत छलाह। हुनका एक-एक दिन में आठ-आठ टा सिध्यान्त पढ़ैवाक रहैत छलैन्ह त कतय-कतय दौड़ताह आ एतय डेरा पर एक ठाम सब समाङ मिलि कऽ सब सिध्यान्त पढ़ा लैत छलाह; हँ, एक प्रमुख बात ई हो जे कोनो पक्षक क्यौ आपत्तियो नहिं करैत छलथिन्ह जे शिव-मंदिर पर 'सिध्यान्त कियैक हो' ? यथार्थ पूछी त एहि अवधारणाक ज्ञान आम मैथिल कर्ण कायस्थ कैं छलैको नहिं तैं कोनो आपत्ति नहिं होइत छलैक; औखन नहिं होइत छैक।

"गोत्र' आ 'प्रवर' की थीक ? एकर जे अवधारणा (Conception) अनेकानेक ग्रन्थ में भेटैछ ताहि स कनेक पृथक स्वामी विवेकानन्द आ विशेष क पं० राहुल सांकृत्यायनक साहित्य में भेटैछ जे हमरा अपना विशेष प्रामाणिक आ समीचीन बूझि पड़ैत अछि। "गुरु" आ "गोत्र" शब्दक व्युत्पत्ति एके थिक प्रत्युत् गुरुए स गोत्र भेल अछि। आदिकाल में सभ्यताक क्रमात विकास भेला पर "शिक्षा" क ''आश्रम (गुरुकुल)" क व्यवस्था (Ashram system of Education) छल। ऋषि (मुनि) लोकनि घोर तपस्या (अध्यवसाय) आ अकथ आ अथक परिश्रम क क ज्ञानोपार्जन करथि आ तकरा अपन एक आश्रम (Institution) में स्वयं प्रधानाचार्य बनि शिक्षार्थी लोकनि में बाँटथि। एहि शिक्षार्थी लोकनि में सब तबकाक (राजा स रंक तक, सब वर्ण, सब जाति आ सब उपजातिक) लोक होइत छलाह जनिकर आपसी सम्बन्ध "गुरुभाई" क होइन्ह। वर्ण पहिने एके टा छल "मानव वर्ण"— 'एकै वर्ण समासीदं मानवेति युधिष्ठिर' - "महाभारत" । पश्चात्, हमरा जनैत, (स्वार्थवश आ समाजिक आ दुनियाँदारीक धन्धावाजी में) एकरा चारि वर्ण में विभक्त कयल गेल आ तकर आधार बनाओल गेल गीता- 'चातुर्वर्ण मया सृष्टा गुण कर्म विभाजितः' । आब बूझू ! महाभारत की कहैत अछि, आ ओकरे पेट स

बहराएल गीताक हाल देखू। एके ठाम दू तरहक बात ! सेहो की त भगवान कृष्णेक कहब छैन्ह जे **'चातुर्वर्ण मया सृष्टा'** अर्थात **एकर सृष्टि हमरे द्वारा** भेल अछि। कोना मानू ? आ किऐक मानू ? कारण जे शास्त्रेक उक्ति अछि जे "ब्रह्मा जगत सृजति पालयतीन्दिरेशः शम्भुर्विनाशयति देवितव प्रभावैः। न स्यात्कृपा यदि तव प्रकट प्रभावे न स्युःकथञ्चिदपि ते निज कार्य दक्षाः। (सरस्वती स्तोत्रम्)"। ब्रह्मा, विष्णु आ महेश तीनूक काज पृथक-पृथक छैन्ह। तीनू काजक जे क्रिया, ताहि में आपसी कोनो समन्वय (Co-ordination) नहिं कारण जे तीनूक काज पूर्णतया भिन्न-भिन्न तरहक छैन्ह। जखन सरस्वतीयेक कृपा आ प्रभाव स ई तीनू देवता अपन-अपन काज करैत छथि, एतेक तक जे सरस्वतीक कृपा आ प्रभाव ज प्रकट रूपे हिनका लोकनि पर नहिं होइन्ह त ई लोकनि अपना-अपना काज में दक्षतो (निपुणता; Specialisation) नहिं पावि सकैत छथि। एहि तरहें त ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एहि तीनू में स क्यौ एक गोटे, अपना काज स फराक, दोसर वा तेसरक काज नहिं कऽ सकैत छथि आ ने करैत छथि। मात्र अपने-अपन आवंटित (Allotted) काज करैत छथि, अर्थ ई जे ब्रह्मा सृजन (निर्माण; Creation), विष्णु पालन (Maintain) आ शम्भु (अर्थात् शंकर) विनाश (Destruction) क काज करैत छथि। एहि हिसाबें कृष्ण त विष्णु छलाह अर्थात् 'पालनकर्ता', तखन 'सृष्टिकर्ता (निर्माणकर्ता)' ब्रह्माक काज कोना करताह ! पूर्ण सन्देहास्पद बात अछि ! मानल जे हम 'नास्तिक' छी। किन्तु ई सन्देह जहाँ हमरा आइ अपना समय में भेल अछि, तहीं देखैत छी जे महाभारत में भरद्वाजक सुक्ति छैन्ह, "यदि रंग के आधार पर ही वर्ण विभाजन हो, तो हर वर्ण मिश्रित होगा। हम सभी जब वासना, चिन्ता, क्रोध, भय और भूख का अनुभव करते हैं तो वर्ण भिन्न कैसे हो गए ?" (कृपया पढ़ू दैनिक "हिन्दुस्तान", मुज़फ़्फ़रपुर/पटना, मंगलवार, सितम्बर 26, 2006 पृष्ठ 15 'ऋद्धि-सिद्धि-सुख-समृद्धि')। एहि स त इएह साबित होइत अछि जे महाभारतेक समय में एहि पर परम सन्देह उपस्थित कयल गेल छल आ निश्चित रुपें वर्ण विभाजन तौखन परम 'विवादास्पद' छल।

तखन फेर कृष्णे स ई कहा देनाई जे 'हमहीं चारि वर्णक सृष्टि कैलहुँ अछि' कदापि सत्य आ समीचीन नहिं ! बल्के पूर्णतया मिथ्ये नहिं प्रत्युत् अनर्गलो प्रतीत होइछ ! यदि बलजोरी मानियो ली जे 'कृष्णे कैलैन्ह', त कोन नीक काज कैलैन्ह ? दोसर बात जे तकर (एक स चारि वर्ण करवाक) प्रयोजन की? एक टा वर्ण छलै त सब एके रंगक रहन-सहन, खान-पान, रीति-रेवाज, बात-विचार, आ आचार-व्यवहार में छल। कोनो तरहक भेद-भाव नहिं छलैक ! असुविधाक त कोनो बाते नहिं जे सब किछु एक रंग रहने समाज में पूर्ण मतैक्य आ ताहि आधार पर सामाजिक जीवन सहज, सुविधापूर्ण आ सुखमय छलैक। किन्तु एक स चारि वर्ण बना क कृष्ण समाजक हेतु परम अहितकरे काज ने कैलैन्ह ! ओना हमरा एहि बात पर लेश मात्र विश्वास नहिं जे कृष्ण कैलैन्ह। कारण एहू स पृथक बात जे प्रकृति द्वारा निर्मित त मनुखे टा होइत अछि (स्त्री वा पुरुष) कोनो 'वर्ण', 'जाति' वा 'उपजाति' त नहिं। किन्तु हमरा देखवा में त इएह अवैत अछि जे 'महाभारत', कि 'गीता' दूनूक रचयिता त कोनो-ने-कोनो शास्त्रकारे अर्थात् मनुखे ने ? कृष्ण त नहिं ! तखन त ई स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे शास्त्रकारे लोकनिक कागज-कलमक ई 'मायाजाल' आ प्रपंच थीक जे एक वर्ण स चारि वर्ण, आ चारि वर्ण स बारह वर्ण (आ बारह वर्ण स छत्तीस वर्ण) (बारह वर्ण कोन-कोन से त जानकारी नहिं किन्तु दू टा लोक-कथ्य - प्रथम जे "हिनका हाथक जल नहिं पिउब कारण जे ई 'बारहो वर्णक' संग बैसि कऽ खाइत छथि" आ दोसर, "ई त मात्र दियादी में भोज कैलैन्ह अछि, सन् १९४९ में हमरा पितामहक श्राद्ध में 'बारह-वर्णा' भोज भेल रहय" एहि दूनू कथ्य स त स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे निश्चित रूपे बारह टा वर्ण रहैक जे आगाँ जा क छत्तीस वर्ण भेल) आ ताहू स तुष्टि नहिं त ओहू स पृथक ढेरी-क-ढेरी 'जातिक' निर्माण आ ताहू स संतोष नहिं भेला पर ढेरी-क-ढेरी 'उपजातिक' निर्माण कयल गेल जकर प्रतिवाय एखन तक समस्त भारतीय समाज, ऊँच-नीचक द्वन्द्व, रहन-सहनक द्वन्द्व, खान-पानक द्वन्द्व, रीति-रेवाजक द्वन्द्व, बात-विचारक द्वन्द्व

आ आचार-व्यवहारक द्वन्द्वक रूप में भोगि रहल अछि। ने कृष्ण 'वर्ण विभाजनक परिपाटी' रचितथि (एक स 'चारि') ('चारि' स 'बारह'; बारह स 'छत्तीस', हजार-क-हजार 'जाति' आ हजार-क-हजार 'उपजाति') ने समस्त समाज तकर प्रतिवाय आजीवन भोगय लेल अभिशप्त रहैत! ई सिवाय समाज मे विषमता बढ़ा क जटिलताक समस्या उत्पन्न केनाई आ तकरे आड़ि में प्रपञ्चपूर्ण धन्धावाजी चलौनाइ स वृहत् आओर दोसर किछु नहिं थीक। ई कतेक अकल्याणकारी आ समाजक विकास में अवरोधक कृत्ति भेल अछि ताहि पर समाज द्वारा परम ध्यान देवाक परम प्रयोजन अछि! तहिना 'मनुस्मृति' क एक टा श्लोकक अर्थ अछि जे "चार वर्णों के आपसी व्यभिचार से जितने संततियों की उत्पत्ति हुई वह चार हजार जातियाँ बनीं"। यदि एकर मान्यता देल जाय त समस्त भारतवर्षक लोक 'वर्ण-संकरे' भेल, कारण जे समस्त देशक प्रत्येक व्यक्ति कोनो-ने-कोनो जातियेक अछि। शास्त्रकार लोकनिक कागज-कलमक मायाजाल आ प्रपंचक कोनो सीमा नहिं !

१९म आ २०म शताब्दी में हिन्दू समाज में अनेक समाज-सुधारक भेलाह जे जाति-पातिक अभिशाप पर कुठाराघात कैलैन्ह अछि। राजा राममोहन राय, ऋषि दयानन्द, श्री केशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द आदि हिन्दू-जातिक एहि चेतना कैं नहिं केवल विरोध कैलैन्ह प्रत्युत् चुनौती सेहो देलैन्ह आओर जाति-पातिक बंधन के हिन्दू जातिक अधः पतन के एक मात्र कारण घोषित कैलैन्ह। एही कारणें जे ई प्रथा हिन्दू समाजक कल्याण, उत्थान आ विकास में परम अवरोधक (Hurdle) अछि। कृष्ण भगवानक बनौने की होयतैन्ह; बूझू त ओ विषक बीया रोपि देलैन्ह।

पृथक-पृथक ऋषि (मुनि)क आश्रमक शिक्षार्थी लोकनिक व्यक्तिगत परिचय (Personal identity) में "गोत्र" (अर्थात् कोन गुरुक आश्रम स शिक्षित छथि) सर्वप्रथम होइत छल जे औखन तक पार्थक्यसूचक (Distincitve) आ व्यवहार में अछि। ऋषि (मुनि) लोकनि अपन-अपन आश्रम में "प्रधानाचार्य" त होयबे करथि जे समय-समय पर आनो-आन

आश्रमक ऋषि (मुनि) लोकनि कैं, जे आन-आन विषय में निपुणता (दक्षता) क आधार पर (On the basis of specialisation) आचार्य होथि, आमन्त्रित कऽ क अपना-अपना आश्रमक शिक्षार्थी लोकनि कैं हुनका स व्याख्यान (Lecture) देयावथि आ ओ आमन्त्रित ऋषि प्रधानाचार्य द्वारा सम्मानित भऽ "प्रवर-आचार्य" कहावथि। 'प्रवर' शब्दक स्पष्टीकरण लिय। 'प्रवर' शब्द 'वृॅञवरणे' धातु स बनल अछि जकर अर्थ थीक 'विशेष तौर पर चुनि लेनाई'। 'प्र' क अर्थ 'विशेष तौर पर' आ 'वर' क अर्थ 'चुनि लेनाई'। जे अपना विषय में निपुण (Specialised) आचार्य होथि आ कोनो प्रधानाचार्य द्वारा 'विशेष तौर पर चुनि क' आमन्त्रित कयल गेल होथि सेएह 'प्रवर आचार्य' होथि। "प्रवर" शब्द एहि अर्थ में व्यवहृत अछि।

एक आश्रम में शिक्षा ग्रहण केनिहार सब व्यक्ति, चाहे ओ कोनो तबकाक वा वर्ण वा जाति वा उपजातिक होथि, आपस में "गुरु-भाई" होइत छथि आ तैं आपस में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करवाक सर्वथा 'निषेध' छैन्ह जे व्यवहार में 'भावनाात्मक (Emotional) विधान' कहबैछ। एही आधार पर "प्रवर" वला ऋषियोक शिक्षार्थी लोकनि कैं (चाहे हुनका अपना आश्रमक होथिन्ह वा जतय बजाओल गेलाह ताहि आश्रमक होथिन्ह) आपस में उक्त वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करवाक सर्वथा 'निषेध' स्थापित छैन्ह आ ताही 'निषेध' के सतत कारगर (Effective) रखबाक हेतु विवाह काल बार-बार "प्रवराध्याय" पढ़ाओल जाइछ। ई त सर्व विदित अछि जे अति परिचय में प्रेम नहिं रहि जाइत छैक आ ताही कारणें व्यवहार में भावनात्मक दृष्टि (Emotional point of view) स भाइ-बहिनिक विवाह वर्जित अछि। ई हो, जे एके समान शोणितक संतान में उत्कृष्टता नहिं अबैछ प्रत्युत् भिन्न शोणित में उत्कृष्टता अबैछ, एहू भावनात्मक दृष्टि स उक्त वर्जना सर्वथा औचित्यपूर्ण।

कहू जे ई कतेक अनर्थ, विस्मयकारी आ हास्यास्पद बात थीक जे आई पर्यन्त एहि बात पर ककरो ध्यान नहिं गेल जे जहाँ समगोत्र (एके गोत्रक वर आ कन्या) में विवाहक परम निषेध कयल गेल अछि आ

ताही कारणें पैघ-स-पैघ जाति स ल क छोट-स-छोट जाति तक में, कहू जे हिन्दू मात्रे में, सम-गोत्र में विवाह नहिं होइछ, आ हमरा लोकनि मैथिल कर्ण कायस्थ बुद्धिजीवी कहवितो जानकारीक अभाव में समगोत्रे ("काश्यप") में विवाह करैत ऐलहुँ अछि! विवाह काल मड़वा पर अनेक व्यक्ति विवाद ठानि दैत छथि जे "कर्ण कायस्थक 'काश्यपे' टा गोत्र होइछ" आ ईहो जे "हमर पूर्वज (बाप-दादा) कि बुड़िबक छलाह जे दूनू पक्षक काश्यपे गोत्र पढ़बवैत छलाह ?" आब एहेन-एहेन बुद्धि-निधान लोकनि कैं कोना बुझाओल जाय जे हमरा लोकनिक पूर्वज कोनो रूप में कदापि बुड़िबक नहिं छलाह किन्तु "जानकारी"क अभाव जैं छलैन्ह तैं ने एहेन अनर्थकारी बात पर कोनो प्रतिवाद करवाक त की, जे मोन में कोनो प्रतिक्रियो नहिं होइत छलैन्ह! एहि बात स किनका इनकार भऽ सकैत छैन्ह जे हमरा लोकनिक पूर्वज के जानकारीक कोनो अभाव नहिं छलैन्ह ? दोसर बात हमर कहव ई जे संयोगवश जँ हमरा पूर्वज सँ कोनो भूल-चूक भै गैलैन्ह त कि आब ओकर परिमार्जन नहिं कयल जाय ? अस्तु ।

"एहि मैथिल कर्ण कायस्थ कुल में अपर कुलोद्भव ग्राह्य नहिं। एहि कुल में चेरि प्रतिग्रह (Up keeping of concubine पर स्त्री स दोस्ती राखक) परिपाटी, स्त्री परित्याग (Divorce, विच्छेद) क परिपाटी, विधवा वा वहु विवाह (Widow marriage or Poligamy) क विधि आ सहवास (Courtship)क परिपाटी नहिं अछि। **समगोत्र में विवाह नहिं होइछ**। एहि वर्गक कायस्थ सनातन धर्मावलम्बी होइत छथि आओर ई लोकनि शाक्त, शैव्य तथा बैष्णव अर्थात् आस्तिक होइत छथि, नास्तिक नहिं । (कृपया पढू भच्छी निवासी श्री रास विहारी लाल दास लिखित "मिथिला दर्पर्ण" (प्रकाशित १९१५ई० पृष्ठ संख्या ३०)।

एहि स अतिरिक्त ध्यान देवा योग्य एकटा बहुत प्रमुख दोसर बात ई थीक जे वर्णक विभाजन में यद्यपि हमरा लोकनिक कतहु नाम करण नहिं अछि तथापि समाजक एक प्रवुद्ध वर्ग द्वारा "शूद्र" मानल जाइत छी जखन कि हमरा लोकनि क्षत्रिय (द्विज) वर्ण छी जे शास्त्रो में वर्णित अछि आ भारतवर्षक परमादरणीय सर्वोच्च न्यायालयो कहैत

छथि। (कृपया पढू (१) हरिपुर गौड़ी दास टोल निवासी लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब श्री बैद्यनाथ लाल दास जी लिखित पोथी "मैथिल कर्ण कायस्थों के गोत्र एवं प्रवर", प्रकाशित १९९४ ईस्वी पृष्ठ संख्या ४) आ (२) "कायस्थ वर्ण-निर्णय" लेखक डाँ. अंगन लाल सक्सेना, होम्योपैथ (फिरोजपुर छावनी, पंजाब); अनुवादक श्री बासुदेव लाल दास, एम.ए., पीएच.डी., (उप प्राध्यापक, इतिहास विभाग, ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगंज,नेपाल)) । उक्त प्रबुद्ध वर्ग ई प्रमाणित करै में बहुत समय पूर्वहिं सँ लागल छथि जे हमरा लोकनि "शूद्र" छी आ तैं विवाह में वर आ कन्या दूनू पक्ष के गोत्र "काश्यपे" पढ़ाओल जाइत अछि। ई बहुत पैघ प्रपञ्च थीक से नीक जकाँ बूझू। किछु गोटाक मत छैन्ह जे शूद्र वर्णक एके टा गोत्र होइत अछि "काश्यप", किन्तु से सर्वथा भ्रम थीक। प्राचीन काल में हुनको में अनेक गोत्र आ प्रवरक व्यवस्था छल। उपरोक्त प्रबुद्ध वर्ग द्वारा अतिशय उपेक्षित होइत-होइत अरिया क, अकच्छे नहिं प्रत्युत् आजीज़ भ क आ शिक्षाक अभाव में ओ लोकनि एहि गोत्र-प्रवर स पिण्ड छोड़ाय समगोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करय लगलाह जे औखन तक प्रचलित अछि। एहि 'पढ़ैवा' आ 'पढ़बैवा' में पुरोहितक दोष कम आ बहुत अधिक दोष हमरा लोकनिक अपने थीक। पुरोहित, आचार्य वा पण्डा त यजमाने स ने हुनकर अपन गोत्र पुछथिन्ह आ तदनुसार पढ़ौथिन्ह ? जँ यजमान अपन गोत्र नहिं कहि सकथिन्ह त तखन त ओ अपना जे मोन हेतैन्ह सेएह ने पढ़ौथिन्ह । जानकारीक अभाव में हमरो लोकनि अपन गोत्र नहिं कहैत छियैन्ह आ तैं ओ वर आ कन्या दूनू पक्षक 'काश्यपे' गोत्र पढ़ा क अपन एहि दलील कैं पुष्ट करैत छथि जे हमरा लोकनि "शूद्र" छी। अहाँ आपत्ति करियैन्ह, अपन गोत्र कहियैन्ह आ तखन ज अहाँक कहानुसार नहिं पढ़ावथि तैखन हुनका दोषी कहि सकैत छियैन्ह अन्यथा नहिं।

ई हमर अपन अध्ययन कहैत अछि। सम्भव थीक जे हमर अध्ययन सही नहिंयो होय कारण जे हम पढ़ल-लिखल नहिं छी फलतः हमर ई विचारो किनको पर कोनो रूप में वाध्य नहिं अछि आ ने होयत! हँ, जिनका ई समीचीन बूझि पड़ैन्ह तिनका हेतु ठीक ।

गोत्र आ प्रवरक सम्बन्ध में सुनि-पढ़ि क जतवा बोध हमरा भऽ सकल से कहल। कोनो तरहक शुभ-अशुभ वा देव-पितृ कर्म में सामान्य

संकल्प स ल क दक्षिणा तक में अपन वैयक्तिक परिचय (Personal identity) क सर्व प्रथम चरण (Item) “गोत्रे” क उद्‌घोष करय पड़ैत छैक तैं ई पोथी, हमरा जनैत, समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाजक हेतु उपयोगी होयवाक चाही आ जँ से भेल त हम बूझव जे हमर ५६ वर्षक श्रम निरर्थक नहिं गेल प्रत्युत् सार्थक भेल ! हम एही हेतु ई गोत्र कथा लिखल अछि।

हमरा लोकनि मूलक आधार पर सममूल में विवाह नहिं करैत छी, ठीक; एकर वैज्ञानिक आधार छैक। ई विधान पंजी (पाँजि)क थीक। एही पाँजि में **‘गोत्रो’**क विधान आदिये स मिथिला भरिक सब पंजीकारक सब मूलक पाँजि में ताल-पत्र पर वर्णित छल साढ़े पाँच सै वर्ष स किछु बेसी तक। चुँकि गोत्रक प्रधानता आ व्यवहार, एकर स्वयं केर चारित्रिक गुणक कारणें, प्रग्वैदिके युग स अद्यपर्यन्त प्रबलता स होइछ, एकर परित्याग करव सर्वथा अव्यावहारिके नहिं प्रत्युत् अवैज्ञानिको थीक। पाँजिक निर्माण आ मूलक निर्धारण पूर्णतया वैज्ञानिक आधार पर भेल अछि जहिना प्राग्वैदिक युग में गोत्रक भेल छल। लगभग डेढ़ सै वर्ष सँ जनसंख्या में क्रमात् अजस्र वृद्धिक कारणें, कथावार्ता में जे कठिनाइ उपस्थित होवय लागल ताहि स त्राण पावक हेतु पंजीकार लोकनि नहिं केवल मात्र मूले के ध क रहलाह आ गोत्रक उपेक्षा करय लगलाह, बल्के पाँजि स गोत्रक नामो-निशान मेटा देलैन्ह; दूधक माँछी जकाँ बाहर कऽ फेकलैन्ह। पंजीकार लोकनिक एहि दोषक स्पष्ट उघार भेनाइ एना साबित होइछ जे ‘जँ मूलेक प्रधानता, त फेर आइ पर्यन्त प्रत्येक देव-पितर कर्म में संकल्प स ल क दक्षिणा तक में ‘मूलक’ उद्‌घोष नहिं क क ‘गोत्र’ शब्दक व्यवहार कियैक? ‘मूल’ शब्दक प्रयोग करू।’ किन्तु से त होइत नहिं अछि। कारणों प्रबल छैक। ‘गोत्र’ प्राग्वैदिके काल स व्यवहृत अछि किन्तु ‘मूल’ त मात्र सात सै वर्ष स प्रयोग में अछि जहिया स पंजी (पांजि)क निर्माण भेल’। अस्तु।

अंत में हम समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज सँ एहि गोत्र कथाक मर्म कैं बुझवाक प्रार्थना करैत छी आओर यदि जँचय आ समीचीन बुझना जाय त एकरा प्रयोग में अवश्य आनल जयवाक कृपा कयल जाय। अपने लोकनिक सूचनार्थ एतवा कहि दैत छी जे गत १७-

१८ वर्ष स अनेक गामक अनेक व्यक्ति, जे हमरा सम्पर्क में अयलाह आ उपरोक्त बातक बोध कयलैन्ह, से अपना-अपना ओतय एकरा प्रयोग में आनि क्रियान्वित कऽ रहल छथि।

एक बात आओर जे अपन धर्मपत्नी श्रीमती प्रभा दास, जेठ बालक श्री रवि शंकर दास (सिनियर एग्जेक्युटिव (एकाउण्ट्स), “मारुति”, दिल्ली), छोट बालक श्री हरि शंकर दास (को-ऑर्डिनेटर IX, जी. टी. एफ. ‘एस. मल्टी सर्विसेज लि., दरभंगा), पौत्र श्री आकाशदेव (सेन्ट्रल स्कूल, दिल्ली), जेठ पुतहु श्रीमती लक्ष्मी (अर्चना, बलाट), छोट पुतहु श्रीमती रमा (मालती फेंट), चारू पोती श्री ज्योति (निधि), श्री दीप्ति (विधि), श्री तृप्ति (ऋद्धि उपनाम आयुषी) आ श्री प्रीति (सिद्धि उपनाम वसुधा), दून् बहिन-बहिनोई श्रीमती सुशीला-भदहर श्री जगन्नाथ चौधरी (ए.पी.एम., जी.पी.ओ., पटना) आ श्रीमती उरमिला-लखनपुर श्री चतुर्भुज मल्लिक (ट्रेज़री, समस्तीपुर) ओ चारु बेटी-जमाय श्रीमती कल्याणी-लखनपुर श्री विजय कुमार मल्लिक (स्टेट बैंक), श्रीमती शोभा-हिरणी श्री सुभद्र नारायण चौधरी (स्टेट बैंक), श्रीमती आरती-रतनपुर श्री उमेश चन्द्र मल्लिक (बोकारो स्टील एकाउण्ट्स) आ श्रीमती शीला-हैदरपुर श्री प्रवीण कुमार दास (प्रौपर्टी डीलर, पटना), हमर बालसखा द्वय सर्वश्री अधारी शरण वर्मा (केरमा मु.पु.) अभण्डा, लहेरियासराय आ अवधेश कुमार सिंह (बड़ा हाकिम, डिफेन्स सर्विस, ओझौल, दरभंगा), धर्मभाई जी श्री रामनारायण ‘खुसरो’ (पीलीभीत, उत्तर प्रदेश), धर्म बहिन जी श्रीमती सावित्री ‘खुसरो’, धर्मपुत्रत्रय सर्वश्री रविन्द्र कुमार (बड़ा हाकिम, रेलवे, दिल्ली), धीरेन्द्र कुमार (सेल्स टैक्स विभाग, जमशेदपुर), यतेन्द्र कुमार (सक्सेना) (सिनियर ऑफिसर, समस्तीपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, हेड ऑफिस, समस्तीपुर), धर्मपुतहुत्रय सर्वश्रीमती मिन्नी कुमार, आशा कुमार, मंजू कुमार, धर्मपौत्रत्रय सर्वश्री शोभित सक्सेना ‘टीनू’ (दिल्ली), रोहित सक्सेना, मोहित सक्सेना, धर्मपौत्री श्रीमती मेघा (रीशू) सक्सेना, धर्मप्रपुतहुत्रय सर्वश्रीमती विदिशा, ऋचा, नेहा, श्रद्धेय समधि हैदरपुर बाबू श्री बद्रीनाथ दास जी (सहायक रिज़नल डाइरेक्टर (अवकाश प्राप्त), ई.एस.आई., पटना) हमर धियापुताक माम भदहर श्री सुरेन्द्र चौधरी (सर्किल इन्सपेक्टर, महामंत्री, बिहार राज्य भूमि सुधार कर्मचारी संघ, संयुक्त मंत्री, बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ, सदस्य,

अखिल भारतीय राज्य सरकारी कर्मचारी महासंघ (AISGEF) आओर प्रत्येक ओहि 'महानुभाव' लोकनिक प्रति हम हृदय स आभार व्यक्त करैत छी जिनका लोकनिक उत्कट आग्रह, गोहँछबैवला तगादा, सतत प्रयास आ निरंतर साहाय्य स ई पोथी छपि ओ प्रकाशित भ क अपनेक हाथ में पड़ल अछि ।

एहि स वृहत् हम तारालाही श्री अशोक कुमार कर्ण (अर्चना 'प्रेस मैनेजर', लहेरिया सराय), बलौर श्री विद्याकान्त दास जी (गंगोत्री बिजिनेस प्वायंट, बोरिंग रोड, पटना), श्री निर्मल कुमार कर्ण जी (आदर्श इन्टरप्राइजेज, दरियागंज, नई दिल्ली), बलाट (राघोपुर) श्री अविनाश कुमार जी, जनकपुर (नेपाल) श्री राघवेन्द्र कुमार कर्ण 'रतन जी' (साइबर जोन, जे.एन.सी.एस.), श्री भाग्य नारायण झा जी (पब्लिक युथ +२ क्याम्पस), श्री भवेश नाथ झा 'भोगन जी', श्री कौशलेन्द्र लाल कर्ण 'सुधीर जी' (अधिवक्ता, जनकपुर धाम, नेपाल) ओ श्री सुधिर कुमार कर्ण (युनाइटेड कम्प्युटर इन्स्टिच्युट, जनकपुर धाम, नेपाल) आओर पटना सर्वश्री कौशल कुमार दास जी (नाट्य विद्या विशारद) आ शरदिन्दु चौधरी जी (एम. ए. सम्पादक, 'समय-साल', शेखर प्रकाशन, पटना) लोकनिक प्रति से हो अतिशय आभारी छी आ आजीवन कृतज्ञ बनल रहव, जे लोकनि 'छपाई-जगत' केर निपुण कलाकार छथि आ अपन मानसिक आ शारीरिक श्रम सँ हमरो तकनीकी (Technical) मार्ग दर्शन कैलैन्ह अछि आ एहि पोथी कैं छापि हमर ई सौख पुरौलैन्ह अछि। हिनका लोकनि कैं कोटि-कोटि धन्यवाद !

आब अपने लोकनि आगाँ "गोत्र", "प्रवर" आ "मूल" प्रकरण देखू जे एहि पोथीक मूल उद्देश्य आ विषय थिक।

खेराजपुर (दरभंगा)
श्री चित्रगुप्त पूजा दिवस
कार्तिक शुक्ल द्वितीया गुरौ,
सम्वत् २०६५ ।

कमलधर दास
(संकलन कर्ता)
ऑफिसर ग्रेड I (रिटायर्ड)
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
३० अक्टूबर सन् २००८ ई.

पूर्व प्रकाशित (सन् १९५२ ई०) पुस्तकक पृष्ठ - [1]

मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी

संकलयिता

श्री अनुग्रह लाल ठक्कुर
ग्राम ब्राह्मणटोली, पो.नौहट्टा, जि.सहरसा

मुद्रक
सिद्धार्थ प्रेस
पटना – ३

नोट-एकर कुल आय कर्ण-कायस्थ-महासभा के प्रदत्त अछि।

मुल्य =) दुइ आना मात्र

संकलयिताक पत्र
कल्याणास्पद श्री भोलाबाबू, शुभंभूयात्

अपना जातिक मूलक्रमे हम गोत्रक लिष्ट पठाय रहल छी। एहि लिष्ट कें हम भक्षीक स्वर्गीय रासबिहारी दास कृत "मिथिला दर्पण" सँ वंशक संतुलन कैल, जाहि वंश में किछु नामान्तर बूझि पड़ल तकरा कोष्ठ में लिख देने छियैक। अस्तु, एहि सँ बहुत पूर्व हमरा छतनेश्वरक स्वर्गीय जयगोविन्द दास जी सँ ज्ञात भेल छल जे जालपा दत्त मल्लिक पंजिकारक कोनो प्राचीन पाञ्जि में गोत्र पृथक् २ छलैन्ह । अहाँ कैं स्मरण होएत जे मधुबनी महासभा में हम एहि बातक चर्चा कैने छलहुँ जाहि पर जालपा दत्त मल्लिक पंजिकारक क्यो उत्तराधिकारी बजलाह जे "उक्त पांजि छलैक किन्तु सम्प्रति भेटैत नहि अछि इत्यादी।" गत वर्ष श्री बदरी मल्लिक पंजिकार द्वारा "गोत्र निर्णय एवं पंजी प्रबन्ध संशोधन" क चन्दा बही देखल। पश्चात् संयोग सँ हम झंझारपुर गेल छलहुं। ओहि ठाम श्री जीवछ लाल दास पंजिकार कहलैन्हि जे हमरो नाम नोटीस में द देने छथिन्ह किन्तु चन्दा एखन धरि वसुल नहिं भेल छन्हि सभा कहिया करताह से तिथि अनिश्चित अछि। अस्तु, लिष्ट में किछु वंशक गोत्र दोवारा छलैक तकर चिन्ता छल, किन्तु स्थानीय पंडित श्री मधुसूदन झा व्याकरणाचार्य द्वारा उपलब्ध "प्रवराध्याय" सँ ओहि सब त्रुटिक संशोधन भै गेल। उक्त पंडितजी सँ हमरा अहि कार्य में बहुत सहायता भेटल अछि। तदर्थ हम हुनक आभारी छी। आब ई छापल जायत तें हेतु एहि विषय में अहां जे किछु अन्वेषण कैने होई वा अहां कैं जे उचित बूझि पड़य अपन वक्तव्य सहित छापि कें प्रकाशित करब। हमरा सब उक्त लिष्टानुसारे गोत्रक व्यवहार (देव-पितृ कर्म तथा विवाहादि में) कै रहल छी।

अहांक शुभचिन्तक-अनुग्रह

प्रकाशन सम्बन्धी दू शब्द

ई गोत्र-विवरण बभनटोली-निवासी श्री युत भाई अनुग्रह लाल दास जी द्वारा संकलित भेल अछि। कोना एवं कतै सँ, तकर विवरण हुनके पत्र सँ स्पष्ट हैत। यद्यपि आइ-काल्हि गोत्रक कोनो विशेष उपयोगिता नहिं अछि, ब्राह्मण (समाज) पर्यन्त में सगोत्र-विवाह कँ वैध बनैबाक हेतु आन्दोलन चलि रहल अछि और हमरा समाज में तँ एहिना विवाहादि सम्बन्ध होइत आएल अछि, तथापि हुनका लगन एवं परिश्रमक हेतु धन्यवाद देबाक चाही। कमलाकर भट्टक सुकमलाकर नामक कोनो ग्रंथ हमरा देखबाक सौभाग्य नहि भेल अछि। यदि ई विवरण ओहिमे होइक तँ एकर ऐतिहासिक महत्व धरि अवश्य छैक एवं एकर जानकारी प्रत्येक कर्ण कायस्थ कैं आवश्यक छैन्हि। हमरा बुझने ई तत्तत् मूलक कायस्थक ब्राह्मण गुरु लोकनिक गोत्र थिकैन्ह। ई प्रायः मानल बात अछि जे जकरा गोत्रक निश्चय नहिं हो तकर गोत्र ओकरा गुरुक गोत्र बुझबाक चाही। संभवतः कमलाकरो भट्ट सैह कैने होथि। विशेष आलोचना तँ ओहि ग्रंथ कें देखनहि भै सकैत अछि। अस्तु, एकर प्रकाशन हम भाइसाहेबक आाग्रह सँ कै रहल छी। विश्वास अछि हमर कर्णगोष्ठी एकरा उदारतापूर्वक अपनौत। मुद्रण व्ययक अतिरिक्त एकर कुल आय अपना जातीय महासभाकैं समर्पित अछि। संभवतः एहि सँ आगाँ अनुसंधानक मार्ग खुलि जाय।

सिद्धार्थ प्रेस, पटना-३
ता. २१.६.५२ ई०

निवेदक
भोलालाल दास

मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी

श्रीनान्यदेव कर्णाटक सँ अपना संग अपन प्रधान मंत्री एवं बारह गोट सम्बन्धी कैं लए मिथिला ऐलाह तथा हुनका लोकनि कैं मिथिला राज्यक उच्च पद पर नियुक्त कैलन्हि। तकरा बाद दोसर बेर तीस, तेसर बेर अस्सी, और बाकी चारिम पांचम बेर ऐलाह। तकरा लगभग आठ सौ वर्ष होइत अछि। राजाहरिसिंह देव ब्राह्मण एवं कायस्थक पञ्जी प्रबन्ध कैलन्हि तथा गोत्रानुसार वंश निर्णय कए पौष शुक्ल नवमी शनिवार शाके १२४५ (मिथिला दर्पण मे-बैशाख शुक्ल दशमी शनिवार शाके १२४५) कैं हिमालय दिस चल गेलाह। उक्त पञ्जी प्रबन्धक अतिरिक्त कायस्थक गोत्रक प्रमाण कमलाकर भट्ट द्वारा लिखित "सुकमलाकर" नामक पुस्तक में भेटैत अछि।

ब्रह्मकायोद्भवेत् ख्यातः कायस्थो जाति उच्यते।
नाना गोत्रश्च तदवस्थां कायस्थो भुवि संतिते॥

(१) शाण्डिल्य गोत्र-त्रि-प्रवर-बलाइन, कुञ्जीधरान [कुञ्जी], कैराम,खरका [खनगाम], पौराम [बौराम], मागध, मझियाम, रामपुर, केबटाई [केबटाल, केबरी], फुलहरा, रहुआ, सुसारी, देवरमान, पोहद्दी।

(२) भारद्वाज गोत्र-त्रि प्रवर-वसंतपुर, कुरसरिया पाल, गंगसरी [गंगासरा,गंगपरा], चनौर, चपरा [चम्पारन] जमुयारी [जमुआरी, जमारी], पंचहरा, सुहण [सुहरन], वीरपुर, बिहनगर, मेहस, बेलाची, [मेलाची], सिसै जयपुर।

(३) वत्स गोत्र-पञ्च प्रवर-नरङ्वाली, कुन्दपाल, खटकियापाल [खलकियापाल], गौरापाल, गंगौली, घासीपाल, द्विघासीपाल, अर्द्धघासीपाल, धोसा [ढोसा], चपहरि, विसैल मेहियाउर, सुयोध।

(४) कात्यायन गोत्र-त्रि प्रवर-कोठी पाल, द्विकोठीपाल, त्रिकोठीपाल, चतुष्ठकोठीपाल, पंच कोठीपाल, षटकोठीपाल, सप्तकोठीपाल, बड़हरी, कुई, कुण्डाम, खजुरी गंगपाल, गंगापुर, सुधाम, बिक्कन, द्विबिक्कन, द्विकुण्डाम, बिक्रम पुर, महिवार, [महिषवार], सुपौल।

(५) गौतम-गोत्र-त्रि प्रवर-मोहनी, सुन्दर, द्विसुन्दर, कांटा, खतुआ, [खरथुआ], चनैल, जयपुर, पीरा, मानेपुर, सुरसी, बीरीबिजलपुर, पोसहन, [वीसहन], मेहन [मेहा, मेहाम], मेहापरकड़, मेहथू।

(६) गार्ग्य-गोत्र-पञ्च प्रवर-कान्चनपुर, बारी, द्वि बारी, [द्विओआरीं], उदयपुर [उदयनपुर], कटैया, तेघरा, पिपरा, [पिपरौनी], बेलसंडी, बेलान [बलान], बेता, सोन वेहट, वनवेनी, भटोली [भनौली], भीरोरी, माधोपुर, भुली, [भदौन]।

(७) कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि प्रवर-बत्तिक बाल, महेश, गढ़कब, वासा, कावल, चिलकी, तिउरा, पिंडारुछ, प्रिंगी, पूषण, पण्डौल, पिहवाल [पिड़हरि]।

(८) विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि प्रवर-अमहला, कछरा, अठहर [अहर], महथा पाल, कपरौती, परासी, परौल, बिहवाल,

भदहर, महिसौनी, खरैठ, लेहनपुर, सोनहो [सोनसो] द्विमानहो, बरहट ।

(९) सावर्ण्य गोत्र-पञ्च प्रवर-घरौर, मूंगर, द्विमूंगर, कौशिकपाल, नान्यवासी, भण्डारपाल, भटुआल, रौतपाल, [रौतवाल]।

(१०) कौशिक गोत्र-त्रय प्रवर-आहितपुर, द्विपतिपाल, बखोला [बखौड़ा] सजोरापाल, कचनार, गढ़पाल, गढ़बिक्कन, गढमांगुर, गरोली [गण्डोली], वरसरा, बलारपुर, द्विबलारपुर ।

(११) काश्यप गोत्र-त्रि प्रवर-पातो, द्विपातो, बिजलपुर, बोकानय, कोलथ, गढ़मान, गढ़हन, तिलाटी, परसा, बखरा ।

(१२) पराशर गोत्र-त्रि प्रवर-रत्नपाल, नेउरी [नउनी], द्विनेउरी, नान्यपुर, कब [कहव], कटकियापाल, रतैल [ततैल], द्विरत्नपाल, त्री रत्नपाल, पञ्चरत्न पाल, सप्त रत्नपाल भाली, लडुआम, [नडुआल], द्विनान्यपुर।

(१३) वशिष्ठ गोत्र-त्रि प्रवर-शंकर, बेंक [व्यड्क], द्वि वेंक, पार वेंक, जयतुंग, कशरहरपाल [कशरहटपाल], तिरौल [तिरौत], पदपुर, प्रसाद, बलथुआ, भरियाम, नवानी, सोहराय ।

(१४) कौण्डिन्य गोत्र-त्रि प्रवर-बनौली [गनौली], रजौरापाल, चकेसरि पाल, वुसबल, कनकपाल, गम्हरिया, तरौन, पड़री, ब्रह्मपुर, लोआम, सुमैला, द्विबनौली, बन्धेती ।

(१५) मौद्गल्य गोत्र-त्रि प्रवर- महिसी, द्विमहिषी, सर्वसर, बसुआम [बसुहाम], कर्ण तीर्थ, तराम, पञ्चिम, पञ्चरुखी, बघरासी, भिठी,सिम्फुआ, शीरो, कसरौर ।

(१६) और्व्य गोत्र-पञ्च प्रवर- पोखराम, परसौनी, उत्तमपुर, करोनी, डेगौन, तरिसम, बरुचाय, भिमदी [भिनन्दी], सरीसब, चाउरी, पथरपाल [पठपर] ।

(१७) कौरप गोत्र- त्रि प्रवर-वघैल [वखैल], सोमलपुर, द्विभिड़, [उदीभीड़], अन्धरा [अन्धड़ा], कचौत, ढांगा [डांगा], रतपुर, बलिगाम [बरियाम], बरुहम, संतोषपाल ।

(१८) धबल [जमदग्नि] गोत्र- पंच प्रवर-औरिया, द्वि औरिया, फुलथुहा, द्वि फुलथुहा, असत गाम, रकहन, कोकनपाल, डुमरी [डुमरिया], दानवेहट, ननौर, मन्दार ।

(१९) अनैध्रुव गोत्र- त्रि प्रवर-औराई, अजेरापाल, द्वि अजेरापाल, तोअल, तेरसि, कसोथ, कोरारी, डोरारी, नबगाम, महुअर, वाढो, हकमकी, ओय ।

(२०) धृत गोत्र-पञ्च प्रवर- कोरहन [कुरहो], धमौरा, कोपाल, ठकठाई, वंश खोला, मभौरा, सरैसार, सिद्धिपाल, हरौत ।

(२१) आस्तिक गोत्र-त्रि प्रवर- नन्दाम, कुसौन, द्विकुसौन, अगैया [अगोरिया], बाढ़ा, बरुआरी [बडुआरि], मढैई [मड़ई] सरोज, हरदी हँसना ।

(२२) माणडव्य गोत्र-पञ्च प्रवर- वरिसमा [वरसमिया], अगैया पाल, अहपुर, खोखस पाल, गोसपुर, भिकुटिया [भीटुकिया], भंभारपुर, नंभरि, नेषाम, वारिकोप ।

(२३) सदस्य गोत्र- त्रि प्रवर-धानव, अरना, गोनवारा [गेन्दवार], टभका, दीप, देवरा, देवरापाल, देवरजका ।

(२४) सारस्वत गोत्र- त्रि प्रवर-पकली [पकौली], द्वि पकली, अहुना [अधुना], गोहट वासी, जलसीसम, धनौली, नर सिंहपुर, बेता, बैन [व्युन], मान, द्वि मान, नेहथ, सरुवाल, धनखोरि ।

(२५) सांकृत गोत्र-त्रि प्रवर- वीयर, अधारपुर, गोआर, झरका, धर्मपुर, चचोला [वचोला], नड़रा [नगरा], नबहथ, व्यासपुर [ग्यासपुर], माजीठ, सठीपाल, हाटी, द्वि हाटी ।

(२६) अल्पवान गोत्र- पञ्च प्रवर-रौतहट, अखतपाल, अहुली, गरुचौनी [गुणचौली], जालथ, जिहुली, नवहट्टा [नोहट्टा], निधाम, द्विनिधाम, अर्द्धनिधाम [समदौलि]

(२७) शक्ति गोत्र-त्रि प्रवर- सिमरी, सिसौनी, छतवन, पुतीस, तपनपुर, तियालवासी ।

(२८) अङ्गिरा गोत्र-त्रि प्रवर- सीसव, मैनापाल, गढ़निधि, नौपाल, सरदी, रुपैठ।

(२९) असित गोत्र-त्रि प्रवर- नरैल [सरैया], मारिच [माणिछ], मनपौराम [मनपीर], महिपाल, गढ़वीयर, खरेल ।

(३०) देवल गोत्र-त्रि प्रवर- मनिहार, राघोपुर, द्विराघोपुर, सीवा, द्वि सीवा, खरिद, थरिया [धरिया]

(३१) भार्गव गोत्र-पंच प्रवर- खैरी, मिरौनी, सिधमा, राजे, सोकेंला ।

नोट :- वत्स-सावर्ण्य सोदराः । वत्स और सावर्ण्य गोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध नहि हेबाक चाही ।

श्री गणेशाय नमः ।

मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर आ मूल

पूर्व में (भारतीय-साहित्यक अनुसार) विश्वामित्र, जमदग्नि (धवल), भारद्वाज, गौतम, अत्रि (असित), वशिष्ठ आ कश्यप एहि सात ऋषिक नाम पर हिनका लोकनिक शिष्य कैं सात टा गोत्र भेल - "विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गोतमः । अत्रिर्वशिष्ठः कश्यप इत्येते गोत्रकारकाः ॥" एहि सातक सँग अगस्त ऋषिक शिष्य के से हो हिनके नामक गोत्र कहल गेल - "तेषां सप्तर्षीणाम् अगस्त्याष्टमानां जदपत्यं तद्गोत्रमित्युच्यते ।" - सत्याषाढ़ हिरण्यकेशी श्रौतसुत्र ।

ई गोत्र पहिने साते-आठ टा छल परन्तु आगाँ चलि क एकर संख्या हजारों-लाखों तक पहुँच गेल । "चतुर्विंशति गोत्राणि" । "ऊनपंचाशद गोत्र भेदाः"। "गोत्राणि तु शतानि अनन्तानिं" ।

गोत्रक सम्बन्ध में याज्ञवल्क्य तथा बौधायनक कथन छैन्ह जे एकर संख्या आठे नहिं भ क हजारों अछि । कोनो परिवारक जे आदि-प्रवर्तक छलाह, जाहि महापुरुष सँ परिवार चलल (आगाँ बढ़ल), ताहि परिवार के हुनके नामक गोत्र पड़ल आ ओहि परिवारक जे स्त्री-पुरुष भेलाह से आपस में भाइ-बहिन भेलाह । "वंशपरंपरा-प्रसिद्धं गोत्रम्" - याज्ञवल्क्यः । (कृपया पढू (१) विद्यामार्तण्ड डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (संसद-सदस्य तथा उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) रचित ग्रंथ "संस्कार-चन्द्रिका" (प्रकाशन संशोधित संस्करण, २००० ई०) में 'विवाह संस्कार - विवेचनात्मक भाग (ग) में खण्ड २, वहिर्विवाह - गोत्र, प्रवर, सपिंड में विवाह का "निषेध" पृष्ठ संख्या 365 स 368)' आ (२) श्री कमलाकर भट्ट रचित ग्रंथ "निर्णयसिन्धुः" (अनुवादक म०म० श्री ब्रजरत्न भट्टाचार्य, रिप्रिन्ट २००६, पृष्ठ संख्या ४९०–९१) ।

एहि में हमरा लोकनि 'मैथिल कर्ण कायस्थ'क सम्पूर्ण ५७३ (पाँच सै तिहत्तरि) टा 'मूल' निम्न प्रकारें ३१ (एकतीस) टा गोत्र में पृथक-पृथक संख्या में छी :-

(१) शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।

मूल

१. कुञ्जीधरान (कुञ्जी)	१०. बलाइन
२. केबटाई (केबरी, केबटाल)	११. मभ्रियाम
३. कैराम (केरमो, केरमी)	१२. मागध
४. खरका (खड़का)	१३. रजेड़ापाल
५. देवरमान	१४. रहुआ (रोहुआ)
६. नरहरि	१५. रामपुर
७. पोहद्दी	१६. सिंहपद
८. पौराम (बौराम)	१७. सुसारी
९. फुलहरा	

(२) भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

मूल

१. अटही	११. पढ़वारा
२. उपरवासी	१२. पंचहरा
३. ऐड़ापाल	१३. बिहनगर (बीहपुर)
४. कुरसरियापाल	१४.बेलाची (मेलाची)
५. गंगसरी (गंगपरा,गंगपरी)	१५. मलौठी
६. चनौर	१६. मेहस
७. चपरा	१७. वसंतपुर
८. चम्पारण	१८. वीरपुर
९. जमुयारी (जमुआरी)	१९. सिसै जयपुर
१०. नोनैइ	२०. सुहण (सुहरण)

(३) वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

मूल

१. अर्द्धघासीपाल	११. नरंगवाली
२. अर्द्धधाय	१२. भरौरा
३. कुन्दपाल (कुन्दवाल)	१३. मन्येन
४. खटकियापाल (खलकियापाल)	१४. मेहियाउर
५. गौरापाल	१५. लरुआरी
६. गंगौली	१६. विसैल (विसौल)
७. घासीपाल	१७. सहोरा
८. घोसा (ढोसा, घौसा)	१८. सिरनियाँगढ़
९. चपहरि	१९. सुयोध
१०. द्वि घासीपाल	

(४) कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।

मूल

१. अभरी	१३. पंच कोठीपाल
२. कुई	१४. बड़हरी
३. कुण्डाम (कुन्दाम)	१५. बिक्कन
४. कोठीपाल	१६. महदेवा
५. खजुरी	१७. महिवार (महिषवार)
६. गंगपाल	१८. विक्रमपुर
७. गंगापुर	१९. षट कोठीपाल
८.चतुष्कोठीपाल	२० सप्त कोठीपाल
९. चंपारण कोठीपाल	२१. सुधाम
१०. द्वि कुण्डाम (कुन्दाम)	२२. सुपौल
११. द्वि कोठीपाल	२३. त्रिकोठीपाल
१२. द्वि बिक्कन	

(५) गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ आ वृहस्पति) प्रवर ।

मूल

१. काँटा	१०. बाला (बारा)
२. खरथुआ (खतुआ)	११. बीरी बिजलपुर (बृ बिजलपुर)
३. चनैल	१२. महुनी (महुली, मोहनी)
४. चंगेल	१३. मानेपुर
५. जयपुर	१४. मेहथू
६. द्वि सुन्दर	१५. मेहन (मेहा, मेहाम)
७. पीरा (पींढ़ा)	१६. मेहापाकर
८. पोसहन (विसहन)	१७. सुन्दर
९. बधौरा	१८. सुरसी

(६) गार्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

मूल

१. उदयपुर (उदयनपुर)	१२. बेलसंडी
२. कटैया	१३. बेलान (बलान)
३. काञ्चनपुर	१४. भटोली (भनोली)
४. तेघरा	१५. भीरोरि
५. द्वि बारी	१६. भूली
६. पिपरा	१७. माधोपुर
७. बढ़ियाम	१८. वनवेनी
८. बत्तिकबाल	१९. वेता
९. बरैठ	२०. सरप
१०.बसहान	२१. सोन बेहट
११. बारी	

(७) कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

मूल

१. अस्ते (अस्तेइ)	११. पिड़ारूछ (पिण्डारूछ)
२. कावल	१२. पिहवाल
३. गढ़कव	१३. पूषन
४. गढ़कल्याण	१४. बरिआम
५. चिंलकी (चिल्फी, चिलकी)	१५. भदिओन (भदौन)
६. तिउरा	१६. महेश
७. नगरा	१७. वासा
८. पण्डौल	१८. वेलाम
९. प्रिंगी (पिंगी)	१९. सरौनी
१०.पिड़हरि	

(८) विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि { विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

मूल

१. अठहर	११. परौल
२. अमहला	१२. बरहट
३. असोनारी	१३. बिहवाल
४. अहर	१४. भदहर
५. कछरा	१५. भदेहट
६. कपरौती	१६. महथापाल (माथापाल)
७. खरैठ (खरैर)	१७. महिसौनी (महिसौलि)
८. द्वि मानहो	१८. मानहो
९. द्वि सोनहो (सोनसो)	१९. लेहनपुर
१०. परासी	२०. सोनहो (सोनसो)

(९) सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

मूल

१. कसरहतापाल	१०. धरौरे बेहट
२. कूजी	११. धामपुर
३. कौशिकपाल	१२. नान्यवासी
४. गढ़ गोपाल	१३. भटुआल
५. गोठैला	१४. भण्डारपाल
६. डांगा	१५. मूंगर
७. दइमद	१६. रौतपाल (रौतवाल)
८. द्वि मूंगर	१७. सोनारी
९. धरौर	

(१०) कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर।

मूल

१. आदित्यपुर	१०. द्वि गढ़वाल
२. आहितपुर	११. द्वि पतिपाल
३. कचनार	१२. द्वि बलारपुर (बलालपुर)
४. गढ़ पउहरी	१३. पतिपाल
५. गढ़ पाल (गढ़वाल,गौढ़पाल)	१४. बकुबल
६. गढ़ बिक्कन	१५. बलारपुर (बलालपुर)
७. गढ़ मांगुर	१६. वरसरा
८. गढ़ वास	१७. सजोरापाल
९. गरोली (गडौली, गण्डोली)	

(११) काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर।

मूल

१. उदभीण्ड	१०. द्वि पातो (पाती)
२. कोलथ (कोलौथ, कोलथु)	११. द्वि बिजलपुर
३. गजरथपुर	१२. परसा
४. गढ़ मान	१३. पातो (पाती)
५. गढ़ हन	१४. पियर
६. तरिऔती	१५. बिजलपुर
७. तारसराय	१६. बोकानय (बोकाने)
८. तिलाठी (तिलहाटी)	१७. वखरा
९. तीलाण्डा	

(१२) पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर।

मूल

१. कटकियापाल	१०. पनिचोभ
२. कब (कहब)	११. पंच रत्नपाल
३. केउटी (केओटी)	१२. भाली
४. द्वि नान्यपुर	१३. रत्नपाल
५. द्वि नेउरी (नउनी)	१४. रतैल (ततैल)
६. द्वि भाली	१५. लडुआम
७. द्वि रत्नपाल	१६. सप्त रत्नपाल
८. नान्यपुर	१७. त्रिरत्नपाल
९. नेउरी (नउनी)	

(१३) वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

मूल

१. कशरहरपाल (कशरहटपाल)	१०. प्रसाद
२. जयतुंग (जैतुह)	११. पारवेंक (पोरबेक)
३. जेए	१२. बलथुआ
४. जोर	१३. बिऔन
५. तिरौल (तिरौत)	१४. बेंकवादी (बेंक)
६. द्वि बिऔन	१५. भरियाम (भरोयेम)
७. द्वि वेंक (व्यङ्क)	१६. वेंक (व्यङ्क)
८. नवानी	१७. शंकर
९. पदपुर	१८. सोहराय

(१४) कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।

मूल

१. अरंत	१०. बनौली (गनौली)
२. कनकपाल	११. बरांतपल
३. गम्हरिया	१२. ब्रह्मपुर (बरहमपुर)
४. चकेसरिपाल	१३. रजौरापाल
५. तरौन	१४. लोआम
६. द्वि बनौली (गनौली)	१५. वुसबल
७. पड़री (परड़ी)	१६. सरैसो
८. बन्धेती (बन्धौती)	१७. सुमैला
९. बनौला	

(१५) मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

मूल

१. कर्ण तीर्थ	६. द्वि महिषी (महिसी)
२. कसरौर (कसरौर वासी)	७. द्वि वेरसि
३. केक्टी	८. पंचरूखी
४. तराम	९. पंचिम (पश्चिम)
५. द्वि केक्टी	१०. बघरासी

११. बघरासी वासी	१६. वेरसि
१२. बसुहाम (बसुआम)	१७. शीरो
१३. बेकसीओरा	१८. सर्वसर
१४. भिठी	१९. सिभ्फुआ (सभ्फुआर)
१५. महिषी (महिसी)	

(१६) और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

मूल

१. उत्तमपुर	१०. परसौनी
२. उसाम	११. पिओर
३. उसौव (उसौथ)	१२. पोखराम
४. करोनी (कोरौनी)	१३. बरुचाय
५. चाउरी	१४. बेसारी
६. डेगौन	१५. बौकाम (बौराम)
७. तरिसम (तेरिसमै सिभ्फुआ)	१६. भिमदी (भीलन्द्री,भिनन्दी)
८. द्वि वरन	१७. वरन
९. पथरपाल (पथरवाल)	१८. सरिसव

(१७) कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

मूल

१. अन्धरा (अन्धड़ा)	१०. बेकराउत
२. ओआरी	११. मेहा
३. कचौत (कोचौत)	१२. रतपुर (रत्नपुर)
४. ढांगा	१३. रायपुर
५. द्वि ओआरी	१४. वखैल (वघैल)
६. द्वि भिड़ (उदी भीड़)	१५. वाधपुर
७. द्वि वाधपुर	१६. सोमलपुर (सोमनपुर)
८. बरुहम	१७. संतोषपाल
९. बलिगाम	

(१८) धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

मूल

१. असतगाम (असगाम)	११. फुलथुहा (फुलथुआ)
२. असस्थौ	१२. बयायिन
३. औरिया (ओरिए)	१३. बसखोना
४. कोकनपाल (कोकलबाल)	१४. बीबक
५. डढ़िया	१५. मन्दार
६. डुमरिया	१६. मरदवी
७. दान बेहट	१७. मुहुर
८. द्वि औरिया (ओरिए)	१८. रकहन
९. द्वि फुलथुहा (फुलथुआ)	१९. सुखरासी
१०. ननौर	

(१९) अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

मूल

१. अजेरापाल (अजबड़ापाल)	१०. तेरसि (तेरिस)
२. इकहन	११. तेरसिगढ़
३. ओय (ओए)	१२. तोअल (तीयल)
४. औराई	१३. द्वि अजेरापाल (अजबड़ापाल)
५. कसोथ (कुसौथ)	१४. द्वि तेरसि (तेरिस)
६. कोरारी (कोडारी)	१५. नबगाम (नौगाम)
७. डोरारी (डेराती, डेडारी)	१६. महुअर
८. तीपल (तीअल)	१७. वाढ़ो
९. तीरहुती	१८. हकमकी

(२०) धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

मूल

१. कमिक्षापाल	१०. महेपम
२. कोपाल	११. मानदेव
३. कोरहन (कुरहो)	१२. वंश खोला
४. गढ़ चाउरी	१३. सन्दौली
५. ठकठाई (ठकठोर)	१४. सरैसार (सरैसा)
६. देपुरा	१५. सिद्धिपाल (सिधिआल)
७. धमौरा	१६. सोन्दपुर
८. पलाकी	१७. सोनटी
९. मझौरा	१८. हरौत (हराउत हलना, हरावत हलना)

(२१) आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।

मूल

१. अगैया (अगोरिया, अगैरिया)	१०. बैकपाल
२. कुसौन	११. मढ़ैई (मड़ई)
३. गढ़ विउन	१२. वाढ़ा
४. घघरी	१३. सरोखपाल
५. ततैल	१४. सरोज
६. द्वि कुसौन	१५. साख
७. धनौली	१६. सिमदाहा
८. नन्दाम	१७. हरदी
९. बरुआरी (बडुआरि)	१८. हँसना (हनना)

(२२) माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

मूल

१. अगैयापाल	११. पिपरौनी
२. अहपुर	१२. पिपरौनीवासी
३. खोखस	१३. लगाव
४. खोखसपाल	१४. वरआ
	१५. वरिसमा (वरिसामा, वरसमिया)
५. गोसपुर	
६. झिकुटिया (झिटुकिया)	१६. वारिकोप
७. झंझारपुर	१७. सरिकमस्त
८. नेषाम	१८. साढ़
९. नंभरि	१९. साण्डे
१०. पिट्ठाडोमी	

(२३) सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

मूल

१. अरना (अरता)	१०. दीप
२. कटका	११. द्वीरापाल
३. गढ़ वाउरी (गढ़ बरहरी)	१२. देवरजका
४. गोनवारा (गेन्दवार, गोन्दवाल)	१३. देवरा
५. चन्दौरा	१४. देवरापाल
६. चंदौली	१५. धानव
७. टपकली	१६. समदौनी
८. टभका	१७. सुअरो
९. टांघर	

(२४) सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

मूल

१. अहुना (अहुता, अधुना)	१०. नेहथ
२. गोहटवासी (गोहट पाल)	११. पकली
३. जलसीसम	१२. पकौली
४. द्वि पकली	१३. बनियट
५. द्वि बैन (बीउन, व्यून)	१४.बेता
६. द्वि मान	१५. बैन (बीउन, व्यून)
७. धनखोरि	१६. भनौली
८. नडुआल	१७. मान
९. नरसिंहपुर	१८.सरुवाल

(२५) सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

मूल

१. अधारपुर	१०. धुवौली
२. खनगाम (खनगाँव)	११. नड़रा (नरड़ा)
३. गोआर	१२. नवहथ
४. गंगसरा	१३. माजीठ
५. चचोला (वचोला)	१४. बीअर
६. झरका (झड़कन)	१५. व्यासपुर (ग्यासपुर)
७. डुमरी	१६. सठीपाल
८. द्वि हाटी	१७. हाटी
९. धर्मपुर	

(२६) **अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।**

मूल

१. अखतपाल (अखतबाल)	११. निधाम
२. अर्द्ध निधाम (समदौलि)	१२. रतवाल (रतपाल)
३. अहुली (अहुनी)	१३. रौतहट
४. गुरुचौनी (गुणचौली)	१४. रौतहट डुमराम
५. जालथ (जालय)	१५. रौतहट डुमरिय
६. जिहुली	१६. रौतहट नवानी
७. द्वि निधाम	१७. शोसन
८. नउना	१८. सरईस
९. नउड़ा	१९. सीसी
१०. नवहट्टा (नहोटा, नौहट्टा)	

(२७) शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

मूल

१. केओटवार (केओटालुह)	१०. धसना
२. गढ़ण्येन	११. पउरी (पौउरी)
३. गोआ	१२. पुतीस (पूतिम)
४. छतवन	१३. भीण्डोपाल
५. जमारी	१४. सखा
६. तपनपुर (तनपुर)	१५. सिमरी
७. तियाल (तीपाल)	१६. सिसौनी (ससौनी)
८. तियालवासी (तीपालवासी)	१७. हावी
९. देउथरी	

(२८) अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।

मूल

१. उसाल	११. नौंपाल
२. कुन्दरवाल	१२. भरवारा
३. गढ़ निधि	१३. मान्येनापाल
४. गढ़ महुअर (गढ़ भूहुअर)	१४. मैनापाल
५. गढ़ शंकर	१५. रुपैठ (रुपैठवादी)
६. गढ़िहाल	१६. लवानी
७. गोढ़ गोपाल	१७. सन्तौर
८. द्वि गढ़िहाल	१८. सरदी
९. नरौवासी	१९. सीसव
१०. नहौना	२०. हरिचन्द्र

(२९) असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।

मूल

१. कुरतण्डिहापाल	१०. बरैल
२. खरेल (खरैलवासी, खरैल)	११. बलिगाँव
३. गढ़	१२. भालीकोर
४. गढ़ किर्त्ति	१३. मनपौराम (मनपौर)
५. गढ़ वीअर	१४. महिपाल
६ गढ़ त्रिपुर दास	१५. माण्डिच्य (मारिच, माणिछ)
७. द्वि बरैल	१६. सकुरी
८. नरैल (सरैया)	१७. सखौता
९. परिकौली	

(३०) देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

मूल

१. कुन्दास
२. कोटा
३. खरिद
४. गंगमारा
५. चोपकारण
६. थरिया (धरिया)
७. द्वि राघोपुर
८. द्वि सीवा
९. नदियाम
१०. नैपुर
११. पटपारा (पठपरा)
१२. मनिहार
१३. राघोपुर
१४. सकरीगढ़
१५. सघनपुर
१६. सीवा
१७. होलिया (होइया)

(३१) भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

मूल

१. अख़्तरपुर
२. अलदही
३. कटाइ
४. केनारी
५. खांजी (खाँगी)
६. खैरी
७. गढ़ स्थान
८. गोछापुर
९. चेलुकी
१०. छेउजी
११. भ्फौआ
१२. ढौसा
१३. द्वि अलदही
१४. द्वि पदमपुर
१५. नैदहा
१६. पदमपुर
१७. बखोरा (बखोला)
१८. मिरौनी
१९. राजे
२०. सिधमा
२१. सिधव (सिधप)
२२. सुभ्फौल
२३. सोकैला
२४. सोहौली (सोन्हौली)
२५. हरिपुर

श्री गणेशाय नमः ।

मैथिल कर्ण कायस्थ गोत्र-प्रवराध्याय

ॐ दाताऽहं वरुणोराजा द्रव्यमादित्य दैवतम् ।

वरौसौ वृष्णुरूपेण प्रतिगृहणात्वयं विधिः ।

ॐ अस्यां रात्रौ .... (मासक नाम)

मासे .... (पक्षक नाम)

पक्षे .... (तिथिक नाम)

यां तिथौ "... (गोत्रक नाम)

गोत्रस्य .... ति

त्रि/पञ्च प्रवरस्य *..

.. (नाम) ठक्कुरस्य

प्रपौत्राय/पौत्राय/पुत्राय, प्रपौत्रीम्/पौत्रीम्/पुत्रीम्"

---

* जीवित व्यक्तिक नाम स पूर्व 'श्री' जोड़ि (अन्यथा मात्र नामे...ठक्कुरस्य)

१. **शाण्डिल्य गोत्र-त्रि प्रवर** : "शाण्डिल्य गोत्रस्य शाण्डिल्यासित देवलेति त्रि प्रवरस्य*....... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

२. **भारद्वाज गोत्र-त्रि प्रवर** : "भारद्वाज गोत्रस्य भारद्वाजाङ्गिरस वार्हस्पत्येति त्रि प्रवरस्य*......(नाम) ठक्कुरस्य..............."

३. **वत्स गोत्र-पंच प्रवर** : "वत्स गोत्रस्य और्व्यच्यवन भार्गव जामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य *...........(नाम) ठक्कुरस्य.........."

४. **कात्यायन गोत्र-त्रि प्रवर** : "कात्यायन गोत्रस्य कात्यायन विष्णवङ्गिरसेति त्रि प्रवरस्य *....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

५. **गौतम गोत्र-त्रि प्रवर** : "गौतम गोत्रस्य आङ्गिरसो वशिष्ठ वार्हस्पत्येति त्रि प्रवरस्य *............ (नाम) ठक्कुरस्य ...."

६. **गार्ग्य गोत्र-पंच प्रवर** : "गार्ग्य गोत्रस्य गार्ग्यधृतकौशिक माण्डव्याथर्ववैशम्पायनेति पंच प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

७. **कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि प्रवर** : "कृष्णात्रेय गोत्रस्य कृष्णात्रेयाल्पवान-सारस्वतेति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य........"

८. **विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि प्रवर** : "विष्णुवृद्धि गोत्रस्य विष्णुवृद्धि पौरुकुत्सत्रसदस्येति त्रि प्रवरस्य * .....(नाम) ठक्कुरस्य..........."

९. **सावर्ण्य गोत्र-पंच प्रवर** : "सावर्ण्य गोत्रस्य और्व्यच्यवन भार्गव जामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य *..........(नाम) ठक्कुरस्य.........."

---

* जीवित व्यक्तिक नाम स पूर्व 'श्री' जोड़ि (अन्यथा मात्र नामे..........ठक्कुरस्य)

१०. **कौशिक गोत्र-त्रि प्रवर** : "कौशिक गोत्रस्य कौशिकात्रि-जमदग्नेति त्रि प्रवरस्य *.......(नाम) ठक्कुरस्य................"

११. **काश्यप गोत्र-त्रि प्रवर** : "काश्यप गोत्रस्य काश्यपावत्सार-नैध्रुवेति त्रि प्रवरस्य *.........(नाम) ठक्कुरस्य..........."

१२. **पराशर गोत्र-त्रि प्रवर** : "पराशर गोत्रस्य शक्तिवशिष्ठ पराशरेति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

१३. **वशिष्ठ गोत्र-त्रि प्रवर** : "वशिष्ठ गोत्रस्य वशिष्ठात्रिसांकृतिति त्रि प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

१४. **कौण्डिन्य गोत्र-त्रि प्रवर** : "कौण्डिन्य गोत्रस्य आस्तिक कौशिक कौण्डिन्येति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

१५. **मौद्गल्य गोत्र-त्रि प्रवर** : "मौद्गल्य गोत्रस्य मौद्गल्याङ्गिरस-वार्हस्पत्येति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ......"

१६. **और्व्य गोत्र-पंच प्रवर** : "और्व्य गोत्रस्य और्व्यच्यवनभार्गव जामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

१७. **कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि प्रवर** : "कौरप गोत्रस्य आङिगरसोगौरवीत सांकृतिति त्रि प्रवरस्य * ...(नाम) ठक्कुरस्य ...."

१८. **धबल (जमदग्नि) गोत्र त्रि प्रवर** : धबल गोत्रस्य कौशिकात्रिजमदग्नेति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

---

* जीवित व्यक्तिक नाम स पूर्व 'श्री' जोड़ि (अन्यथा मात्र नामे..........ठक्कुरस्य)

१९. अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि प्रवर : "अनैध्रुव गोत्रस्य काश्यपावत्सार-नैध्रुवेति त्रि प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

२०. धृत (च्यवन) गोत्र-पंच प्रवर : "धृत गोत्रस्य च्यवनौर्व्यभार्गव-जामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य *..... (नाम) ठक्कुरस्य .... "

२१. आस्तिक गोत्र-त्रि प्रवर : "आस्तिक गोत्रस्य आस्तिक कौशिक कौण्डिन्येति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

२२. माण्डव्य गोत्र-पंच प्रवर : "माण्डव्य गोत्रस्य माण्डव्यगार्ग्यधृत कौशिकाथर्ववैश्म्पायनेति पंच प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

२३. **सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)गोत्र-त्रि प्रवर** : सदस्य गोत्रस्य विष्णुवृद्धि पौरुकुत्सत्रसदस्येति त्रि प्रवरस्य *....... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

२४. सारस्वत गोत्र-त्रि प्रवर : "सारस्वत गोत्रस्य सारस्वत कृष्णात्रेयाल्पवानेति त्रि प्रवरस्य *....... (नाम) ठक्कुरस्य........"

२५. सांकृत गोत्र-त्रि प्रवर : "सांकृत गोत्रस्य आङ्गिरसोगौरवीत सांकृतिति त्रि प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

२६. अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच प्रवर : "अल्पवान गोत्रस्य और्व्यच्यवन भार्गवजामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य * .....(नाम) ठक्कुरस्य ..."

२७. शक्ति गोत्र-त्रि प्रवर : "शक्ति गोत्रस्य शक्ति वशिष्ठ पराशरेति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ...."

२८. अङ्गिरा गोत्र-त्रि प्रवर : "अङ्गिरा गोत्रस्य आङ्गिरसो-भारद्वाजवार्हस्पत्येति त्रि प्रवरस्य * ....(नाम) ठक्कुरस्य ...."

---

* जीवित व्यक्तिक नाम स पूर्व 'श्री' जोड़ि (अन्यथा मात्र नामे..........ठक्कुरस्य)

२९. असित (अत्रि) गोत्र-त्रि प्रवर : "असित गोत्रस्य अलाबुकाक्षसागर गौतमवशिष्ठेति त्रि प्रवरस्य * .... (नाम) ठक्कुरस्य ......"

३०. देवल गोत्र-त्रि प्रवर : "देवल गोत्रस्य आङ्गिरसोगौरवीत सांकृतिति त्रि प्रवरस्य .....(नाम) ठक्कुरस्य .... "

३१. भार्गव गोत्र-पंच प्रवर : "भार्गव गोत्रस्य और्व्यच्यवन भार्गवजामदग्न्याल्पवानेति पंच प्रवरस्य . . . . . (नाम) ठक्कुरस्य ..... "

"प्रपौत्राय/पौत्राय/पुत्राय-प्रपौत्रीम्/पौत्रीम्/पुत्रीम्"
(बेराबेरी क क तीन बेर पढ़ि तखन आगू पढ़ी)

"(वरक गोत्रक नाम)............. गोत्राय त्रि/पञ्च प्रवराय श्री .... (वरक नाम)..............ठक्कुराय वराय तुम्यमहं (कन्याक गोत्रक नाम)........... गोत्राम् त्रि/पञ्च प्रवराम् सुश्री .... (कन्याक नाम) कुमारी नाम्नीं • इमां कन्यां सालंकारां प्रजापति दैवतां •• स्वर्गकामः पत्नित्वेनाहं सम्प्रददे ।"

नोट : वत्स-सावर्ण्य सोदराः । वत्स आ सावर्ण्य गोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध नहिं हेबाक चाही ।

---

* जीवित व्यक्तिक नाम स पूर्व 'श्री' जोड़ि (अन्यथा मात्र नामे......... ठक्कुरस्य)

• यदि कन्याक पिता स्वयं कन्यादान करैत होथि त एतय "मम (....... अपन नाम) .... ठक्कुरस्य" जोड़थि ।

•• यदि पिता स पृथक क्यौ आन व्यक्ति कन्यादान करैत होथि त एतय "कन्या पितृगत" शब्द जोड़थि ।

श्री गणेशाय नमः ।

मैथिल कर्ण कायस्थक मूल आ गोत्र-प्रवर

(कमलाकर भट्ट रचित ग्रन्थ "सुकमलाकर" आ बाबू असर्फीलाल मल्लिक (गंधवारि), पञ्जीकारक प्रपितामहक पाँजि स लेल "मंगलाचरण", गोत्राध्याय आ प्रवराध्याय" पर आधारित)

मूल	गोत्र आ प्रवर
	अ
१. अख्तरपुर	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२. अखतपाल (अखतबाल)	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. अगैया (अगोरिया, अगैरिया)	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
४. अगैयापाल	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
५. अजेरापाल (अजबड़ापाल)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
६. अटही	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
७. अठहर	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

८. अर्द्ध घासीपाल	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
९. अर्द्ध धाय	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१०. अर्द्ध निधाम (समदौलि)	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. अधारपुर	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१२. अन्धरा (अन्धड़ा)	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१३. अभरी	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
१४. अमहला	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१५. अरना (अरता)	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१६. अरंत	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
१७. अलदही	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

१८. अस्ते (अस्तेइ) — कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

१९. असतगाम (असगाम) — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

२०. असस्थौ — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

२१. असोनारी — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

२२. अहपुर — माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

२३. अहर — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

२४. अहुना (अहुता, अधुना) — सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

२५. अहुली (अहुनी) — अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

आ

१. आदित्यपुर — कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।

२. आहितपुर — कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।

इ

१. इकहन — अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

उ

१. उत्तमपुर — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

२. उदभीण्ड — काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

३. उदयपुर (उदयनपुर) — गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर।

४. उपरवासी — भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।

५. उसाम — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

६. उसाल — अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर।

७. उसौव (उसौथ) — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

ऐ

१. ऐड़ापाल — भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।

ओ

१. ओआरी — कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर।

२. ओय (ओए) — अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर।

औ

१. औराई — अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर।

२.औरिया (ओरिए) — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर।

क

१. कचनार — कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर।

२. कचौत (कोचौत) — कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर।

३. कछरा — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।

४. कटका — सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।

५. कटकियापाल — पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर।

६. कटाइ — भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

७. कटैया — गाग्र्ग्य गोत्र-पंच (गाग्र्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर।

८. कर्ण तीर्थ — मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।

९. कनकपाल — कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर।

१०. कपरौती — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।

११. कब (कहब) — पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर।

१२. कमिक्षापाल — धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

१३. करोनी (कोरौनी) — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

१४. कशरहरपाल (कशरहटपाल) — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर।

१५. कसरौर (कसरौर वासी) — मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।

१६. कसरहतापाल — सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर।

१७. कसोथ (कुसौथ)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
१८. काञ्चनपुर	गार्ग्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
१९. कावल	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
२०. काँटा	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
२१. कुई	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
२२. कुञ्जीधरान (कुञ्जी)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
२३. कुण्डाम (कुन्दाम)	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
२४. कुन्दपाल (कुन्दवाल)	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२५. कुन्दरवाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
२६. कुन्दास	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२७. कुरतण्डिहापाल	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२८. कुरसरियापाल	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

२९. कुसौन	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
३०. कूजी	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३१. केओटवार (केओटालुह)	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३२. केउटी (केओटी)	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३३. केक्टी	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
३४. केनारी	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३५. केबटाइ (केबरी, केबटाल)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
३६. कैराम (केरमो, केरमी,)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
३७. कोकनपाल	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
३८. कोटा	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३९. कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।

४०. कोपाल	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४१. कोरहन (कुरहो)	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४२. कोरारी (कोडारी)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
४३. कोलथ (कोलौथ, कोलथु)	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
४४. कौशिकपाल	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

ख

१. खजुरी	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
२. खटकियापाल (खलकियापाल)	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. खरथुआ (खतुआ)	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
४. खरका (खड़का)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
५. खनगाम (खनगाँव)	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

६. खरिद	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
७. खरैठ (खरैर)	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
८. खरेल (खरैलवासी, खरैल)	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
९. खांजी (खाँगी)	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१०. खैरी	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. खोखस	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
१२. खोखसपाल	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

ग

१. गजरथपुर	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२. गढ़	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
३. गढ़कव	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

४. गढ़कल्याण	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
५. गढ़ किर्त्ति	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
६. गढ़ गोपाल	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
७. गढ़ चाउरी	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
८. गढ़ण्येन	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
९. गढ़ निधि	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
१०. गढ़ पउहरी	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
११. गढ़ पाल (गढ़वाल, गौढ़पाल)	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
१२. गढ़ बिक्कन	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
१३. गढ़ महुअर (गढ़ भूहुअर)	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
१४. गढ़ मान	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
१५. गढ़ मांगुर	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।

१६. गढ़ वाउरी (गढ़ बरहरी)	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१७. गढ़ वास	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।
१८. गढ़ विउन	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
१९. गढ़ वीअर	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२०. गढ़ शंकर	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
२१. गढ़ स्थान	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२२. गढ़ हन	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२३. गढ़ त्रिपुर दास	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२४. गढ़िहाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
२५. गम्हरिया	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
२६. गरोली (गडौली, गण्डोली)	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।
२७. गुरुचौनी (गुणचौली)	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२८. गोआ	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

२९. गोआर	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३०. गोछापुर	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३१. गोठैला	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३२. गोढ़ गोपाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
३३.गोनवारा (गेन्दवार, गोन्दवाल)	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
३४. गोसपुर	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
३५. गोहटवासी (गोहट पाल)	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३६. गौरापाल	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३७. गंगपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
३८. गंगमारा	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

३९. गंगसरा	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
४०. गंगसरी (गंगपरा, गंगपरी)	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
४१. गंगापुर	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
४२. गंगौली	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

घ

१. घघरी	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
२. घासीपाल	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. घोसा (ढोसा, घौसा)	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

च

१. चकेसरिपाल	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
२. चचोला (वचोला)	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३. चतुष्कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।

४. चनैल	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
५. चन्दौरा	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
६. चनौर	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।
७. चपरा	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
८. चपहरि	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
९. चम्पारण	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
१०.चाउरी	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. चिंलकी (चिल्फी, चिलकी)	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
१२. चेलुकी	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१३. चोपकारण	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

१४. चंगेल	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
१५. चंदौली	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१६. चंपारण कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर।

छ

१. छतवन	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
२. छेउजी	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

ज

१. जमारी	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
२. जमुयारी (जमुआरी)	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर।
३. जयतुंग (जैतुह)	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
४. जयपुर	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
५. जलसीसम	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

६. जालथ (जालय) — अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्न्वान)} प्रवर ।

७. जिहुली — अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

८. जेए — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

९. जोर — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

झ

१. झरका (झड़कन) — सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

२. झिकुटिया (झिटुकिया) — माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

३. झौआ — भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

४. झंझारपुर — माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

ट

१. टपकली — सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

२. टभका — सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

३. टांघर — सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

ठ

१. ठकठाई (ठकठोर) — धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

ड

१. डढ़िया — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

२. डांगा — सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

३. डुमरिया — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि धवल)} प्रवर ।

४. डुमरी — सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

५. डेगौन — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

६. डोरारी (डेराती, डेडारी) अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

ढ

१. ढांगा कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

२. ढौसा भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान आप्नवान)} प्रवर ।

त

१. ततैल आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।

२. तपनपुर (तनपुर) शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

३. तराम मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

४.तरिऔती काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

५. तरिसम (तेरिसमै सिभ्भुआ) और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

६. तरौन कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।

७. तारसराय काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

८. तिउरा कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

९. तियाल (तीपाल) शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

१०. तियालवासी (तीपालवासी) शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

११. तिरौल (तिरौत) वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

१२. तिलाठी (तिलहाटी) काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर।

१३. तीपल (तीअल) अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

१४. तीरहुती अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

१५. तीलाण्डा काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

१६. तेघरा गाग्र्य गोत्र-पंच (गाग्र्य, धृत (चयवन),कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

१७. तेरसि (तेरिस) अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

१८. तेरसिगढ़ अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

१९. तोअल (तीयल)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

थ

१. थरिया (धरिया)	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

द

१. दइमद	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२.दान बेहट	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
३. द्वि अजेरापाल (अजबड़ापाल)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
४. द्वि अलदही	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५. द्वि ओआरी	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
६. द्वि औरिया (ओरिए)	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
७. द्वि कुण्डाम (कुन्दाम)	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर।

८. द्वि कुसौन	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
९. द्वि केक्टी	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
१०. द्वि कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
११. द्वि गढ़वाल	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।
१२. द्वि गढ़िहाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर।
१३. द्वि घासीपाल	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१४. द्वि तेरसि (तेरिस)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
१५. द्वि नान्यपुर	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
१६. द्वि निधाम	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१७. द्वि नेउरी (नउनी)	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
१८. द्वि पकली	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

१९. द्वि पतिपाल	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।
२०. द्वि पदमपुर	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२१. द्वि पातो (पाती)	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२२. द्वि फुलथुहा (फुलथुआ)	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
२३. द्वि बनौली (गनौली)	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
२४. द्वि बरैल	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२५.द्वि बलारपुर (बलालपुर)	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)}प्रवर ।
२६. द्वि बारी	गाग्र्ग्य गोत्र-पंच (गाग्र्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२७. द्वि बिऔन	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
२८. द्वि बिक्कन	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
२९. द्वि बिजलपुर	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

३०. द्वि बैन (बीउन, व्यून)	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३१. द्वि भाली	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३२. द्वि भिड़ (उदी भीड़)	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३३. द्वि महिषी (महिसी)	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
३४. द्वि मान	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३५. द्वि मानहो	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
३६. द्वि मूंगर	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३७. द्वि रत्नपाल	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३८. द्वि राघोपुर	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३९. द्वि वरन	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४०. द्वि वाधपुर	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

४१. द्वि वेंक (व्यङ्क)	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
४२. द्वि वेरसि	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
४३. द्वि सीवा	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
४४. द्वि सुन्दर	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
४५. द्वि सोनहो (सोनसो)	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
४६. द्वि हाटी	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
४७. दीप	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।
४८. द्वीरापाल	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।
४९. देउथरी	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
५०. देपुरा	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

५१. देवरजका	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।
५२. देवरमान	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
५३. देवरा	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।
५४. देवरापाल	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

ध

१. धनखोरि	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२. धनौली	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
३. धर्मपुर	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
४. धमौरा	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान आप्नवान)} प्रवर ।
५. धरौर	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

६. धरौरे बेहट	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
७. धसना	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
८. धानव	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
९. धामपुर	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१०. धुवौली	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

न

१. नउना	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२. नउड़ा	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. नगरा	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
४. नडुआल	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

५. नदियाम	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
६. नन्दाम	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
७. ननौर	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
८. नबगाम (नौगाम)	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
९. नड़रा (नरड़ा)	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१०. नरसिंहपुर	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. नरहरि	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
१२. नरैल (सरैया)	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
१३. नरौवासी	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर।
१४. नरंगवाली	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१५. नवहट्टा (नहोटा, नौहट्टा)	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

१६. नवहथ	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१७. नवानी	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
१८ नहौना	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर।
१९. नान्यपुर	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
२०. नान्यवासी	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२१. निधाम	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२२. नेउरी (नउनी)	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
२३. नेषाम	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२४. नेहथ	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२५. नैदहा	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

२६. नैपुर	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२७. नोनैइ	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
२८. नौंपाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
२९. नंभरि	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

प

१. पउरी (पौउरी)	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
२. पकली	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. पकौली	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४. पटपारा (पठपरा)	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
५. पढ़वारा	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
६. पण्डौल	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
७. पतिपाल	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर।

८. पथरपाल (पथरवाल)	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
९. पदपुर	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
१०. पदमपुर	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. पनिचोभ	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
१२. पड़री (परड़ी)	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
१३. परसा	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
१४. परसौनी	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१५. परासी	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१६. परिकौली	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
१७. परौल	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

१८. पलाकी	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१९. प्रसाद	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
२०. प्रिंगी (पिंगी)	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
२१. पातो (पाती)	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२२. पारवेंक (पोरबेक)	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
२३. पिओर	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२४. पिट्ठाडोमी	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२५. पिपरा	गार्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२६. पिपरौनी	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२७. पिपरौनीवासी	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।

२८. पियर	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२९. पिड़हरि	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
३०. पिड़ारूछ (पिण्डारूछ)	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
३१. पिहवाल	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
३२. पीरा (पींढ़ा)	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ आ वृहस्पति) प्रवर ।
३३. पुतीस (पूतिम)	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३४. पूषन	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
३५. पोखराम	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३६. पोहद्दी	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
३७. पोसहन (विसहन)	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
३८. पौराम (बौराम)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।

३९. पंच कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर
४०. पंच रत्नपाल	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
४१. पंच रूखी	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
४२. पंचहरा	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
४३. पंचिम (पश्चिम)	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

फ

१. फुलथुहा (फुलथुआ)	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
२. फुलहरा	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।

ब

१. बकुबल	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
२. बखोरा (बखोला)	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. बघरासी	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
४. बघरासी वासी	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

५. बढ़ियाम	गाग्ग्र्य गोत्र-पंच (गाग्ग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
६. बत्तिकबाल	गाग्ग्र्य गोत्र-पंच (गाग्ग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
७. बधौरा	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
८. बन्धेती (बन्धौती)	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
९. बनियट	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१०. बनौला	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
११. बनौली (गनौली)	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
१२. बयायिन	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
१३. बड़हरी	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्ण्व आ अङ्गिरा) प्रवर ।
१४. बरहट	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१५. बरिआम	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

१६. बरुआरी (बडुआरि)	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
१७. बरुचाय	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१८. बरुहम	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१९. बरैठ	गाग्ग्र्य गोत्र-पंच (गाग्ग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२०. बरैल	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२१. बरांतपल	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
२२. बलथुआ	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
२३. बलाइन	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
२४. बलारपुर (बलालपुर)	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
२५. बलिगाम	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२६. बलिगाँव	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।

२७. बसखोना — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

२८. बसहान — गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

२९. बसुहाम (बसुआम) — मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

३०. ब्रह्मपुर (बरहमपुर) — कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।

३१. बारी — गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

३२. बाला (बारा) — गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।

३३. बिऔन — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

३४. बिक्कन — कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्ण्व आ अडिग्रा) प्रवर ।

३५. बिजलपुर — काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

३६. बिहनगर (बीहपुर) — भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

३७. बिहवाल — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

३८. बीबक — धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

३९. बीरी बिजलपुर (बृ बिजलपुर) — गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।

४०. बेकराउत — कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

४१. बेंकवादी (बेंक) — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

४२. बेकसीओरा — मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

४३. बेता — सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

४४. बेलसंडी — गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

४५. बेलाची (मेलाची) — भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

४६. बेलान (बलान) — गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

४७. बेसारी — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

४८. बैकपाल — आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।

४९. बैन (बीउन, व्यून) — सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

५०. बोकानय (बोकाने) — काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।

५१. बौकाम (बौराम) — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

भ

१. भटोली (भनोली) — गार्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

२. भटुआल — सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

३. भण्डारपाल — सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

४. भदहर — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

५. भदिओन (भदौन) — कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

६. भदेहट — विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।

७. भनौली — सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

८. भरवारा — अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।

९. भरियाम (भरोयेम) — वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

१०. भरौरा — वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

११. भाली — पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

१२. भालीकोर — असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।

१३. भिठी — मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

१४. भिमदी (भीलन्द्री, भिनन्दी) — और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

१५. भीण्डोपाल — शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

१६. भीरोरी — गार्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

१७. भूली	गार्ग्य गोत्र-पंच (गार्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।

म

१. मभियाम	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
२. मभौरा	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. मढ़ैई (मड़ई)	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
४. मन्दार	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
५. मन्येन	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
६. मनपौराम (मनपौर)	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
७. मनिहार	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
८. मरदवी	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

९. मलौठी	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति प्रवर ।
१०. महथापाल (माथापाल)	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि (विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) प्रवर ।
११. महदेवा	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
१२. महिपाल	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
१३. महिवार (महिषवार)	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
१४. महिषी (महिसी)	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
१५. महिसौनी (महिसौलि)	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
१६. महुअर	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
१७. महुनी (महुली, मोहनी)	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
१८. महेपम	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१९. महेश	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।

२०. मागध	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
२१. माजीठ	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२२. माण्डिच्य (मारिच, माणिछ)	असित (अत्रि) गोत्र- त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
२३. माधोपुर	गागर्ग्य गोत्र-पंच (गागर्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२४. मान्येनापाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
२५. मान	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२६. मानदेव	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२७. मानहो	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
२८. मानेपुर	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
२९. मिरौनी	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

३०. मुहुर	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
३१. मूंगर	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३२. मेहथू	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
३३. मेहन (मेहा, मेहाम)	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
३४. मेहस	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
३५. मेहा	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३६. मेहापाकर	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
३७. मेहियाउर	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३८. मैनापाल	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।

र

१. रकहन	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।

२. रजेड़ापाल	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
३. रजौरापाल	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
४. रत्नपाल	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
५. रतपुर (रत्नपुर)	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
६. रतवाल (रतपाल)	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
७. रतैल (ततैल)	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
८. रहुआ (रोहुआ)	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
९. राघोपुर	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१०. राजे	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
११. रामपुर	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
१२. रायपुर	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१३. रुपैठ (रुपैठवादी)	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।

१४. रौतपाल (रौतवाल)	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१५. रौतहट	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१६. रौतहट डुमराम	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१७. रौतहट डुमरिय	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१८. रौतहट नवानी	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

ल

१. लगाव	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गागर्ग्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२. लडुआम	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३. लरुआरी	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४. लवानी	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।

५. लेहनपुर	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
६. लोआम	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।

व

१. वखरा	काश्यप गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२. वखैल (वघैल)	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
३ वनवेनी	गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
४. वरआ	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
५. वरन	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
६. वरसरा	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
७. वरिसमा (वरिसामा, वरसमिया)	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
८. वसंतपुर	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।

९. वाढ़ा	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
१०. वाढ़ो	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर।
११. वाधपुर	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१२. वारिकोप	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
१३. वासा	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
१४. विक्रमपुर	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
१५. विसैल (विसौल)	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१६. वीअर	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
१७. वीरपुर	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
१८. वुसबल	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
१९. वेंक (व्यङ्क)	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

२०. वेता	गाग्र्य गोत्र-पंच (गाग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२१. वेरसि	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
२२. वेलाम	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
२३. व्यासपुर (ग्यासपुर)	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२४. वंश खोला	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

श

१. शीरो	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
२. शोसन	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३. शंकर	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।

ष

१. षट कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।

स

१. सकरीगढ़	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
२. सकुरी	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
३. सखा	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
४. सखौता	असित (अत्रि) गोत्र-त्रि (अलाबुकाक्ष, गौतम आ वशिष्ठ) प्रवर ।
५. सघनपुर	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
६. सजोरापाल	कौशिक गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
७. सठीपाल	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
८. सन्तौर	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
९. सन्दौली	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१०. सप्त कोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर।
११. सप्त रत्नपाल	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

१२. समदौनी	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर।
१३. सरईस	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१४. सरदी	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
१५. सरप	गाग्गर्य गोत्र-पंच (गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
१६. सरिकमस्त	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
१७. सरिसव	और्व्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१८. सरुवाल	सारस्वत गोत्र-त्रि {सारस्वत, कृष्णात्रेय आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
१९. सरैसार (सरैसा)	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२०. सरैसो	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।

२१. सरोखपाल	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
२२. सरोज	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
२३. सरौनी	कृष्णात्रेय गोत्र-त्रि (कृष्णात्रेय, अल्पवान (आप्नवान) आ सारस्वत) प्रवर ।
२४.सर्वसर	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
२५. सहोरा	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
२६. साख	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
२७. साढ़	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२८. साण्डे	माण्डव्य गोत्र-पंच (माण्डव्य, गाग्गर्य, धृत (च्यवन), कौशिक आ वैशम्पायन) प्रवर ।
२९. सिभ्फुआ (सभ्फुआर)	मौद्गल्य गोत्र-त्रि (मौद्गल्य, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
३०. सिद्धिपाल (सिधिआल)	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

३१. सिधमा	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३२. सिधव (सिधप)	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३३. सिमदाहा	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
३४. सिमरी	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३५. सिरनियाँगढ़	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
३६. सिसै जयपुर	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
३७. सिसौनी (ससौनी)	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
३८. सिंहपद	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।
३९. सीवा	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
४०. सीसव	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
४१. सीसी	अल्पवान (आप्नवान) गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

४२. सुअरो	सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप) गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
४३. सुखरासी	धबल (जमदग्नि) गोत्र-त्रि {कौशिक, अत्रि (असित) आ जमदग्नि (धवल)} प्रवर ।
४४. सुभ्फौल	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
४५. सुधाम	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
४६. सुन्दर	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ आ वृहस्पति) प्रवर ।
४७. सुपौल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
४८. सुमैला	कौन्डिन्य गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौन्डिन्य) प्रवर ।
४९. सुयोध	वत्स गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५०. सुरसी	गौतम गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, वशिष्ठ, आ वृहस्पति) प्रवर ।
५१. सुसारी	शाण्डिल्य गोत्र-त्रि (शाण्डिल्य, असित (अत्रि) आ देवल) प्रवर ।

५२. सुहण (सुहरन)	भारद्वाज गोत्र-त्रि (भारद्वाज, अङ्गिरा आ वृहस्पति) प्रवर ।
५३. सोकैला	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५४. सोन्दपुर	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान आप्नवान)} प्रवर ।
५५. सोनटी	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५६. सोन बेहट	गाग्र्य गोत्र-पंच (गाग्र्य, धृत (च्यवन), कौशिक, माण्डव्य आ वैशम्पायन) प्रवर ।
५७. सोनहो (सोनसो)	विष्णुवृद्धि गोत्र-त्रि {विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्स आ सदस्य (त्रसदस्य, सदरूप)} प्रवर ।
५८. सोनारी	सावर्ण्य गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५९. सोमलपुर (सोमनपुर)	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
६०. सोहराय	वशिष्ठ गोत्र-त्रि (वशिष्ठ, अत्रि (असित) आ सांकृत) प्रवर ।
६१. सोहौली (सोन्हौली)	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।

६२. संतोषपाल	कौरप (गौरवीत) गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

ह

१. हकमकी	अनैध्रुव (अनयध्रुव) गोत्र-त्रि {काश्यप, वत्स आ अनैध्रुव (अनयध्रुव)} प्रवर ।
२. हरदी	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
३. हरिचन्द्र	अङ्गिरा गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, भारद्वाज आ वृहस्पति) प्रवर ।
४. हरिपुर	भार्गव गोत्र-पंच {और्व्य, च्यवन (धृत), भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
५. हरौत (हराउत हलना, हरावत हलना)	धृत (च्यवन) गोत्र-पंच {च्यवन (धृत), और्व्य, भार्गव, जमदग्नि (धवल) आ अल्पवान (आप्नवान)} प्रवर ।
६. हँसना (हनना)	आस्तिक गोत्र-त्रि (आस्तिक, कौशिक आ कौण्डिन्य) प्रवर ।
७. हाटी	सांकृत गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।
८ हावी	शक्ति गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।
९. होलिया (होइया)	देवल गोत्र-त्रि (अङ्गिरा, गौरवीत (कौरप) आ सांकृत) प्रवर ।

त्र

१. त्रिकोठीपाल	कात्यायन गोत्र-त्रि (कात्यायन, वैष्णव आ अङ्गिरा) प्रवर ।
२. त्रिरत्नपाल	पराशर गोत्र-त्रि (शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर) प्रवर ।

नोट :- वत्स-सावर्ण्य सोदराः । वत्स आ सावर्ण्य गोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध नहिं हेबाक चाही ।



वैवाहिक सम्बन्ध

आब जे हम लिखि रहल छी से यद्यपि एहि पोथी स ततेक सम्बन्धित विषय-बात त नहिं परन्तु मैथिल कर्ण कायस्थक सामाजिकता स एकर सम्बन्ध बहुत गहींर, गंभीर आ व्यापक छैक तैं एकर विशेष महत्व दैत पाँजि (पञ्जी) क सम्बन्ध में अपन अध्ययन आ अवधारणा अपने लोकनिक समक्ष राखि रहल छी । अनुमाने नहिं प्रत्युत् पूर्ण विश्वासो अछि जे एहि परिशिष्ट के पढ़नाई किनको नहिं सोहायत बल्के पढ़नाहर के एक-एक शब्द पढ़ि प्रचण्ड क्रोधे होयत हमरा पर, तथापि अपन दुर्भाग्यो बूझि, चुँकि ई विषय-वात शाश्वत सत्ये जकाँ अकाट्य सत्य अछि आ समाजक लगभग अन्ठानवे प्रतिशत लोक एहि स प्रभावित भै अतिशय आजीज़ीक अनुभव करैत कुफ़ूत छी, नहिं चाहितो हमरा एकरा एहि पोथी में स्थान देबय पड़ल अछि। देखै छी जे समय बहुत बदलि गेलैक । त सब बातक परिस्थिति, परिवेश, चरित्र आ व्यवहारो बदलि गेलैक अछि आ दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक आ सेहो परम द्रुत गति स । परम्पराक निर्वाह करवा में नितान्त कठिनाइक अनुभव यद्यपि सब क्यौ कऽ रहल छी तथापि “सुधार कोना हो” तकर ‘चिन्तन-मनन आ कार्यान्वयन' नहिं क क समस्त समाज मात्र एक-दोसर पर दोषारोपणें करैत छी अर्थात् एक दोसर के दोषिये ठहरा रहल छी । दोषक वात, सब क्यौ अनका बाजिये-कहिये रहल छी, सूनि क्यौ नहिं रहल छी । फल की होइत अछि, त जाहि दोषपूर्ण बात वा क्रिया-कलाप स प्रभावित भऽ आजीज़ होइत छी से बनले रहैत अछि, ओहि में सुधार होयबाक कोनो आशा नहिं देखना जाइछ कारण जे ओहि हेतु कोनो प्रयासो नहिं होइत अछि। एकर विपरीत यदि ई सोची जे समाजक

प्रत्येक व्यक्ति एहि में दोषी छथि (जे अकाट्य सत्यो थीक), स्वयं हम से हो निश्चित रूप में दोषी छी, तैखन ने अहाँ वा हम उक्त क्रियाक परित्याग करब आ तैखन, तत्तहि स सुधारक प्रक्रिया आरम्भ भऽ जायत। एहि पर कनेक चिन्तन करू। अपरिमित लाभ होयत। हमर ईहो अवधारणा आ विचार पूर्णतः निजी अछि तैं ल क किनको पर कोनो रूप में बाध्य नहिं अछि आ ने होयत ।

पञ्जी प्रथाक अवधारणान्तर्गत पञ्जीकार (Geneologist & Registrar) लोकनिक नियुक्ति आ मिथिलास्थ ब्राह्मण, कायस्थ, क्षत्री तथा वैश्यक पञ्जी (पाँजि)क निर्माण त कर्णाट प्रमार वंशी राजा श्री नान्यदेव* (दक्षिण नीलगिरी प्रान्तक राजा) क छठम पीढ़ीक अन्तिम राजा प्रप्रप्रपौत्र श्री हरिसिंहदेव द्वारा शाके १२३२ सन् १३११ ई. में विवाह विषयक अस्वजनतादि दोष निवारणक हेतु प्रयोजनवश धर्मशास्त्रानुसार आ पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर भेल छल जे सब गोटे कैं विदित अछि आ ओ स्वयं शाके १२३८ सन् १३१७ ई. में गोत्रानुसार वंश निर्णय क क पौष शुक्ल नवमी शनि शाके १२४५ सन् १३२४ ई. (बाबू श्री अनुग्रह लाल ठक्कुर संकलित पोथी 'मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी' क अनुसार) आ वैशाष शुक्ल दशमी शनि शाके १२४५ सन् १३२४ ई. (बाबू श्री रास बिहारी लाल दास लिखित पोथी 'मिथिला दर्पण' क अनुसार) हिमालय क प्रस्थान कऽ गेलाह। अनुमानतः, एही आधार पर ग्रंथकार श्री कमलाकर भट्ट अपन ग्रंथ “सुकमलाकर” में मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र-वंश (मूल) लिखने होथि, बेसी सम्भावित प्रतीत होइछ।

---

* श्री नान्यदेव {स्वयं सन् १०९८-११३५ ई० (३७ वर्ष)}, पुत्र श्री गंगासिंह देव {सन् ११३६-११४८ ई० (१२ वर्ष)}, पौत्र श्री नरसिंह देव {सन् ११४९-१२०१ (५२ वर्ष)}, प्रपौत्र श्री रामसिंह देव {सन् १२०२-१२८८ (८६ वर्ष)}, प्रप्रपौत्र श्री शक्रसिंह देव {सन् १२८८-१३०४ (१६ वर्ष)} आ छठम पीढ़ीक अन्तिम राजा प्रप्रप्रपौत्र श्री हरिसिंह देव {सन् १३०४-१३२४ ई० (२० वर्ष)} (ई लोकनि छवो पुस्त (Generations), मिथिला पर सन् १०९८ ई० स सन् १३२४ ई० तक अर्थात २२८ वर्ष राज्य कैलैन्ह ।

प्रत्येक वर्णक पञ्जी (पाँजि) क निर्माण राजा श्री हरिसिंह देव जी अपन प्रधान मंत्री बलाइन वंशीय श्री सूर्यकर ठाकुरक अध्यक्षता आ विशेष-प्रवन्धक अभ्यन्तर अपने-अपने वर्णक पञ्जीकार द्वारा करौलैन्ह जाहि में मैथिल कर्ण कायस्थक पाँजि हुनके द्वारा नियुक्त प्रथम पञ्जीकार सीसव वंशीय श्री शंकर दत्त (मल्लिक) द्वारा तैयार कराओल गेल छल जे आदि-पञ्जी भेल। ई बात आ पञ्जी निर्माण सम्बन्धी अन्यान्य बात हम सन् १९५९ ई. में भच्छीक "चतुरानन पुस्तकालय" में श्री रास विहारी लाल दास कृत "मिथिला दर्पण" आ अन्यत्रो किछु आनो आन पुस्तक पढ़ि बूझि सकलहुँ। किन्तु पञ्जी निर्माणक परम गूढ़ तत्व आ तथ्यक निर्णय त प्रायशः आ सम्भवतः प्राग्वैदिके युगक थीक। ओ एना जे हिन्दू विधि-अनुशासन-प्रणालीक संस्था (Hindu Schools of Law) दू टा छल आ औखन अछि, पूर्ण रूपे प्रचलित। एक टा थीक "**दायभाग**" आ दोसर "**मिताक्षरा**"। 'दायभाग' क लेखक छलाह परम तत्वज्ञानी श्री जीमूतवाहन जनिकर पूजा जितिया पावनि मे होइत छैन्ह। 'मिताक्षरा' क लेखक छलाह परम तथ्य-प्रज्ञ श्री विज्ञानेश्वर। हमरा लोकनि "**दायभाग**" स अनुशासित (Governed) छी। पश्चात् कर्मकाण्डक आधार पर एहू में दू भाग (Division) भऽ गेल - एक टा "**बाजसनेयी**" आ दोसर "**छान्दोग**"। हमरा लोकनि "बाजसनेयी" स अनुशासित (Governed) छी।

हमरा लोकनि में दू टा मिश्रित (Compound) शब्दक प्रयोग विशेष प्रचलित अछि आ ओ थीक "**देयाद-बाद**" किन्तु एहि दून शब्दक परिभाषा जननिहार आ कहनिहार लाख में एको लोक नहिं भेटताह समाज में। 'दाय' आ ताही स बनल 'दायित्व' शब्दक व्युत्पत्ति प्रायः एके। दाय माने अपन (अर्थ ई जे अहाँक दायित्व हो जिनका लोकनि पर आ जनिका लोकनिक दायित्व हो अहाँ पर) आ भाग माने अंश - जे थीक हिन्दू विधि-अनुशासन-प्रणालीक संस्था "दायभाग"क अनुसार "सात पीढ़ी (Seven Generations)" अर्थात् अपन पीढ़ी-दर-पीढ़ी में स अपना स ऊपर पिता सहित "सात पीढ़ी" तक कें "अपन अंश" ("दायभाग")

मानल गेल अछि जनिका "**दायाद**" कहल जाइछ जकरे मैथिलीकरण "**देयाद**" थीक जकर अपभ्रंश "**दियाद**" कहैत छियैक। श्राद्ध में द्वादशा दिन घाट पर खोपड़ी में जे 'सपिण्डीकरण' होइछ ताहि स ई बात विशेष स्पष्ट होइत अछि। उपरोक्त सात पीढ़ी कें मिला क मात्र एक टा पैघ पिण्ड कनेक लम्बा जकाँ वनैत छैक जकरा 'पिण्ड श्लाका (Deviding Instrument)' ल क बीच में भाँगल जाइत छैक। बिचला (विदीर्ण) स्थान (Gap) में जिनकर श्राद्ध होइत छैन्ह तिनकर अपन एक टा छोट पिण्ड राखि, आ तखन सब के मिला क एकाकार क क फेर पहिलुके जकाँ एके टा बड़का पिण्ड बनि जाइत छैक (सात पीढ़ीक)। किन्तु जैखन छोटका पिण्ड बड़का में स्पर्श भेल कि ओ संख्या में सात स 'आठ (पीढ़ी)' होइते, ऊपर स एक टा पीढ़ी आप-स-आप '**बाद**' (याने Exempt) भऽ जाइछ जकरे कहैत छियैक '**बाद**' आ सेएह भेल "**देयाद**"-आ-"**बाद**" अर्थात् "**देयाद-बाद**"। वैवाहिक सम्बन्ध में जे अधिकारक जाँच होइछ से स्पष्ट ओएह थीक जे सात पीढ़ी ('देयाद') तक में ज कतहु-कनेको स्पर्श होइत अछि त बूझू जे अधिकार नहिं भेल अर्थात् 'अनाधिकार' भऽ गेल किन्तु यदि सात पीढ़ी स वृहत (फ़ाजिल अर्थात 'बाद') में स्पर्श भेल त तखन अधिकार होयबा में कोनो भाङठ नहिं, तैं अधिकार भऽ गेल। इएह मोट गणित छैक, कोनो मेंहीं नहिं। पश्चात जा क पुराण, स्मृति आ आनो आन अनेकानेक कर्मकाण्डक ग्रंथ-श्लोकादि बना-बना क एहि में कतिपय परिवर्तन अवश्य कयल गेल अछि किन्तु तकर आधार एकदम अवैज्ञानिक थीक आ फेर ओएह बात जे शुद्ध क स्वार्थवश आ धन्धावाजी में कयल गेल अछि जे पञ्जी प्रथाक आविर्भावक इतिहास पढ़ला स पूर्णतया स्पष्ट भऽ जाइछ।

आब ई सात पीढ़ी (दायभाग (अपन अंश)-"दायाद") क स्पष्टीकरण बूझू। 'सपिण्ड'क अर्थ अछि एके पिण्ड अर्थात् एके शरीर वला अर्थात् 'देयाद' अर्थात् एके शोणितक लोक सब (Consanguineous)। पिता आ पुत्र सपिण्ड छथि कारण पितेक शोणित पुत्र में अबैत छैन्ह। पितामह-प्रपितामह से हो हमर सपिण्डे छथि कारण जे हुनके शोणित स

हमर शरीर बनल अछि। एके पिता, पितामहक सन्तान अपना पितर लोकनि कैं श्राद्ध में पिण्ड अर्पण करैत छथि तैं ओ लोकनि सपिण्ड छथि। तैं जहिना समगोत्र आ समप्रवर में विवाह नहिं करबाक विधान 'भावनात्मक (Emotional)' अछि तहिना उपरोक्त सपिण्ड में अपना स ऊपर सात पीढ़ी ('देयाद') तक में विवाह नहिं करवाक विधान 'भावनात्मक' के संगहिं संग 'प्रजननिक (Eugenic)' से हो अछि। एवं प्रकारे विचारि क देखल जाय त उक्त 'प्रजननिक दृष्टिकोण (Eugenic point of view)' पूर्ण रूपेण वैज्ञानिक (Medical Scienceक) आधार पर अछि।

ओना त वहुत पूर्वहिं स "समरथ के नहिं दोष गोसाईं"-हिन्दू समाज में सपिण्ड विवाह (Consanguineous marriages) नहिं होइत आयल अछि से बात नहिं किन्तु ओ 'समरथ'-लोकनि हिन्दू धर्मशास्त्रक क्षेत्रक लोक सब छलाह। ओ लोकनि कतबो आगि लघी कैलैन्ह त हुनका लोकनि कैं छजलैन्ह आ समाज मान्यता देलकैन्ह किन्तु जँ हमरा लोकनि ओना करी त साँझक-पराते समाजक लोक सब मिलि क 'हरी में ठोकि देत'। एहि तरहक अनर्गल कैनिहार लोकनिक किछु उदाहरण लिय :- अर्जुन सुभद्रा सँ विवाह कैलैन्ह। सुभद्रा अर्जुन के मामाक कन्या छलथिन्ह जनिका सँ वीर अभिमन्युक उत्पन्न भेलैन्ह। अर्जुन आ सुभद्राक विवाह ममियौत भाई-बहिनि (Maternal cross cousins)क विवाह छल। (स्वयं विष्णु) श्री कृष्ण रुक्मिणी सँ विवाह कैलैन्ह, ओहो हिनका ममेक कन्या छलथिन्ह। श्री कृष्णक बालक प्रद्युम्न अपन ममेक कन्या रुक्मावती सँ विवाह कैलैन्ह। श्री कृष्णक पोता अनिरुद्ध अपन ममेक कन्या रोचना सँ विवाह कैलैन्ह। परिक्षितो अपन ममेक कन्या इन्द्रावती स विवाह कैलैन्ह। श्री कृष्ण अपन पिताक बहिनिक कन्या अर्थात् पिसियौत बहिन (Paternal cross cousions) मित्रविन्दा तथा भद्रा सँ से हो विवाह कैलैन्ह। सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध)ो अपन ममेक कन्या यशोधरा सँ विवाह कैलैन्ह। पृथ्वीराज चौहान अपन मायक बहिनिक पोती संयुक्ता सँ विवाह कैलैन्ह। दक्षिण भारत में मामाक कन्या सँ विवाह करवाक मात्र प्रथे नहिं छल प्रत्युत् भगिनी सँ

विवाह करव उत्कृष्ट बूझल जाइत छल। कर्णाटक तथा मैसूर में ब्राह्मणों में मामाक कन्या स विवाह करवाक प्रथा अछि। मद्रासक वेलम जाति में अपन भगिनी स आओर तेलगू तथा तमिल ज़िला सब में शूद्र तथा ब्राह्मणों में अपना सारिक कन्या सँ विवाह भऽ जाइत छैक। सम्भव थीक जे दक्षिण में सपिण्ड-विवाह होयवाक कारण "मातृ-सत्ताक-परिवार (Matriarchal Family)"क प्रथा होइक। मुसलमान में परम निकट सम्बन्धी में विवाह होइत छैक।

एतवा सब किछु होइतो एके शोणितक सम्बन्धी में विवाह होयब हितकर नहिं। ऋषि दयानन्द लिखित संस्कार विधि में निरुक्त (३, ४)क उद्धरण अछि 'दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवति' अर्थात् कन्या कैं "दुहिता" कहले एहि हेतु जाइत अछि जे दूरे में विवाह भेला में ओकर हित छैक। दूरक अर्थ होइछ-दूर देश में, तथा अपना निकट के सम्बन्धी में नहिं भ क दूरक लोक में हो। संस्कार-विधि में लिखल छैक जे जावत तक दूरस्थ कुल के साथ सम्बन्ध नहिं हो तावत तक शरीर आदिक पुष्टियो पूर्ण नहिं होइछ। ई बात प्रजनन-विज्ञान (Science of Eugenics)ो द्वारा पुष्ट पाओल गेल अछि। (कृपया पढ़ू (१) विद्यामार्तण्ड डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (संसद-सदस्य तथा उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) रचित ग्रंथ "संस्कार-चन्द्रिका" (प्रकाशन संशोधित संस्करण, २००० ई०) में 'विवाह संस्कार - विवेचनात्मक भाग (ग)' में 'खण्ड 2. बहिर्विवाह - गोत्र, प्रवर, सपिण्ड, में विवाह का "निषेध" (पृष्ठ संख्या 365 स 368)' आ (२) श्री कमलाकर भट्ट रचित ग्रंथ "निर्णय सिन्धुः" (अनुवादक म०म० श्री व्रजरत्न भट्टाचार्य - रिप्रिन्ट २००६ पृष्ठ संख्या ४७२-७३ आ ४८१-४८९)।

आब किछु पञ्जीक बूझू जकरा "**पाँजि**" कहैत छियैक। आम मैथिल कर्ण कायस्थ लोकनिक धारणा छैन्ह जे पाँजियेक आधार पर समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज दू भाग में बाँटल छथि। 'भलमानुष' आ 'गृहस्थ'। किन्तु से सही नहिं। सदाचारक सतत प्रयोग स लोकक

चरित्र निर्माण होइत छलैक। चरित्र-बल स लोकक व्यक्तित्व निखरैत छलैक आ ताही स ओ समाज में सम्मानित होइत छल आ प्रतिष्ठा आ मर्यादा अर्जित करैत छल; प्रायः ई बात औखन मान्यता प्राप्त अछि (यद्यपि व्यावहारिक जीवन में सम्प्रति एकर बहुत अभाव देखल जाइछ)। पँजी प्रथाक आरम्भ में एही अवधारणा पर आधारित उपरोक्त प्रतिष्ठित ओ मर्यादित व्यक्तित्व के 'भलमानुष' कहल गेल आओर जिनका आचरण में सदाचारक अभाव पाओल जाइत छल तिनका 'गृहस्थ'। एकर अर्थ ई नहिं जे 'गृहस्थ' अस्पृश्य छलाह आ छथि। एहि अवधारणा के 'गोत्र', 'प्रवर', 'मूल', 'डेरा' आ 'वास' स कोनो सम्बन्ध ने छल, ने अछि, ने कहियो होयत, ई सुस्पष्टतः बूझि लेवाक थीक। एकर सम्बन्ध जँ छैक त मात्र लोकक 'आचरण' आ 'व्यक्तित्व' स आ इएह महत्वपूर्ण बात थीक। पाँजि में कोनो मूलक संग ने 'भलमानुष'क जिकिर अछि ने 'गृहस्थ'क। एहि अवधारणा में समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज कैं अटूट आस्था छलैक पँजीक आदि स ल क लगभग साढ़े पाँच सै वर्ष स किछु बेसी तक आ वैमनस्यताक त कोनो बाते ने छल। भलमानुष लोकनिक सम्पत्तिक आधिक्य, प्रभुत्वक गौरव (अभिमान), शालीनताक परित्याग, गम्भीर चिन्तनक अभाव आ अविवेकपूर्ण बोल-व्यवहारक कारणे तथा **पञ्जीकार लोकनिक सहभागिता** स ई दूनू शब्द एक दोसर के विरुद्ध वैमनस्यताक प्रतीक बनल। जतय भलमानुष लोकनिक पूर्वक उक्ति छल "अहा ! कुटुम्बक घरक बात थीक, कोनो रूप में कोना टारल जाय" वा "कुटुम्ब दरवजा पर अयलाह अछि, हुनक प्रस्ताव के कतहु अस्वीकार कयल जाय !", आदि, तहीं एकर विपरीत लगभग डेढ़ सै वर्ष पूर्व सँ हुनका द्वारा बाजल एहनो कथा किछु ठाम सूनल गेल जे "अमुक व्यक्ति 'गृहस्थ' छथि, हुनका जल स त हम लघी तक नहिं कऽ सकैत छी, सम्बन्धक कोन बात" आ इएह बात हिनका लोकनिक पतन के कारण बनल। 'गृहस्थ' क जल स लघी करवाक कोन बात जे आब त 'अपनो (अर्थात् भलमानुष)' जल स लघी नहिं करैत छथि बल्के बिनु जले लघी करैत छथि से हो 'भलमानुष' जकाँ **बैस क नहिं** प्रत्युत् '**ठाढ़े-ठाढ़े**' जाहि में अपने पर किछु छिटको पड़वाक

सम्भावना रहैत छैक। एहि स बढ़ि अधः पतन की हो ! एहन अविवेकपूर्ण आ वृथा बात बाजव कियैक ! चाणक्यक "पंच तन्त्रम्" क 'मित्र लाभ' में लिखित एक रचना मोन पड़ैछ "यौवनं धन सम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता, एकैकमप्यऽनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्"। चुँकि भलमनसाहतक परित्याग में स्वार्थवश **पँजीकार लोकनिक सहभागिता** (मिली भगत) छलैन्ह, आम लोकक धारणा बनैत गेलैक जे पाँजिये में एहि विद्वेष आ वैमनस्यताक सुत्र छैक।

भलमानुषत्वक पतन (संगहिं पाँजियोक) तहिना भेलैक अछि जेना स्वयं 'हिन्दू' द्वारा 'हिन्दुत्व' क पतन भेलैक। हिन्दू सब बूझय लगलाह जे हिन्दु**त्व** (Hindu**ism**) स बढ़ि क कोनो आन ....त्व (...ism) छैहे नहिं आ ताही मद में हिन्दुत्व के ततेक कलंकित कैलैन्ह जे 'मस्ज़िदे' के ढाहि देलैन्ह जखन कि हिन्दूक कोनो धर्म-शास्त्र में ई नहिं छैक जे '**आन धर्मक अपमान कयल जाय**'। ततवे नहिं, 'हिन्दुत्व'क पतन के एक आओर प्रमुख आ महत्वपूर्ण कारण भेलैक जे अनेक जाति, जे हिन्दू छथि, किन्तु हमरा शरीर में नहिं भिड़थि, हमरा इनार पर जल नहिं भरथि आ ने हमरा देवताक मन्दिर में प्रवेश करथि। आब कहू जे एहि स बढ़ि क विडम्बना की हो; ओ जाति सब तखन हिन्दू कोना भेल! तहिना तथा कथित 'गृहस्थो' त हमरे शोणित आ हमरे जाति छथि, तखन हुनका संग कोनो अनुचित व्यवहारक की औचित्य! की कहू, कतेक कहू, ककरा कहू !

बहुत गोटाक अनुमान छैन्ह जे चौदह मूल यथा बलाइन, वीअर, शीशव, कोठीपाल, नरंगवाली, पकली, बत्तिकवाल, महुनी, माण्डिछ, वसन्तपुर, अठहर, गढ़कव, ओए आ गढ़निधि 'भलमानुष (बड़का अर्थात् उच्च मूल)' छथि। तहिना चौदहो मूलक जे बत्तीस टा डेरा से पैघ (नीक) गाम भेल यथा बलाइनके सप्ता आ मधेपुर; वीअर के केउटी, तारलाही, मुर्तुज़ापुर, दड़िमा, कहुआ, डखराम, रनवे, बहादुरपुर, बहेड़ा, आहिल, खेराजपुर, धेरुख, बरहेता, पघारी ओ हावी भौआर; शीशव के मेहसारि आ लोहना; कोठीपाल के हिरणी आ राघोपुर; नरंगवाली के

आसी आ सुपौल; पकली के कृष्णपुर; बत्तिकवाल के सनकोर्थु; महुनी के नडुआरी; माण्डिछ के सुपौल; वसन्तपुर के जोंकी; अठहर के सुन्दरपुर; गढ़कव के सिमरा; ओए के लौफा आ गढ़निधि के खनाम आओर बाकी जे कोनो 'डेरा' वा 'वास' से 'छोट' अर्थात् निम्न कोटिक गाम भेल किन्तु से सर्वथा 'भ्रम' आ 'असत्य' थिक, कदापि सही नहिं थीक। क्यौ व्यक्ति कोनो पञ्जीकारक कोनो मूलक पाँजि में ई बात लिखल देखा सकैत छथि ? कदापि नहिं! की एही बत्तीस गामक लोक 'बत्तीस गाम परिचय' वला कहौताह, बाकी नहिं ? कदापि नहिं। एहि धारणाक मूल, सटीक आ स्पष्ट कारण हम उपरे लिखि चुकल छी। आओर स्पष्टीकरण लिय। एकर निर्धारण वा मूल्यांकन, जे कही, तेना नहिं होइत छल। प्रत्युत् एकर आधार होइत छल 'मूल', 'डेरा', 'वास' आ **'व्यक्ति'** ई चारु वस्तु। से कोना त एक गोटाक परिचय होइछ आठ घर (चारि घर 'पितृपक्ष' आ चारि घर 'मातृ पक्ष')। एहि आठो घरक यदि उक्त चारू वस्तु ठीक-ठाक त आठ चौक बत्तीस अर्थात् 'बत्तीस गाम' परिचय वला भेलाह। तहिना '**बतिसगामा**' शब्दक आइ-काल्हि धड़ल्ले स दुस्प्रयोग भऽ रहल अछि जखन कि एहि शब्दक अर्थ आ गरिमाक ज्ञान एखनुक तथा कथित कोनो पञ्जीकार के नहिं छैन्ह। इ 'बतिसगामा' कहौनाइ ततेक कठिन, दुस्साध्य आ दुर्लभ बात छलैक जे ओहू युगक समाज में विरले क्यौ-क्यौ कहवैत छल। क्यौ 'बतिसगामा' कोना होइत आ कहवैत छल से बूझू। चारि पीढ़ी (प्रपितामह, पितामह, पिता आ अपने) में स यदि (उपरोक्त 'मूल', 'डेरा', 'वास' आ **'व्यक्ति'** आधारित) बत्तीस गाम 'परिचय' वला प्रपितामह भेलखिन तकरा पश्चात् पितामहो भेलखिन, तकरा पश्चात् पितो भेलखिन आ सौभाग्यवश अपनहुँ भेला त ओ **'अपने (स्वयं)' 'बतिसगामा'** भऽ गेलाह आ कहा गेलाह कारण जे हिनका 'तीन' पीढ़ी उपरे स बत्तीस गाम परिचय वला होइत एलखिन अछि किन्तु तैं फेर 'पिता', 'पितामह' आ 'प्रपितामह' 'बतिसगामा' नहिं कहौथिन्ह। कहू जे ई केहेन दुस्साध्य आ दुर्लभ बात छलैक।

यथार्थ में एहि दोषपूर्ण अवधारणा ('भलमानुष' आ 'गृहस्थ') क, जे एक मात्र धोखा थीक, एक प्रमुख कारण ई हो भेल जे पाँजिक आदि में एही चौदह टा मूल आ बत्तीस टा डेरा लिखल गेल तकरा बादे आन-आन मूल आ डेरा। किन्तु एकर सही आ यथार्थ कारण ई छैक जे कर्णाटक स सर्व प्रथम राजा नान्यदेवक संग चौदह गोटा (दीवान Administrator) अयलाह, दोसर खेप में तीस गोटा तेसर खेप में अस्सी गोटा आ तकरा बाद चारिम स ल क नौ खेप में कुल मिला क लगभग पौने छौ सै व्यक्ति स किछु उपरे मिथिला अयलाह। पञ्जी बननाइ आरम्भ भेल त जहिना-जहिना ई लोकनि अबैत गेल छलाह तहिना-तहिना हिनका लोकनिक विवरणों पाँजि में लिखल गेल। एकर विपरीत आओर कोनो जे अवधारणा से अतार्किक, अर्थहीन, आधाररहित आ निरर्थक अछि जाहि बात के गम्भीरता पूर्वक चिन्तन क क पूर्णतया आ स्पष्टतया बूझल जाय।

राजा श्री नान्यदेवक संग कर्णाटकक जाहि गाम स श्री श्रीधर {प्रधान आमात्य (मन्त्री)} सहित जे अन्य तेरह (मन्त्रीगण) व्यक्ति आयल छलाह ताहि गाम के पाँजि में **"मूलग्राम (मूल"/वंश)** क संज्ञा देल गेल आ उक्त ऐनिहार लोकनि कैं ओहि वंशक **"बीज पुरुष (मूल पुरुष)"** कहल गेल। ई 'बीज पुरुष (मूल पुरुष)' लोकनि तत्काल मिथिलाक जाहि गाम सब में रहैत (वसल) छलाह ताहि गाम सब के पाँजि में "**डेरा**" क संज्ञा देल गेल आ पञ्जी निर्माणावधि में जे लोकनि डेरा छोड़ि आन गाम में जा वसलाह ताहि गाम के "**वास**" कहल गेल। पञ्जी निर्माणोपरान्त जे लोकनि वासो छोड़ि अन्यत्र जा वसलाह से गाम '**हाल वास**' कहौलक जे औखन तक कतिपय परिचय में लिखल जाइत अछि। गत छप्पन वर्षक कठिन परिश्रम आ प्रयास कैलो पर हम सव मूलक **"बीज पुरुष (मूल पुरुष)"** क नाम जुटा पयवा में समर्थ नहिं भऽ सकलहुँ। जतेक एकट्ठा भऽ सकल से निम्नलिखित अछि :-

मूल	बीज/मूल पुरुष	मूल	बीज/मूल पुरुष
अठहर	चिन्तामणि	गढ़निधि	शिवनिधि
अहर	श्रीपति	गढ़पाल	सृष्टिकर
आदित्यपुर	रतिकर	गढ़मान	भवदास
ओए	हरिहर	गढ़वीअर	देवीदास
कर्ण तीर्थ	मतीश्वर	गम्हरिया	चन्द्रकर
कनकपाल	श्रीकण्ठ	गुणचौली	शिवदास
कपरौती	ग्रहेश्वर	गोन्दवार	विष्णुकर
कुण्डाम	भवदास	गौड़ापाल	रहस्पाणि
कुरहो	नारायण	गंगापाल	शम्भु दास
कूजी	प्राणपति	गंगापुर	हृदयेश्वर
केवटाइ	प्रीतिकर	चकेसरिपाल	श्रीपति
केओटालुह	जयकर	चनौर	कृष्णकर
केउटी	श्रीराम	चम्पारण	हरदत्त
कोचौत	शशिधर	जालय	रतिकण्ठ
कोठीपाल	प्रभाकर	झड़का	नरसिंह
कोपाल	महेश्वर	टभका	शंकर
खजुरी	देवीदास	ठकठोर	भगीरथ
खनगाँव	यज्ञेश्वर	ढोसा	सारंगधर
खरथुआ	हरिहर	ततैल	गंगादास
खलकियापाल	योगीश्वर	तरिसम	प्राणपति
खोखसपाल	श्रीकर	तरौन	जगदीश्वर
गढ़कव	विश्वनाथ	तिरौत	जगद्धर

मूल	बीज/मूल पुरुष	मूल	बीज/मूल पुरुष
तिलाठी	रूपकर	पश्चिम	धर्मकर
थरिया	लोकनाथ	पातो	विश्वकर
दिपतिपाल	काली दास	पिण्डारूछ	कृष्णदास
देपुरा	माधव	पिपरा	पौखू
देवरजका	जीवधर	पिहवाल	कान्हू
धनखोरि	हरिकर	पींढ़ा	देवीदास
धामपुर	कलाधर	पिड़हरि	रतिनाथ
नडुआल	भोगीश्वर	पुतीस	विश्वम्भर
नरसिंहपुर	मणिकर	पोखराम	प्राणधर
नरंगवाली	श्रीकर	पौराम	कशो दास
नवहथ	रत्नपाणि	पंचरूखी	सुर्य्यकर
निधाम	मानदेव	पंचहरा	हलधर
नोनौर	प्रज्ञापति	बत्तिकवाल	श्याम
नौगाम	जीवदत्त	माणिछ	श्रीपति
पकली	पुण्यकरदेव	मोहनी	सलखनदेव
पकौली	मानदेव	लोआम	लेखिराम
पण्डौल	योगेश्वर	वचोला	केशव
पथरपाल	सर्वकर	वलाइन	लक्ष्मीकर
पद्मपुर	रहस्पाणि	वसन्तपुर	रतिकर
परसाद	जयदेव	वीअर	रत्नदेव
परड़ी (पड़री)	रविकरि	सरदी	विभाकर
परासी	ज्ञानपति	सीसव	देवी

समस्त मिथिला (अर्थात् समस्त नेपाल) आ बिहार (अर्थात् भारत) में भागलपुर, सहरसा, पुर्णिया, मुंगेर, बेगूसराय, समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, मुज़फ़्फ़रपुर, वैशाली, मधेपुरा, सुपौल, इत्यादि) में मैथिल कर्ण कायस्थक सैकड़ों-सैकड़ों गाम अछि। पञ्जी-प्रवन्धान्तर्गत छोट-स-छोट आ पैघ-स-पैघ क्षेत्र आ इलाका में पञ्जीकार होइत छलाह । प्रत्येक पञ्जीकार कें अपना-अपना इलाका में किछु संख्या में गामक भार बाँटल छलैन्ह । ओ लोकनि प्रत्येक तेसर वर्ष (Every alternate year) अपना क्षेत्रक प्रत्येक गाम में क्रमवार जा क शिविर (Camp) करैत छलाह । कर्ण कायस्थक जनसंख्याक अनुसार कोनो गाम में पाँच दिन, कोनो गाम में पन्द्रह दिन, कोनो गाम में एक मास त कोनो गाम में डेढ़ मासक शिविर होइत छलैन्ह जतय अपना सब मूलक पाँजि ल क जाइत छलाह आ बीच गाम में कोनो दरवजा पर अपन बैसार करैत छलाह। भरि दिनक काज की होइत छलैन्ह त ओहि गामक प्रत्येक परिवारक मुखिया के बेराबेरी बजा क हुनका स पूछि-पूछि क जे गत डेढ़-दू वर्ष में अपनेक परिवार में किनका-किनका बालकक जन्म भेलैन्ह अछि आ किनका-किनका बालकक विवाह कोन गाम में किनका कन्या स भेलैन्ह अछि, से परिवारक प्रत्येक व्यक्तिक पाँजि में लिखि लैत छलाह । तहिना किनका-किनका कन्याक विवाह कोन गाम में किनका बालक स भेलैन्ह अछि से हो लिखि लैत छलाह। एवं प्रकार मिथिला भरिक सब गाम आ परिवारेक नहि प्रत्युत् प्रत्येक व्यक्तिक विवरण पाँजि में लिखा जाइत छल । आब बीचक जे वर्ष (अर्थात् Gap year) पड़ैत छल ताहि में पञ्जीकार लोकनिक सम्मेलन होइत छल जकर स्थान (Venue) खास क निर्धारित होइत छल लगभग "मैथिल कर्ण कायस्थ महा सभा"क परिसर स सटले परिसर में कारण जे महासभा में समस्त मिथिलाक पचासी-नब्बे वर्षक बूढ़-बुढ़ानुस पर्यन्त उपस्थित होइत छलाह जनिका लोकनिक द्वारा समाजक अनेकानेक समस्याक समाधान कयल जाइत छल। महासभाक अवधि तीन स पाँच

दिनक होइत छल किन्तु पञ्जीकार-सम्मेलन मास-स-डेढ़ मास तकक की जे तीनों मास तकक होइत छल । बूढ़-बुढ़ानुस लोकनि महासभा बिता क दू दिन आओर फ़ाजिल रुकैत छलाह आ ताहि में कोनो पञ्जीकारक ज एहि डेढ़-दू वर्षक अभ्यन्तर कोनो पाँजि स सम्बन्धित वा सामाजिक समस्या उपस्थित होइत छलैन्ह तकरा हुनका लोकनिक समक्ष रखैत छलाह । ओ लोकनि ओहि पर तर्क-वितर्क (Debate) ओ आपसी विचार-विमर्श क क अपन निर्णय सुना पञ्जीकार लोकनिक समस्याक समाधान करैत छलाह जे निर्णय अगिला महासभा में प्रस्ताव (Resolution)क रूप में पास होइत छल। बूढ़-बुढ़ानुसक उक्त निर्णय मानक लेल समस्त समाज खुशी-खुशी बाध्य होइत छल। ककरो कोनो मनोमालिन्य नहिं होइत छलैक। आब पञ्जिकार सम्मेलनक हाल सूनू। सब पञ्जीकार अपन-अपन सब मूलक पाँजि पाछाँ में ल क वृत्ताकार भ क सामियाना तर बैसैत छलाह । एक टा कोनो वयोवृद्ध पञ्जीकार सम्मेलनक सभापति बनाओल जाइत छलाह । जिनका वामा कात बैसल जे पञ्जीकार से अपन सब मूलक पाँजि अपना स वामा कात बैसल पञ्जीकार कैं द दैत छलथिन्ह हुनका अपना सब मूलक पाँजि में नोट करवाक हेतु । ओ अपन सब मूलक पाँजि में हिनक सब मूलक पाँजि स नोट क क अपन वामा कात बैसल पञ्जीकार के दऽ दैत छलथिन्ह हुनका अपन सब मूलक पाँजि में नोट करवाक हेतु। ओ अपन सब मूलक पाँजि में हिनक सब मूलक पाँजि स नोट क क अपन वामा कात बैसल पञ्जीकार के बढ़ा देथिन्ह नोट करवाक हेतु जे बेराबेरी सब पञ्जीकार द्वारा ओही क्रम में नोट होइत अन्त में पाँजिक मालिक जे पञ्जीकार तिनका ओआपस पहुँचि (भेटि) जाइत छलैन्ह । एही क्रम में फेर दोसर पञ्जीकार, फेर तेसर, चारिम, पाँचम आ सब पञ्जीकारक सब मूलक पाँजि स सब पञ्जीकार अपन सब मूलक पाँजि में नोट कऽ लैत छलाह । एवं प्रकारे प्रत्येक तेसरा वर्ष (Every alternate year) समस्त मिथिलाक सब पञ्जीकारक सब मूलक पाँजि अद्यतन (Uptodate)

भऽ जाइत छल । लाभ की होइत छलैक से गम्भीरता पूर्वक ध्यान दिय। एक गोटाक परिचय होइत छैक आठ घर - चारि घर पितृपक्ष आ चारि घर मातृपक्ष। पाँजि में परिचयक आठ घर के विवाहक गाम लगा क सोलह कॉलम (Column) में लिखल जाइत छैक। आब ज कन्यागत वरागत दूनू पक्षक अधिकारक जाँच हो त दूनू के परिचय के आठो घरक आठ-आठ घर अर्थात् आठ-अठे चौंसठि घर (अर्थात् एक सै अठाइस कॉलम) होयत। ई जे दूनू पक्षक पृथक-पृथक एक सै अठाइस कॉलम (अर्थात् दूनू पक्षक मिला क दू सै छप्पन कॉलम) जकरा उतेढ़ कहल जाइत अछि, अद्यतन (Uptodate) लिखल भेटि जाय त अधिकार क जाँच **परम सुलभ** आ ज एतेक में स एकोटा कॉलम त की जे एको टा नामोक त्रुटि रहय त उक्त जाँच **असम्भवे नहिं** प्रत्युत् **एकदमे असम्भव होयत** । जाँच त पूर्ण विवरणक उपलब्धे रहला स ने सम्भव? कि नहिं ? आ ज से सत्य त जहिया स पाँजिक अद्यतन भेनाइ आ केनाइ बन्द अछि तहिया स जतेक अधिकारक जाँच होइत अछि से हम अहाँ बुझैत छी जे पकिया जाँच भऽ रहल अछि, किन्तु ओ टोटल बोगसवाजी (ठकैती) थीक। बुझू जे अधिकार जाँचक नाम पर समस्त समाज पूर्णतया भठि रहल छी । एहेन भठफेर भऽ रहल अछि जे पाँजिक अवधारणाक आधार पर समस्त समाजक शोणित दुषित अर्थात् वर्णसंकरी भऽ रहल अछि जकर शुद्धिकरण (Purification) कतबो बालु गोबर गिड़ला स कोनो तरहे सम्भव नहिं ; बूझू जे समस्त समाज पतित भऽ रहल छी। तथाकथित पञ्जीकार लोकनिक दलील होइत छैन्ह जे "भलमानुषक अधिक गोटाक पाँजि हमरा लोकनि पूछि-पूछि क अद्यतन रखैत छी"। विचार करू, की ई सम्भव छैक ! दोसर जे मैथिल कर्ण कायस्थक एखुनका लाख-क-लाख जनसंख्या में पाँच सै वा हजार क पाँजि ज 'अद्यतनों' अछि त से कि कोनों माने रखैछ ? अस्तु ।

पञ्जीकार लोकनिक गामेगाम कैम्प (शिविर) केनाई, पञ्जीकार सम्मेलन आ महासभा हम दस-बारह बेर देखने छी बहुत छोट बच्चेक अवस्था स। आब त ई सब किछु होइते ने अछि। गत पैंसठि-सत्तरि वर्ष

(अर्थात् चारिम पीढ़ी) स ने कोनो पञ्जीकार कोनो गाम जा क कैम्प करैत छथि, ने एते दिन स कोनो पाँजि में विवरण जोड़ल जाइत अछि, ने मिथिलाक कोनो पञ्जीकारक कोनो मूलक पाँजि अद्यतन होइत अछि, त तखन त ई दुनियाँक आठम आश्चर्य थीक जे अधिकारक जाँच आ निर्णय कोना आ कोन आधार पर होइत अछि ! जाँच आ निर्णयक असली आधार त हम टटके एहि स उपरे देखौलहुँ अछि। धन्धावाजीक पद्धति कहैत अछि जे "गोआरेक कहने गाइक घी आ गोआरेक कहने महिषिक घी" से सर्वथा अकाट्य सत्य आ हमरा लोकनि एही पद्धतिक अधीनस्थ भ क रहि रहल छी। जखन समाजक सब गोटे '**मिथिलाक्षर (वैदेहि लिपि)**' लिखब-पढ़ब छोड़ि देलहुँ त पाँजि पढ़बै कोना, आ नहिं पढ़वै त बुझवै कोना ? तखन, आ तैं त पूर्ण रूपें पञ्जीकारे पर निर्भर छी आ रहैये पड़त । पाँजि दिश उनटि क एक बेर तकबै से सामर्थे नहिं । तखन त पञ्जीकार सही कि ग़लत जे कहथि सेएह सही मानि लेवय पड़त आ सेएह होइत अछि। हुनके कहने परिचय, उतेढ़, अधिकार आव गाइक घी होयत वा महिषिक। पहिलुको युग में हुनके कहने होइत छलैक, किन्तु ओहि युग में ओ अपना कार्य में जेहने परम दक्ष होइत छलाह तेहने कर्तव्यनिष्ठ आ पाँजियो बारहो मास अद्यतन रहैत छलैन्ह। ततवे नहिं लोक अपनो पाँजि देखि क दिलजमै कऽ लैत छल।

गामे-गाम कैम्प करत के ? सब पञ्जीकार लोकनि (तीन-चारि पीढ़ी स) गद्दी-नशीन भऽ गेलाह । क्यौ लहेरिया सराय सैदनगर काली मन्दिर पर, क्यौ लहेरिया सराय कन्हैया मिश्र पोखरि शिव मन्दिर पर, क्यौ लहेरिया सराय धर्मशाला में, क्यौ दरभंगा किलाघाट पर, क्यौ मधुबनी पुरना पोस्ट ऑफिस में, क्यौ मधुबनी शंकर मन्दिर में, क्यौ मधुबनी बाबू साहेब डेउढ़ी पर त क्यौ समस्तीपुर चैता-रेवाड़ी चौक पर । सिंहासन छोड़ि क गामे-गाम एहि रौद-बसात, वर्षा-जाड़ में के जाओ ? ताहि स विपरीत आ पृथक बात जे गत साठि-पैंसठि-सत्तरि वर्ष में जनसंख्या में जे अजस्र वृद्धि भेल अछि ताहि आधार पर हम की कहब, अहूँ के मानय में कोनो आपत्ति नहिं होयत जे समस्त मिथिला में

जनसंख्या-वृद्धिक आधार पर अस्सी, नब्बे लाख स बेसिए चरण (Items)क प्रवृष्टि (Entry) पाँजि में नहिं भेल अछि (Missing अछि; Wanting अछि) जे होयब आब दुनियाँक कोनो दैवियो शक्ति स सम्भव नहिं कारण जे कोनो गाम में आब ओहोन कोनो बूढ़ जीवित बचले नहिं छथि जे सौंसे गामक सब परिवारक चारि-पाँच पीढ़ीक नाम लिखा सकताह । अस्तु, ई कहब आब अतिशयोक्ति नहिं जे "**पाँजि आब डूबि गेल सदा सर्वदा क लेल**" । **एकर सर्वनाश भै गेलैक** ! आब एहि स सम्बन्ध रखबाक कोनो तुक नहिं आने कोनो अर्थ ! साँप बहुत पहिनहिं निकसि गेल; हमरा लोकनि मात्र बाट पड़क चेन्ह के पीटि रहल छी केवल अज्ञानता वश (ना जानकारी में) जे साँप मारि रहल छी । ई भेल पाँजिक जीवनी ।

आब पञ्जीकारक सूनू । पञ्जीकारीक पढ़ाई दस वर्षक विश्वविद्यालय कोर्स (Course) छल । सात वर्ष 'चलंत', 'ढोअंत' आ 'रटन्त' । सिद्धहस्त पञ्जीकारक चेला बनि गामे-गाम विचरण करैत रहू, हुनकर मूल-मूलक पाँजि ढोइत रहू आ दिनमपि रजनी सायंप्रातः शिशिर बसंतौ पुनरायातः प्रत्येक वंशक बीज-पुरुष स पच्चीस पुश्त नीचा तक के सब सखा-शााखाक नाम रटैत रहू । तकरा बादक दू वर्ष तक अहर्निश पाँजि पढ़ू, परिचय लीखू, उतेढ़ उतारु, अधिकार जाँचू, आदि-आदि, से हो एक-स-दू सिद्धहस्त पञ्जीकारक मार्ग दर्शन में । तकरा बादक अन्तिम एक वर्ष स्वयं व्यक्तिगत रूपे पञ्जीकारीक व्यावहारिक अभ्यास करू एक परम सिद्धहस्त पञ्जीकारक संरक्षण, पर्यवेक्षण आ निर्देशन में । तकरा बाद एगारहम वर्ष में परीक्षा दिय, पास करू आ तखन पञ्जीकार कहाउ (जेना नायबगिरी स आरम्भ क क आधा वयस बितलाक बाद पटवैरिकी हासिल करैत छल लोक) । बारहम वर्ष में विशेष परीक्षा (Honours Course) पास करू त प्रमाण-पत्रक संग विदाइ में धोती, मिर्जै, पाग, डोपटा भेटत आ तखन "धौत–परीक्षोत्तीर्ण" पञ्जीकार कहायब । हमरा हिसाब स सम्प्रति "धौत–परीक्षोत्तीर्ण" त की, जे परीक्षो पास कयल एकोटा पञ्जीकार जीवित नहिं छथि । अन्तिम व्यक्ति श्री श्यामसुन्दर दास (सिमरा) छलाह, जे

आब ओहो नहिं छथि । एतेक टा मिथिला में ज कतहु एक-दू गोटे जीवितो होयताह त प्रत्यक्ष नहिं आ ने कारगर ।

विडम्बना देखू, कोनो पञ्जीकार मरि गेलाह, हुनका घर में हुनकर पाँजि पड़ल छैन्ह, त कि हुनकर कोनो बालक के पञ्जीकार कहय लगियैन्ह? यदि सेएह त दरोगा जीक मरि गेला पर हुनका बालक के दरोगा जी कहियौन्ह कारण हुनका घर में बाप वला वर्दी (Uniform) त राखल छैन्ह । जखन पाँजि आ पञ्जीकार नहिं रहलाह तखन त ई अत्यन्त हास्यापद बात थीक जे मात्र पाँजि घर में रहने स्वर्गीय पञ्जीकार क बालक के पञ्जीकार मानि रहल छी जनिका पाँजिक कोनो ज्ञाने नहिं। अहू स वेसी हास्यास्पद बात त ई थीक जे हमरा लोकनि अपना जेबी स पाइ खर्च क क उक्त कथित पञ्जीकारक कोतय जा, अपन पाइ हुनका द क हुनका द्वारा 'बूड़ि' बनैत छी किन्तु दावा ई करैत छी जे हम बुद्धिजीवी छी । वाह रे बुद्धिजीविता ! हमरा लोकनिक बुद्धिजीविताक पराकाष्ठाक एक आओर उदाहरण एहने अछि। ओ ई जे एखन समाजक प्रत्येक व्यक्ति कहै छी जे हम पहिने कन्याक कथा करब तकर बादे वर (बालक) क कोनो बात । अर्थ ई भेल जे सबहक वर अपना-अपना घर में घेरल छथि आ मैदान (बज़ार) में मात्र कन्ये-कन्या छथि । तखन त एहि स्थिति में कोनो कन्याक विवाह कोनो कन्ये टा स होय सेएह सम्भव, कारण मैदान (बज़ार) में उपलब्ध त केवल कन्ये टा छथि । यदि नहिं, कोनो 'कन्याक' विवाह कोनो 'वरे' स होयत तखन त निश्चिते कोनो वरागत के अपना वर के उपरोक्त घेरा स बाहर क क मैदान (बज़ार) में आनहि पड़तैन्ह तैखन कोनो कन्याक विवाह हुनका संग होयब सम्भव हेतैन्ह अन्यथा **किनको कन्याक विवाह, कतइ नहिं, कदापि नहिं, आ कहियो नहिं हेतैन्ह !** की ? कहू, केहेन विडम्बनात्मक उदाहरण अछि ! ई तेहने विडम्बनात्मक जे "हाँ हाँ, हाँ, देखिकऽ चलू, एखने नें माँखि जैतहुँ" । माँखि गेनाइ एतेक अधलाह आ बीभत्स आ तखन समस्त मिथिलाक प्रत्येक माय अपना नेना के कहथिन जे "ई वस्तु एतबे अछि, तैं मखा-मखा क खाउ" ।

हम आशा करैत छी जे अपने कैं एहि बातक परिपक्व ज्ञान अवश्य भै गेल होयत जे "**ने आब अपना समाज में पाँजि रहि गेल आ ने पञ्जीकार क्यौ रहलाह**" । परिस्थिति एहेन विषम अछि जे सुनलौं जे एक दिन तथा कथित पञ्जीकार डेरा पर नहिं रहथि । हुनका अनुपस्थिति में पाँजिक ततेक अपमान भेल जे पानि पड़ैत आ तखन डेरा स बहार क क बीच सड़क पर फेकि देल गेल; ओ ओतय भीजय लागल आ ओकर लतखुर्दन होमय लागल । ई अपमान आ सेहो कि त 'धौत-परिक्षोत्तीर्ण'क पाँजि के । पश्चात् पता लागल जे पञ्जीकारेक अपने गलतीक (अपराधक) सजाय में पाँजिक ओतबा अपमान भेल । धन्य प्रो० सुरेन्द्र लाल (दास) कर्ण जी (महासचिव, कर्ण कायस्थ समिति, मधुबनी) जे उक्त पाँजि के माथ चढ़ा सम्मान देलनि आ पश्चात् पञ्जीकार के विधिवत प्रायश्चित्त करा, हुनका पुनर्वास करा, पाँजि के पुनर्प्रतिष्ठित कैलैन्ह आ स्वयं कायस्थ समाज में सुमर्यादित भेलाह । ई त स्थिति अछि सम्प्रति पाँजिक आ पञ्जीकारक । **एहि स्थिति में हमर विचार जे पाँजि-पञ्जीकारक लफड़ा के परित्याग क क मात्र 'सम-गोत्र', 'सम-प्रवर' आ 'सम-मूल' में वैवाहिक सम्बन्ध नहिं करी ।** हँ, एक बात बेसी नीक जे **"वर-कन्याक टीपनि (Horoscope)" अवश्य नीक जकाँ मिला लेल जाय जे हो पूर्णतः विज्ञान आधारित अछि जेना गोत्र, प्रवर आ मूल आ एहि तीनू के सम भेला पर वैवाहिक सम्बन्ध नहिं करी ।**

ने पाँजि रहलाह ने पाँजि-पालक, अर्थ ई जे **आधारे लुप्त भै गेल ।** तथापि हमरा लोकनिक ई दावी नहिं गेलै जे हम सोति (भलमानुस) छी आ ओ निम्न कोटिक (गृहस्थ) छथि । सैकड़ों गाम में जा क देखल जाय जे उक्त तथा कथित गृहस्थ लोकनि अपार शिक्षा (Adequate Education) अर्जित कैलैन्ह अछि, एक-स-एक उच्च पद पर पदस्थापित छथि, खूब धनों अर्जित कैलैन्ह अछि आ समाज में प्रतिपदो (मान-मर्यादा-प्रतिष्ठा; Means, Standing and Integrity) छैन्ह त कि आबो ओ गृहस्थ रहि गेलाह ? (कृपया पढू श्री योगेन्द्र नारायण मल्लिक

जी क विचार जयदेव पट्टी निवासी श्री सच्चिदानन्द लाल दास एवं श्रीमती शैल देवी लिखित पोथी "मैथिल कर्ण कायस्थक मूल-गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार" में पृष्ठ संख्या 26) । एकर विपरीत देखय में त इऐह अबैत अछि जे भलमानुसे लोकनिक संस्कार, आचार-विचार आ व्यवहार में पर्याप्त ह्रास भेल अछि । जकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि जे गत पन्द्रह वर्ष स समाज में जतेक विकृति आयल अछि से जँ नजरि दौड़ा क देखब त पायब जे अन्ठानवे प्रतिशत प्रकरण (घटना) भलमानुसे परिवारक थीक । विकृति ई जे वर अपना मोने कोनो जाति में विवाह कऽ लैत छथि जाहि में अपन निकट सम्बन्धोक यथा पितियौत, मसियौत, पिसियौत, ममियौत, बहिनि, भतीजी आ भगिनी तक के विचार नहिं रखैत छथि जनिका संग विवाहक हिन्दू मात्रे में परम 'निषेध' कयल गेल अछि । वर की, गत दश वर्ष स त कन्यो लोकनिक सेएह हाल छैन्ह । **आखिर कियैक** ? मात्र एहि हेतु जे अपना के सोति बुझयवला भलमानुस लोकनि बेटाक प्रति महत्वाकांक्षा (Ambitions) ततवे ऊँच, यथेष्ठ आ फैल स रखैत छथि जकरा अति महताकांक्षी कही, महत्वाकांक्षी नहिं । यथाः- (१) हे औ पञ्जीकार, हम बेटाक कथा एको पात कम नहि करब । (औ महराज, पात परिचय आ उतेढ़ अहाँ बुझवै-जनवै तखन ने ? एकर यथार्थ ज्ञान त एखुनका तथा कथित पञ्जीकारो के नहिं छैन्ह । (२) कन्या हमरा पूर्णिमाक चन्द्रमा सन चाही । (वरक माय कहथिन्ह जे नहिं, गे दाइ, चन्द्रमा में त दाग होइत छैक, हमरा त बेदाग चन्द्रमा सन कनियाँ चाही) । आब ई त अकरहरे भेल ने; आब पञ्जीकार बेदाग चन्द्रमा सन कन्या गढ़थु । (३) औ पञ्जीकार, कन्या बि.ए. स कम के त कोनो बाते नहिं, जे एम.ए. होथि, डॉक्टरेट (पीएच.डी.) कैने होथि, एम.बी.ए. होथि, Job में होथि त आओर उत्तम । (औ महराज, अहाँक परिवार नीक जकाँ देखल अछि आ समाजो के सब हाल बूझल छैक । ओहि में कचहरी चुकैवाक त काज नहिं छैक, तखन त एम.ए. वा एम.बी.ए. कनियाँ जे औती से त मात्र चुल्हिये-चेकी ने करती ? आ ज

Job में बाहर जाय देवैन्ह त वर्षे दू वर्षक अभ्यन्तर सौंसे समाज में स्वयं बायन बँटने घूरब जे ई बेटा-पुतहु स हमरा कोनो सुख नहिं ! एक लोटा जल देनिहार नहिं क्यौ ! पता नहिं, मरब त समय पर काठियो पड़त कि नहिं !); ककर दोष ? जानिये क जखन Job करयवाली पुतहु कैलहुँ अछि त ओ से करय लेल दिल्ली-बम्बई जैबे करतीह, अहाँ के लोटा में जल देबाक लेल गाम में त बैसल नहिं रहतीह । (४) पञ्जीकार, कन्याक पिता की करैत छथि, (अर्थात् गुदगर छथि कि नहिं; आर्थिक रूपें हमर घर भड़वा योग्य (सक्षम) छथि कि नहिं) ? क्रम एहेन जे बेटा जे जनमौने छी से समधिये (कन्यागते) क भरोसे! हुनके देल वस्तु सबहक उपभोग क क बेटा अपन समस्त जीवन जीताह ! अपने आ खास क बेटा त जेना लुल्ह, नाँगर, अपाहिज आ परम अकर्मण्य होथि जे कहियो किछु उपार्जन नहिं करताह आ ने परिवार-धियापुता डेबताह । ई गुदगर क प्रश्न करवा काल वरक पिता (अर्थात् महताकांक्षी सोति) अपन स्वाभिमान तक के विचार नहिं रखैत छथि जे आखिर कन्याक पिता के पता लगतैन्ह त हमरा एहि चरित्रक बारे में की सोचताह ! आखिर हम कुटुम्ब स कियेक कोनो वस्तुक अपेक्षा राखब, कियेक हुनकर कोंढ़ खखोरब ! वाह रे सोतित्व ! हाथी चारि पुश्त पहिनहिं मरल किन्तु सिक्करि गर्दनि में लटकौने छी जे "हम हाथीवला छी" ! रस्सी जरि क खाक भऽ गेल किन्तु "ऐंठन" नहिं गेलऽ । एही सब महत आकांक्षा (Ambitions) क पूर्ति होयबा में ततबा समय लागि जाइत छैक जे 'वर' आ 'कन्या' क वयस (Age) विवाहक उचित समय स बहुत फ़ाजिल (Duel स Overdue) भऽ जाइत छैक आ ओएह वर आ कन्या अनुचित डेग उठा लैत छथि (अर्थात् अपना मोने वा अभिभावक के बिन पुछने-कहने जँहितँहि विवाह कऽ लैत छथि) आ बाप-माय जन्म भरि समाज में अभिशापित आ सन्तापित जीवन बितैवा पर विवश रहैत छथिन्ह । अहाँ मानू चाहे नहिं किन्तु यथार्थ इएह थीक जे : "हमरा-आहाँक पूर्वज अबूझ नहिं छलाह । ओ बाल विवाहक समर्थक से हो नहिं

छलाह । समर्थ विवाहक समर्थक छलाह जकर वयस निर्धारित छल जकरा पाछाँ सूझ (सारभूत सिद्धान्त Rationale) छलैक जे गम्भीर चिन्तन पर आधारित छल । 'कन्या'क विवाहक वयस १२ स १६ वर्ष आ 'वर'क २१ स २५ वर्ष छल जे दूनूक हेतु मानसिक आ शारीरिक रूपें विकसित बुझले नहिं जाइत छल प्रत्युत् एकरा सामाजिक मान्यतो प्राप्त छलैक । एकरा पाछाँ एक आओर गम्भीर मान्यता छलैक जे उक्त समय पर विवाह भेने आ तत्समयानुकूल संतान भेने, ओ संतान पढ़ि-लिखि तैयार भ क उचित समय पर (अभिभावकक अवकाश प्राप्ति स किछु पूर्वहिं) अपना माय-बापक सहारा बनैत छलाह । आब ओएह माय-बाप फ़ैशन-परस्ती में, अत्यन्त माडर्न (Ultra modern) कहयबा में आ आन जाति आ समाजक देखा देखी कन्या आ बालकक विवाह में अतिशय विलम्ब क क अपना संतान के गमा लैत छथि (अर्थात् ओ संतान लोकनि जहिं-तहिं आन जाति में विवाह अपना मोने आ बिना अभिभावक के पुछने कऽ लैत छथि) । आबक लोकक आम धारणा बनि गेल छैन्ह जे कन्या जाबत बी.ए. नहिं पास कऽ लेतीह ताबत वर ताकक कोनो तुक आ प्रयोजन नहिं । कनेक सोचू जे सत्रह वर्ष में मैट्रिक (Matric) आ बाइस-तेइस वर्ष में कन्या बी.ए. पास करतीह आ तखन वरक अन्वेषण प्रारम्भ होयत । भाग्यवान छी त छवो मास, वर्ष दिन वा दुइयो वर्ष में वर भेटि जायत अन्यथा एगारहो त कि जे अठारहो वर्ष लागि जाइत अछि आ तखन वर भेटैत छैक जकर कैएक टा उदाहरण आब अपना लोकनिक समक्ष अछि । तखन त बाइस-तेइस वर्ष में अठारह वर्ष जोड़ला स **चालीस वर्ष भेल (जे दाम्पत्य जीवन केर अधिकतम सीमा (Maximum Limit) थीक) जाहि में कन्याक विवाह अर्थहीन थीक ।** तहिना वरागतो सब अपना वरक प्रति अपना के सोति बूझि आ बतिसगामा-चौंसठिगामा बूझि महत्वाकांक्षाक एवज में महत्-आकांक्षा राखि आ दु सै अढ़ाइ सै उपन्यासक बीच ऊगै-डूबै छथि आ कन्यागत सब स ओकरा भँजवैत (Encash करैत) छथि आ नफ़ा-नोकसानक

सौदा (Bargain) करैत-करैत वरक विवाह चालिस-बेयालिस वर्ष तक में करैत छथि जे हो अर्थहीन थीक। 'कन्या'-'वर'क यदि पैंतीस-चालीस वर्षक वयस में विवाह होइन्ह आ तत्समयानुकूल संतान होइन्ह आ ओ संतान पढ़ि-लिखि क जावत तैयार होइथिन्ह तावत अभिभावक (माय-बाप) क कैएक टा वर्षी भऽ गेल रहतैन्ह। कहू ई केहेन भेल ? विवाह, वयस (Age) क मांग होइछ जे एखुनका अभिभावक कैं नहिं सुझैत छैन्ह (मात्र अपना बेर में सुझैत छलैन्ह) जकर फलाफल समस्त समाज भोगि रहल छी, तथापि सुधार कोना हो ताहि दिश ककरो कोनो ध्यान नहिं ! ई हमरा लोकनिक दुर्भाग्य थीक ! की कहल जाय ! ककरा कहल जाय !"

व्यक्तिगत रूपें हमरा अपना एक टा बात परम आश्चर्यित करैत अछि। ओ ई, जे कन्यागत स वर-वरागत के जतवा वस्तुजात विवाह में भेटैत छैन्ह (अपवाद रूपें 'हावागाड़ी' (Car) छोड़ि), लगभग ओ सब वस्तु त सामान्यतः सब वरक घर-परिवार में पहिनहिं स रहवे करैत छैन्ह (एक-दू प्रतिशत अपवाद छोड़ि क) तखन फेर अपन स्वाभिमान के हनन आ गार्त क क ई लोभ किएक ? की कहू आ कते कहू !

देखू 'महत्वाकांक्षा' कोनो अधलाह वस्तु नहिं थीक। चुँकि हमरा लोकनि बुद्धिजीवी छी, बुद्धिजीवितेक आधार पर ने सोचक चाही? मात्र एकर अर्थ बुझवा में हमरा लोकनि स गलती भऽ जाइत अछि। हमरा लोकनि एकर अर्थ बुझैत छी '**महत्**' आकांक्षा अर्थात् बहुत-स-बहुत इच्छा यथा 'एहेन' होअय, 'ओहोन' होअय, 'ऐ तरहक' होअय, 'ओइ तरहक' होअय, 'एतेक' होअय, 'ओतेक' होअय, इत्यादि-इत्यादि। नहिं ! एकर अर्थ से नहिं ! एकर अर्थ "**महत्वपूर्ण** आकांक्षा" अर्थ ई जे, जे 'महत्वपूर्ण' बात हो तकर इच्छा करी जे सही अर्थ में महत्वाकांक्षा भेल। यथा वरागतक लेल प्रमुख सौदा 'कन्या' आ कन्यागतक लेल प्रमुख सौदा 'वर' कारण जे वरक हेतु 'कन्या' आ कन्याक हेतु 'वर' जीवन भरिक हेतु जीवन जीवाक आधार बनि जाइत छथि। आधार जतेक ठोस होयत जीवन ततवे 'सुखमय'। तैं आधारक अर्थात् वर-कन्याक गुण-अवगुणक अन्वेषण आ विवेचना करी। अँगरेजी शब्द

PERSONALITY (व्यक्तित्व) क प्रथम अक्षर P अर्थात् Physic (शरीर; स्वास्थ्य)– देखवा में त खूब गोर आ शरीरो देखनुहर, किन्तु बारहो मास दिन-राति 'लोटे-हाथे' रहैत छथि। तखन नै भेल। गोराई आ देखनुहुरपन निरर्थक। दोसर अक्षर E अर्थात् Education (शिक्षा)– हुनका में शिक्षे नहिं, शिक्षाक असर छैन्ह कि नहिं। यदि नीक शिक्षा आ शिक्षाक असर छैन्ह त निश्चित रूपें हुनक खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, बात-व्यवहार सब नीके टा हेतैन्ह (अपवाद छोड़ि)। आ तखन R अर्थात् Reasonableness, S अर्थात् Sociability, O अर्थात् Onus, N अर्थात् Nature (स्वाभाव) स सज्जन वा दुर्जन, A अर्थात् Appearance (रूप), इत्यादिक अन्वेषण क क चुनाव करक चाही। से सब त करैत नहिं छी। करैत छी की त रंगीन टी.वी., मोटर साइकिल, फ्रीज़ आदि-आदि जे अपना घर में प्रायः पहिने स रहिते अछि आ नहिं त अपने कमाई स किनियो सकैत छी। किन्तु प्रमुख सौदा में यदि कोनो तरहक खोट रहल यथा ओ स्वभाव स कड़ा, क्रोधी, क्रूर, कृपण, दुष्ट, झगड़ाउ, अभिमानी, घमण्डी, उद्दण्ड, उच्छृंखल आ अकर्मण्य होथि त हुनक गोराई आ सुन्दरता त पूर्णतया निरर्थके, जे हुनका संग जीवनो जिनाई अपार कष्टकर, सन्तापित आ अभिशापित भऽ जाइछ। मात्र अपने हेतु नहिं प्रत्युत् परिवार आ समाजोक हेतु। आ एहि क्षतिक पूर्ति रंगीन टी.वी., मोटर साइकिल आ फ्रीज़ स विधतो नहिं कऽ सकताह। कन्या 'तप्तकांचनवर्णा', 'विश्वसुन्दरी' आ 'सर्वगुण सम्पन्न' होथि। कोनो हर्ज नहिं, यदि सामान्यतया भेटि जाइत छथि। किन्तु एहि आकांक्षा करवा स पूर्व अपना वरोक व्यक्तित्व (Personality) त कनेक देखि लेव जकरा कहैत छैक "अपने में झाँकना"। जतेक तरहक आकांक्षा खाली कन्ये स ? वर चाहे अति कुरूप, परम अधलाह, अष्टावक्रक वैमात्रेय आ 'सामा-चकेबा' क प्रमुख हेय-पात्रे किऐक ने होथि, आश्चर्य!

सम्प्रति समाज में जे व्यवहार देखय में आबि रहल अछि ताही पर ई टिप्पणी हम कयल अछि, ओना हमरा कोनो 'वर' अथवा 'कन्या' सँ राग-द्वेष नहिं। कन्या जहिना हमरे समाजक बेटी थिकीह वरो तहिना एही समाजक बेटा छथि। दुहु कैं एही समाज स अपन-अपन जीवन संगी वा संगिनी ल क सम्यक जीवन जीवाक विधान छैन्ह आ से करितो छथि। तैं दूनूक मूल्य, मान-सम्मान आ प्रतिष्ठा-मर्यादा एकदम

बराबर छैन्ह; ककरो-स-ककरो ने कनेको कम आ ने कनेको बेसी। तखन फेर कन्येक बारे में एतेक छानबीन जे "कै फीट कै इन्च छथि, गोर भुभुक्का छथि कि नहिं, तप्त काञ्चन-वर्णा छथि कि नहिं, अल्ट्रा मॉडर्न (Ultra Modern) आ अप टु डेट (Uptodate) छथि कि नहिं, बी.ए./एम.ए./पीएच.डी./एम.बी.ए./जॉब में (In job) छथि कि नहिं, फ़र्राटा स अँगरेजी बाजि सकैत छथि कि नहिं" के अन्वेषण करब आ अपना ('वरक') बेर में ज 'क्यौ देखय औताह' से शब्दे सुनि भड़कब, ई कहाँ तक उचित ? ततबे नहिं, वर के गार्जियन आ वरे कै टा गोर आ फ़र्राटा स अँगरेजी बजनिहार छथि समाज में ? जखन 'वर' आ 'कन्या' दूनूक मान आ मूल्य बराबर तखन (कन्यागतो आ) कन्यो कियैक ने वरोक उपरोक्त सब बातक छानबीन आ जाँच पड़ताल करतीह आ ताहि आधार पर मनःपूति नहिं भेला पर वरो के छाँटि (Reject) देतीह ? एहि में अनुचित की ? की पुरुष भ गेने 'वर'क सब बात 'क्षम्य' आ स्त्री भेने 'कन्या'क सब बात 'अक्षम्य' भऽ जाइछ ? कोनो शास्त्र में एहेन बात छैक कि ? आ ज नहिं, त कि, सब दिन वरे-वरागतक वर्चश्व कायम रहतैन्ह ? कन्या आ कन्यागतक कोनो स्थाने नहिं ? समय तेहेन पल्टी खैलक अछि जे कन्यागतक की कहब, कन्या स्वयं एहि सब अन्यायक विरोध में सामूहिक के के कहय जे व्यक्तिगतो रूपमे अदम्य साहस स ठाढ़ि भऽ रहल छथि। एहेन स्त्री-क्रान्तिक लहरि भारतीय समाज आ मैथिल कर्ण कायस्थ समाज में '**सुनामी**' जकाँ उठि रहल अछि जे यदि वर-वरागत समय रहैत नहिं चेतलैन्ह त ओ दिन दूर नहिं जे हुनक 'वर-वरागत' होयवाक मिथ्या-अभिमान आ दर्प तहिना चूर्ण भऽ जैतैन्ह जेना रावण, कंस, हिटलर आ ब्रिटिश शासकक भेल रहैक। तैं वर-वरागत अपन दुराग्रहक अति जनि करथि। 'अति' एही हेतु वर्जित अछि "अति सर्वत्र वर्जयेत्" - चाणक्य। (कृपया पढ़ू दैनिक "हिन्दुस्तान", मुज़फ़्फ़रपुर, अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस, सोमवार, सितम्वर २४, २००७, सम्पादकीय पृष्ठ ८ पर सम्पादकीय लेख "बेटी की सुध")।

ततवे नहिं, भारतीय समाज में जे गत लगभग दू दशक स वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, सूचना आ तकनीकी क्रान्ति, सामाजिक

आ नैतिक मूल्य में आयल आ आवि रहल परिवर्तन सब, निश्चित रूपें सब स बेसी स्त्रीगणे लोकनिक दुनियाँ कैं प्रभावित कयलक अछि। ई सब परिवर्तन स्त्रीगणक सोचे बदलि देलकैन्ह अछि। आजुक दिन में स्त्रीगण विवाहे के अपना जीवनक अन्तिम लक्ष्य वा गन्तव्य मानि क नहिं चलैत छथि। हिनका लेल शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता आइ प्रधान वस्तु भऽ गेल छैन्ह। एतेक तक जे अपना जीवन स जुड़ल समस्या पर स्वयं निर्णय लेवय चाहैत छथि। आओर देखय में आबि रहल अछि जे मात्र चाहिये नहिं रहल छथि, प्रत्युत् कैयो रहलीह अछि। कन्या लोकनि विवाह पूर्व वर-वरागत द्वारा आ विवाहोपरान्त कनियाँ (स्त्री) अपना वर (स्वामी) द्वारा अपन घोर उपेक्षा देखि 'पतिए परमेश्वर होइत छथि' वला धारणा कैं अपना हृदय स निकालि देलैन्ह अछि आ परिणामतः, अपन अपमान बर्दाश्त करय लेल तैयार कदापि नहिं छथि। आब स्त्रीगण लोकनि चाहैत छथि जे अपना जीवन के अपने हिसाब स दिशा दी। तेहना स्थिति में वर आ वरागत सोचि विचारि क कोनो तेहेन काज जनि करथि जे प्रतिष्ठाक अभिघातक होइन्ह।

जहाँ तक प्रश्न एखुनका 'कन्या (लड़की)'क अछि, दिन-राति अख़वार में पढ़ैत होयब सेहो कैएक वर्ष पूर्वहिं स जे ई लोकनि स्कूल कॉलेजक रिजल्ट (Result) स ल क शिक्षा त की जे लगभग रोजी-रोजगार पर्यन्तक क्षेत्र में 'वर (लड़का)' सँ बाजी मारि रहल छथि। 'चुनाव-क्षेत्र' में सेहो आब महिला उत्थानक परिदृश्य दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि। देश आ समाजक कोनो क्षेत्र एहेन नहिं जाहि में महिलाक प्रदर्शन आ पहुँच पुरुष स कम देखना जाय। ई लोकनि गृहिणीयें नहिं, प्रत्युत् कारखाना में काज केनाइ, स्कूल-कॉलेज में अध्यापिका भेनाइ, कचहरी में ओकालत केनाइ, सरकारी सेवा में किरानी स ल क मैजिस्ट्रेट, एस.डी.ओ., कलक्टर, जज, सिविल सर्जन ओ एस.पी. भेनाइ, राजनीतिक क्षेत्र में एम.एल.ए., एम.पी.स ल क चीफ़ मिनिस्टर, गवर्नर, प्राइम मिनिस्टर त कि जे राष्ट्रपति तक भऽ रहल छथि। एहि स वृहत् सब क्षेत्र में जहिना-जहिना कार्यक्षेत्र में हिनकर संख्या बढ़ि रहल अछि हिनका लोकनिक अधिकारो में त तहिना ने वृद्धि होयतैन्ह ! किन्तु संगहिं, एहि स विपरीत, हिनका लोकनिक स्वयं केर जनसंख्या से अल्ट्रा साउण्ड

(Ultra Sound)क आशीर्वाद स दिनानुदिन घटि रहल छैन्ह । तखन त अनुमाने नहिं प्रत्युत् विश्वासो करी जे निकट भविष्ये में आब वर-वरागतक अपेक्षा ‘कन्यें लोकनि', ‘वरेक' परिचय, बायो-डाटा (शुचि-आचार), फोटो आ दानो-दहेजक माँग करतीह आ वर-वरागत के नहिं सकला पर ओ वर ख़ारिज (Reject) कऽ देल जेताह । की, केहेन कहल ? (कृपया पढ़ू ‘दैनिक जागरण', मुज़फ़्फ़रपुर, ता० १३ अक्टूबर २००८, पृष्ठ संख्या १२ पर ‘सप्तरंग' (साहित्यिक पुनर्नवा)क अभ्यन्तर कहानी “कहानी नहीं” लेखक राजू सहनी) ।

प्रथम, हम त कहब जे वर-वरागत लोकनिक अपने कयल कुकृतिक फल आब सामने आबि रहल छैन्ह जे केतेको कन्या (आ कन्या पक्ष) अनेकानेक वर कैं अस्वीकार (Reject) कैलैन्ह अछि आ कऽ रहल छथि आ ततवे नहिं, एहि स्थिति में हाल में कतिपय वरियातिओ बिनु विवाहे (भेने) वरक संग घूरि क घर ओआपस अयलाह अछि आ एहेन घटनाक आवृत्ति दिनानुदिन वढ़ले जा रहल अछि, घटवाक कोन कथा ! दोसर, कन्या गोर-भुभुक्का होथि, सब वर के कतय स भेटत आ कियेक भेटत ? सब वरो त गोर नहिं छथि । क्यौ उसिझल गोर, त क्यौ गोर -भुभुक्का, क्यौ सामान्य गोर त क्यौ न्यून गोर, क्यौ पिंड-श्याम त क्यौ कारियो त क्यौ बज्र-कारीयो होइत छथि ! आब कहू जे एहना स्थिति में कन्यों द्वारा त बहुत वर छँटा सकैत छथि, कि नहिं ? तेसर, जे मैथिल कर्ण कायस्थ में गोर कन्याक संख्ये कतेक ? तकर कारणों छैक । जेहने खैवैक तेहने ने उपजेवैक? दीप खाइत अछि तेल आ आगि त उपजवैत अछि काजर । तहिना कोनो ‘देमानजी' के विना माँछ-माँउसे करे ने घोंटायत बारहो मास, त तखन एहेन तामसी भोजन पर गोर बेटी कोना क जनमत ! ब्राह्मण जकाँ सतत सात्विक भोजन चूड़ा , दही, चीनी, केरा खाइत रहू त गोर बेटी जनमत । चारिम, अपना सब में जतवा तरहक रंग कन्या कैं होइत छैन्ह ततेक तरहक रंग त वरोक निश्चित रूपें होइत छैन्ह । तखन हमरो सनक झरकल वर यदि गोर-भुभुक्का कनियाँ चाहथि त से कहाँ तक उचित ! पाँचम, एहि गोर-कारीक

विवेचना करवा काल वर कैं एतवा सोचक चाही जे हमर माय-बाप, भाई-बहिन, आ हम स्वयं से हो त पिंड-श्याम आ कारी छी । आ यदि एही परिपाटी के प्रश्रय देल जाय त तखन त हमरो बहिनिक विवाह नहिं होयत ! भविष्य में ज कहीं हमर कन्यो गोर नहिं भेलीह त तिनको विवाह असम्भव होयत !

नाप जोख वला परिपाटी (कै फीट कै इन्चक प्रश्न) जे चलल अछि से भिन्ने स्थिति उत्पन्न कऽ रहल अछि। कनेक एहू बात पर नजरि दिय । सामान्यतः कन्या के वर स पाँच-छौ इन्च छोट होयबाक चाही (नाप में आ तहिना वयसो में); देखवा में उपयुक्त आ नीक लागय । एहि में कनेक-मनेक सामञ्जस्यो (Compromise) केनाइ उचित आ उपकारक होयत । किन्तु छौ फीटक वर कैं छौ फीटक कन्या स विवाह भेला पर त सन्तान नौ फीटक होयतैन्ह जकर फेर जोड़ी भेटव कठिन । तहिना पाँच फीटक कन्या कैं पाँच फीटक वर स विवाह हो त सन्तान त ‘वाओन-वीरे' ने हो ।

एखनुक विषम परिस्थितिक एक परम हास्यास्पद बात दिस कृपया कनेक ध्यान दिय । जतय कन्यागत कैं वर तकै में वर्ष-क-वर्ष दौड़ैत-दौड़ैत नाक में दम होइत रहैत छैन्ह आ एक कन्यादानक खर्च वरे तकवा में लागि जाइत छैन्ह आ तदुपरान्तो वरागत द्वारा अतिशय उपेक्षित होइतो वर नहिं भेटैत छैन्ह । ई उपेक्षा देखला स तेहेन बूझि पड़ैछ जेना कन्यें टा सेयानि (युवती) भऽ गेलीह अछि आ तैं हुनके टा एक ‘वर'क प्रयोजन आ आवश्यकता छैन्ह परन्तु वर जे चेतन (वयस्क;युवक) भऽ गेलाह अछि तनिका एक ‘कनियाँ'क प्रयोजन आ आवश्यकता कदापि नहिं छैन्ह ! किन्तु ई उपेक्षा देखला स व्यक्तिगत हमरा त एकर ठीक विपरीते अनुभव होइत अछि जे परम व्यावहारिक आ सोदाहरण स्वतः सिद्ध बुझना जाइछ । कनेक अपनहुँ लोकनि बुझियौ आ एहि पर सोचियौ । जौं कन्या सेयानियो (युवती) भऽ जाइत छथि आ ‘वर'क आवश्यकताक अनुभवो करैत छथि तथापि लज्यावश

ओ एकरा ककरो लग प्रकट नहिं करैत छथि; ने अपना भाउज वा मामी लग आ ने अपना सखी-बहिनपा (सहेली) लग । किन्तु एकर ठीक विपरीत वर वयस्क भेला पर जखन एक 'कनियाँ'क आवश्यकताक अनुभव करैत छथि त 'सौम्य-प्रकट करैक के कहय' जे बाट चलैत कन्याक संग 'छेड़खानी' क) लैत छथि, एतेक तक जे अपन निकट सम्बन्धोक यथा, पितियौत, पिसियौत, ममियौत, मसियौत बहिनि, भतीजी आ भगिनी तक केर विचार नहिं रखैत छथि जनिका संग सारि-सरहोजि जकाँ हँसी-ठट्ठो तक करब हिन्दू मात्रे में परम वर्जित अछि। आब कहू जे कन्या के 'वर'क आवश्यकता वेसी, कि वर के 'कनियाँ'क आवश्यकता वेसी ? आ ताहि पर वरागत ततेक छिड़ियैता जेना हुनका 'वर' के 'कनियाँ'क 'आवश्यकता कदापि आ कथमपि नहिं छैन्ह' । की आश्चर्य!

विवाहक गरिमा की थीक । विवाह मानव-जीवनक अति पवित्र आ परम उच्च धार्मिक संस्कार (Sacrament) थीक । ई कोनो व्यापारिक आ व्यावसायिक धन्धा नहिं अछि। ई त जीवनक पूर्णताक हेतु स्वयं द्वारा करवाक एक एहेन व्यवस्था थीक जाहि वेत्रे मनुख स्वयं से हो भरि जीवन अधे रहैत छथि आ हुनक जीवनो अपूर्ण रहि जाइत छैन्ह । ई प्रकृति प्रदत्त नियम थीक जे मनुख स्वयं ईश्वर (प्रकृति) अंश होइतो अधे छथि आ जावत पत्नी (नारी)क संग 'अर्द्धनारीश्वर' नहिं भेने ने ओ स्वयं पूर्ण आ ने हुनक जीवन पूर्ण होइत छैन्ह । स्त्री आ स्वामी एक दोसर के 'पूरक' होइत छथि आ तैं, जैं 'अपूर्ण' तैं ने 'पूर्ण' होयवाक हेतु 'पूरक' के आवश्यकता ! जहाँ युरोपीय देश सब में पत्नी कैं 'बेटर हाफ (Better Half)' कहल जाइछ तहीं अपना देश में ई 'अर्धांगिनी (Equal Half)' कहबैत छथि । (कृपया पढ़ू विद्यामार्तण्ड डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार रचित ग्रंथ "संस्कार-चन्द्रिका" पृष्ठ संख्या ३८९) । विवाहक उद्येशे छैक अपना-अपना जीवन के आ जीवनक आदर्श कैं पूर्ण करवाक, आ तैं ई एकर एक मात्र, पवित्र आ सर्वोपरि साधन थीक । विवाह स ल क जीवन पर्यन्त जीवनक प्रत्येक क्षेत्र में सतत रहन-सहन, खान-पान, बात-विचार, आचार-व्यवहार, नीक-बेजाय, सुख-दुख, लाभ-

हानि, प्रसन्नता-अवसाद, इत्यादि, सव स्थिति में स्त्री-स्वामी एक दोसर के 'पूरक' भ क 'पूर्णता स परिपूर्ण' जीवन बितैवा में सहायक होइत छथि । कहू जे केहेन पवित्र, कतेक आदर्शपूर्ण आ सुखदायी ई सम्बन्ध थीक ! आ तकरा स्थापना में एहेन निकृष्ट कोटिक काज करब जे कन्यागत सँ भीख माँगव आ अपन स्वाभिमान कैं समाजक समक्ष निलाम करब ! आश्चर्य त ई जे एहि कुकृत्य पर जतय लाजे मरि जैवाक स्थिति होइत छैक (कारण जे कतवो चोरा-नुका क करू, समाज में देखार भैये जाइत अछि लोक) तहीं सम्प्रति वर-वरागत एकरा गौरवक बात बुझैत छथि । एकरा त निर्लज्जताक पराकाष्ठे पार केनाइ कहि सकैत छी ।

जीवन एक समस्या थीक आओर मानव जीवन त एहू स बाढ़ि एक विषम समस्या थीक । मनुष्यक योनि में जन्म नेनाइ दुर्लभ थीक किन्तु जन्म ल क जीवन जिनाइ त अत्यन्त कठिन आ विषमसाध्य समस्या थीक । वर, अनुभवक अभाव में, एहि बातक तथ्य आ गाम्भीर्य के बुझवा में असमर्थ रहि सकैत छथि किन्तु परम अनुभवी वरागत कैं उक्त तथ्य के बुझवा में कोन भाङठ रहैत छैन्ह जे अपना बालकक विवाह में पुतहु केहेन अनताह जे हुनका बालक के जीवन जीवाक विषम समस्या में आजीवन आर्धांगिनी (जीवन संगिनी) बनि डेग-डेग पर अपना तन स, मन स, वचन स आ आचरणे स नहिं प्रत्युत् क्रिया स, आचार स, विचार स, व्यवहार स, उचित आ बहुमूल्य सलाहो स आ सहाय्यो स उक्त समस्या के समाधान क क परम सहज, सुखमय आ समृद्ध जीवन जीवा में संग देथिन । तेहेन कन्याक चुनाव नहिं क क, चुनाव करैत छथि टाका, रगींन टी.वी., मोटर-साइकिल आ फ्रीज़ के । वर-वरागत आबो त अपना मस्तिष्कक विकास करथु । उक्त विकास आ अपना आत्मा के उन्नत करब बुद्धिजीवीक परम कर्तव्य थीक ।

विवाह मनुष्य जीवनक परम पवित्र, उच्च आदर्श आ जीवनोपयोगी सब-स-पैघ अनुष्ठान थीक । तैं एकर स्थापन स जीवन पर्यन्त निर्वाह तक में हमरा लोकनि दूनू पक्ष कैं व्यवहार में परम विनम्र

आ शालीन रहक चाही जे परम पुनीत कर्तव्य थीक। ई विनम्रता आ शालीनता मात्र 'स्नेह' के उत्पन्ने नहिं करैछ प्रत्युत् सतत एकरा बरकरार राखक लेल एकर जड़ि के सिंचन करैत रहैत अछि। विवाह दुहु पक्षक स्नेहाधारित सम्बन्ध थीक जाहि आदर्शक आजीवन निर्वहन में जे उत्कर्ष (Excellence) आ स्वर्गीय सुख (परमानन्द Heavenly pleasure) छैक तकर शब्द में वर्णन नहिं कयल जा सकैछ। एही कारणे **'कन्यादान'** के **सर्वोत्कृष्ट आ सर्वोपरि दान** कहल गेलैक अछि। अस्तु।

जे वर-वरागत अपना मस्तिष्कक विकास नहिं क क रूढ़िवादी, अनुदारवादी आ सुधार-विरोधी बनल रहैत छथि आ बेटा-बेटीक विवाह उचित समय पर नहि क क अति विलम्ब सँ करैत छथि तिनके बेटा-बेटी जहिंतहिं विवाह कऽ लैत छथिन्ह आ समाज में ओ अभिभावक (वरागत) ई कहि क जावज्जीवन लांछित होइत रहैत छथि जे फँला बाबूक बेटा 'लव-मैरेज़ (Love Marriage)' कै लेलकैन्ह।

'प्रेम-विवाह (Love Marriage)' तथा **'दाम्पत्य-प्रेम (**Conjugal Love)' में भेद होइछ। 'प्रेम-विवाह' में प्रेमक प्रधानता होइछ, विवाह ओकर परिणाम थीक किन्तु 'दाम्पत्य-प्रेम' में विवाहक प्रधानता होइछ प्रेम ओकर परिणाम थीक। 'प्रेम-विवाह' में प्रेम नहिं रहल त विवाह टुटवा में कनेको विलम्ब नहिं होयत किन्तु 'दाम्पत्य-विवाह' में एक संग रहने प्रेम शनैः-शनैः बढ़ैछ आ दिनानुदिन प्रगाढ़ भेल जाइछ आ तैं विवाह-विच्छेदक सम्भावना नहिं के बाराबर रहैत अछि। 'प्रेम-विवाह' भावना पर टिकल रहैछ किन्तु 'दाम्पत्य-प्रेम' जीवनक यथार्थता पर आधारित होइत अछि। एहि दृष्टियें 'प्रेम-विवाह'क सहज परिणाम होइछ **'तलाक (परित्याग, विच्छेद, Divorce)'** किन्तु 'दाम्पत्य-प्रेम'क सहज परिणाम होइत अछि **विवाहित सम्बन्ध के 'चिरस्थायी' बना देनाई** {कृपया पढ़ू (१) नोवेल पुरस्कार पयबा योग्य प्रो० हरिमोहन झा जी लिखित उपन्यास 'द्विरागमन' (प्रकाशित - पुस्तक भण्डार पटना) में कथा-९ 'बुच्ची दाइ क एडुकेशन' (पृष्ठ संख्या ९५-१०६) आ (२)

विद्यामार्तण्ड डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार रचित ग्रंथ 'संस्कार-चन्द्रिका' (पृष्ठ संख्या ३७६)}।

हम 'वरागत' छी ताहि बातक निरर्थक गौरव करव उचित नहिं प्रत्युत् महान अनुचित थीक। कारण, आइ अहाँ वरागत छी त काल्हि 'कन्यागतो' त होइ छी आ तखन पाशा पूर्ण रूपे पलटि जाइत अछि आ सब गौरव ढहि जाइत अछि। तहिना हम 'बड़ सम्पत्तिशाली कन्यागत' छी तकरो गौरव नहिं करी। कारण जे ओहो गौरव अनेकानेक प्रकार स अतिशय हानि पहुँचवैत छैक आ अनेक ठाम प्रतिष्ठाक हनन करवैत छैक। 'वर' आ 'वरागत' कोनो 'सिकन्दर' आ 'नेपोलियन' त नहिं होइत छथि। समाजक आन व्यक्ति जकाँ सामान्ये व्यक्ति होइत छथि जकर गंभीर आ तात्विक ज्ञान हुनका स्वयं 'कन्यागत' भऽ गेला पर प्राप्त होइत छैन्ह। 'विवाह' शब्दक गरिमा यदि बूझी, त प्रज्ञावान भेलहुँ, आ तखन 'वर' आ 'वरागत' दूनू कैं अपन व्यवहार 'कन्यागते' जकाँ शालीन राखक चाही। ताही में बड़प्पन छैक ! सिकन्दरी देखौनाइ भल लोकक काज नहिं। शालीन व्यवहार सँ लोक 'मर्यादा' अर्जित करैत अछि। जँ कन्यागत सँ वर-वरागत कैं अपन सम्मान चाही त तखन त निश्चिते ओ कन्यागत कैं अतिशय सम्मान देथि आ तकरे प्रतिफल में एहि सँ हजारों गुणा बेसी सम्मानों पावथि आ मर्यादा से हो अर्जित करथि। शास्त्रो कहैत अछि जे 'राख पति, त रखा पति', 'Courtesy begets Courtesy', इत्यादी। सीमा आ मर्यादा स बाहर भऽ गेनाइ मनुष्य मात्रेक अज्ञानता आ दुर्भाग्य थीक। तैं ज्ञानी ओएह कहबैत छथि जे समाज, कुल, परिस्थिति, काल, इत्यादि कैं दृष्टि में राखि क मर्यादाक पालन करैत छथि जे सर्वोत्तम मार्ग थीक। औ, हमरा लोकनि मैथिल कर्ण कायस्थ मात्र 'बुद्धिजीविये' नहिं प्रत्युत् सादगी, उच्च विचार, विवेक, सद्व्यवहार, सदाचार, परम शीलमन्तता, अत्यन्त गंभीर चिन्तक आ शालीनताक प्रतिमूर्ति आ निधि छी चाहे 'वरागत' होइ वा 'कन्यागत'। आ हमरा लोकनिक आचार-व्यवहार में सर्वत्र आ सदिखन

उक्त सब गुण परिलक्षित होयबाक चाही तखने जीवन सार्थक बूझी । मैथिल कर्ण कायस्थक इएह चरित्र थीक ।

एक आओर पहलू जाहि पर विशेष ध्यानाकर्षण चाहब । कृपया ध्यान दिय, ने पत्नीक वेत्रे स्वामीक जीवन पूर्ण, ने स्वामीक वेत्रे पत्नीक जीवन पूर्ण ! कारण जे जीवन रूपी गाड़ीक ई दूनू गोटे दू टा पहिया होइत छथि जाहि में एकोटाक अभाव में ई गाड़ी चलब सम्भव नहिं । त तकर त अर्थ भेल जे जीवन जीवा में दूनूक आवश्यकता आ स्थान एके रंग भेल अर्थात् क्यौ ककरो स कम नहिं । चुँकि बारहो कायस्थ में **मैथिल कर्ण कायस्थे** में अपरिमित परिमाण में "शील-मन्तता" आ "शालीनता" होइछ (नाम मात्रोक चाँगला-पनी नहिं), यदि एहि बात पर शालीनतापूर्वक विवेकपूर्ण विचार करी, त तखन वरागत आ कन्यागत दूनू क मूल्य आ दरजा बराबर, आ जँ से, त तखन कन्यागत पर विशेष बोझ कियेक देल जाय ? जहाँ ई बात शाश्वत सत्य, तहीं देखि रहल छी जे एकर ठीक विपरीत एक दुःक्रिया अति सामान्य रूपें (Very commonly) हमरा लोकनिक व्यवहार में परम द्रुत गति स अपन स्थान बना रहल अछि आ ओ ई थीक जे सम्प्रति बहुसंख्य वरागत आब कन्यागत कैं वाध्य कै रहल छथि जे विवाह हमरे शहर (जतय हम छी) में आबि क करू तैखन हम बालकक विवाह करब । आब कहू जे ई केहेन अनर्गल बात थीक ! वर-वरियाती चुँकि कन्यागतेक दरवजा पर जाइत छथि, हिनका लोकनिक स्वागत-सत्कार-सम्मानक परम जिम्मेवारी कन्यागतेक होइत छैन्ह, तैं ओ त स्वयं एहि सब बोझ स दबल रहितहिं छथि आ ताहू स वृहत् ज हुनका अपन गृहस्थीये उठा क वरागतक शहर में लै जाय पड़ैन्ह आ ओहि शहर में नव व्यक्ति होयवाक कारणें विवाहक आ वर-वरियातीक सम्मानक व्यवस्था करवा में जे अधिकाधिक तरद्दुत उठावय पड़तैन्ह से कतेक आजीज़ीक कारण आ वृहत खर्चक भार स्वरूप हैतैन्ह आ तकर विवेकपूर्ण विचार केनाइ कि वरागतक कर्त्तव्य नहिं थिकैन्ह ?

ततवे नहिं, यदि सत्कार-सम्मान में कोनो साधारणो त्रुटि भऽ गेल त नहिं केवल वर-वरियातीक असन्तोषक कारण बनैछ प्रत्युत् कुचिष्टा, उकटा-पैंची स ल क बात-विवाद त की जे सम्बन्धो में दराड़ि तक पड़क स्थिति उत्पन्न भऽ जाइछ नहिं केवल तत्काले आ तत्स्थाने बल्के आजीवनक हेतु । कोनो-कोनो प्रकरण (Case) में त परिणाम स्वरूप वर–वरागत द्वारा जघन्य अपराधो भऽ जाइछ जकर कैएक उदाहरण आब समाज में अछि ।

की आदर्श छल मैथिल कर्ण कायस्थक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करवा में ! एहि स अतिरिक्त एगारहो कायस्थे त की, जे समस्त देशक प्रत्येक समाजक हेतु अनुकरणीय छल ! एतेक तक जे आन कोनो समाज के विश्वास तक नहिं होइत छलैक जे मैथिल कर्ण कायस्थ में विना पाई-कौड़ीक लेन-देन के वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भऽ जाइत छैक ! एक उदाहरण लिय । सिमरा श्री भागिरथ लाल दास (आई.ए.एस.) किछु दिन पटना में सेन्सस (जन-गणना) के डाइरेक्टर छलाह । साढ़े दश वर्षक हमर पटना प्रवास में हमरा डेरा लग एक श्रीवास्तव कायस्थ छलाह बाबू ललन प्रसाद जी (दिवान महल्ला, गुलज़ारबाग, पटना निवासी) जे अस्थायी रूप स किछु दिन भागिरथ बाबूक अधीन सेन्सस में काज कैने छलाह तैं दूनू गोटा एक दोसर स खूब नीक जकाँ परिचित छलाह । एक आओर अम्बष्ठ कायस्थ बाबू नीलेश्वर प्रसाद जी (हरनौत, बिहार शरीफ़ निवासी) जिनको डेरा बगल में छलैन्ह आ ओ पटना बिस्कोमान में बलौरक श्री शोभा लाल दासक संग कार्यरत छलाह । एक दिन उक्त दूनू व्यक्ति हमरा डेरा पर अयलाह जतय हम शोभाबाबूक संग कोनो कथा-वार्ताक प्रसंग में सघन चर्चा करैत रही । किछु काल हमरा लोकनिक सघन चर्चा सूनि ललन बाबू पूछि बैसलाह "का दास बाबू, एतना बातचीत हो गेल व, बाकी ए में लेनदेन के कतना के करार होलो है" ? हम उत्तर देलियैन "हमलोगों में पैसे-कौड़ी

का लेन-देन नहीं होता है" । ओ कहलैन्ह "का मज़ाक कर रहे हैं, आरे शादी-ब्याह का बिना लेन-देन के हो सक ल व है, ओ भी अभी के युग में" ? शोभा बाबू कहलखिन "ये ठीक ही कहते हैं, हम लोगों में शादी-ब्याह में पैसे-कौड़ी का कतई लेन-देन नहिं होता" । ताहि पर नीलेश्वर बाबू शोभा बाबू स पुछलथिन्ह "इमान से कह रह ल व है" ? उत्तर हम देलियैन्ह "स्नान को नीचे (गंगाजी में) चल ही रहे हैं, छाती भर पानी में खड़े होकर भी कह देगें तब तो विश्वास करेंगे आप ? साँच को आँच क्या !" ओ दूनू गोटे ठक्क द आवाक् रहि गेलाह । किछु काल स्तब्ध रहि, ललन बाबू हमरा स प्रश्न कैलैन्ह, "आँय दास बाबू, पैसा-कौड़ी का लेन-देन न होत है त लइकबा (वर) कइसन मिलैत ह व भाई ? हम उत्तर देलियैन्ह, "बी.एल.दास (भागिरथ बाबू) जैसन" । ओ चीत्कार क बैसलाह "आँय, आइ.ए.एस. लड़का आ बिना रुपैया ले ले"। फेर दूनू गोटाक समवेत स्वर में बहराएल "अगर ई बतिया ठीक में सच ह व, त ई निश्चित रूप में 'दुनियाँ के आठवाँ आश्चर्य ह व" ! आ गुम जे पड़लाह से की कहू ! ततवे नहिं, लगभग वर्ष दिन धरि ओ लोकनि 'एहि बात के कौतुक बूझि' अनेक ठाम एकर चर्च कैलथिन्ह आ लोक सब आबि-आबि हमरा स एहि बात के सत्यापित करावय आ आश्चर्य चकित होअय !

मैथिल कर्ण कायस्थक शीलमन्तता आ शालीनता एहि जातिक परम आदर्शे नहिं प्रत्युत् सर्वोच्च आ उत्कृष्ट सम्पत्तियो छल आ अछियो जे हमरा लोकनि अपना-आप में तेना धारण कैने रहैत छी जे एकरा क्यौ छीनि वा चोराओ नहिं सकैत अछि आ तैं एकरा सुरक्षाक हेतु कोनो प्रवन्धो (Security arrangement) नहिं करय पड़ैत अछि । किन्तु एकर परित्याग क क स्वयं एकरा गमा दी से कोनो बुद्धिमानी नहिं भेल । एहि जातिक शीलमन्तता आ शालीनताक बारे में लिखल अछि जे ई लोकनि राजा श्री नान्यदेव स ल क महाराज श्री महेश्वर सिंह त की जे महाराज श्री कामेश्वर सिंहक वा ई कहू जे ज़मिन्दारीक अन्त तक '**दीवान जी**' आ '**भैया जी**' कहबैत छलाह आ औखन तक लगभग सेएह

प्रचलित अछि । दीवान जी एहि हेतु जे मिथिलाक प्रत्येक रियासत (Estate)क परम दक्ष आ निपुण प्रशासक (Administrator) इऐह लोकनि होइत अयलाह अछि आ भैया जी एहि हेतु जे समस्त समाज में रंक स ल क राजा तक द्वारा हिनका भैया जी क क सम्बोधन कयल जाइत आयल अछि मात्र एहि जातिक अपन चरित्र-गुणक कारणे, यथा :- "नीति निधान रखै गुणमान सुबैन कहै जस होत समैया । भूपति को प्रिय दुर्जन को अरि रक्षक हैं धरणी सुर गैया । हार विगाड़ करैं केहुके नहिं, श्रेष्ठन को देखि लागत पैंया । चन्द्र कहे शिलवान बड़ो इस कारण कायस्थ कहावत भैया ॥१॥ इजलास करैं संग हाकिम के अरु जानत हैं इनसाफ रबैया । उलटी पुलटी कोउ बोलत हैं उन शब्दहुँ को सरियाय लिखैया । धीरज धीर गम्भीर बड़ो सब के दिल के बतिया बुझबैया । नन्द महीपहु भाई कह्यौ इस कारण कायस्थ कहावत भैया ॥२॥ मान करैं सनमान करैं सब को हि प्रतिष्ठा के ये देबैया । प्रतिफल में मर्यादित ह्वै इ समाजहुँ से यश-गीत गवैया । मानव गुण-समष्टि परिवेष्टित मानव मात्र के राह देखबैया । गुण-शील कृपा-समदर्शी हैं इस कारण कायस्थ कहावत भैया ॥३॥ (कृपया पढ़ू भच्छी निवासी श्री रास बिहारी लाल दास रचित "मिथिला दर्पण", प्रकाशित सन् १९१५ई., द्वितीय खण्ड, द्वितीय परिच्छेद, पृष्ठ संख्या २८ आ २९) । आब कहू जे अपन एहि सनातन संस्कृतिक समृद्धि के परित्याग करव स बढ़ि क मैथिल कर्ण कायस्थक दुर्भाग्य की होयत !

एतेक तक जे हमर एक परम आत्मीय अम्बष्ठ मित्र बाबू श्री ब्रह्मदेव प्रसाद सिन्हा जी (रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट मार्केटिंग ऑफिसर, दरभंगा) अनेकानेक अवसर पर सै-दु-सै व्यक्तिक बीच अपन अन्तरात्मा आ मुक्त कण्ठ सँ ई बात व्यक्त करैत रहैत छथि जे "मैं देश भर घूमा हूँ, पर जहाँ तक शालीनताका प्रश्न है, अभी भी मैथिल कर्ण कायस्थों में जितना श्रेष्ठ और अपरिमित परिमाण में पाता हूँ, बाकी ग्यारहों कायस्थों में तो क्या जो समस्त देश भर के किसी भी अन्य समाज में

यह दृष्टिगोचर नहिं होता"। आब कहू जे हमरा लोकनिक केहेन आदर्श-सम्पत्ति ई थीक !

जहाँ हमरा लोकनिक उपरोक्त आदर्श मात्र बाकी एगारह टा कायस्थे में नहिं प्रत्युत् भारतवर्ष भरिक समस्त समाजो में मात्र उदाहरणीयें नहिं बल्के पूर्णतया अनुकरणीयों छल आ अछि तहीं मानव जीवन-मूल्यक एतेक पैघ आ उत्कृष्ट आदर्श के सर्वथा परित्याग क क अविवेकिता पूर्वक Indirect त की जे Directो लाज-धाख छोड़ि नगद स ल क दुनियाँ भरिक वस्तुक माँग करब आ ताहि पर स ई एक टा पृथक बोझ थोपब जे हमरे आ अमुक शहरे में आबि विवाह करू तैखन हम बालकक विवाह करब की ई मैथिल कर्ण कायस्थ कहैवाक नाम पर कलंक नहिं छथि तथा कथित वरागत ? हुनक सब ठेसी, सेखी आ सनातनी **माटि मिलि जाइत छैन्ह** जखन उक्त वरागत फेर "**कन्यागत**" होइत छथि आ अपनहुँ नाके सूते पानि पीवय पड़ैत छैन्ह। आ तखन ज भेंट हेताह त हाल पुछला पर देखबैन्ह जे विसुकल आ घोकचल घोंघारी सन मुँह बनौने उत्तर देताह "नैं पुछू हाल ! कन्यादान में एको टा कर्म बाकी नै रहल ! तीन टा बेटा, क्यौ पाँचो टा पाइ स मदद केनिहार नहिं। हारि क अठारह कट्ठा बूझू जे सोनाक टुकड़ा, से महदा कयल। वरागत जे बे-विचारी आ बे-सम्हार भेटलाह से भगवान सात घर शत्रुओ के एहन वरागत स भेंट जनि देथुन ! सिध्यान्तेक दिन स जे हुनकर भाँति-भाँति के फ़रमाइस होवय लागल से पुरबैत-पुरबैत जुमवैत-जुमवैत बूझू जे हमर ओतवा दुर्दशा भऽ गेल जतवा कोनो स्त्री के आठ बेर प्रसव भेला पर होइत छैक। की कहू, कोन पाप लागल जे बेटी जनमौलहुँ ! जनितहुँ जे एहेन प्रतिवाय भोगय पड़त त सोइरिये में नोन चटा क मारि देने रहितियै। बेटे सब बहुत जिद्द कैने रहथि जे वर इन्जीनियर छैक, ओकर बापो इन्जीनियर छैक। गाम के अलावे दिल्ली में मकान त छैहे जे धनबाद आ राँचियो में जमीन किनने छैक। औ ज एतवा सम्पत्ति अहाँ के अछिए त फेर बाप-बेटा मिलि क एक टा मोटर

साइकिल, रंगीन टी.वी. आ फ्रीज़ लै एतेक डोमा-डिगरी कियै उठौने छी ? ई सब वस्तु जे अहाँ **हमरा घर** में देखैत छी, से कि हम अपना पाइ स किनने छी, ई त हमरा बेटा लोकनि कैं, हमरा द्वारा कन्यागत सब स सामान्य मांग केला पर, सासुर स भेटल छैन्ह। नगदो त हम अपना कन्यागत सब स पचासे-पचास हजार ने नेने छलियैन्ह किन्तु ई वरागत त हमरा स डेढ़ लाख टका गनवा लेलैन्ह अछि। आब कहू जे ई तीन वस्तु वर कैं दै लऽ फेर पाँच कट्ठा बेचू हम ? वरक बाप धमकी देलैन अछि जे किस मलेच्छ के यहाँ रिश्ता कर लिया, अपने बेटे की दूसरी शादी करा देंगे। हम अपना बेटा सब बेर में कन्यागत सब स केवल मांगे ने कैने रहियैन कोनो डोमा-डिगरी त नै उठौने रही। हिनका जकाँ कोनो धमकी त नै देने रहियैन कोनो कन्यागत के। इत्यादि, इत्यादि।" एतवा उत्तर सुनला पर नीक जकाँ बूझि त गेले हेवै जे "आब अयलाह 'ई ऊँट' पहाड़क नीचा"। एके टा कन्यादान में आठ बेर प्रसव भऽ चुकलैन्ह। दू टा कन्यादान अर्थात् सोलह बेर प्रसव होयव एखन हिनका बाकिये छैन्ह, कहू लोकनि शुभ हुअ, शुभ हुअ, शुभ हुअ ! कहू जे जैं ई वरागत अपना कन्यागत सब स मांग करवाक परिपाटी बनौने छलाइ (वस्तु जात वा नगदक) तैं ने एहेन दिन देखक पड़लैन्ह। एहू ठाम त ई प्रश्न ऊठि सकैत अछि जे "की, ई हो बालक जनमौने छलाह कन्यागते (अपन समधिये) क भरोसे" ? एहेन काजे किएक करव जे एके टा कन्यादान में आठ टा प्रसव होयत ! जँ रोपै जायब सब गोटे बबूरक गाछ आ चाहै जायब जे ओहि में आम फड़य त से कि कहियो सम्भव होयत ? एहि पर सब गोटे गम्भीर चिन्तन करैत जाउ, हमर प्रार्थना !

औ ! कने सोचि क देखियौ जे मनुख, धन (पैसा वा आन सम्पत्ति) के जन्म दैत अछि बनाओ क आ उपार्जनो (कमाओ) क क, किन्तु आइ तक कहियो धन नै मनुख के जन्म देलकैक अछि। लेकिन यदि मनुख के शोणितक सम्बन्ध स्थापित करवा में धने प्रमुख माध्यम बनय तखन त ओएह मनुख स ऊपर भेल; मनुखक अस्तित्व त ओकरा आगाँ नगण्य सावित भेल। कृपया सोचू, तखन मनुष्य ज्ञानी की भेल जे अपने स अपन अस्तित्वे गमा देलक ?

एक बात पर मनहिं मन नजरि दिय आ चिन्तन करू। गरीब-स-गरीबो कन्यागत के अपना बेटी-जमाय के किछु ने किछु देबाक अभिलाषा (सौख) रहैत छैन्ह आ ओ जान उपछि कऽ दीतो छथिन्ह। एतय वर आ वरागत के परम कर्तव्य थिकैन्ह जे हुनका (कन्यागत कैं) पहिनहिं कहि देथिन्ह जे "अपने कोनो वस्तुक हेतु कियेक कष्ट करब। ई सब वस्तु त सबहक घर में सामान्यतः रहितहिं छैक, बल्के हमरो घर में अछिये। अपने के एखन बहुत खर्चक अवसर पड़ल अछि यथा धियापुता लोकनिक पढ़ाइ-लिखाइक खर्च आ अगों त कन्यादान करवाक होयत, इत्यादि"। कन्यागत के जहाँ एतवा सूनि क आयुर्दा बढ़ि जेतैन्ह तहीं वर-वरागतक प्रति आजन्म ओ अतिशय कृतज्ञ बनल रहताह। किन्तु से छोड़ि एकर ठीक विपरीत नगद स ल क अनेकानेक वस्तुक मांग करब कि अमानुषिकताक परिचायक नहिं ? ई घोर अमानवीय कृत्य देखा-देखी ततेक पसरि रहल अछि अपना समाज में जकर वर्णन करब से हो लज्जास्प्रद बूझि पड़ैत अछि। स्थिति ई अछि जे एहि मांगक पूर्ति नहिं होयवाक कारणें कथा नहिं पटैत अछि आ कन्यागत कैं वर्ष-क-वर्ष दौड़ैत-दौड़ैत दुर्गति भऽ जाइत छैन्ह। यदि दू नम्बर-तीन नम्बर-चारि नम्बर स कमाय वला कन्यागत मांगक पूर्ति कैयो दैत छथि आ विवाह भैयो जाइत अछि, तथापि एहि 'मांग' क अन्त नहिं होइछ। विवाहक पश्चातो फेर मांग होइछ, फेर मांग होइछ आ फेर मांग होइछ आ तकर पूर्ति नहिं होयवाक स्थिति में 'अमानुषिकता' पराकाष्ठो नाँघि '**वधू-हत्या**' तक कै दैत अछि; कैएक टा एहेन घटना घटि चुकल अछि। एहि तरहक हत्याक अनेकानेक उदाहरण आब अपना समज में अछि आ से हो की त बेसी-स-बेसी **'भलमानुषे' में**। उदाहरणार्थ टटके एक टा काण्ड जमशेदपुर (टाटा) में घटित भेल अछि जाहि में दश लाख नगदक मांग/बारह लाखक गाड़ी (Car) क मांग आ तकर पूर्ति नहिं भेला स वधू-हत्याक प्रयास में वरक पिता गिरफ्तार भ क जेल में छथि। वधूक प्राण भगवान कोनो तरहें बचा लेलखिन; अकस्मात हुनक पिता ठीक ओही समय में घटना-स्थल पर पहुँचि गेलथिन्ह। वधू

अस्पताल गेलीह। किन्तु ई हो सुनवा में आयल अछि जे जाहि वधूक हत्याक प्रयास भेल छल तिनकर पितो अपना बालकक विवाह में कन्यागत स दश लाख टका गनबौने छलथिन्ह। भगवान जाने की केना! जेहेन 'अमानुषिक परिपाटी' लेन-देनक तेहने तकर प्रतिक्रिया में **'जघन्य अपराधो' 'वधू-हत्या'**क ! **की आ कोना होयत 'सुखमय दाम्पत्य जीवन'**? ककरा कैने होयत ?

'अमानुषिकता' जहाँ आब 'पराकाष्ठा' के नाँघय लागल अछि तहीं उक्त 'पराकाष्ठो' आब 'अमानुषिकता' के नाँघय में रोच नहिं रखलक अछि। आन कन्याक पिता स जहाँ अमानुषिक स्तर तक मांग कयल जाइछ आ पूर्ति नहिं भेला पर उक्त निरपराध कन्याक हत्या तक भऽ जाइछ तहीं अपना कन्याक चिकित्सो पर अपन जेबी स खर्च करवा में असौकर्येक अनुभव नहिं प्रत्युत् तारतम्यो कयल जाइत अछि चाहे ओ कन्या चिकित्सा वेत्रे मरथि वा चिकित्सा में बिकाइये किएक ने जाथि। अलबत्ते, बेटाक चिकित्सा में घरो–घरारी बिका जाय त कोनो परवाह नहि। एहनो-एहनो उदाहरण आब समाज में अछि। आब कहू जे एहेन पातकी काज कैनिहार लोकनि कैं पढ़ला-लिखला स की लाभ जिनका एतवो ज्ञान नहिं जे 'कन्या' अपन शोणिते नहिं अपितु हमरा घरक मान, प्रतिष्ठा ओ मर्यादा थिकीह। आब एकरा 'सामान्य खसब' कहब की ई "**महा-महा पतन**" भेल ! एहि सब प्रसंग में लिखितो आब आत्म-ग्लानि सहित अत्यन्त लज्जास्प्रद बुझना जाइछ ! कारण जे एहेन-एहेन कैनिहारो सब त हमरे (कायस्थ) समाजक लोक छथि अर्थात् हमरे-अहाँक लोक छथि। ओना त कोनो नीक वा अधलाह कैनिहार कैं, चुँकि एहि पृथ्वी पर मनोविज्ञान सत्य थीक, तैं प्रकृति (Nature) द्वारा कयल गेल न्याय में ओकर फलाफल निश्चित रूपें भोगय पड़ैत छैक; एतत्सम्बन्धित चाणक्यक एक विशिष्ट रचना द्रष्टव्य अछि "यस्माच्च येन च यथा च यदा च यच्च यावच्च यत्र च शुभाशुभमात्म कर्म**:**। तस्माच्च तेन च तथा च तदा च तच्च तावच्च तत्र च विधातृ वशादुपैति"। एतय विधातृ (विधाता के), आओर क्यौ नहिं, प्रत्युत् 'प्रकृतिये' थिकीह। अस्तु।

कोनो 'कन्या' कैं मात्र भावी 'कनियें' बूझब महान अज्ञानता थीक । ई माइयोक, बहिनियोंक, पत्नीयोंक आ कन्योंक रूप थिकीह किन्तु उक्त समष्टि में सर्व प्रथम ई सृष्टि-कर्तृ (निर्मातृ) अर्थात् समस्त सृष्टिक जन्मदातृ, समस्त मानवताक जन्म देनिहारि अर्थात् **"माय"** थिकीह । हिनक 'मातृ-शक्ति' अदम्य, असीम आ अगाध छैन्ह । वेद व्यासक कथ्य छैन्ह जे माताक तुल्य कोनो छाया नहिं, माताक तुल्य कोनो सहारा नहिं, माताक सदृश कोनो रक्षक नहिं तथा माताक समान कोनो प्रिय वस्तु नहिं होइछ। संतति निर्माण में माताक भूमिका पिता स हजार गुणा अधिक छैन्ह । मायक रूप में ई दया, क्षमा, कल्याणी आ परम् त्यागी थिकीह । हिनका सनक त्याग ईश्वरीय (प्राकृतिक) सत्ताक अतिरिक्त क्यौ आन नहिं कऽ सकैत अछि । माय सर्वव्यापक सत्ताक प्रतिमूर्ति छथि । एहि रूप में हिनक स्नेह, वात्सल्य, त्याग, ममता, सेवाभाव अपना चरम पर होइत छैन्ह । ई संतानक हेतु असह्य वेदना, अपरिमित पीड़ा आ अपार कष्टक सामने नहिं करैत छथि प्रत्युत् उक्त सब कष्ट प्रसन्नता पूर्वक सहि हिनका पर अपन सर्वस्व न्यौछावर कऽ दैत छथि । जाहि ठाम एहेन महिमामयी मायेक पृथक-पृथक रूप 'बहिनि', 'पत्नी' आ 'कन्या' क छैन्ह ततय एहि चारू में स कोनो रूपक संग सम्बन्ध स्थापित करवा में यदि हम हिनका रूप, रंग वा अर्थ-साधन, कोनो आधार पर कोनो तरहें अपमानित करी त से कि आदिशक्तिक अपमान नहिं भेल आ एहेन पातकी कृत्यक फल में हमर अधः पतन नहिं होयत ! (कृपया पढ़ू दैनिक 'हिन्दुस्तान' (नई दिल्ली संस्करण) शुक्रवार 9 मई सन् 2008 सम्पादकीय पृष्ठ 12 पर 'अनहद' शीर्षकक अभ्यन्तर श्री लाजपत राय सभरवालक लेख "माँ - शान्ति का शिविर") ।

कोनो पुरुष के पुरुष होयबाक गौरव नहिं करक चाही आ ने एहि हेतु अपना कैं धन्य बूझक चाही। कारण, पृथ्वीक सब पुरुष स्त्रीयेक बच्चा छथि चाहे ओ 'नर' होथि वा 'नारायण'। नर जहिना स्त्रियेक कोखि सँ अवतार नेने छथि, नारायणों तहिना प्रकृतियेक कोखि स अवतरित छथि, तैं हमरा लोकनि कैं प्रत्येक स्त्री के सम्मान आ हुनका हितक रक्षे

करक चाही; कोनो स्थितिमें अपमान आ उपेक्षा नहिं, आ इएह थीक मिथिला किंवा भारतक आदर्श !

की कहू, कतेक कहू आ कहाँ तक कहू ? भगवान ने करथि जे एहेन दिन देखक पड़य । ने त जेना कन्या-भ्रूण हत्याक बसात बहल अछि आ स्त्रीगणक संख्या में ह्रास भऽ रहल अछि एक समय एहनो आओत जे पाशा पलटत आ ताहि स्थिति में कन्यागतक हाथे वरागतो कैं परम अपमान सहय पड़तैन्ह जे अवश्यम्भावी बुझना जाइछ ।

हँ एहि स सम्बन्धित एक टा आओर बात कथनीय । ओ ई जे पचहत्तरि प्रतिशत कन्यागत कैं जे कन्यागत होयवाक अभिशाप भोगय पड़ैत छैन्ह से पचीस प्रतिशत 'कन्यागतोक' कारणें । जे दू नम्बर, तीन नम्बर, चारि नम्बर स अर्जित धन के कन्यादान में आदि स अन्त तक आडम्बर पूर्वक पानि जकाँ बहा वरागतक संग समाज तक पर प्रभाव जमबैत छथि । हिनकर शान-ठाठ, लेन-देन, व्यवहार-बात देखि अधिकतर वरागत परम आकर्षित होइत छथि आ तकर फलाफल ई होइछ जे बाकी के पचहत्तरि प्रतिशत जे आर्थिक रूप स विपन्न कन्यागत तिनका जीवनक सब प्रतिवायक भोग (कथा ठीक करवा स ल क कन्यादान द्विरागमन तक में) भोगय पड़ि जाइत छैन्ह । कन्यागत के उक्त दुर्गतिक भोग भोगावय में जहाँ पचहत्तरि प्रतिशत वरागतक दोष रहैत छैन्ह तहीं पचीस प्रतिशत कन्यागतो एहि में निश्चित रूप स दोषी छथि । यथार्थ में एहि पचीस प्रतिशत कन्यागत कैं द्रव्य खर्च करय में कोनो मोह वा दर्द त होइत नहिं छैन्ह कारण जे हुनका पर 'पापक धन प्रायश्चित्ते में जाय' (Ill got ill spent) क भूत सवार रहैत छैन्ह ।

जाहि समाज में लोक जन्म लैत अछि ताहि समाजक प्रति ओकर किछु दायित्वो होइत छैक आ से थिकै समाजक प्रति आदर-सम्मानक भाव राखक, समाजक दुख-दर्द बूझव आ ताहि में शक्ति भरि साहाय्य करब आ समाजक उत्थान, विकास आ कल्याणक हेतु सतत जाग्रत चिन्तन राखब आ तकरा निरन्तर कार्यान्वित करब । ओहदा, पैसा आ प्रभुत्वक मिथ्या अभिमान में मद स मातल आ उपरोक्त

दायित्वक निर्वाह नहिं क क प्रत्युत् बिसरल रही से अमानवीय कृत्य भेल आ ई प्रकृति (Nature) अपना कठघरा में ठाढ़ क क एहेन कृत्यक पाइ-पाइ हिसाब चुका लैत छैन्ह; केनिहार चाहे बुझथुन्ह चाहे नहिं। एकर प्रमाण वा उदाहरण, जे कही, हम उपरे कहि ऐलहुँ अछि जे एक अति महात्वाकांक्षी वरागत कैं, जखन ओ 'कन्यागत' बनलाह, एके कन्यादान करवा में आठ बेर प्रसव भेलैन्ह; एकरे कहैत छैक प्रकृति द्वारा हिसाब चुकायब।

हम ई नहिं कहैत छी जे पुरने परम्पराक सब ढाठी राखू, परिवर्तन नहिं आनू। ओना त समय के गति स्वयं परिवर्तन अनिते रहैत छैक। किन्तु जे विधि-व्यवहार आब अव्यावहारिक, अर्थहीन, Unproductive आ समय गुणें आजीज़ी उत्पन्न करय से यदि पुरानो (परम्परागत) अछि त तकर सर्वथा परित्याग करक चाही आ तहिना, उक्त आ आनो अवगुण सब यदि नवो व्यवहार में देखना जाय त तकरो ग्रहण (Adopt) करब कदापि उचित नहिं। ई ध्यान में रखैत परिवर्तन आनक चाही। हमर कथ्य ई जे परिवर्तन होऔ किन्तु For betterment अर्थात् कल्याण आ विकासक हेतु, कोनो मूल्य पर अकल्याण आ ह्रासक हेतु कदापि नहिं।

की पुरान परम्परा में स राखी आ की छोड़ी, तहिना नवो व्यवहार में स की छोड़ी आ की ग्रहण करी तकर विवेचना एहि तरहें होअय। उपरे कहि ऐलहुँ अछि जे समयक गति स्वयं पुरान परम्परा में स घसा गेल विधि-व्यवहार (Obsolate items) कें हँटाय स्वयं नव-नव व्यवहार के स्वागत क क, परिवर्तन अनिते रहैत छैक यथा, तेल-कषाय, मर्याद, लोक-यात्रा, पचाकि (पञ्चाग्नि), इत्यादि, अनेकानेक व्यवहार समाज स उठि गेल आ नव में परिचयक संग कन्याक शुचि-आचार (Bio-data) आ फोटो (वरक Bio-data आ फोटो किएक नहिं ?) क मांग, सिध्यान्त में जलपानक व्यवहार आ किछु वस्तुओ जातक लेन-

देन, विवाह में फ़रमाइसी भोजन आ अन्यान्य वस्तुक मांग आ जयमाल, तथा 'हमरे शहर में आबि क विवाह करू', इत्यादि अनेकानेक नव व्यवहार आबि गेल। हमरा अपना समझ स दू टा पुरान व्यवहारक उठाव भऽ गेनाई आवश्यके नहिं प्रत्युत् अनिवार्य बुझना जाइछ - एक 'जन-सम्वाद' पठोनाइ आ दोसर 'समधि-समधियारे' केनाइ। जन-सम्वाद पठावय में निरर्थके एक-स-डेढ़ घण्टाक समय नष्ट भऽ जाइत छैक। बूझल त रहिते अछि जे बरियाती आबि रहल अछि आ गामक सिमान पर (नगर-विश्रामक स्थान पर) वरियातीक पहुँचिते 'पीह-पाह' होवय लगैछ जे 'बरियाती आबि गेल', तकर बाद शीघ्रातिशीघ्र परिछनक व्यवस्था करू। अस्तु। तहिना समधि-समधियारे, जे पहिनौं अभिशाप छल आ आबौ अभिशाप अछि, आ ई जावत तक रहत, अभिशापे रहत।

कन्यागत जखन वर कैं कन्यादान कऽ देलैन्ह आ वर दान लेल कन्या कैं सिन्दूर दान कऽ देलैन्ह आ घोघटक दुर्वाक्षत भऽ गेल त वरक पिता आ कन्याक पिता आप स आप (Automatically) समधि भऽ गेलाह। ताहि हेतु ने कोनो पृथक मन्त्रोच्चारण करय पड़ल ने पृथक कोनो प्रक्रिया (Performance) भेल आ ने कोनो कागज पत्र (Documentation) बनल। तहिना वरक पिता आ कन्याक मामा आ कन्याक पिता आ वरक मामा आ फेर वरक मामा आ कन्याक मामा आपस में आप स आप समधि भऽ गेलाह आ ताहू हेतु पृथक कोनो मन्त्रोच्चारण, प्रक्रिया आ कागज-पत्र नहिं करय पड़ल। किन्तु एकरा अलावे पन्द्रह टा वा पचीस टा वा आने कोनो संख्या में समधि 'बनैवा'क की अर्थ ! जँ किछु अर्थ, त से विडम्वने, जकरा आगू पढ़ू। ओना व्यावहारिकता में वरक पिताक, कन्याक पिताक आ वर आ कन्या दूनूक मामक भैयारी में जे व्यक्ति सब पड़ैत छथि, सेहो सब आपस में समधिक मान्यता स्वतः (Automatically) प्राप्त करैत छथि; एकर

व्यावहारिके पहलूक प्रवलता छैक, वैधानिक पहलूक कोनो तेहेन नहिं। आब देखू केहेन विडम्वना अछि। पहिने की होइत छल। राति में वर आ बरियातीक संग आबि बेटाक विवाह कऽ लेलहुं आ प्रात भेने समधि-समधियारे में कन्याक पिता स 'जिच्च' ठानि देलहुं जे हम अपनेक संग सौजन्य-भोजन (भत खै) कोना करब ? अर्थात् नहिं करब । अप्रकट कारण (हम त शुद्ध सोति छी आ अहाँ परम डोम छी)। कन्यागतेक दरवजा पर बैसि क हुनके एतेक अपमान आ सेहो की त दूनू पक्षक पचीसो-तीस गामक सर-कुटुम्बक उपस्थिति में। वाह रे वरक पिताक बुद्धिमत्ता ! आ फेर ज कन्याक पिता पचीस गोटा के समधि बनौनाइ (अर्थात् फी व्यक्ति एक टका (चानीक) के हिसाब स पचीस टका विदाई देनाइ) स्वीकार कऽ लेलैन्ह त तखन फेर हुनका संग बैसि सौजन्य-भोजन होअय अन्यथा समस्त बरियाती भुखले ओआपस अपना गाम चलि जाथि आ सै गोटाक बनल भोजन, कन्यागत खाधि खुनवा माटि तर गाड़ि देवा पर विवश होथि। वरागतक एहि मूर्खतापूर्ण आचरणक एक वृहत अर्थ ई जे राति में विवाह सम्पन्न होइ तक कन्याक पिता 'सोति' छलाह आ प्रात भेने 'डोम' भऽ गेलाह आ ईहो जे ओ फेर पचीस टका खर्च क क 'डोम' स 'सोति' भऽ गेलाह आ 'वरक पिता' पचीस टका आमदनी पावि क 'सोति' स निश्चित रूपे 'डोम' भऽ गेलाह। कतय आ की 'मान' आ की 'अपमान' ! एहेन अर्थहीन उन्नति (Promotion) आ अवनति (Demotion) के की सराहना करी वा की कुचिष्टा करी ! आब जे सम्प्रति समधि-समधियारेक स्थिति अछि से त पहिलुको स अधलाह आ शुद्ध क 'पतितपन'। आब होइत अछि "सकल-साधारण" अर्थात् "स्वजाति (देमान जी लोकनि) सब क्यौ" समधि भेलाह। जँ बरियाती में प्रपितामह छथि त से हो, पितामह छथि त से हो, बाप-पित्ती छथि त से हो, अपनो, आ बेटा छथि त से हो - 'पाँचो पुश्त' समधि । वाह-रे-वाह ! ततवे नहिं, कन्यागत के जमाय यदि वरियाती में छथिन्ह त से हो हुनकर समधि भऽ गेलखिन्ह। आब कहू जे एहि स बढ़ि क पतितपाना की होयत जे अपने-स-अपने पाँच पीढ़ी के गारि पढ़व ! की कहू !

एहि समधि-समधियारे प्रकरण स सम्बन्धित विषय, जे विशेष द्रष्टव्ये नहिं प्रत्युत् परम विचारणीयों अछि, थीक '**बलौर**' गाम पर समस्त कायस्थ मण्डलीक 'कोप' (अर्थात् आन्तरिक क्रोध)। समस्त कायस्थ समाज के बलौर पर आक्रोश छैन्ह जे ओ लोकनि 'दुइये टा मात्र' समधि 'पितृपक्ष आ मातृपक्ष' कियेक बनवैत छथि; वृहत् कियेक नहिं ? एक टा कथ्य हमरा सूनल अछि "ओझाक लेखे गाम बताह आ गामक लेखे ओझा बताह"। हम समधि-समधियारे बाल्यावस्थे स देखैत ऐलहुँ अछि आ ताहि पर गहन चिन्तन कैलहुँ अछि। हम जाहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ से उपरे लिखि देलहुँ अछि। तदनुसार हमर दृष्टिकोण अछि जे समस्त समाज में बलौर एक मात्र गाम छथि जे आदिये काल स उचित निर्णय नेने छथि आ तकरा सतत क्रियान्वितो करैत आवि रहल छथि । इएह एक मात्र नैतिक, नियमानुकूल, परम उचित आ व्यावहारिको थीक । एहि स वृहत जे किछु होइछ अर्थात् "समधि बनेवाक" से सब तरहे अर्थहीन आ व्यर्थ अछि। तहिना नवो चलन में स कन्यागत स फ़रमाइसी भोजनक मांग, अन्यान्य वस्तु सबहक मांग, जयमाल करब आ विवाहक हेतु अपने शहर में बजावक मांगक विचार के प्रश्रय कदापि नहिं दी।

हमरा लोकनि कोनो बात पर मनन-चिन्तन नहिं करैत छी, मात्र फैशनक (Uptodacy आ Most modern होयवाक वा कहैवाक) आ अनकर नकल करवाक भावुकताक प्रवाह में बहि, अपन रीति-रेवाज़ छोड़ने जाइत छी चाहे ओ अपना हेतु सार्थक हो वा निरर्थक आ ताहू पर तुर्रा ई जे फेर अपनहिं कुचिष्टो (Criticise) करैत छी जे "कैथ के त श्रापे छैक, ओएह कपार में लिखले छैक जे कौआ डकैत रहत आ तखन ओ अत्यन्त कुसमय में भीतर घर में लाइट जरा क बसिया भोजन करैत रहत"। ककर दोष ? गाम स वरियाती ल क दुनियाँ भरिक सान-माँठ करैत, चलब विलम्बे स नहिं प्रत्युत् अति विलम्ब स, पहुँचला पर तीन घण्टा नचनाइयो (आब त बरियाती में गेल पुरुषे नहिं प्रत्युत् स्त्री-

गणोंक) परम आवश्यके भऽ गेल अछि आ ताहू पर लावा-दूआ में 'जयमालो' भेले ताकै तखन भोजन कौआ डकय काल में नहिं हो त कोन महापुरुष दस-एगारह बजे राति में भोजन कऽ लेताह ! आ ज से सत्य, त फेर कुचिष्टा (Criticise) कियैक ? की पौह फटैकाल-फरीछ होइ काल भोजन करब महा-पाप थीक ? जँ से, त युग-युगान्तरे स नहिं प्रत्युत् जन्म-जन्मान्तरे स समस्त मिथिलाक स्त्रीगण लोकनि जे जितिया पावनि में ओठङन करैत अयलीह अछि पौह फटै काल में, से महा-पाप भेल ! ओठङनो में, मात्र स्त्रीगणे नहिं बल्के मिथिला भरिक हजारो-हजार पुरुषो (एतेक तक जे वृद्धो पुरुष) भोजन करैत छथि जे सर्व विदित अछि। से की पाप भेल ? ओहुना अपना परिवारो में वर्ष भरि में अनेको बेर काज-तिहारक असामान्य स्थिति में बहुत अनुपयुक्त समय में लोक के भोजन करक पड़ैत छैक आ लोक विवशतावश अकाल-भोजन करैत अछि। की ओकरा महा-पाप कहबै ? आ ज से सब भोजनक पाप में गणना नहिं, त फेर विवाहेक विलम्बित-भोजन पर एतेक तामस आ कुचिष्टा कियैक? जहिना उपरोक्त सब अकाल-भोजन नैमित्तिक वा आकस्मिक होइछ तहिना त विवाह-भोजनों आकस्मिके ने ? कोनो नियमित अकाल-भोजन त नहिं ? एतवा ज्ञान त लोक के करक चाही ने जे बुझले बात अछि, दूनू पक्षक एतेक गोटा एकट्ठा भेल छथि आ एतेक पैघ समारोहक आयोजन भऽ रहल छैक तखन त भोजन में विलम्ब होयव स्वाभाविक थीक। ताहू स वृहत जे 'जयमाल' क की अर्थ ? इतिहास कहैत अछि जे जे वीर पुरुष युद्ध जीति क आवथि तनिका पत्नी बधाई में आरती उतारथिन्ह आ जयमाल पहिरवथिन्ह आ जनिका पत्नी नहिं तनिका बहिनि जयमाल पहिरवथिन्ह। जीतक अर्थ में जयमाल छल। वर कोन जग जीति क आ दिग्विजय क क आयल रहैत छथि ? हँ, ज एकरा "**वरमाल**" कही त कहीं सार्थक। किन्तु ताहि स्थिति में ई काज सिन्दूरदान काल किन्तु दुर्वाक्षत स पूर्वे होयवाक चाही (अर्थ ई जे 'कन्यादान' आ 'सिन्दूरदान' सम्पन्न भऽ गेला पर बधाई में (In

Congratulation) दूनू एक-दोसर के माला पहिरावथि); कोनो तरहें 'कन्यादान' स पूर्व कदापि नहिं जेना एखन भऽ रहल अछि। एखन जे भऽ रहल अछि (अर्थात् 'आदि' में) से भऽ गेलाक बाद 'ने कन्यादानक कोनो प्रयोजन आ ने सिन्दुरदानक कोनो प्रयोजन वा अर्थ रहि जाइछ; मात्र एके टा काज बाकी बचैत अछि जे मड़वा पर वर-कनियाँ कैं बैसा क सरियाती आ बरियाती मिलि क 'दुर्वाक्षत' द देल जाय (अर्थात् उपस्थित सब लोकक द्वारा वर-कनियाँ के 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' आ विवाहक अभिपुष्टि (Confirmation of marriage)'। ततवे नहिं, घोघट तक निष्प्रयोजन आ अर्थहीन भऽ जाइछ आदिए में तथा कथित जयमाल भऽ गेला पर। के बुझैयै !

हम उपरे कहि अयलहुँ अछि जे हमरा लोकनि कोनो बात पर स्वयं मनन-चिन्तन नहिं करैत छी जे की नीक आ की वेजाय आ कोन क्रियाक की अर्थ आ की हम करी अथवा की हम नहिं करी। मात्र फ़ैशनक प्रवाह में बहि 'ओ कैलैन्ह त हमहूँ कियेक ने करव', हमहुँ अवश्य करव चाहे ओ अनुचित आ अर्थहीने कियेक ने हो। एक नवका फ़ैशनक अनुकरणक ज्वलन्त उदाहरण लिय। घोघट के तुरत बाद वरियातीक लोक सब कनियाँ के 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' में किछु द्रव्य (प्रतीकक रूपें) डाला पर दैत छथि जकरा सोहाग कहैत छियैक। एहि प्रसंग में व्यवहार में एक बहुत प्रमुख (Remarkable) कमी जहाँ बहुत पूर्वहिं स आबि रहल अछि जे उक्त राशि (Amount) कन्यागत द्वारा बरियाती विदाइ काल में वरागत कैं ओआपस भेटि जाइत छैन्ह आ वरागत मात्र ओ लेव स्वीकारे नहिं करैत छथि प्रत्युत् ल क अपना मद में खर्चो कऽ लैत छथि तहीं नवका फ़ैशन में आइ काल्हि देखैत छी जे वरियाती द्वारा डाला पर देल गेल उक्त सोहागक राशि के हँसोथि क वरागत विनु गनने-गुथने अपना जेबी में राखि लैत छथि आ जतवे वा जतेक हुनका इच्छा, से अपना संग स बहार क क डाला पर राखि दैत छथि। हमरा जनैत, ने ई उपयुक्त आ ने उचित। कियैक त वरियातीक

प्रत्येक सदस्य (वरक पितामह स ल क गुरु, पुरोहित, बाजकार, खवास आ हजाम तक) द्वारा देल गेल ओ 'कनियाँ' कैं 'आशीर्वाद' आओर 'शुभ कामना' थिकैन्ह जे "कनियें" टा के भेटक चाही। 'वरागत' के की जे 'वरो' के कोनो रूप में कदापि नहिं देल जाइन्ह आ ने ओ लोकनि लेव स्वीकार करथि। 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' क जँ कोनो अर्थ छैक त ओ महान अर्थ छैक जे वरियातीक प्रत्येक सदस्य द्वारा अन्तरात्मा स प्रेरित भऽ अपना हाथ स देल गेल छैक आ जँ पृथ्वी पर मनोविज्ञान (Psychology) सत्य त ओकर अपरिमित लाभ ओहि 'कनियाँ' कैं अवश्य भेटतैन्ह। किन्तु की कहू, जिनके लेल ओ देल जाइत छैन्ह अनेकानेक लोकनि सँ ताही 'कनियें' के ओतेक गोटाक 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' स वंचित क क मात्र एक वरक अभिभावके टा क आशीर्वाद डाला पर धै दैत छथिन्ह आ से हो ओआपसीक समय में ओआपस ल लेल जाइत अछि। कहावत छैक 'एक से दो भले, दो से भले चार'। आब कहू जे बरियातीक अनेकानेक सदस्यक व्यक्तिगत रूपें अपना हाथ स देल 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' स कनियाँके वंचित क क मात्र एके गोटा (वरक अभिभावक)क 'आशीर्वाद' डाला पर देव की उचित होइछ ? एकरा विडम्बने कहि ! एहि बातक गूढ़ तत्व ओ लोकनि की बुझताह जे गुरुजन के प्रणाम करवा लेल पैर पर नहिं प्रत्युत् मात्र ठेहुने लग तक से हो मात्र हाथ बढ़विते छथि, स्पर्श कैने त जेना पाप लागि जेतैन्ह ! से कियेक करताह ! अस्तु। नीक हो वा बेजाय, मात्र आनक नकले करी से कोनो बुद्धिमता नहिं भेल।

ऊपर हम भलमानुष (सोति) आ गृहस्थ (तथा कथित निम्न कोटिक व्यक्ति) के सम्प्रति की सामाजिक स्थिति अछि तकर विशद वर्णन कऽ आयल छी। एहि स सम्बन्धित किछु प्रश्न उठैत अछि से सूनू। कन्याक कथा गृहस्थ मूल में कऽ लैत छी, वर भेटि जाइत अछि, आ अपना वर कें गृहस्थ मूल वला के देबाक हेतु तैयार नहिं होइत छी। धारणा ई रखैत छी जे हम सोति छी त अपना घर में निम्न कोटिक घरक कन्या कोना आनव। प्रश्न उठैत अछि जे अहाँक सोच में ई बात

किएक नहिं अबैत अछि जे कन्या, जे अहाँक प्रतिष्ठा आ मर्यादा थीक, तकरा जैखन निम्न कोटिक परिवार में दऽ देलहुँ तैखन अहाँ सोति रहि कहाँ गेलहुँ। अस्तु, एहि अवधारणा के आब पूर्णतः त्याग करय पड़त तैखन समाजक कल्याण सम्भव। विशेष रूपें ध्यान दिय एक बातक - "जैखन अपना कन्या, कहू जे प्रतिष्ठा आ मर्यादा के, निम्न कोटिक घर में (अर्थात् निश्चित रूपें अपना स कम पात में) देलहुँ तैखन अहाँक 'भलमानुसत्व' अर्थात् 'सोतित्व' क मात्र '**उच्छेदने**' नहिं भेल प्रत्युत् सदा-सर्वदाक लेल '**उन्मूलन**' भऽ गेल- पाँजि के यदि आधार बूझी तऽ। ई बात मन में आजीवनक हेतु धारण कऽ लेबाक थीक। सम्पत्ति, ओहदा आ प्रभुत्वक मिथ्या अभिमान में समाजक कोनो व्यक्ति कें अपना स निम्न क क बूझी, ई अज्ञानता थीक। एकर उदाहरण लिय। समाज में एक नव अवस्थाक व्यक्ति कोनो विभाग में हाकिम छथि आ दोसर टोल में क्यौ एक प्रौढ़ व्यक्ति कोनो विभाग में चपरासी। प्रौढ़ व्यक्ति के उक्त समस्त समाज 'बाबा' कहैत छैन्ह। आब कहू जे ओ व्यक्ति चुँकि हाकिम छथि तैं कि ओइ प्रौढ़ व्यक्ति के बाबा नहिं कहथि आ प्रणाम नहिं करथि ? कतेक अनर्गल ई बात होयत ? हाकिम छथि त अपना विभागक, बाबा वा समाजक कोनो अन्य व्यक्तिक त नहिं ? तहिना चपरासी छथि त से हो अपना विभागक, समाजक कोनो व्यक्तिक त नहिं ? समाज में त सब भाई-भैवी।

मोट बात त भेल जे समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज में किनका घर में कतेक नोन-तेलक खर्च छैन्ह से सब के बूझल छैक; ककरो स किछु परोक्ष नहिं छैक। तखन निरर्थके अपना के समाज स ऊपर बूझब वा फ़ाजिल बूझब सर्वथा अनुचित थीक। हमरा लोकनिक बुद्धिजीवी कहौनाइ तैखन सार्थक होयत जखन कि समस्त समाज भाई-भैवी निवाहब आ सतत आपसी विचार-विमर्श स समाज कल्याणेक काज करब। ओना व्यक्तिगत हमरा एहि स ने कोनो बहस आ ने कोनो लेना-देना अछि। हँ, लोक-जन कल्याणार्थ हम मात्र दूनू वर्ग सँ हाथ

जोड़ि प्रार्थना करैत छी जे निरर्थक दावी आ भलमानुस आ गृहस्थक भावनाक सदा सर्वदाक हेतु परित्याग क क दूनू वर्ग एक दोसर के सम्मान दिय आ परिस्थिति के अनुकूल बनाउ जे अपना कर्ण कायस्थ समाजक कल्याण होय । अस्तु, एतत्सम्बन्धित एक टा मेंही-मन्त्रक ध्यान राखब सदा कल्याणकारी । ओ ई जे "**अनका प्रतिष्ठा देला स अपन मर्यादा बढ़ैत छैक**" । 'प्रतिष्ठा' स 'मर्यादा' क ओजन बेसी आ सेएह थीक मेंही बात किंवा मंत्र जे कही । (कृपया पढू मार्मिक शब्द आ भाषा में उद्भट विद्वान श्री सच्चिदानन्द लाल दास जी क विचार आ प्रार्थना हुनके आ हुनक धर्मपत्नी द्वारा लिखित पोथी "मैथिल कर्ण कायस्थक मूल-गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार" पृष्ठ संख्या 25, अन्तिम पाराग्राफ़) ।

देखू, पाँजि (पञ्जी) क व्यवस्था जाहि बात वा विषय के ल क भेल तकर आधार निश्चित रूपे मात्र वैज्ञानिके नहिं छल प्रत्युत् परम व्यावहारिको छल लगभग सात सै वर्ष पूर्वक युगक हेतु आ जैं आदिये स समस्त समाज द्वारा मान्यता प्राप्त रहल तैं त ई प्रथा एखन पर्यन्त जेना तेना अस्तित्व में दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि (बहुत किछु उठि रहल अछि तकरा बादो) । किन्तु एकर आ एकर पालक (अर्थात् पञ्जीकार) क अस्तित्व लगभग पूर्णतया मेटा गेने (जेना हम उपरे लिखि अयलहुँ अछि), मात्र पाँजिक नामे पर निरर्थक धंधा चलैत रहौ आओर समस्त समाज भठितो रही आ अपार व्यावहारिक क्लेश में डुबैत रही से अज्ञानते भेल । मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुर में अनेको बेर बैसार (Meeting) भेल तीन स पाँच घण्टाक जाहि में चौदहो-पन्द्रह बेर हम उपस्थित रही । हमरा ई देखि परम आश्चर्य होअय जे एते पैघ समाजक बैसार आ तकर कार्य-सूची (Agenda) किछु ने ! प्रत्येक बैसार में चारि–पाँच घण्टाक अभ्यन्तर सब बेर एके टा बात देखै में आवय जे एक कोन स आवाज सुनाइ पड़ै "हमरा ई 'छोटहा' कहताह आ ई बड़ 'बड़का'; दोसर कोन स आवाज आवै जे "हँ, टाका गना क बेटाक

विवाह करताह तखन 'छोटहा' नै कहौताह" आ एही पर घेंघाउज आरम्भ होअय । एही वहसा-वहसी आ रस्सा कसी (Tug of war) में समय नष्ट भऽ जाय आ सभा विसर्जन कऽ सब क्यौ अपन-अपन घर जाथि । अन्त में आजीज़ भऽ हम सभा में गेनाइ छोड़ि देल कारण जे जँ पढ़लो-लिखलक सभा में भ्होंटहा पंच जकाँ मात्र राँड़िये-बेटखौकी होअय त से देखला-सुनला स कोन लाभ ! आई स लगभग अठारह वर्ष पूर्व दरभंगा पंचायत प्रेस में बहुत सम्भ्रांत व्यक्ति लोकनिक उपस्थिति में एक सभा भेल छल जाहि में सूनल जे एक संविधान बनय आ ई निर्णय लेल गेल जे सब गोटे एक भऽ जाइ । दुखद ई भेल जे उपस्थित सब सज्जन में स क्यौ ई नहिं बजलाह जे कोना 'एक भऽ जाइ' आ ने तकर कोनो प्रयासक प्रस्ताव पास भेल । फलतः प्रयासक अभाव में आइ तक एक नहिं भऽ सकलाह दूनू कोनक आवाज उठौनिहार लोकनि । स्थिति यथावत अछि । एकरा निवारणार्थ समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज के अन्तरात्मा स प्रेरित भ क आ पाँजि पर आधारित तथाकथित 'भलमानुष' आ 'गृहस्थ' क अवधारणा के सर्वथा परित्याग क क "सब मैथिल कर्ण कायस्थ एक छी, आ एके शोणित छी" क बोध स्वयं में बना इएह प्रज्ञा आजीवन राखी, अपना विचारो में आ व्यवहारो में, तैखन अपना समाजक कल्याण हो ! हमरा ज्ञान में इएह अवैत अछि ।

पाँजि में जे 'भलमानुष' आ 'गृहस्थ' क अवधारणा भेल तकर आधार छल विवेक-विचार आ आचार-व्यवहार, नहिं कि 'मूलग्राम', 'डेरा' आ 'वास' । आधार ठोस छल तैं ओहि समय में सम्पूर्ण समाज में सर्वमान्य भेल छल आ इएह कारण जे एतेक दिन (लगभग सात सै वर्ष) एकर अस्तित्व कायम रहल; औखन अछि किन्तु '**मृतप्राये**' नहिं बल्के '**पूर्ण मृत**' । गत तीस-पैंतिस वर्ष स एकर जे हाल भेल अछि से सोदाहरण सूनू । ई घटना पैंतिस वर्ष पूर्वक थीक । श्री शिव बाबू, श्री शंभु बाबू आ श्री शंकर बाबू, तीनूक पत्नी सोदर बहिन तैं ई तीनू गोटे आपस में साढ़ू । ई लोकनि अपना सरबेटाक विवाह में बरियाती गेल

रहथि महेशपुर जे शुद्ध क 'भलमानुष' क गाम अछि; एको परिवार 'गृहस्थ' नहिं। श्री शिव बाबूक एक मात्र कन्या एही गाम मे विवाहल आ बाल-बच्चेदार। घरो बेस सुखितगर, कोनो अभाव नहिं। विवाहक प्रात हिनक जमाय जनवासा पर आबि, जतय तीनू साढ़ू बैस क बतियाइत छलाह, तीनू के पैर छूबि क प्रणाम कैलथिन्ह आ अपना ससुर (श्री शिव बाबू) कैं आग्रहो जे एहि साँझ भोजन अपने हमरे कोतय करब आ अगिला साँझ फेर वरियाती में सम्मिलित रहव। ससुर असौकर्य में पड़ि गेलथिन्ह अपना स दूनू छोट साढ़ूक समक्ष आ किछु काल गुम्म रहि उत्तर देलथिन्ह जे राति बहुत विलम्ब स आ वृहत् भोजन भेलैक अछि तैं दिन में भोजनक इच्छो नहिं आ अहाँक मौसा लोकनि स बहुत दिन पर भेंट भेल अछि तैं छोड़ि क जैवो इष्ट नहिं। जेना-तेना ससुरक इशारा बूझि जामाता महोदय कहलथिन्ह जे त ओहि में हर्ज की, इहो लोकनि अहाँ संग औताह। ससुर कहलथिन्ह जे से अहाँ कहियौन्ह तखन ई लोकनि संग जैताह त हमरो मोन लागत। "मौसा जी, अहूँ लोकनिक भोजन ऐ साँझ हमरे कोतय होयत, तीनू गोटे संग भोजन करव" जमायक उक्ति छलैन्ह। भोजन काल जमायक संग समधियो उपस्थित रहथिन्ह आग्रह में। किन्तु हे नारायण ! ई की ! मौसा लोकनिक थारी में दू टा क तरकारी आ शिव बाबूक थारी में दू तरहक तरुआ मिला क पाँच टा तरकारी। तीनूक थारी में एक-एक बाटी झोराओल माछ; शिव बाबूक थारी में चारि कुट्टी तरलो। तीनू गोटा कैं एक-एक बाटी में दही-चीनी; शिव बाबू कैं एक छिप्पी में चारि टा मधूरो। भोजनोपरान्त शिव बाबू कैं आग्रह में एक जोड़ धोतियो। शिव बाबू भोजन काल त जहरक घोंट पिबितहिं छलाह, धोती देखि जेना निष्प्राण भऽ गेलाह, बाक हरण भऽ गेलैन्ह, मूर्तिवत् स्तब्ध भऽ गेलाह। ओहि निष्प्राण शरीरक मुँह स मात्र एतवा बहराएल जे पाहुन, हम बहुत किछु पाओल; (अपना समधि स) समधि, समधियेक सत्कार में धोती उपस्थित अछि। अपनहुँ त समधिये छी, कृपया ई अपने स्वयं पहिरि लेव

आ हमरा लोकनिक तरफ स धन्यवाद ! ई कहि तीनू साढ़ू घरे स नहिं प्रत्युत् अंगने स बाहर भऽ गेलाह। हो विधाता ! के भलमानुष आ की भलमनसाहत !

दोसर घटना सूनल अछि जे निम्न थीक। शिवपुर में आधा गाँव बत्तिकवाल आ आधा गाँव अठहर आ बीअर। शंकरपुर सौंसे गाम बलाइन। शम्भुपुर में मोहनी आ गढ़कव। शंकरपुरक बलाइन लोकनि आ शम्भुपुर मोहनी लोकनि शिवपुरक अठहर आ बीअर सँ सम्बन्ध नहिं करैत छथि, की त ओ लोकनि 'गृहस्थ' छथि। अद्भुत! एहू स बढ़ि क एक दोसर बात जे शंकरपुर कोनो काज तिहार में शिवपुरक बत्तिकवाल कैं नेओत दैत छथि किन्तु ओहीठाम अठहर आ बीअर कैं निमंत्रण नहि दैत छथि। की आश्चर्य! सब क्यौ शोणिते आ दूनू गाम "**एके चौगामा**", हा बुद्धि! हा दैव! हे सरस्वती, कतय निद्रा में छी ! बत्तिकवाल लोकनि कैं उक्त निमन्त्रण पर भोजन लेल जयवा में बहुत असौकर्य प्रतीत होइत छैन्ह, बल्के अनेक बेर ओहि में स किछु लोक एकरा विरोध में निमन्त्रण अस्वीकार कऽ देवाक मोन बनवैत छथि किन्तु प्रत्येक बेर ओएह अठहर आ बीअर लोकनि हुनका लोकनि कैं शांत कऽ दैत छथि ई कहि क 'जे अपना शोणितो के नहिं चीन्हथि तिनका कायस्थ कहैवाक की अधिकार आ ताहि खातिर अहाँ लोकनि किएक अपन सम्बन्ध बिगाड़व'। इत्यादि, इत्यादि। आब अहीं कहू जे **के 'भलमानुष' आ के 'गृहस्थ'** ! ततवे नहिं, जिनका लोकनि कैं बड़ ऊँच परिचय आ उतेढ़क दावा छैन्ह ताहि में स एको गोटाक किछु टा बाँचल नहिं छैन्ह जे हम उपरे सावित कऽ चुकल छी। सब कुलक ई नवका पीढ़ी तेना ने 'विजाति', 'अजाति' आ 'कुजाति' में विवाह कऽ रहल छैन्ह जे किदन गेलैन्ह भड़ोरा आ ई सब नाक दबनहिं छथि।

ऐं औ, कथा-वार्ताक जटिल समस्या अछि, सब क्यौ जनैत छी, सब जटिलताक फल भोगि रहल छी, सब कि, समस्त समाजे आह, ओह, उफ़ कऽ रहल छी - कि ई हमरा लोकनि पर ककरो द्वारा थोपल गेल अछि कि हमरा लोकनिक स्वयं द्वारा निर्मित समस्या अछि ? यदि

हमरा लोकनि विवाह शब्दक गरिमा बूझी आ महत्वाकांक्षा (महत् अर्थात् वृहत इच्छा) क परित्याग क क सब क्यौ अपन-अपन वर कैं कथावार्ताक मैदान में उतारय लागी त ई समस्ये विला जायत, एकर अस्तित्वे नहिं रहत ! समस्त मैथिल कर्ण गोष्ठी एहि समस्या स त्राण पावि जायब । समय पर विवाह नहिं भेला स जे धियापुता सब जँहितँहि विवाह कऽ रहल छथि से सदा सर्वदाक लेल रुकि जायत । हिन्दू मात्र में जहिना जातिक अभ्यन्तर विवाहक विधान अछि, तहिना अपने गोत्र, अपने प्रवर, अपने मूल आ अपने सपिण्ड में विवाहक निषेधो अछि । जातिक अन्दर विवाह करव 'अन्तर्विवाह (Endogamy)' कहवैछ तथा गोत्र, प्रवर, मूल आ सपिण्ड के बाहर विवाह करव 'बहिर्विवाह (Exogamy)' कहल जाइत अछि । गोत्र, प्रवर, मूल आ सपिण्डक विषय में हम पहिनहिं लिखि चुकलहुँ अछि । कहू जे आन जाति में विवाह क लेव से कोनो प्रशंसाक बात थीक ? हम त एकरा अज्ञानताक संज्ञा दैत छी । की मैथिल कर्ण कायस्थ में कन्याक कोनो अभाव छैक ? एक-स-एक कन्या उपलब्ध छैक । किन्तु आन जाति में विवाह करवा सँ पूर्व एहि बातक विचार अवश्य करी जे आजीवन सामंजस्यक हेतु वर आ कन्याक सभ्यता-संस्कृतियो त एक हो, तैखन ने आजीवन सामंजस्य आ सुविधा रहत अन्यथा कोनो अँगरेजनी स विवाह कैने त फल इएह होयत जे वर तमसा क कहथिन्ह "**सटप"** त कनियाँ (मेम) तमसा क कहथिन्ह "**गेटाउट**" । आब कहू जे ई कोनो नीक बात भेल ! एहि संग हमर एक प्रार्थना ईहो जे हमर कोनो बात यदि अनर्गल बुझना गेल होय त अनपढ़ जानि हमरा क्षमा कऽ देव । कारण हमर ई बात पढ़निहार में स किनको नीको लागि सकैत छैन्ह त किनको अधलाहो बूझि पड़तैन्ह । किनको कोनो अंश बहुत प्रिय बूझि पड़तैन्ह त किनको कोनो अंश अतखाइन, कठाइन, विशाइन, लोहराइन आ चिड़ैताइनें नहिं प्रत्युत् असाध्य कड़ू आ परम उत्कटाइनों लगतैन्ह किन्तु हमर प्रार्थना जे ओ पढ़ि क, हमरा सजाय में, पढ़लाहा के हमरे नाम पर थुकरि देथि जेना

नागपञ्चमी में नीम-पखुआ के आ दाह संस्कार स फिरला पर सोहराय, खपरभुज्जा चाउर आ मिरचाई के थुकैर दैत छथि । हमरा जतवा बोध छल से लिखल ।

पोथी सम्पन्न करवा सँ पूर्व हम अपन एक विचार (विन माँगल) दऽ नहिं रहल छी, प्रत्युत् पोथी में मात्र राखि रहल छी । परिवर्तन हमरा स्वीकार अछि किन्तु "**कल्याण आ विकास**" क हेतु, '**अकल्याण आ ह्रास**' क हेतु कदापि नहिं । हम अपन निजी बात कहैत छी । जे जे परिवर्तन (यथा सिध्यान्त करव, जन सम्वाद पठायव, समधि-समधियारे करव, विदाइ देव-लेव, भार-दौर करव, इत्यादिक उन्मूलन) हमरा कारगर बूझि पड़ैत अछि, विनु ककरो पुछने-कहने हम क्रियान्वित कऽ लैत छी; ककरो कहव वा अपन कोनो विचार किनको पर थोपव से हमरा इष्ट नहिं । हमर एहेन कोनो कयल काज जिनका नीक लगैत छैन्ह से स्वयं अपना घर में क्रियान्वित कऽ लैत छथि । उदाहरणार्थ जाही तरीका स हम अपन विवाह कयलहुँ, दूनू बालकोक विवाह ताही तरहें कैलहुँ । हमरा देखा-देखि, देयादी में हमर एक पितामह एक बेटाक, लखनपुरक हमर बहिनोइ अपन दू बेटाक, बलाटक हमर समधि अपन एक बेटाक विवाह ठीक ओहिना कयलैन्ह । एहि तरहें कम-स-कम सात कन्यागतक कन्यादानक समस्या त बूझू जे चुटकी बजा क आ विना कोनो सामान्यो कठीनाइ के हल भऽ गेलैन्ह । अपना ओहि ठाम स, उपरोक्त विधि-व्यवहारक त्याग के अलावे, हम अपनहिं विवाह स (संगहि दूनू बालकोक विवाह में) किछु विधि-व्यवहारक उन्मुलन कऽ चुकल छी यथा बरिसाइत ('वट सावित्री'), पचाकि ('पञ्चाग्नि'), भतराइस ('तुसारी'), मधुश्रावणी आ कोजागरा । मूड़न-चूड़ाकरण, आ श्राद्ध में एकादशा दिन आँगन में सय्या दान, ई हो सबहक उन्मूलन हमरा परिवार में भऽ चुकल अछि, इत्यादि-इत्यादि । यदि समाजक अनुग्रह, आशीर्वाद आ शुभ कामना बनल रहल त आगुओ भविष्य में एहि में आओर इज़ाफ़ा होयत, से आशा करैत छी ।

सिध्यान्त करव की छल । कन्या पक्ष आ वर पक्ष में आपसी विचार-विमर्श स कथाक निश्चय भऽ गेला पर एक सादा समारोह में दूनू पक्ष मिलि उपस्थित अनेकानेक लोकनिक समक्ष, जाहि में दूनू पक्षक अपन-अपन समाजोक लोक आओर अनेकानेक गामक सरो-कुटुम्ब सब सम्मिलित रहैत छलथिन्ह, प्रतिज्ञापित होइत छलाह । समारोह एहि हेतु जे अनेकानेक गाम-समाजक एतेक उपस्थित लोक एहि प्रतिज्ञाक गवाह रहथु । यद्यपि ओ युग सेएह छलैक जे 'देल वचन' आ 'कयल प्रतिज्ञा' स केऔ पलटैत नहिं छल कारण जे से करब समाज में प्रतिष्ठाक अभिघातक बूझल जाइत छलैक आ मर्यादाक परम हानि होइत छलैक आ तथापि लोक गवाही रखैत छल । औखन तक ओएह चलन प्रचलित अछि यद्यपि आब उक्त कयल प्रतिज्ञा स गत पन्द्रह-बीस वर्षक अभ्यन्तर सैकड़ों व्यक्ति पलटि गेलाह अछि आओर फलस्वरूप सैकड़ों सिध्यान्त टूटि चुकल अछि जे सर्व विदित अछि आ तैं हमरा कहवाक प्रयोजन नहिं अनुमानतः अपनहुँ लोकनि, आ स्वयं हमहूँ, एहेन कोनो सिध्यान्त के टुटि गेला पर दूनू में स कोनो पक्ष द्वारा ने समाज में आ ने न्यायालय में कोनो Case-मोकदमा होइत आइ तक देखलियैक अछि (टुटि गेलैक त टुटिये गेलैक) । आ ज Case-मोकदमा नहिं भेल त ओकर सुनवाइयो (Trial)ो नहिं भेल । आ ज सेएह त कोनो गवाहियो नहिं गुजरल । तखन त गत ६९८ वर्ष सँ लाखों-लाख सिध्यान्त में जे समाजक लोक स ल क दूनू पक्षक अनेकानेक गामक सर-कुटुम्ब तक बूझू जे करोडों लोक सिध्यान्त में उपस्थित भेलाह तनिका आवय-जाय में आ पान-मसाला-जलपान में जे करोडों रुपैयाक खर्च भेल (सिर्फ गवाही रखवाक हेतु) तकर त कोनो सार्थकता नहिं सिद्ध होइछ अर्थात् करोडोंक खर्च त निरर्थके भेल, से सावित भऽ गेल । कहू आब एहि 'सिध्यान्त' क की उपयोगिता ? एकरा कियेक नहिं उठा दी ? कैयेक हजारक खर्चोक बचत त होयत ! सिध्यान्तेक की, हम त स्वयं लगभग ४५-५० टा विवाहो टुटैत देखने छी । ताहू में तेहेन-तेहेन विवाह जे 'दू' संतान भऽ

गेला पर आ 'पाँच' संतान भऽ गेला पर से हो टुटैत देखने छी । विवाह में सरियाती आ वरियातियो में जे समाज आ सर-कुटुम्बक लोक एकट्ठा कयल जाइत छैक (आ बाजा-गाजा स बाटक कातक एतेक गाम सब में सुचित कयल जाइत छैक) से हो गवाहिये राखक हेतु आ ज गवाही राखक कोनो सार्थकता नहिं तखन एतेक वृहत खर्च क क एतेक गोटा के बरियाती लऽ जैवाक कोन प्रयोजन ! कियेक ने पाँचे-सात गोटे स वर के संग लऽ विवाह करा आनल जाय; अनावश्यक बहुत खर्चोक बचत त होयत ! चतुर्थी दिन वा तकरा प्रात (अर्थात् छठम दिन) वर (अनिवार्य रूपें Compulsorily) द्विरागमन करौने आवथि से श्रेयस्कर; ई हो दूनू पक्षक अपनो हेतु आ दूनूक कोतय एहि अवसर पर उपस्थित सरो-कुटुम्बक हेतु समय आ खर्चो में पूर्ण किफ़ायत होयत । कहू ई केहेन नीक आ उपयोगी विचार अछि । हम त कहब जे 'चतुर्थियो' क आब कोनो उपयोगिता नहिं रहि गेल । विवाहक प्रातो 'द्विरागमन' भै जाय त कोनो अधलाह नहिं ! प्रत्युत् नीके ।

यदि विवाह में नवे पद्धति अपनैवाक हो, यदि (जयमाले) वरमालेक प्रथा अपनैवाक हो, यदि स्त्रीगणों के बरियाती में लै जैबाक हो, यदि बरियाती में पुरुष-स्त्रीगण सब गोटे कैं नचबाक हो, यदि विवाह सम्पन्न भेला पर बरियातिक ओआपसीक संग विदागरीयो (द्विरागमन) करैवाक हो त हमर विचार जे :

१. वर क सूत्रपात आ पता गाम-गाम में अपन सम्बन्धी-सम्पर्की लोकनि स सम्पर्क क क लगावी (ध्यान रहय जे 'गृहस्थ' आ 'भलमानुष' क कोनो स्थान कदापि नहिं दी) ।
२. वर आ कन्याक टीपनि (Horoscope) अवश्य नीक जकाँ मिला ली विवाह स पूर्व; एकर वैज्ञानिक आधार छैक ।
३. चुँकि पाँजि-पञ्जीकार नहिं रहलाह, व्यावहारिक इएह जे मात्र एक (सम) गोत्र, एक (सम) प्रवर आ एक (सम) मूल में

विवाह नहिं करब, से विचार आ तकर ध्यान अवश्य राखी। ओना देखय में आओत जे क्षेत्र (दायरा) बहुत सीमित भेने कठिनाई बहुत होयत, किन्तु से बात नहिं। मैथिल कर्ण कायस्थ के ५७३ (पाँच सै तिहत्तरि) टा मूल छैक आ अनेक गोत्र आ प्रवर छैक। (अधिकार जँचायव आ सिध्यान्त करव आब पूर्णतः अर्थहीन भऽ गेल अछि तैं एकर सर्वथा परित्याग करी। हम अहाँ बुझैत छी जे अधिकारक जाँच भै रहल अछि, किन्तु ओ कुल बोगसवाजी (ठकैती) थीक जे हम उपरे पूर्णतया सावित कै देलहुँ अछि) ।

४· विवाहक दिनक निश्चय दूनू पक्ष आपस में मिलि क कऽ ली।

५· एक बहुत प्रमुख बात जे आदि (कथावार्ता) स ल क अन्त (द्विरागमन) तक दूनू पक्ष एक-दोसर के अतिशय आ परम सम्मान दी आ से हो पूर्ण स्नेह, उत्साह आ प्रसन्नतापूर्वक आ सेएह भावना आ व्यवहार आजीवन बनल रहय से ध्यान राखक थीक।

६· विवाहक स्थान कोनो धार्मिक स्थल (शिव मन्दिरक अतिरिक्त) वा कोनो खुला मैदान, वा कोनो पैघ हॉल वा कोनो सामुदायिक भवन वा एहने कोनो उपयुक्त परिसर/स्थान राखल जाय जे दूनू पक्षक निवास स्थानक मध्यक सुविधापूर्ण स्थान (जहाँ तक सम्भव) हो।

७ विवाह-स्थल पर (सिध्यान्ते-स्थल जकाँ) दूनू पक्ष के आमने-सामने बैसवाक हेतु यथेष्ट स्थान रहय; बीचक स्थान, जतय विवाह होय, से हो फैल रहक चाही।

८· विवाह स्थल पर दूनू पक्ष मिलि क इजोतक आ जलक व्यवस्था राखथि; पेय पदार्थक व्यवस्था से हो भऽ सकैत अछि (यदि चाही)। एहि में सँझुका (रातुक) पेय के एकदम आ

निश्चित रूपें वर्जित राखी (एहि अवसर पर ई **'पेय' नहिं 'हेय'** थीक)।

९· अपना-अपना डेरा स (नचैत-कछैत) वर आ कन्या ल क दूनू पक्ष विवाहक निर्धारित समय स एक-दू घंटा पूर्वहि विवाह स्थल पर पहुँचि जाथि।

१०· दूनू पक्ष अपना-अपना संग भोजनक पैकेट (Lunch Packets) दूनू पक्ष में परसवाक हेतु (संग पान-सुपारीक) आनथि जेना सिध्यान्त में दूनू पक्ष जलपान आ पान-मसाला अनैत छी। ओना वृहद्भोजनक दोसरो व्यवस्था राखल जा सकैछ दूनू पक्ष द्वारा किन्तु से फेर ओएह समय आ खर्च बेसी लेत आ ओ परेशानियोंक कारण बनत।

११· विवाहक निर्धारित समय सँ पाँच मिनट पूर्व दूनू पक्षक उपस्थित सब व्यक्ति उठि क ठाढ़ होथि अपना-अपना स्थान पर (हाथ में दुर्वाक्षत नेने)।

१२· दूनू पक्षक बीचवला स्थान में दूनू पक्षक स्त्रीगण लोकनि वर आ कन्या के ल क ठाढ़ होथि (अपना-अपना हाथ में दुर्वाक्षत ल क आ कन्या वरक हाथ में वरमाला द क)।

१३· सबहक समक्ष कन्या वर के आ वर कन्या के बेराबेरी माला पहिरावथि आ दूनू पक्षक सब क्यौ मिलि क दुर्वाक्षत देथि जे 'आशीर्वाद' आ 'शुभ कामना' क प्रतीक थीक।

१४· तकरा तुरत बाद दूनू पक्षक लोक जिनका वर आ कनियाँ के कोनो उपहार देवाक होइन्ह से दूनू के हाथ क देथि। वर अपना तरफ स उपहार में कनियाँ कैं सिन्दूरक कीया/पैकेट अवश्य देथि आ माँग (सिउँथ) में सिन्दूर लगा देथि। उपहार देवाक काज, सरियाती आ वरियाती पक्षक लोक विवाह स पूर्वहुँ वा पश्चातो वर वा कन्या के हुनका डेरहुँ पर अथवा

विवाह स्थलो पर, कऽ सकैत छथि (जेना सुविधा होइन्ह)।

१५· उपहार-विधि सम्पन्न भेला पर वर आ कनियाँ, लगक कोनों मन्दिर में जा क संग मिलि क देवी-देवता कैं प्रणाम करथि वा से उपलब्ध नहिं रहने (वा प्रणाम केलाक बाद) :-

१६· दूनू पक्ष दूनू पक्ष में भोजन पैकेट (सिध्यान्ते जकाँ) परसथि, भोजन करथि आ पान सुपारी खाथि।

१७ तत्पश्चात् कन्या-पक्ष वर आ कनियाँ के ल क कुलदेवता के प्रणाम करावक हेतु अपना घर क प्रस्थान करथि आ घर पहुँचि क प्रणाम करावथि आ तकरा बाद वर अपना कनियाँ के संग लऽ वरियाती समेत अपना गाम आवथि।

एके बेर में आदि स अंत तक के सब विधि सम्पन्न। ने पुरोहितक प्रयोजन ने वेद-मंत्रक कोनो बखेड़ा। श्रम, समय आ साधन (अर्थ) के कम-स-कम लागत। तकरा बाद किछु करवाक काज नहिं। बट सावित्री, पञ्चाग्नि, भतराइस, मधुश्रावणी आ कोजागराक कोनो प्रयोजन नहिं; निरर्थक परेशानी आ खर्चक घर थीक। एहि सब पावनिक जँ कोनो युग में रहलो हेतैक त आब कोनो तथ्य नहिं रहि गेलैक अछि; ने धार्मिक ने व्यावहारिक। जँ कोनो तथ्य रहितै त नहिं कयला पर दूनू पक्ष के बिगड़ितै। नोकसान होइतै। पचाकि (पञ्चाग्नि) सन प्रमुख पावनि सौंसे समाज स उठि गेलैक, आइ तक ककर की बिगड़लैक ? आ तहिना, हम अपना विवाह स ल क दूनू बालकोक विवाह में ई सब पावनि अपना कोतय स उठा देलहुँ, हमरा आइ तक किछु नहिं बिगड़ल अछि।

एहि पद्धति स विवाह भेने श्रम, समय आ साधन (अर्थ) सबहक बचत त होयबे करत जे आन-आन समाजक सभ्यता, संस्कृति आ विधि-व्यवहारक समावेश जे एखन अपना परम्परा (विधि-व्यवहार) में करय चाहैत छी से हो सौख पूर्णतया पूरत आ ई क्रान्तिकारी परिवर्तन होयत आ तैं एकर नाम **"कर्ण सुलभ विवाह"** राखल जाय।

अंत में हम समस्त मैथिल कर्ण कायस्थ समाज सँ हाथ जोड़ि एहि बातक क्षमा-प्रार्थी छी जे एहि पोथी में वर्णित कोनो बात जँ किनको अप्रिय लागल होय त ताहि हेतु हमरा मूर्ख-अनपढ़ जानि क्षमा कै देथि।

इति।

“मैथिल कर्ण कायस्थ समाज” सँ प्रार्थना

मैथिल कर्ण कायस्थ केर ‘पञ्जी', जे छल हिनकर अति प्रिय ‘अंगी',
जर्जर भेल स्वयं ई, हमरो सब के करा देलक भिखमंगी ।

भीखो भेटि जाइछ मंगला पर, ‘वर' ने भेटय तेहेन महँगी,
वर पक्ष नहिं कान सुनै छथि केहनो रहथु ओ अति प्रिय संगी ।

कन्या दै लऽ सब प्रस्तुत छी वर तकै में होइ अछि तंगी,
‘वर पक्ष' पुनि ‘कन्यागत' बनि भऽ जाइत छथि ‘अति बदरंगी' ।

एहि समाज केर कलपाना सँ ‘पाँजि' अपन ‘अस्तित्व गमौलनि',
पाँजिक ‘कुप्रयोग' कैला सँ पँजियारो ‘सम्मान डुबौलन्हि' ।

‘युग नहि देखि समय नहिं सोचलनि' खाली अनुचित पाइ कमैलनि,
अपन स्वार्थ साधन में पड़ि क, ‘कर्ण समाजक दुर्गति कैलनि' ।

हमहूँ सब हुनके संग दै छी, हुनके स अनुचित करवै छी,
उनटे अपयश दै हुनके, हुनके टाका दै बूड़ि बनै छी ।

की ‘समाज' की ‘सामाजिकता', की ‘पंजी' की ‘परिचय-पात',
घोर युगक जे बज्रपात स पड़ि गेल सब पर अति अभिघात ।

की ‘अपेक्षा' की ‘आपेकता' सब पर भेल तुषारापात,
‘शोणितो' के नहिं चीन्हि रहल छी एहि स बढ़ि की हो संताप ।

‘पाँजिये' नहिं ‘पँजियारो' गेला दै हमरा सब के ई ‘श्राप',
के ‘गृहस्थ' आ के ‘भलमानुष' सम्प्रति थीक मात्र अभिशाप ।

नहिं क्यौ रहला अछि ‘भलमानुष' आ नहिं क्यौ रहला ‘गिरहस्थ',
‘कथावार्ता' केर थकान सँ दूनू भै रहला अछि ‘पस्त' ।

तैयो दूनू के नहिं सूझय जे ‘तकता उद्धारक बाट',
एक दोसर के ‘रंग देखावथि' और ‘बघारथि अपन ठाठ' ।

‘वर पक्ष' बनि ‘शान बघारथि' ‘कन्या पक्ष' बनि ‘अति क्लांत',
ने ‘भलमानुष' ने ‘गृहस्थ' के, तैयो दूर होय ‘मतिभ्रान्त' ।

ने समाज में अछि क्यौ ‘बड़का' आ नहिं क्यौ समाज में ‘छोट',
जे ई ‘भेद' करय बूझू जे मोन में ओकरा छै ‘बड़ खोट' ।

ई ‘खोट'क ‘फ़ीलिंग' अछि माहुर जे उपजावय ‘अगवे द्वेष',
‘ई ज्वाला' भस्म कै छोड़त किछु नहिं बचत समाजक शेष ।

सब छी ‘शोणित' सब छी ‘एक्के' ने ‘भलमानुष' ने ‘गिरहस्थ',
सम्बन्ध जोड़ि एक दोसर सँ करू ‘समस्या' के ‘अन्तस्थ' ।

‘मैथिल कर्ण कायस्थ' मात्रहिं में होइछ जहिना ‘शील अपार',
विद्या बुद्धि विवेके नहिं शालीनतो स भरल भण्डार ।

खानो-पान तेहने पवित्र छनि जेहने छनि हिनकर आचार,
‘आदर्शक मूर्ति’ रहला अछि ‘सादा जीवन उच्च विचार' ।

जँ आवो नहिं चेतव, सोचव जावत नहिं ‘समाज उद्धार',
पार ने पायव, ‘विषम परिस्थिति' करिते जायत ‘बन्टाधार' !

‘जोडू आपस में सम्बन्ध' सब, सब स करू नीक व्यवहार,
सब ‘समस्या दूर पड़ायत' भै जायत ‘कर्णक उद्धार' !!

हे ‘समाज' ! जागू चेतू आ ‘पूरित करू' हमर ई ‘आश',
‘चरण पकड़ि' औ ‘शीष झुका', छी प्रार्थी हम कमलधर दास !!!

महानुभाव {‘गुरुजन' ('परम पूज्य') आ ‘हितचिन्तक' ('परम मान्य')} लोकनिक सूची

एहि पोथीक रूप में जे “मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध” कथा अपनेक हाथ में उपस्थित अछि, तकर श्रेय निःसन्देह आ निश्चित रूपें हमर ‘गुरुजन' ('परम पूज्य‘) आ ‘हित चिन्तके' ('परम मान्य') लोकनि कें छैन्ह क्रमशः जिनके ‘आशीर्वाद' आओर ‘शुभकामना' स ई पोथी तैयार भेल, आ ओ महानुभाव लोकनि छथि :-

(१) हमर “गुरुजन (परम पूज्य)”

सर्व प्रथम हमर पितामह श्री बुन्नीलाल दास (अध्यक्ष, खेराजपुर अठगामा) तथा हमर पिता श्री सत्य नारायण दास (पेशकार, मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ/ मैनेजर, मधुबनी इस्टेट, बड़ा तरफ) ओ हमर परम आदरणीय ग्रामीण (**खेराजपुर**) लोकनि यथा सर्वश्री जनक बिहारी निधि (एसिस्टैंट रेवेन्यु सुपरिन्टेन्डेन्ट, राज दरभंगा), छीतन लाल दास (पेशकार, राज दरभंगा), श्रीकान्त लाल दास (अमीन साहेब), बाबूचन्द दास, मोसद्दी लाल दास, उत्तम लाल दास (लॉ क्लर्क, राज दरभंगा), रमापति लाल दास, रघुपति लाल दास (कर्मचारी, बिहार सरकार), रामकृष्ण लाल दास, बालकृष्ण लाल दास, राजाराम चौधरी, नेवाजीलाल चौधरी, सीताराम चौधरी, मीताराम चौधरी, बासुदेव चौधरी, सुखदेव चौधरी, अशर्फीलाल चौधरी, देव नारायण चौधरी, लक्ष्मी नारायण चौधरी, दुखिया चौधरी, नत्थूलाल चौधरी, जगतमणि चौधरी, जयजयराम चौधरी, वंशीविहारी दास, छेदूलाल दास, प्रयाग दास, गंगाराम दास, मधुसूदन लाल दास, हरिदेव लाल दास, विष्णुदेव लाल दास (प्रसिद्ध “बद्री बाबू”), शशिरंजन दास (राजा बाबू), तुलापति दास, ब्रजनन्दन दास (महथू बाबू), श्रीनन्दन दास (भक्त-प्रभु), सूरतिलाल

दास (गार्ड, बी.एन.डब्ल्यु.रेलवे), कन्हैया लाल दास, शिव शंकर दास, बद्री नारायण दास (दरभंगा कलक्टरेट), राधाबल्लभ दत्त, श्रीबल्लभ दत्त, काशीबल्लभ दत्त, बृजबल्लभ दत्त (स्टेट बैंक), रामसुन्दर दास (बचनू बाबू), ज्ञानेन्द्र नाथ दास 'लल्लू बाबू' (एकाउण्टेंट, सिविल सर्जन ऑफिस, दरभंगा ओ सहायक मैनेजर, लाइट हाउस सिनेमा, लहेरियासराय), धीरेन्द्र नाथ दास 'ननू बाबू' (कारप्रदाज, दरभंगा ट्रेज़री), उपेन्द्र नाथ दास 'छन्नू बाबू' (पी.डब्ल्यु.डी.), वीरेन्द्र नाथ दास 'मन्नू बाबू' (टिस्को, जमशेदपुर), डाँ. राम किंकर लाल दास (न्यू यॉर्क, अमेरिका), श्री गुलाब चौधरी, डाँ. उमराव चौधरी (बंगाली बाबू), विश्वनाथ चौधरी (स्वतन्त्रता सेनानी), रत्न देव चौधरी (बड़ा बाबू, दरभंगा कलक्टरेट/एकाउण्टेंट, सिविल सर्जन ऑफिस), बालमुकुन्द चौधरी, जयगोविन्द चौधरी, हरि शंकर चौधरी (ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, दरभंगा कलक्टरेट), वैद्यनाथ चौधरी (रेलवे), शिवशंकर चौधरी 'राम बाबू' (कलक्टरेट), नारायण चौधरी, अवध विहारी चौधरी (राजस्व विभाग, विहार सरकार), गोवर्धन चौधरी (मैनेजर, रुन्नीसैदपुर इस्टेट), वैद्यनाथ चौधरी (स्टेट बैंक), सत्यदेव चौधरी, नरसिंह चौधरी, विश्वनाथ चौधरी (पेन्टर), सुबोध नारायण चौधरी 'बचनू बाबू', ब्रिजलाल चौधरी 'लाला बाबू' (कारप्रदाज), मुनिन्द्र चौधरी 'छोटे बाबू', मुक्तिनाथ चौधरी 'ओकील बाबू', विष्णुदेव चौधरी 'मंगल बाबू' (होमियोपैथिक बोर्ड, पटना), लालबिहारी चौधरी (कलक्टरेट), जनार्दन चौधरी (पी.डब्ल्यु.डी.), वैद्यनाथ चौधरी 'मनी बाबू' (पेन्टर), तारानन्दन लाल दास (स्टेट बैंक), जयनारायण लाल दास (स्टेट बैंक), गौरीनन्दन दास, तेजनारायण लाल दास 'बाउ बाबू', सूर्य नारायण लाल दास 'बच्चा बाबू' (राज दरभंगा/रेडक्राँस, कलक्टरेट), सत्य नारायण लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), हर्ष नारायण लाल दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), कैलाश विहारी दास (स्टेट बैंक), उमेश कुमार दास, राजनारायण लाल दास 'बगड़ू बाबू', टेक नारायण लाल दास (सेंन्ट्रल बैंक), तृप्ति नारायण लाल

दास (स्वास्थ्य विभाग), अम्बिका दत्त (राम सेवक) दास, भवानी दत्त (कृष्ण सेवक) दास (स्टेट बैंक), **बहादुरपुर** सर्वश्री जयकिशोर लाल दास, द्वारिका लाल दास, नन्द किशोर लाल दास, रासविहारी लाल दास, राम किशोर लाल दास, जगन्नाथ लाल दास, वैद्यनाथ लाल दास, भुवनेश्वर लाल दास, महावीर लाल दास, तिलकधारी दास (प्रसिद्ध जगधर बाबू), राधा कान्त लाल दास (उद्‌भट विद्वान, प्रौढ़ विधिप्रज्ञ,उदात्त चित्त, सुव्यावहारिक आ सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री), राजकुमार लाल दास, भागिरथ लाल दास, रमाकान्त लाल दास (कलक्टरेट), गौरी शंकर लाल, केदार बाबू (सुप्रसिद्ध समाज शास्त्री, दुर्गापुर) ओ {गंगाधर दास, सोनेलाल दास, दिगम्बर लाल दास, विश्वम्भर लाल दास, पीताम्बर लाल दास, जनक लाल दास, (देवहार (भारत)/जनकपुर (नेपाल)}, **बरहेता** सर्वश्री दामोदर लाल दास (सुप्रसिद्ध 'कवि' आ 'लेखक' **'मिठाई'** (शिक्षाप्रद पोथी), हिन्दी मे, महाराज रमेश्वर सिंह ओ महाराज लक्ष्मेश्वर सिंहक 'कीर्ति-पताका' आ पारिवारिक-सामाजिक रोचक पोथी 'प्रेम पत्रावली' मैथिली में, नव मल्लिका ओ शकुन्तला, काव्य कोष, मैथिली संस्कार गीत, भूकम्प, श्रीकृष्ण चरितामृत, उगना रे मोर कतय गेलाह, सिंहनाद, पलासी युद्ध, समस्या लहरी, शिवसंगीत विनोद, गंगा गीताञ्जली, रघुवंश अनुवाद, विविध काव्यालोक इत्यादि), विश्वेश्वर लाल दास, भवमोचन लाल दास, शक्ति नन्दन लाल दास, उमापति लाल दास, भुवनेश्वर लाल दास, जयकान्त लाल दास, बृजविहारी लाल दास, नन्दीपति दास, ललित राम दास, धनेश्वर लाल दास, भैरव लाल दास, श्रीकान्त लाल दास, दशरथ लाल दास, रामलखन लाल दास, जगनारायण लाल दास, सत्य नारायण लाल दासद्वय (एकाउन्टेन्ट, जिला इन्जिनियर्स ऑफिस/त्यागी जी 'सन्त-प्रभु'), बुद्धिसागर दास, इन्द्र नारायण लाल दास,'साँवलिया जी', सुदर्शन लाल दास (सेक्सनल ऑफिसर, पटना सचिवालय), देवनारायण लाल दास "देवन दास", मधुसूदन लाल दास (विशिष्ठ विद्वान), बिन्देश्वर लाल दासद्वय (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड/अमीन

साहेब), हरिशंकर लाल दास, (अद्वितीय काविलियतक लोक आ समर्पित समाजशास्त्री), अलख नारायण लाल दास, हरिबल्लभ लाल दास, ओ सत्यदेव चौधरी (डाक विभाग), **सिमरा** सर्वश्री मुन्शी आनन्द दास (अद्वितीय मशविदा रचनाकार Matchless Deed writer), मित्र नारायण दास, कमल नारायण लाल दास, मुक्तिनाथ दास, माधव लाल दास, अजब नारायण दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), नवल किशोर दास (मैनेजर, मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ), लक्ष्मी नारायण दास, गंगानन्दन दास, गोपीनाथ दास, जगत नारायण दास, कमलादत्त दास, रामानन्द दास (रेडक्राँस अस्पताल), निरंजन लाल दास, तेजनारायण लाल दास, बलदेव लाल दास, शिव नारायण दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), दुर्गा बाबू (बाबू महेश्वर लाल दास), डॉ० कृष्णबल्लभ लाल दास, श्री राधाबल्लभ दास, डॉ० गिरिवरधारी दास, यदुनन्दन दास, राजबल्भ दास (ऑफिसर, वेलफेयर), डॉ० जयबल्लभ दास (लब्धप्रतिष्ठ व सुप्रसिद्ध डॉक्टर, नेपाल सरकार, जनकपुरधाम, नेपाल), श्यामबल्लभ दास (चीफ़ इन्जीनियर, बिजली विभाग), जीवनारायण दास, प्रो० श्यामानन्द दास, सर्वश्री उमानन्द दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), कपिलेश्वर लाल दास, शिवानन्द दास, शारदानन्द दास, वेदानन्द दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब, जनकपुर), सच्चिदानन्द दास, रुद्रानन्द दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), पूर्णानन्द दास (ओरिएन्ट फैन्स, कलकत्ता), गुणानन्द दास, प्रो० धरणीधर दास (प्रिन्सिपल, जहानाबाद कॉलेज), डॉ० बद्री बाबू, सर्वश्री तेज नारायण दास, ठक्कुर श्यामानन्द दास (स्पेशल सेक्रेटरी, एजुकेशन, बिहार सरकार), सतीश चन्द्र दास, बृज बिहारी लाल दास (राज, दरभंगा), शिव नन्दन दास, रघुनन्दन दास, डॉ० सतीश चन्द्र दास, ओ भागिरथ लाल दास (आई० ए० एस०), **बेलाराही** सर्वश्री श्रीमंत लाल दास, धनुषधारी लाल दास, डॉ. गंगाधर दास, गोवर्धन दास, कुलानन्द (दास) 'नन्दन' ('आर्यावर्त', पटना), जयदेव दास (मैनेजर, मधुबनी इस्टेट, बड़ा तरफ), कृष्णकान्त लाल दास 'बुच्चन बाबू' विष्णुकान्त लाल दास 'भीम बाबू' देवकृष्ण दास, गंगा नारायण दास, बिल्टू बाबू

(सुप्रसिद्ध वैद्यजी), उत्तम लाल दास, महेश लाल दास (मधुबनी इस्टेट, बड़ा तरफ), काशीनाथ दास, प्रो० चन्द्र शेखर दास ओ श्री मोहन कृष्ण दास (एग्जेक्युटिव इन्जीनियर), **काको** सर्वश्री उचित लाल दास, जय नारायण लाल दास (दूनू मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ) दुर्गा दत्त दास (वेस्ट लैण्ड रिक्लेमेशन अमीन, बिहार सरकार), गंगाबाबू (लब्ध प्रतिष्ठ विधिप्रज्ञ आ सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), कपिलेश्वर लाल दास (डाक विभाग), कृष्णबल्लभ लाल दास (इन्जीनियर, 'टाटा'), श्री तेज नारायण दास (पटना), कुञ्जीलाल दास (मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ), सत्य नारायण लाल दास (अमीन, बाबू बरही सर्कल, बड़ा तरफ), प्रो० गणपति लाल दास, श्री राधापति लाल दास (इन्जीनियर, टेलिकॉम), प्रो० धनपति लाल दास, सर्वश्री सुकेश्वर लाल दास (इन्स्योरेन्स), जयकान्त लाल दास (ओरिएन्ट फैन्स, कलकत्ता), हृदय नारायण दास ओ कुशेश्वर लाल दास, **केउटी** सर्वश्री श्रीनारायण दास (एम.पी.काँग्रेस), हरि नारायण दास (अगाध अध्ययनकर्ता, विशुद्ध गाँधीवादी, आजीवन समर्पित काँग्रेसी, सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री, प्रकाशक ओ मालिक, 'पंचायत प्रेस'), दामोदर लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, इम्पीरियल/स्टेट बैंक ऑफ इंडिया), गोपीरमण लाल दास (लेखक), डॉ० राधारमण लाल दास, सर्वश्री मुकुटधारी लाल दास, शोभा लाल दास, बासुदेव लाल दास, लक्ष्मी नारायण दास (डाक विभाग), काशीनाथ दास (रेलवे) ओ सदन मोहन दास (बिराटनगर, नेपाल), **भच्छी** सर्वश्री राम लाल दास, गुणमन्त लाल दास (सुप्रसिद्ध मोख़तार साहेब, लेखक "सुदर्शन नाटक", "गौरी परिणय", "गजग्राह उद्धरण" (मैथिली पद्य में)), चतुरानन दास (मूर्धन्य विद्वान, संस्थापक, चतुरानन पुस्तकालय), रासबिहारी लाल दास (लेखक "मिथिला दर्पण"), ब्रज कुमार दास, गजानन दास (विशुद्ध गाँधीवादी, खादी जगत), अशर्फी लाल दास (रेलवे), नन्दीपति दास, विजय कुमार दास (मधुबनी सब्सट्रेट), जयबल्लभ लाल दास, अच्युतानन्द दास, उमाकान्त लाल दास, राधा कृष्ण दास, महेश लाल दास, जनक विहारी दास, रविन्द्र नाथ दास (खादी जगत), संतोष कुमार दास (रेलवे)

ओ सुरेन्द्र लाल दास, **बेरि** सर्वश्री हरिगोविन्द चौधरी, यदु चौधरी, रमापति चौधरी (कवि), गिरिवरधारी चौधरी "कारोबाबू" (विशुद्ध गाँधीवादी ओ आजीवन पूर्ण समर्पित काँग्रेसी), भजले राम चौधरी (लेखक, 'कोठीपाल वंशावली'), अच्युतानन्द चौधरी, बाबूदत्त चौधरी, सुन्दर लाल चौधरी, खड्ग नारायण चौधरी, महेश नारायण चौधरी, पुरुषोत्तम चौधरी, लोकनाथ चौधरी, गौड़ी शंकर चौधरी (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), सीताराम चौधरी (मास्टर साहेब), राधाकृष्ण चौधरी 'पंडित जी' (इन्डस्ट्रीज विभाग), महावीर चौधरी, सूरति लाल चौधरी, लक्ष्मीकान्त चौधरीद्वय, विजयकान्त चौधरीद्वय (मास्टर साहेब), गोविन्द नारायण चौधरी (रेलवे), गोपाल नारायण चौधरी (डाक अधीक्षक), हृदय नारायण चौधरी (सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री, खादी जगत), खेलानन्द चौधरी (खादी जगत) ओ मेघनाथ चौधरी (सर्वोदयी), **भदहर** सर्वश्री हरि नारायण चौधरी, भगवत नारायण चौधरी, लक्ष्मी नारायण चौधरी (पहिल), लक्ष्मी नारायण चौधरी (दोसर - 'बुच्चो बाबू'), नवल किशोर चौधरी, मधुरापति चौधरी, अयोध्या चौधरी, महावीर चौधरी, मनमोहन चौधरी, प्रभु नारायण चौधरी, रमापति चौधरी (विशुद्ध गाँधीवादी, आजीवन समर्पित काँग्रेसी ओ चेयरमैन, खादी बोर्ड), योगेन्द्र नारायण चौधरी (योगी बाबू, 'मुखिया जी'), अवध विहारी चौधरी (स्वतन्त्रता सेनानी), नन्दलाल चौधरी, शिवनन्दन चौधरी (माइका कॉर्पोरेशन, गिरिडीह), जनक नन्दन चौधरी, श्रीपति चौधरी (खादी जगत), कमलापति चौधरी (खादी जगत), सभापति चौधरी (कर्मचारी, विहार सरकार ओ सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री), उमापति चौधरी (खादी जगत), सरयू चौधरी, देवकीनन्दन चौधरी (पेशकार, मधुबनी इस्टेट, बड़ा तरफ), उमन चौधरी, हमर स्वसुरत्रय सर्वश्री पुलकित नारायण चौधरी, उचित नारायण चौधरी ओ देव नारायण चौधरी (लब्ध प्रतिष्ठ वैद्य), तेज नारायण चौधरी (इन्स्योरेन्स), महेश नारायण चौधरी 'टुनटुन बाबू', उपेन्द्र नारायण चौधरी (पटना इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट), श्याम नारायण चौधरी, बिश्वम्भर नारायण चौधरी (कोलियरी),

जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक जी' (बरिष्ठ ऑफिसर, बिहार/स्टेट बैंक), उदित नारायण चौधरी 'भोला बाबू' (खादी बोर्ड/स्टेट बैंक) ओ राजेन्द्र चौधरी (खादी जगत), **सनकोर्थुं (रामपुर)** सर्वश्री हरिनन्दन दास, गोविन्द नारायण दास ओ युगल किशोर कण्ठ, **उजान** सर्वश्री गंगाबाबू (को-ऑपरेटिव फेडेरेशन, पटना), लक्ष्मी नारायण दास, शेषनारायण दास (खादी जगत) ओ हेम नारायण दास, **सखवाड़** सर्वश्री 'साहित्य-रत्नाकर' महाकवि मुन्शी रघुनन्दन दास जी (रचयिता "सावित्री नाटक", "मिथिला नाटक", 'सुभद्रा हरण', "उत्तर राम चरित्र", "पावन प्रमोद", "भर्तृहरिनिर्ब्बेद" ओ "राधा नखशिख" (मैथिली गद्य ओ पद्य में), हरि नन्दन दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब ओ अध्यक्ष, जिलापरिषद), सुखदेव दास, श्याम सुन्दर दास,उपेन्द्र नाथ दास, नरेन्द्र नाथ दास 'विद्यालंकार' (एम.एल.ए. कांग्रेस), योगेन्द्र नाथ दास (लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री), डॉ. महेन्द्र नाथ दास, डा० वीरेन्द्र नाथ दास, सर्वश्री केशव बाबू (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), हीरानन्द दास 'गोविन्द बाबू' (बड़ा बाबू, कलक्टरेट), हितेन्द्र नाथ दास, सुरेन्द्र नाथ दास, यशोदानन्द दास 'कन्हैया जी', जितेन्द्र नाथ दास, शैलेन्द्र नाथ दास, रबिन्द्र नाथ दास, महादेव दास, लाल दास ओ अम्बिका चरण दास, **कैथाही** सर्वश्री ब्रजनाथ दास (बिशुद्ध गाँधीवादी, समर्पित कांग्रेसी, खादी जगत), अवध विहारी लाल दास (मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ), जीवछ लाल दास (अमीन साहेब), कृष्णकान्त लाल दास, लक्ष्मण लाल दास, जगदीश लाल दास ओ काशीनाथ दास (पुलिस विभाग), **रतुपाड़** सर्वश्री काशीनाथ दास (बी.डी.ओ.) सुखदेव लाल दास, रामेश्वर लाल दास (कस्टम्स विभाग, कटहलबाड़ी, दरभंगा) ओ यदुवीर लाल दास, **नवानी** सर्वश्री महेन्द्र लाल दास (मास्टर साहेब), हितेन्द्र लाल दास, अनन्त विहारी लाल दास (कम्पाण्डर), उचित नारायण दास, बासुदेव लाल दास, युगेश्वर लाल दास (सुप्रसिद्ध आयुर्वेद व्यवसायी, मद्रास),

शोभाकान्त दास (सुप्रसिद्ध आयुर्वेद व्यवसायी, मद्रास), सुखदेव लाल दास, जयदेव लाल दास ओ प्रो० अनिरुद्ध कुमार दास (कॉमर्स कालेज, पटना), बच्चन लाल दास, आत्मा लाल दास, बाबूनाथ लाल दास, भोली नाथ लाल दास, उमा नाथ लाल दास, नवैत लाल दास, दामोदर लाल दास, गोपाल लाल दास ओ देवी लाल दास, **कनकपुरा** सर्वश्री डॉ. जनक किशोर लाल दास, उमाकान्त दास, डॉ० गौड़ीकान्त दास (चीफ़ मैलेरिया कन्ट्रोल ऑफिसर, मधुबनी), सर्वश्री शिवाकान्त दास, रमाकान्त दास, कपिलेश्वर लाल दास "सीताराम"(डाक विभाग) ओ रभस किशोर दास, **लखनपुर** सर्वश्री बालगोविन्द मल्लिक, महावीर मल्लिक, किशोरी लाल मल्लिक, बुच्चन मल्लिक, लक्ष्मण मल्लिक, वैद्यनाथ मल्लिक, बलदेव मल्लिक, बद्री नारायण मल्लिक, उपेन्द्र मल्लिक ओ सुखदेव मल्लिक (वीरगंज, नेपाल), **डखराम** सर्वश्री मुकुन्दलाल दास (लेखक " दरभंगा राज्य वंशावली"- मैथिली पद्य में), नागेन्द्र लाल दास (समर्पित कॉग्रेसी ओ स्वतन्त्रता सेनानी), हितेन्द्र नारायण दास, रामेश्वर लाल दास (जेलर साहेब), उमाकान्त लाल दास (जेलर साहेब), ब्रह्मदेव लाल दास, चक्रधर दास (प्रशासक, बिड़ला, कलकत्ता), प्रो० पुण्यानन्द दास सी.एम.कॉलेज, दरभंगा), विदेश्वर लाल दास (बाबू बरही सर्कल, छोटा तरफ) ओ डॉ० जितेन्द्र लाल दास (लौकहा), **बलाट** सर्वश्री विश्वनाथ लाल दास, तुलाकृष्ण लाल (बौए लाल) दास, मधुसुदन लाल दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब, बेगूसराय), सोने लाल दास, नरसिंह लाल दास, हरिवंश लाल दास, जगदीश लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, इम्पीरियल/स्टेट बैंक ऑफ इंडिया), प्रताप नारायण दास (वरिष्ठ ऑफिसर, इम्पीरियल/स्टेट बैंक ऑफ इंडिया), दामोदर दास, कृष्ण बिहारी दास, बृज बिहारी दास (सहायक सम्पादक, 'लीडर', इलाहाबाद), महावीर लाल दास, काली कुमार दास (बेला गार्डेन, दरभंगा राज), फेकन लाल दास, बलदेव लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, डिफेन्स सर्विस), सुप्रसिद्ध प्रो० बोधकृष्ण दास जी (सी.एम.कॉलेज, दरभंगा), सर्वश्री रुद्र नारायण लाल दास (दरभंगा कलक्टरेट), ओ श्रीनारायण लाल दास (दरभंगा

कलक्टरेट), **भड़ौरा** सर्वश्री राम दास (लब्धप्रतिष्ठ ओ सुविख्यात वैद्य जी, जिनका भड़वारा प्रगन्ना इनाम में भेटल छलैन्ह), रघुनन्दन दास, हरिनन्दन दास 'महेश बाबू', डॉ० अवध नारायण दास, सर्वश्री जानकी शरण दास, प्रभास चन्द्र मल्लिक (हिन्दी ऑफिसर,ई.एस.आइ. विभाग, पटना) ओ सत्य नारायण लाल दास सुप्रसिद्ध "**बौआ साहेब**" (महात्मा कबीर भक्त 'संत-प्रभु'), **हरीपट्टी** सर्वश्री काली चरण दास (ट्रेज़री, खगरिया), हरि नारायण दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब) ओ श्याम सुन्दर दास (स्टेट बैंक), **बिसहथ** सर्वश्री फेकन लाल दास (दरभंगा राज/ कलक्टरेट), कमल नारायण दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), बालगोविन्द कण्ठ 'भैया बाबू', बालकृष्ण कण्ठ 'बाला बाबू', अयोध्या कण्ठ, नागेश्वर कण्ठ, रामानन्द कण्ठ, यदुनन्दन कण्ठ, ताराचरण कण्ठ, राजवंशी कण्ठ, रधुवंशी कण्ठ, सुर्यवंशी कण्ठ, बृजवंशी कण्ठ, नन्द किशोर कण्ठ, राम किशोर कण्ठ, जनक किशोर कण्ठ, बद्री नारायण कण्ठ, अनुग्रह नारायण कण्ठ, हृदय नारायण कण्ठ, कमल नारायण कण्ठ, दामोदर कण्ठ, चन्द्रकान्त कण्ठ, रामनन्दन कण्ठ, हरिनन्दन कण्ठ, शिव नन्दन कण्ठ, केवल कृष्ण कण्ठ, बोधकृष्ण कण्ठ, हरिवंश कण्ठ, मुन्नीलाल कण्ठ, भोला कण्ठ, सुखदेव कण्ठ, जगदेव कण्ठ, अनिरुद्ध कण्ठ, अवध बिहारी कण्ठ, गिरिवर कण्ठ, जीवछ लाल दास, हरिनारायण मल्लिक, द्वारिका नाथ मल्लिक, बनमाली मल्लिक, विश्वनाथ मल्लिक, गौरी शंकर मल्लिक, धनुषधारी मल्लिक, वेदवंशी (भोली) कण्ठ, यदुवंशी (टुनटुन) कण्ठ, कालीनन्दन कण्ठ, डॉ० परमानन्द कण्ठ, सर्वश्री उमाचरण कण्ठ, गिरीजाचरण कण्ठ (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), अरुण कण्ठ, अक्षय कण्ठ, लखन नारायण दास, इन्द्र नारायण दास (दरभंगा कलक्टरेट), लक्ष्मी नारायण दास (तान्त्रिक) ओ डॉ० उपेन्द्र नारायण दास, **गुर्म्हा** सर्वश्री सूरति लाल दास (बैंक मैनेजर), गौरी शंकर दत्त (इन्जीनियर, पटना), नागेश्वर लाल दास (जमशेदपुर), चन्द्र शेखर लाल दास (जमशेदपुर), उपेन्द्र लाल दास (जमशेदपुर), उग्रनारायण लाल दास (जमशेदपुर), प्रियव्रत नारायण लाल (पटना) सुशील कुमार दास ओ प्रो० वैद्यनाथ दास (मधुबनी), **चैता रेवारी** सर्वश्री बलदेव कण्ठ (कारप्रदाज, सिविल कोर्ट, दरभंगा) ओ

परमेश्वरी दयाल कण्ठ (सुप्रसिद्ध ओकिल साहेब), **भवानीपुर** सर्वश्री श्रीकान्त मल्लिक 'बम्भोली बाबू', भुवनेश्वर मल्लिक (इन्सपेक्टर, रेलवे), नवोनाथ मल्लिक ओ उमाकान्त मल्लिक, **मेहसारि** सर्वश्री महापति मल्लिक ओ उमाकान्त मल्लिक (कम्पाउण्डर, औषधि विभाग), **रतनपुर** सर्वश्री मुन्नी मल्लिक, लक्ष्मी नारायण मल्लिक, उमाकान्त मल्लिक, उपेन्द्र मल्लिक (फतुहा, नेपाल), नागेश्वर मल्लिक, सभापति मल्लिक, **भोला मल्लिक** (श्रीकान्त बाबू) ओ बालेश्वर मल्लिक (शिक्षा विभाग, परम शांतचित्त, धीर-गम्भीर ओ परम सामाजिक व्यक्ति), **कायस्थ-कबई** सर्वश्री चिरंजीव दास ओ हरिनन्दन दास (सुप्रतिष्ठित सेक्सनल ऑफिसर, पटना सेक्रेटेरियट), **इमादपट्टी** सर्वश्री नरसिंह लाल दास (पी. ए. टू फाइनेन्स मिनिस्टर, बिहार सरकार), राजदेव लाल दास (पी.ए. टू चीफ़ मिनिस्टर, बिहार सरकार), नागेन्द्र लाल दास, बनवारी लाल दास (पी.एम.जी. ऑफिस, पटना) ओ शिव जी बाबू (बाबू श्री शिवेश्वर लाल दास) (इनकम टैक्स), **नारायरणपुर** सर्वश्री चेतनारायण दास, गुणानन्द सिंह दास (संस्थापक, श्री १०८ 'गुणेश्वर नाथ' शिव मन्दिर), मनियार सिंह दास, भैया लाल दास, लक्ष्मी नारायण दास (दरभंगा महाराजाक बक्सी जी), राजवंशी लाल दास (बी.एन.डब्ल्यु. रेलवे), बुन्नी लाल दास, हरिबल्लभ लाल दास, गोपी लाल दास (बाबू बरही सर्कल, छोटा तरफ), सर्व नारायण दास, यदुनन्दन लाल दास, श्रीनन्दन लाल दास, शम्भु नाथ दास, सूर्यवंशी लाल दास (समाज सेवी ओ साहित्य प्रेमी), वृजवंशी लाल दास (साहित्यकार, समाज सेवी ओ लेखक "खूनी कटार" ओ "कलियुगी पिता"), जगदीप नारायण दास, राज कुमार दास, जगन्नाथ लाल दास, महावीर लाल दास, विश्वनाथ लाल दास, नन्दीपति दास (बाबू बरही सर्कल, बड़ा तरफ), रामकृष्ण लाल दास, हरि नारायण दास, कान्त बिहारी दास, मुकुटधारी दास, गंगा प्रसाद दास (सूगर मिल, सकरी), सुप्रसिद्ध डॉ० यमुना प्रसाद कर्ण, सर्वश्री सरयूकान्त दास (पोस्ट मास्टर), वंशी बिहारी लाल दास,

जटाधारी लाल दास (टेलिफोन्स), सूर्यपति लाल दास (पंचायत सेवक, बिहार सरकार ओ सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री), चन्द्रपति लाल दास (जूट मिल मुक्तापुर), अवध बिहारी दास, कुञ्ज बिहारी दास, गिरिवरधारी दास, धनुषधारी दास, नन्द बिहारी दास, जनक बिहारी दास, रास बिहारी दास, राम बिहारी दास, राज बिहारी दास, ज्वाला प्रसाद दास (आर.एम.एस.) ओ रमेश लाल दास, **सुन्दरपुर** सर्वश्री नेहाल दास, राजाराम दास, प्रेम लाल दास, गोपी लाल दास, विश्वेश्वर लाल दास, श्रीनन्दन लाल दास, कुलपति लाल दास, भागिरथ लाल दास, रामेश्वर लाल कर्ण, लेखनाथ लाल कर्ण, सियाशरण लाल दास ओ लक्ष्मी नारायण लाल दास 'नागेश्वर बाबू' (बिहार/स्टेट बैंक), **जितवारपुर** सर्वश्री केशव लाल दत्त, मोती लाल दत्त ओ महादेव दत्त (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), **फेंट** सर्वश्री राम नारायण दास, कृष्णबल्लभ दास (लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), दामोदर दत्त, जानकी बिहारी दत्त, श्याम सुन्दर दास '**बाबू कुमर**' (खादी जगत) ओ श्यामानन्द दास (जनकपुर, नेपाल), **कमरौली** सर्वश्री ब्रह्मदेव लाल दास, चेत नारायण लाल दास, मधुरापति लाल दास, कपिलेश्वर लाल दास (दिल्ली), काशीराम लाल दास, महेन्द्र लाल दास, जगन्नाथ लाल दास, केवल लाल दास, नन्दू लाल दास, मन्चित लाल दास, दामोदर लाल दास, नागेश्वर लाल दास, धनेश्वर लाल दास, जय नारायण लाल दास, गंगा प्रसाद 'विमल' (दिल्ली), रमण जी (दिल्ली), कृष्ण जी (दिल्ली), डॉ० वृजमोहन दास, भुवनेश्वर लाल दास (दिल्ली), रणधीर नारायण दास (बीरगंज, नेपाल)ओ अनन्त बिहारी दास 'इन्दु जी' (आकाशवाणी, पटना), **हिरणी** सर्वश्री प्रभाकर चौधरी (कोटपाल City Magistrate, मुसलमानी बादशाहत में जिनका 'हिरणी प्रगन्ना' इनाम में भेटल छलैन्ह), शुभ नारायण चौधरी, श्यामबल्लभ चौधरी (विधिप्रज्ञ ओ समाज शास्त्री), डॉ० दुर्गाचरण कर्ण (लब्धप्रतिष्ठ शिक्षाविद; अध्यक्ष, भारतीय होम्योपैथिक-काँग्रेस : होम्यो-विज्ञान पर समर्पित), सर्वश्री अनन्त बिहारी दास 'पेशकार साहेब' (पोस्ट मास्टर), शिवनन्दन चौधरी ओ

महेन्द्र नारायण लाल दास (ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, दरभंगा कलक्टरेट), **बैगिनी** सर्वश्री राम अनुग्रह चौधरी, गजेन्द्र नारायण चौधरी, चक्रधर चौधरी (पटना सेक्रेटेरियेट), केदारनाथ चौधरी (पश्चिमी नहर, कोशी प्रोजेक्ट), लक्ष्मी नाथ चौधरी, राजेन्द्र चौधरी (सुप्रसिद्ध वाद्ययन्त्र कलाकार ; डाक विभाग) ओ बालनन्द चौधरी (तेनुघाट, कोशी प्रोजेक्ट), **बहेड़ा** सर्वश्री देवकीनन्दन दास (दारोगा जी, समस्तीपुर म्युनिसिपैलिटी), श्रीनन्दन दास, ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' (स्तन्त्रता सेनानी, सुविख्यात तान्त्रिक, विशिष्ठ लेखक आ परम समाज-शास्त्री), सुरेश प्रसाद वर्मा (टाइपराइटर इन्जीनियर), हरिवंश नारायण सिन्हा (लाल दास), (पी. ए. टु सेक्रेटरी, पी. डब्ल्यू.डी.), कृष्णनन्दन दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), बलदेव लाल दास, मथुरा लाल दास 'पहवाजी' (खादी जगत), मोसद्दी मल्लिक, सुखनन्दन दास, जगधर लाल दास (रेलवे), अनन्त बिहारी दास, सतीश नन्दन दास, वैद्यनाथ दास (मुखिया जी) ओ राम चन्द्र लाल दास (खादी जगत), **लौफ़ा** सर्वश्री त्रिवेणी लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर बिहार/स्टेट बैंक), धनुषधारी लाल दास, अनन्त बिहारी लालदास (डिस्ट्रिक्ट इम्प्लवायमेन्ट ऑफिसर), होलकेश्वर दास ओ पञ्चनारायण लाल दास (खादी जगत), **उभटी** सर्वश्री हरिबल्लभ लाल दास, राम नारायण चौधरी, भागिरथ लाल दास (दरभंगा कलक्टरेट) ओ दशरथ लाल दास, **पोखरिभीड़ा** श्री सीताराम लाल कर्ण (एस.डी.ओ., एज्युकेशन, दरभंगा), **हैदरपुर** सर्वश्री बद्रीनाथ दास (रिज़नल डाइरेक्टर, इ.एस.आइ., पटना) ओ श्री लक्ष्मी नाथ दास (डिफेन्स सर्विस), **दड़िमा** सर्वश्री सुन्दर लाल दास, चेतनारायण लाल दास, भुवनेश्वर लाल दास (मधुबनी इस्टेट, छोटा तरफ), बृज बिहारी लाल दास, जागेश्वर लाल दास (मधुबनी इस्टेट, बड़ा तरफ), अर्जुन लाल कर्ण (प्रधान सम्पादक, 'कर्णामृत', कोलकाता), जयदेव लाल दास, शशिधर मल्लिक ओ मदन मोहन दास (रजिस्ट्री ऑफिस), **बघाँत** श्री कालीचरण कण्ठ, **सुल्तानपुर** सर्वश्री अचम्भित चौधरी, शिवनारायण चौधरी 'ठक्को बाबू', भगवत नारायण

चौधरी, अवध नारायण चौधरी, चन्द्र नारायण चौधरी, शंकर नारायण चौधरी (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब) ओ जगन्नाथ चौधरी (प्राचार्य, शि०प्र०म०), **रनवे** श्री वैद्यनाथ लाल दास, **सतघरा** सर्वश्री भगवत लाल दास ओ रमापति दास (दूनू बाबू बरही सर्कल, बड़ा तरफ), **बलौर** सर्वश्री मुक्तिनाथ दास, हृदय नारायण दास, नन्दकिशोर दास, बलदेव दास, सूर्य नारायण दास, चित्र नारायण दास, खड्ग नारायण दास, लेख नारायण दास, नागेन्द्र लाल दास, उमाकान्त लाल दास, लक्ष्मीकान्त दास, रामबल्लभ दास, राजबल्लभ दास, जय बल्लभ दासद्वय, उपेन्द्र नाथ दास, बिजेन्द्र नाथ दास, लाल दास जी, हरेकृष्ण दास, नवोनाथ दास, टंकनाथ 'बमबाबू' दास, डॉ० हसन दास, सर्वश्री श्रीधर लाल दास, बैद्यनाथ लाल दास ओ नरसिंह लाल दास आओर **बलौर-अमइ** सर्वश्री सोने लाल चौधरी, अयोध्या चौधरी, कालिका दत्त चौधरी, महन्थी चौधरी, नारायण दत्त चौधरी, देव नारायण चौधरी, तेज नारायण चौधरी (डाक विभाग), बासुदेव चौधरी 'भोला बाबू', जयदेव चौधरी, महेश चौधरी, ठक्कन चौधरी, दयाकृष्ण दास, सभाकृष्ण दास, श्रीकृष्ण दास (सुप्रसिद्ध अमीन साहेब), बोधकृष्ण दास (सुप्रसिद्ध अमीन साहेब) ओ राधावल्लभ 'नथुनी' दास, **गँधवारि** सर्वश्री वृज नारायण मल्लिक ओ वेद नारायण मल्लिक, **हनुमाननगर** डॉ. शिवशंकर लाल दास ओ श्री रमेश लाल दास, **दुधपूरा** श्री रघुनाथ लाभ (मैनेजर, दलसिंग सराय इस्टेट), प्रो० केदार नाथ लाभ ओ श्री श्रीकान्त लाभ, **बेहट** पण्डित श्री दयानाथ झा ('अगाध अध्ययनकर्ता, उद्भट विद्वान, उदात्त चरित, प्रतिभावान व्यक्तित्व ओ विशिष्ट लेखक', मैनेजर, हिन्दी भवन, इलाहाबाद; सम्बन्ध में महामहोपाध्याय डॉ० सर गंगानाथ झा, आइ.सी.एस. (वाइस चान्सलर, इलाहाबाद युनिवर्सिटी) क दौहित्र), **नाहस रुपौली** (जरैल प्रगन्ना, जिला दरभंगा) सर्वश्री महामहासिंह मुन्शी घनानन्द दास (महान तान्त्रिक, रचयिता "तन्त्रराज", "मातंगी कुसुमांजलि (...महाविद्या क विषय में)" आ "मन्त्र कल्पद्रुम" ग्रंथ), विश्वनाथ दास (रचयिता

"आह्निक" संस्कृत ग्रंथ) ओ भवानन्द दास, **ब्राह्मण टोली (सहरसा)** श्री अनुग्रह लाल ठक्कुर (लेखक मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी), **कसरौर** श्री भोला लाल दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब, स्वतन्त्रता संग्राम दूत, लेखक (अनेक मैथिली आ हिन्दी ग्रंथ यथा 'अक्षरों की लड़ाई' आदि), सम्पादक ('भारती' आदि कैएक पत्र-पत्रिका), प्रकाशक (अभिनव ग्रंथागार), मालिक (सिद्धार्थ प्रेस, पटना), मंत्री (मैथिली साहित्य परिषद) आ समर्पित समाज-सुधारक) आ श्री जगदीश लाल कर्ण (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), **हरिपुर** सर्वश्री राधे दास, बालकराम दास, रासबिहारी दास, युगल किशोर दास, नवल किशोर दास, अनुरुद्ध लाल दास, हरिदेव लाल दास (मास्टर साहेब), मथुरा कान्त मल्लिक (रिज़नल मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया) ओ अबध किशोर मल्लिक, **हरिपुर (गौरीदास टोल)** श्री बैद्यनाथ लाल दास (अगाध अध्ययनकर्ता, प्रसिद्ध समाज शास्त्री आ लेखक 'मैथिल कर्ण कायस्थों कें गोत्र एवं प्रवर'), **लदहो** सर्वश्री कान्हाराम दास (लेखक 'गौरी परिणय' नाटक आ 'सीता स्वयंवर' नाटक), रघुपति लाल दास, मूंगा लाल दास, गुणेश्वर लाल दास, नोखेलाल दास, विश्वनाथ लाल दास (खादी जगत) ओ भेषनन्दन लाल दास (दरभंगा कलक्टरेट), **सरहद** सर्वश्री हरि नारायण लाल दास, नागेश्वर लाल दास (सेन्ट्रल पी.डव्ल्यु.डी., दिल्ली), जटाशंकर दास (अद्भुत प्रतिभा आ व्यक्तित्वक लोक ओ प्रसिद्ध समाज शास्त्री), कुलदीप दास (डाइरेक्टर, दरभंगा सूगर कम्पनी), प्रताप नारायण दास (रेलवे), ओ गणपति लाल दास (मर्मज्ञ विद्वान ओ समाज शास्त्री) **हावी भौआर** सर्वश्री गौरी शंकर लाल दास (सदाक़त आश्रम, पटना) ओ श्रीनारायण दास, **कहुआ** सर्वश्री नन्दीपति दास (पंचायत प्रेस) ओ राजबंशी लाल, **इजोत** सर्वश्री परमेश्वरी दत्त (लेखक 'गौरी विलाप' मैथिली पद्य में), महावीर लाल दास ओ हेम नारायण दत्त (वरिष्ठ ऑफिसर बिहार/स्टेट बैंक), **ओभौल** सर्वश्री पीताम्बर लाल दास, दिगम्बर लाल दास, नीलाम्बर लाल दास ओ व्रजमोहन लाल, **सिमरी (राजनगर)** सर्वश्री नत्थू लाल

दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब-'संत-प्रभु'), जीवछ लाल दास ओ शुभ नारायण लाल दास, **खड़ौआ** सर्वश्री महाकवि पण्डित लाल दास जी (महाराज दरभंगाक 'राज पण्डित' (रचयिता, 'स्त्री धर्म शिक्षा', 'वैधव्य भञ्जिनी', 'हरिताली' – मैथिली में) (रचयिता "मैथिली रामायण", "राम रामायण", "जानकी रामायण", "कृष्ण चरित्र रामायण", "गौरी शम्भु विनोद", "गंगा चरित्र", "लक्ष्मी चरित्र", "सावित्री नाटक" (मैथिली गद्य-पद्य में) (अनुवादक "दुर्गा सप्तशती", "सत्य नारायण कथा", "तन्त्रोक्त मिथिला माहात्म्य" ओ "गणेश खण्ड" – मैथिली में)), नन्नू लाल, सुन्दर लाल, बुन्नी लाल (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), हरिवंश लाल (चेयरमैन, बिजली बोर्ड), गौरी शंकर लाल (सुप्रसिद्ध मोख़तार साहेब), राज नारायण लाल दास, महावीर लाल दास, ताराकान्त दास (डाक विभाग) ओ चन्द्र शेखर लाल दास, **पैरा** सर्वश्री गणेश दत्त, गंगाधर दत्त (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), कुशेश्वर दत्त ओ सूर्य नारायण दत्त (हेल्थ इन्सपेक्टर), **विजइ** सर्वश्री फूदन लाल दास (बाबू बरही सर्कल, छोटा तरफ), मधुपति लाल दास (दरभंगा कलक्टरेट), टंकनाथ दास, डमरू बाबू, रमानाथ दास, परमानन्द लाल दास, ओ जगपति लाल दास**, मानसिंह पट्टी** सर्वश्री शिवनाथ दास (प्रशासक, नेपाल सरकार, काठमाण्डू) ओ उदय नारायण लाल दास, **मेघौल** सर्वश्री प्रताप नारायण मल्लिक, सत्यदेव मल्लिक, राधाकान्त लाल दास, राम कृष्ण मल्लिक (रेलवे), ओ जीव नारायण मल्लिक (रेलवे), **धेरुख** सर्वश्री अशर्फी लाल दास, गणपति लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), दिगम्बर लाल दास (रुपक सिनेमा मैनेजर, पटना) ओ सुप्रसिद्ध पत्रकार जी (पटना), **खड़का** श्री रामेश्वर लाल दास, **निमैठी** सर्वश्री राम अनुग्रह लाल दास (मैनेजर, पंचायत प्रेस) ओ व्रजनन्दन लाल दास (सुप्रसिद्ध पत्रकार जी, पटना), **बलहा** सर्वश्री श्याम नन्दन सिंह (प्रशासक, बिड़ला, कलकत्ता), परमानन्द सिंह (दास) (राज दरभंगा) ओ व्रजनन्दन सिंह (दास) (सह-सम्पादक, 'इन्डियन नेशन', पटना), **मोड़वारा** श्री नवल किशोर दास (हाई स्कूल, सिंघिया), **गोढ़ैला** सर्वश्री उदित नारायण दास

(मास्टर साहेब) ओ सिया नारायण वर्मा (हिन्दी इन्सट्रक्टर, दरभंगा कलक्टरेट), **उसमामठ** सर्वश्री द्वारिका लाल दास, बिहारी लाल दास, उमाकान्त लाल दास, सत्य नारायण लाल दास (एडवोकेट, पटना) ओ मधुसूदन लाल दास (दरभंगा कलक्टरेट), **मदनपुर** सर्वश्री सहदेव नारायण लाल (वरिष्ठ ऑफिसर, इन्स्योरेन्स) ओ सुकदेव नारायण लाल, **आसी** सर्वश्री हरेश्वर लाल दास, नारायण दत्त लाल दास, रोहेन्द्र लाल दास, बलराम लाल दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), प्रसिद्ध बाला बाबू (कटरहिया (गांधी नगर), दरभंगा) ओ सुखदेव लाल दास (मास्टर साहेब), **चिचरी** सर्वश्री सत्यनारायण मल्लिक ओ अनुग्रह लाल दास, **जयदेवपट्टी** सर्वश्री दयानन्द दास ओ सच्चिदानन्द लाल दास (उद्‌भट विद्वान, प्रसिद्ध समाज शास्त्री ओ लेखक "मैंथिल कर्ण कायस्थक मूल-गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार", बोकारो), **मुर्तुजापुर** सर्वश्री ठाकुर नारायण मल्लिक (ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, समस्तीपुर सिविल कोर्ट), सुकदेव नारायण मल्लिक, सूर्य नारायण मल्लिक, सत्य नारायण मल्लिक ओ नारायणबल्लभ दास (वीरगंज, नेपाल), **आहिल** सर्वश्री कामेश्वर दत्त (राज-दरभंगा), सर्व नारायण दत्त (अमीन साहेब) ओ बबुनन्दन लाल दास, **कमलपुर (फेंट)** सर्वश्री चेथरू लाल दास, अमर नाथ दत्त, गिरिवरधारी दत्त, दामोदर दत्त ओ सहदेव दत्त, **कमलपुर (कुआ**) सर्वश्री धनुषधारी लाल दास, प्रताप नारायण दास, इन्द्र नारायण दास, राधाबल्लभ दास, तिलकधारी दास (उमा बाबू, वरिष्ठ ऑफिसर, इम्पीरियल/स्टेट बैंक ऑफ इंडिया), सूर्य मोहन दास (ए.जी., बिहार), तारानन्द कण्ठ (ए.जी., बिहार), सूर्य मोहन कण्ठ (राज दरभंगा), हेम नारायण कण्ठ (ए.डी.एम), काली प्रसाद कण्ठ ('इंडियन नेशन', पटना), तिलकधारी दास (भेषधारी बाबू), सतीश चन्द्र दास (बी.सी.सी.एल.), वैद्यनाथ लाल दास, बद्रीनाथ लाल दास, रमानन्द कण्ठ ओ परमानन्द कण्ठ, **मल्हीपट्टी** श्री सत्य नारायण चौधरी (पुस्तक भण्डार, लहेरिया

सराय/पटना), **तारालाही** सर्वश्री बलभद्र (बल्ली) चौधरी (सुविख्यात पहलमान जिनका नव्वाब फ़र्रुख्सियर सँ इनाम में **'फ़र्रुखपुर'** प्रगन्ना भेंटल छलैन्ह), निर्भय लाल चौधरी (रचयिता "**भजनामृत तरंगिणी**"), रघुनाथ चौधरी (सुविख्यात पहलमान), गणपति चौधरी, सहदेव नारायण चौधरी, सत्यदेव नारायण चौधरी, नित्यानन्द चौधरी, जीवछ नारायण चौधरी, वैद्यनाथ चौधरी (होम्यो-जगत), नृपति नारायण चौधरी, दुलार नारायण चौधरी, केवल कृष्ण चौधरी, जगन्नाथ चौधरी, मुक्ति नाथ चौधरी, नवल किशोर चौधरी, महावीर चौधरी, युगल किशोर चौधरी, खड्ग नारायण चौधरी (डेप्युटी कलक्टर साहेब), श्रीनारायण दास, हितनारायण दास, लक्ष्मण लाल दास, असर्फी लाल दास, जय नारायण लाल दास, रामेश्वर लाल दास, केशव लाल दास, नीलाम्बर लाल दास, डॉ० केवल लाल दास ओ श्री जगपति लाल दास, **रामपट्टी** सर्वश्री सूरति लाल चौधरी, बलदेव चौधरी, मनोरी लाल चौधरी, गोवर्धन चौधरी, बलभद्र चौधरी, जयभद्र चौधरी (खादी जगत), हरि नारायण चौधरी, कारी लाल दास, पीताम्बर चौधरी, चन्द्र नाथ चौधरी, लोक नाथ चौधरी (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), डॉ० तेज नारायण चौधरी, सर्वश्री सत्यदेव चौधरी, शोभनाथ कण्ठ (चीफ़ मैनेजर, बिहार/स्टेट बैंक, दरभंगा), गंगा नाथ कण्ठ ओ धर्म नारायण कण्ठ, **शिव नगर** सर्वश्री अदिष्ट नारायण दास, अदित नारायण दास, नागेश्वर नारायण दास ओ सुदिष्ट नारायण दास, **बाउर** डॉ० मानस बिहारी वर्मा (सुविख्यात वैज्ञानिक ओ डाइरेक्टर, डब्ल्यु.आइ.टी.) ओ श्री सुखदेव लाल दास (स्वास्थ्य विभाग), **श्रीपुर** सर्वश्री लाल बिहारी लाल दास (राज-दरभंगा), कृष्ण बिहारी लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक ओ चेयरमैन समस्तीपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक) ओ बोध कृष्ण दास (दरभंगा कलक्टरेट), **राँटी** सर्वश्री रमा प्रसाद दत्त, चूड़ामणि दत्त, उपेन्द्र दत्त ओ विश्वेश्वर लाल दास (पेशकार, राँटी डेउढ़ी), **जोंकी** सर्वश्री राम कृष्ण दत्त, नाथी दत्त, विश्वनाथ दत्त, ओ **ब्रजेन्द्र कुमार दत्त** {प्रसिद्ध **शत्रुघ्न**

शरण दास "महाराज जी" (सन्त-प्रभु)}, **हरिपट्टी** सर्वश्री मुन्नी लाल, ठक्कन लाल दास, बृजभूषण लाल ओ गणेश लाल दास (शिक्षा विभाग), **बसुहाम** श्री यदु लाल दास (सुविख्यात क़ातिब), **हरौली** सर्वश्री रामजी चौधरी, सीताराम चौधरी, महेन्द्र नारायण चौधरी (समस्तीपुर कलक्टरेट), राम गुलाम चौधरी, राम जीवन चौधरी ओ दिगम्बर नारायण चौधरी (वीणा सिनेमा मैनेज़र, पटना), **नवहथ** श्री काली चरण दास (जमशेदपुर), **नवादा** श्री नन्दी दास (लेखक 'ब्रज परिक्रमा'), **कन्हौली** श्री नित्यानन्द दास (महान गणितज्ञ, लेखक 'स्पष्ट गणित' जो **'अंक विलास'** गणित ग्रन्थ), **गोनौन** सर्वश्री मणिकान्त बाबू जगदीश लाल दास (डिफ़ेन्स सर्विस) ओ राज नन्दन लाल दास (सम्पादक, '**कर्णामृत**', कोलकाता), **सहरसा** सर्वश्री हरपति कण्ठ (आइ.ए.एस.) ब्रजेश्वर मल्लिक (मजिस्ट्रेट) (बिहरा पटोरी), ललन कुमार वर्मा, सिनियर एडवोकेट पटना हाई कोर्ट (डुमरा) ओ बृजेश्वर मल्लिक (ऐडभोकेट, पटना हाई कोर्ट), **शिविपट्टी** सर्वश्री सूरति लाल दास, जोखन लाल दास, किशोरी लाल दास, दयानन्द लाल दास, लाल बिहारी लाल दास ओ चन्द्रकान्त मल्लिक (इंडियन ओवरसीज़ बैंक, पटना), **वनगाँव** श्री भूप नारायण दास (एडिशनल कलक्टर), **भागिर थपुर** कवि श्री जयानन्द दास (लेखक 'रुकमांगद' नाटक), **पिहवारा** सर्वश्री चतुर लाल दास, अनिरुद्ध लाल दास, शेष नारायण लाल, **शिशौनी** श्री बिन्देश्वर लाल दास, **गोरापट्टी** सर्वश्री कमलानन्दन लाभ, रामावतार लाल दास (अपर ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश), राम उदार लाल दास (खादी जगत) ओ शैलेन्द्र कुमार लाल दास (मुन्सिफ, मधुबनी), **बलाट (राघोपुर)** सर्वश्री सलक्खन देव, गौरीपति, विद्यापति, प्रज्ञापति, देवपति, माधवपति, उमापति, पशुपति, विष्णुपति, चक्रपति, मधुसूदन, गोप, गरीब, हरि, लक्खीराम, अर्जुन, गम्भीर, आनन्द, वस्ती लाल, महादेव दास, श्याम सुन्दर दास, लक्ष्मी नारायण दास ओ तुलाकृष्ण दास, **रामखेतारी** श्री असर्फी लाल दास, **बिरौल** श्री कपिलेश्वर लाल दास, **जनकपुरधाम (नेपाल)** श्री मथुरा लाल दास (प्रसिद्ध अमीन

साहेब, सरस्वती स्कूल टोल) आओर परमादरणीय पञ्जीकार लोकनि यथा, **सिमरा** पञ्जीकार श्री जीवछ लाल दास जी, पञ्जीकार श्री अवध लाल दास जी, पञ्जीकार श्री सरयू लाल दास जी, पञ्जीकार श्री सूर्य नारायण लाल दास जी ओ पञ्जीकार श्री श्याम सुन्दर दास जी, **गन्धवारि** पञ्जीकार श्री अशर्फ़ी लाल मल्लिक जी, **हैदरपुर** पञ्जीकार श्री नन्द किशोर दास जी, **शिविपट्टी** पञ्जीकार श्री खिरोधरि मल्लिक जी पञ्जीकार श्री रघुवंश मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री हरिवंश मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री यदुवंश मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री जय नारायण मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री जगनारायण मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री भगवत नारायण मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री हरि नारायण मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री श्रीवंश मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री नन्द किशोर मल्लिक जी, पञ्जीकार श्री जय किशोर मल्लिक जी ओ पञ्जीकार श्री जय बल्लभ मल्लिक जी (पाँजिक उद्भट विद्वान), **लक्ष्मीपुर (मधेपुर)** पञ्जीकार श्री बासुदेव मल्लिक जी ओ पञ्जीकार श्री बद्री मल्लिक जी, **बलौर** पञ्जीकार श्री जय कृष्ण दास जी ओ पञ्जीकार श्री लखन लाल दास जी, **बहेरा** पञ्जीकार श्री ज्वाला प्रसाद मल्लिक जी, **हरिपुर (डीह टोल)** पञ्जीकार श्री विश्वनाथ मल्लिक जी (जनकपुर धाम, नेपाल) तथा पञ्जीकार श्री जालपादत्त मल्लिक जी (एहि पञ्जीकारक गामक नाम आब हमरा स्मरण नहिं अछि); आ

(२) हमर "हित चिन्तक (परम मान्य)"

सर्व प्रथम हमर परम स्नेही ग्रामीण (**खेराजपुर**) लोकनि यथा सर्वश्री यदुनन्दन दास (दरभंगा कलक्टरेट), प्रभुनन्दन दास (बिराटनगर, नेपाल), डॉ० राम नारायण दास (प्रिन्सीपल, वीरगंज, नेपाल), प्रो० दिग्विजय कुमार दास (सिरहा, नेपाल), सर्वश्री गोविन्द नारायण दास 'गोनू' (स्वास्थ्य विभाग), प्रभात कुमार दास 'मोहन' (स्वास्थ्य विभाग), अरुण कुमार दास 'गोपाल' (स्वास्थ्य विभाग), विनोद कुमार दास 'वंशी' (इलाहाबाद बैंक), विकास कुमार दास 'शशि' (दरभंगा मेडिकल

कॉलेज), प्रशान्त कुमार दास 'बबलू', कन्हाइ लाल दास (ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर), नागेन्द्र लाल दास (सर्वे विभाग), बिजेन्द्र लाल दास (सर्वे विभाग), सुरेन्द्र लाल दास 'रमण' (दिल्ली), सुमन कुमार दास (ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर), विमल कुमार दास 'ऊधो' (कारप्रदाज, ट्रेजरी), सतीश कुमार दास 'माधो' (वीरगंज, नेपाल), अशोक कुमार दास (दिल्ली), दिलीप कुमार दास, राजेन्द्र कुमार दास 'राजू' (जूट मील, मुक्तापुर), प्रदीप कुमार दास 'शंकर' (कारप्रदाज, ट्रेजरी), अमरेन्द्र नारायण दास 'जट्टू' (जमशेदपुर), अरविन्द कुमार दास 'गंगू' (रोज़ पब्लिक स्कूल), अखिलेन्द्र नाथ 'उमाधर' (दिल्ली), देवेश कुमार दास (जमशेदपुर), पंकज प्रसून 'टुड्डू', नीरज प्रसुन 'गुड्डू', विवेक विशाल 'विक्की', संतोष कुमार दास (मुम्बई), संजय कुमार दास 'चुन्नू', राजन कुमार दास (अमेरिका), सुधांशु कुमार दास 'पप्पू' (अमेरिका), संजय कुमार दास 'दीपू', (वीरगंज, नेपाल), अमिताभ कुमार दास 'अमित' (वीरगंज, नेपाल), मिथीलेश कुमार दास (दिल्ली), रमेश कुमार दास (मुम्बई), राजेश कुमार दास 'रिंकू' (दिल्ली), नरेन्द्र कुमार दास (विराटनगर, नेपाल), जितेन्द्र कुमार दास (भैरहवा, नेपाल), कौशलेन्द्र कुमार दास (काठमाण्डू, नेपाल), आशुतोष कुमार दास 'रौशन' (नेपाल/चीन), अभिषेक कुमार दास 'पीटू/छोटू' (नेपाल), अनिल कुमार दास, सुनील कुमार दास, मानस कुमार दास, आशुतोष प्रसून, नितिन कुमार दास 'रवि', आशीष कुमार दास, दिवाकर दास, प्रभाकर दास, प्रियांशु कुमार, शैलेन्द्र कुमार, सुमन सौरभ, चन्द्र विहारी निधि 'नन्दन' (डी.एम.सी.एच.), अञ्जनि कुमार निधि 'बौए' (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), ललन कुमार निधि 'ललन' (स्वास्थ्य विभाग), चतुरानन दास 'नन्हें' (कोल माइन्स, धनबाद), भगवत नारायण दास 'नारायण जी' (कोल माइन्स, धनबाद), इन्द्र भूषण लाल (शिक्षा विभाग), सितेन्द्र कुमार लाल (धनबाद) सुदिष्ट कुमार लाल (धनबाद), संतोष कुमार लाल (धनबाद), शशि कुमार कर्ण (मास्टर साहेब, बिराटनगर, नेपाल), अनूप कुमार दास 'रवि', विजय

शंकर निधि 'शंकर', दया शंकर निधि 'दीपक', कृपा शंकर निधि 'गुड्डू', उमा शंकर निधि 'ननकू', गुणा शंकर निधि, रमा शंकर निधि, अजय शंकर निधि, नागेश्वर चौधरी (स्टेट बैंक), खगेन्द्र नारायण चौधरी (पूसा ब्लॉक), राघो चौधरी (स्वास्थ्य विभाग), ललन चौधरी (मुखिया जी), शम्भु चौधरी (समाज शास्त्री), माधव कुमार कर्ण (रेलवे), कृष्ण देव चौधरी 'कन्हैया' (मत्स्य विभाग), मदन मोहन चौधरी (स्टेट बैंक), रबिन्द्रनाथ राजू 'विनोद/गट्टू', विभूति भूषण चौधरी (स्टेट बैंक), शशि भूषण चौधरी (रेलवे), चन्द्र भूषण चौधरी 'मन्ने' (स्टेट बैंक), संतोष कुमार चौधरी, युगल किशोर चौधरी 'मोहन' (ई.एस.आइ. विभाग), नन्द किशोर चौधरी 'किशोर', वृज किशोर चौधरी 'टुन्नी', राज किशोर चौधरी 'बौआ', संजीव किशोर चौधरी 'जीतू', अञ्जनि किशोर चौधरी 'टुल्लू', अभय किशोर चौधरी 'छोटू', जय किशोर चौधरी 'अरुण', चन्द्र किशोर चौधरी 'ललित' (मुम्बई), राजीव किशोर चौधरी 'फूल बाबू', सुबोध कुमार चौधरी, रमण कुमार चौधरी (स्वास्थ्य विभाग), चन्द्र देव चौधरी 'दमन', रंजन कुमार चौधरी, वसंत कुमार चौधरी 'मनोज', चन्दन कुमार, रवि शंकर, कुलदीप 'बच्चा', अभिषेक प्रकाश 'विट्टू', अभिनव चौधरी 'अमन', यतीन्द्र कुमार, घनश्याम कुमार, पियूष, आयुष, राज गौरव, कुमार क्षितिज, शुभम् सौरभ, आयुष चौधरी 'शुभम्', अभिषेक आनन्द, शिवम् आनन्द, केशव, आदर्श चौधरी, मयंक चौधरी, अवधेश कुमार 'रातुल', आशीष कुमार 'चिक्कू', विक्की, हैप्पी, शंकर कुमार चौधरी, ऋषि प्रकाश 'सोनू' (पटना), रवि प्रकाश 'जिमि' (पटना), आकाश अनन्त 'दीपक', निखिल आनन्द, आनन्द कुमार चौधरी, कृष्ण कुमार चौधरी 'विपिन', प्रभात कुमार 'पेन्टर', सुजीत कुमार, अरुणभ, सौरभ रंजन 'स्वतन्त्र कुमार आजाद', राजेश कुमार, विकास कुमार, सुभाष कुमार 'मिट्ठू', शशि नारायण दास 'दास जी', लाल विहारी दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), अवध बिहारी लाल दास 'मोहन' (बाटा), सीताराम लाल दास (बरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक),

रंजन कुमार दास (बोकारो), विपिन बिहारी लाल दास (बरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), मित्र नारायण दास (बहेड़ी ब्लॉक), सुमन कुमार दास (कॉमर्शियल सप्लायर), सुरेन्द्र लाल दास, राम कुमार लाल दास 'रामबाबू', शंकर कुमार लाल दास 'लाल बाबू', **मनोज कुमार दास** (सुप्रसिद्ध पत्रकार, "**दूरदर्शन**"), संजय कुमार दास 'चुन्नू' (बैंक), रीसू दास, मदन कुमार दास (ओकील साहेब), गोपाल दास, सुभाष कुमार दास, अशोक कुमार लाल दास (नेशनल इन्स्योरेन्स), हेमन्त कुमार दास 'अन्नू', पुष्कर कुमार दास 'बिट्टू', नवीन कुमार दास, प्रवीण कुमार दास, अरविन्द कुमार दास 'सोनी', आनन्द प्रकाश 'छोटू', आशीष प्रकाश 'नूनू', आर्यन राज 'ऋीष', सुमित कुमार 'पिन्टू', अमित कुमार 'मिन्टू', आशीष दास 'राजा बाबू', आदित्य कुमार 'बच्चा बाबू', शक्ति शेखर 'बाबू', ऋषि शेखर 'गुन्जन', अजय कुमार 'गोलू', रवि शेखर 'अमन', अतुल कुमार, आशीष कुमार, आयुष कुमार, विजय कुमार कर्ण 'वीनू', सुनील कुमार दास, सुधीर कुमार दास, अनिल कुमार दास 'चुन्नू', जय शंकर दास (ऑफिसर, स्टेट बैंक), प्रेम शंकर दास (रेलवे), उदय कुमार दास 'राजू', अजय कुमार दास 'पप्पू', राम बिहारी चौधरी (रेलवे), त्रिलोक कुमार चौधरी (ओकील साहेब), अरविन्द कुमार चौधरी (कन्सट्रक्सन्स), राजेश कुमार चौधरी (स्टेट बैंक ऑफ हैदेरबाद), विजय कुमार चौधरी (स्टेट बैंक), विनय कुमार चौधरी, मनोज कुमार चौधरी 'पप्पू', संतोष कुमार चौधरी 'अन्टू', राकेश कुमार चौधरी 'बुल्लू', मधुरापति चौधरी 'बच्चा', युगल किशोर चौधरी (सुन्दरपुर), श्याम किशोर चौधरी (स्टेट बैंक), हरि किशोर चौधरी (ओकील साहेब), राम किशोर चौधरी, राम जीवन चौधरी (क़ातिब), अजय कुमार चौधरी, संजय कुमार चौधरी, प्रकाश कुमार चौधरी 'गोविन्द', राकेश कुमार चौधरी 'शंकर', पंकज कुमार चौधरी 'कन्हैया', दीपक कुमार 'दीपक', कन्हैया, सिद्धार्थ, नीलमणि, सुरेश कुमार चौधरी 'सदन' (जेल विभाग), पवन कुमार चौधरी, हेमन्त कुमार चौधरी 'मुन्ना' (दिल्ली), संजय

कुमार चौधरी 'चुन्ना' (दिल्ली), चन्द्र मोहन चौधरी 'कुमर' (रांची), अभय कुमार चौधरी (राँची), डॉ. अजय कुमार चौधरी (रांची), विजय कुमार चौधरी (रांची), विनय कुमार चौधरी (राँची), सूर्य मोहन चौधरी 'राघो', गोपाल चौधरी, अशोक चौधरी, राजकिशोर चौधरी 'राजू', दीप नारायण चौधरी 'दीपू', प्रमोद कुमार दास 'अमर' (स्टेट बैंक), ऋषि कुमार दास 'डुल्ले', विनय कुमार दास, संजय कुमार कर्ण, मुकुन्द नारायण लाल दास 'शम्भु' (अँडीटर), रविन्द्र कुमार लाल दास (स्टेट बैंक), गंगा नारायण लाल दास, सत्य नारायण लाल दास 'राम लला', सुधेश कुमार दास 'बब्लू', राजेश कुमार दास 'राजू', भूपेश कुमार दास 'संजय', व्रजेश कुमार दास 'रमेश', रूपेश कुमार दास 'बाबुल', प्रवीण कुमार दास 'आशीष', सुशील कुमार दास 'मुन्नु', प्रिन्स कुमार, विनय कुमार दास 'पप्पू', संजय कुमार कर्ण 'गुड्डू', देवेन्द्र किशोर दत्त 'बच्चा', जय किशोर दत्त 'लाल' (इन्जीनियर), नागेन्द्र किशोर दत्त 'मन्टू' (स्टेट बैंक), राजेन्द्र किशोर दत्त 'बौआ जी', अशोक कुमार दत्त, प्रमोद कुमार दत्त, योगेन्द्र दत्त 'ननू' (सिविल कोर्ट), कौशल किशोर दत्त 'गुणा', अरुण कुमार दत्त 'रतन', प्रदीप कुमार दत्त, पंकज कुमार दत्त, पुष्पेन्द्र कुमार दत्त 'नीरज', मनोज कुमार दत्त 'देबू', समीर कुमार दत्त 'मोहन', अभिषेक कुमार दत्त 'सोहन', आशीष कुमार दत्त, अक्षय कुमार दत्त, अश्विनी कुमार दत्त 'प्रिन्स', आकाश कुमार दत्त, आशुतोष कुमार दत्त 'मन्ने', अविनाश कुमार दत्त, हेमन्त कुमार दत्त 'मुन्शी जी', संजीव कुमार दत्त 'बब्बू', रंजन कुमार दत्त 'बब्बन', रूपेश कुमार दत्त 'कन्चन', तरुण कुमार दत्त 'छोटू', संजय कुमार दत्त, सुजीत कुमार दत्त 'गोनू', संदीप कुमार दत्त 'शीलू', राजू कुमार दत्त (इन्जीनियर), डिम्पी कुमार दत्त, आयुष कुमार दत्त, प्रकाश दीप, आकाश दीप 'मोनू', राहुल दास, चन्दन दास, मोहन कुमार लाल दास, प्रवीण कुमार दास, विजय कुमार दास ओ बिनय कुमार दास, **जी. एन. गंज (लहेरियासराय)** बन्धुवर आचार्य श्री सोमदेव (मैथिली

हिन्दीक विशिष्ट विद्वान, सुप्रसिद्ध हास्य–व्यंगाचार्य ओ समर्पित समाज सुधारक). **बहादुरपुर** सर्वश्री मुक्तिनाथ दास (डाक विभाग), अरुण कुमार दास (बैंक), विजय कुमार दास (नेपाल), प्रेम शंकर दास, राजेन्द्र लाल दास, जगदीश चन्द्र दास (रेलवे), सतीश चन्द्र दास (सह-सम्पादक, दैनिक 'हिन्दुस्तान', दिल्ली), शशि मोहन दास, राजेश्वर लाल दास, गोपी मोहन दास, सत्येन्द्र कुमार दास (खादी जगत), सुधीर चन्द्र दास (रेलवे), रविन्द्र चन्द्र लाल दास 'सुमन' (एल.आइ.सी., दिल्ली), अरविन्द चन्द्र दास 'सुबोध' (दिल्ली), सुभाष चन्द्र दास (स्टेट बैंक, दिल्ली), गोविन्द चन्द्र दास 'गोपाल' (सह-सम्पादक, दैनिक 'हिन्दुस्तान', दिल्ली), सुजीत चन्द्र दास (दिल्ली), मुकुन्द चन्द्र दास (दिल्ली), शैलेश चन्द्र दास (प्रोजेक्ट इन्जीनियर, दिल्ली), हीरानन्द लाल कर्ण, रामानन्द लाल कर्ण, शिवानन्द लाल कर्ण, राजेन्द्र लाल कर्ण 'ललन', **राघवेन्द्र कुमार कर्ण "रतन" (जनकपुर धाम–नेपाल),** सत्यम प्रतिराज ओ नवनित्य प्रतिराज, **बरहेता** सर्वश्री उग्र नारायण लाल दास 'बाबू लाल जी' (अति प्रवीण अन्वेषक, समाज शास्त्री ओ अध्यक्ष, खेराजपुर अठगामा), कृष्ण कुमार कश्यप (विशिष्ट हस्त-शिल्प कला विशारद ओ समर्पित समाज सुधारक), कपिल देव लाल दास (प्रसिद्ध जीवछ लाल दास 'मुखिया जी'), वसंत (किशोरी) लाल दास, अर्जुन लाल दास, अवधेश कुमार लाल दास (विजली विभाग), लक्ष्मीकान्त लाल दास 'ललन' (लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ सुप्रसिद्ध शिक्षक), चन्द्र नारायण लाल दास 'फूल बाबू', उदय कान्त लाल दास 'भोली बाबू' (डी.डी.सी.), अंजनी कुमार दास (ट्रान्सपोर्ट), विजय कान्त लाल दास 'बुच्चू' (सर्वे विभाग), गिरीश लाल दास, मिथिलेश कुमार दास, रत्नेश कुमार दास 'पवन जी', अमलेश कुमार दास, सुरेश कुमार दास, बद्री नाथ लाल दास (सुप्रसिद्ध क़ातिब), राघवेन्द्र लाल दास (रजिस्ट्री ऑफिस), उपेन्द्र लाल दास, योगेन्द्र लाल दास (प्रेस मैनेजर, पटना), कमलेश लाल दास, पशुपति लाल दास, चन्द्र पति लाल दास, गणपति लाल दास, अरुण कुमार लाल

दास, अनिल कुमार लाल दास, अशोक कुमार लाल दास, रघुनाथ लाल दास, त्रिवेणी लाल दास, विनोद कुमार दास, नीरज कुमार दास, सतीश चौधरी 'मदन' ओ रविन्द्र चौधरी 'राजा', **भच्छी** सर्वश्री विद्या नन्द दास (कल्याण विभाग), शारदा नन्द दास (ट्रेज़री ऑफिसर), सत्यानन्द दास (लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), गणपति लाल दास (मैनेजर सूगर मील), कृष्णानन्द दास 'जगदीश बाबू' (सुपरिन्टेन्डिग इन्जीनियर), यशोदा नन्द दास, श्रीधर दास, डॉ० सच्चिदानन्द दास, शैलजा नन्द दास (इन्जीनियर, जेनेरल मैनेजर, एच.एस.सी.एल.), प्रो० डॉ० प्रमोदानन्द दास, कमलेश कुमार दास (पी. ए. टु मिनिस्टर सेन्ट्रल सेक्रेटेरियट, नई दिल्ली), राकेश कुमार दास (दिल्ली), चक्रधर दास, शेषनाथ दास 'गोपाल जी' (खादी बोर्ड), व्रजनाथ दास (खादी जगत), प्रेमनाथ दास, श्रीनाथ दास, राम अनुग्रह दास 'राघोजी' मैनेजर, नर्सिंग होम, पटना, कमलापति दास (जे.एल., बोकारो स्टील, लक्ष्मीपति दास, शंकर कुमार दास, सुनील कुमार दास 'केदार', सुशील कुमार दास 'बच्चन जी' (टाटा), राम नन्दन दास 'लाला जी' (बोकारो), डॉ० जितेन्द्र कुमार दास, प्रो० रामू बाबू, सम्पूर्णानन्द दास (खादी जगत), दादुल ओ देबू, **नवानी** सर्वश्री ब्रह्मदेव लाल दास (लब्धप्रतिष्ठ विद्वान, सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब, समाज शास्त्री ओ लेखक "मैथिल शुभ संस्कार विधि-विधान व गीत"), मणिकान्त दास, (लब्ध प्रतिष्ठ व्यवसायी, मद्रास) मोहित बाबू, हरिदेव कृष्ण दास (पटना युनिवर्सिटी), सहदेव लाल दास, ईन्द्र देव लाल दास, डॉ० श्रीदेव लाल दास (सुप्रसिद्ध डॉक्टर साहेब), विपिन बिहारी लाल दास (सुप्रसिद्ध समाज शास्त्री), सत्य नारायण दास (सुप्रसिद्ध आयुर्वेद व्यवसायी, मद्रास), उदय कुमार दास (सुप्रसिद्ध आयुर्वेद व्यवसायी, मद्रास), सहदेव कृष्ण दास (इन्डस्ट्रीज कॉर्पोरेशन, पटना), सुमन कुमार दास (मद्रास), विनय कुमार दास (मद्रास), अमरेन्द्र लाल दास (एन.सी.सी.), अजय कुमार दास, अभय कुमार दास (इन्स्युरेन्स, दिल्ली), कृष्णानन्द वर्मा 'कन्हैया जी', अमर कुमार वर्मा, अनिल कुमार वर्मा, (सहरसा/बोकारो) ओ

निखिल कुमार वर्मा, **कमलपुर (कुआ)** सर्वश्री मथुरा लाल दास (इम्प्ल्वायमेन्ट ऑफिस), विमल कुमार दास (ए.जी. ऑफिस, पटना), केदार नाथ लाल दास (रेलवे), सुशील कुमार दास, मुक्तिनाथ दास, 'कुमार जी' (बाबू श्री गणेश लाल दास, समाजसेवी नेता), मार्कण्डेय दास, शशि शेखर लाल दास (समाज शास्त्री), सुशील कुमार दास (इन्जीनियर, बोकारो स्टील), वैद्यनाथ दास, प्रिय रंजन दास (भुवनेश्वर), हरिश्चन्द्र लाल दास (बैंक), शम्भु कुमार दास (स्टेट बैंक, न्यु यॉर्क, अमेरिका), मेघानन्द दास (बोकारो स्टील) ओ प्रो० सुरेन्द्र लाल दास (महासचिव, कर्ण कायस्थ समिति, मधुबनी), **सिमरा** प्रो० नेत्रेश्वर लाल कर्ण, प्रो० राजेन्द्र किशोर कर्ण (जनकपुर, नेपाल), प्रो० करुणानन्द दास (आदि स्टेट बैंक/भागलपुर युनिवर्सिटी), प्रो० धीरेन्द्र नाथ कर्ण 'राजा बाबू' (जनकपुर, नेपाल), सर्वश्री डॉ० सुवोध चन्द्र दास (सुप्रसिद्ध आइ सर्जन, आइ.हॉस्पीटल, जनकपुर धाम नेपाल), सर्वनारायण दास, उमेश चन्द्र दास (इन्जीन्यिर नेपाल), गंगेश्वर लाल कर्ण 'तुलसी बाबा' (जनकपुरधाम, नेपाल), सुशील कुमार दास, सुधीर कुमार दास, सुरेश लाल दास, डॉ० विमल कुमार दास, कमला कान्त दास (वरिष्ठ ऑफिसर , स्टेट बैंक), शोभा कान्त दास, राजीव रंजन (मुन्सिफ), रेवती रमण दास ओ दयानन्द दास (जे.एन.कॉलेज, मधुबनी), **रतुपाड़** सर्वश्री ललित मोहन दास (प्रसिद्ध 'मामा जी', बेगूसराय), शशिनाथ लाल (दारोगा जी), रामकृष्ण लाल (दारोगा जी), ओ रामेश्वर लाल दास (कस्टम्स, कटहल बाड़ी, दरभंगा), **सनकोर्थु (रामपुर)** सर्वश्री अवध किशोर कण्ठ (रेलवे), युगल किशोर कण्ठ, उपेन्द्र नारायण कण्ठ, उचित नारायण दास, जगत नारायण दास (मधुबनी ट्रेज़री; अध्यक्ष, कर्ण कायस्थ समिति, मधुबनी), धर्म नारायण दास, उमेश लाल दास 'कवि जी' ओ शंकर नारायण दास, **नारायणपुर** सर्वश्री भुवनेश्वर लाल दास 'तृप्ति बाबू' (प्रशासनिक सेवा), सहदेव लाल दास 'मुक्ति बाबू' (नाट्यकला विशारद), अच्युतानन्द लाल दास 'बगडू बाबू', पीताम्बर लाल दास

(कर्मचारी, बिहार सरकार), सच्चिदानन्द दास, राधाकृष्ण लाल दास, प्रभात रंजन, मिहिर रंजन, मयंक प्रकाश, विजय प्रकाश (आइ.ए. एस.), इन्द्र भूषण दास 'पालन जी', विजय भूषण दास 'लालन जी', कमला कान्त दास (इन्सपेक्टर, बाजार समिति), उमेश लाल दास, माधवानन्द दास 'बौआ जी' (ओरिएण्ट पेपर मील), गोविन्द लाल दास, आनन्द कुमार दास, अजय कुमार दास, आशीष कुमार, अभिनव कुमार, अनुराग कुमार, इन्द्रपति दास (आर.एम.एस.), विनय कुमार दास, अनिल कुमार दास (एस.ई.सी.एल.), सुनील कुमार दास (ऐडिशनल कमिश्नर, एक्साइज़), अखिलेश्वर लाल दास (खादी बोर्ड), सत्य नारायण दासद्वय (डाक विभाग), गुणेश्वर प्रसाद कर्ण (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), विनोद कुमार कर्ण (स्टेट बैंक), विनय कुमार, अजय कुमार, प्रभात कुमार, विजय कुमार, संजय प्रकाश, दीपक कुमार, संकल्प, मोहन लाल दास (कोल माइन्स), सुशील कुमार दास, अशोक कुमार दास, अजित कुमार दास (टेलिकम्युनिकेशन, दरभंगा), जैनेन्द्र कुमार दास 'कन्हैया जी', अतुल कुमार दास, अनिश कुमार, अतीश कुमार, अनुज कुमार, अंकित कुमार, अंकुर कुमार, अभिषेक कुमार, अभिलाष कुमार, राकेश कुमार दास 'मुन्नू जी', (प्रिन्सिपल, साउथ प्वायन्ट एकेडमी, लहेरिया सराय), सुधीर कुमार दास, सुवीर कुमार दास (इंगलैण्ड), समीर कुमार (अमेरिका), अरूण कुमार दास (लहेरियासराय) ओ टीपू कुमार, **सुन्दर पुर** सर्वश्री शिवजी बाबू, द्वारिका लाल दास, उमानाथ लाल कर्ण, रेवती लाल, जीवानन्द लाल, जयानन्द लाल, कृष्णानन्द लाल, चिदानन्द लाल, धर्मानन्द लाल, सूर्य नारायण दास (पी.डब्ल्यू.डी.), हरे कृष्ण लाल दास (पी.ए. टु वाइस चान्सलर), श्याम कृष्ण लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, इन्स्योरेन्स), सुबोध कुमार मिश्र (टेलिकम्युनिकेशन), लक्ष्मण लाल दास (शिक्षा विभाग), बच्चा बाबू दास (गोदावरी गैस सर्विस, दरभंगा), सुमन कुमार दास, गोपाल लाल दास ओ श्री लालू बाबू, **बहेड़ा** सर्वश्री मोती लाल दास, जगन्नाथ दास, पशुपति लाल दास (समाज शास्त्री), वृजनन्दन

लाल दास 'दाऊ जी' (रेलवे), सिंहेश्वर लाल दास (इनकम टैक्स, कलकत्ता), राजेन्द्र लाल दास (रेलवे), श्यामाकान्त लाल दास (समस्तीपुर कलेक्टरेट), प्रो० अरुण कुमार दास, सर्वश्री अरुण कुमार दास (दरभंगा) ओ लक्ष्मी कान्त लाल दास (क़ातिव, रजिस्ट्री ऑफिस), **आसी** सर्वश्री लक्ष्मीकान्त जी (नोइडा, यु.पी.), जटाशंकर दास (पटना), जितेन्द्र लाल दास (इन्जीनियर, पी.डब्लु.डी.), उपेन्द्र नारायण दास, घनश्याम लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर स्टेट बैंक), विजय कुमार (कस्टम कमिश्नर), सुनील कुमार (मास्टर साहेब), विनय कुमार (एडवोकेट, दिल्ली हाई कोर्ट), सरोज कुमार (मास्टर साहेब), पंकज, नीरज ओ पिन्टू, **पड़री (सोनकी)** सर्वश्री श्रीकृष्ण लाल दास (स्टेट बैंक) ओ आनन्द नारायण लाल दास (ऑफिसर, स्टेट बैंक), **सिमरी (भोज पड़ौल)** सर्वश्री कपिलेश्वर मल्लिक (खादी जगत), रामनन्दन दास (इन्स्योरेन्स, पटना) ओ इन्द्रदेव लाल कर्ण (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **जोंकी** डॉ० सुशील कुमार दास (सिमरी), श्री त्रीवेणी कान्त दत्त (वरिष्ठ ऑफिसर, एल.आइ.सी.आइ.), प्रो० दिनेश नाथ दत्त (मुज़फ़्फ़रपुर), सर्वश्री मिथिलेश कुमार दत्त (जनकपुर धाम, नेपाल), लोकेश्वर दत्त (जनकपुरधाम, नेपाल) ओ वसन्त कुमार दत्त (जनकपुर धाम, नेपाल), **जनकपुरधाम (नेपाल)** श्री नवेन्द्र कुमार निधि (लेक्चरर), **सूगा** श्री जगदीश लाल कर्ण (चुरोट फैक्ट्री, जनकपुर धाम, नेपाल), **मानापट्टी** सर्वश्री उग्र नारायण दत्त, सूर्य नारायण दत्त (स्वव्यवसायी, देवी चौक, जनकपुर धाम, नेपाल) ओ चन्द्र नारायण दत्त, **परसौनी (मुरलियाचक)** सर्वश्री परमानन्द दत्त ओ योगानन्द दत्त (डी.सी.एल.आर., दरभंगा), जितेन्द्र कुमार दत्त 'भगवान', सुरेन्द्र कुमार दत्त 'बिपिन' ओ गजेन्द्र कुमार दत्त 'नटवर' (तीनू बरहेता) **कायस्थ-कवइ** सर्वश्री कुलानन्द दास (जमशेदपुर), विजय कुमार दास (बिजली विभाग, दरभंगा) ओ अशोक कुमार दास, **गोरापट्टी** सर्वश्री कैलाश चन्द्र लाभ (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब) ओ जितेन्द्र कुमार दास (सिविल कोर्ट, दरभंगा), **मल्हीपट्टी** सर्वश्री दिगम्बर नारायण

चौधरी (दरभंगा कमिश्नरी ऑफिस) ओ भरत शरण चौधरी (रेलवे), **पोखरिभीड़ा** श्री कृष्ण कुमार लाल कर्ण (रिजर्व बैंक), **हावी भौआर** श्री गोविन्द नारायण दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), **महिनाम** सर्वश्री सोमेश्वर लाल दास (रिज़र्व बैंक) ओ गौरीशंकर लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **दुधपूरा** सर्वश्री नटवर लाभ (इन्डस्ट्रीज़ डिपार्टमेन्ट), चन्द्र शेखर प्रसाद कर्ण (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब) ओ ध्रुवनन्दन प्रसाद कर्ण (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **सलहा** (गंगापट्टी) श्री मिथिलेश कुमार लाल (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक) ओ के. बी. लाल (डाक विभाग) **घोंघिया** डॉ० एन.एन. लाभ, **धेरुख** सर्वश्री मुक्तिनाथ लाल दास ओ निधिनाथ लाल दास (स्टेट बैंक), **उभ्फटी** श्री मोद नारायण चौधरी ओ डॉ० सुधाँशु शेखर चौधरी, **कन्हौली** श्री सूर्य नारायण दास (ऑफिसर, पी.एम.जी. ऑफिस, पटना), **खरुआ** सर्वश्री बालकृष्ण लाल दास (ब्रान्च मैनेजर, एल.आइ.सी.आइ.) ओ विन्देश्वर लाल कर्ण (कटरहिया), **कैथाही** सर्वश्री कपिलेश्वर लाल दास (रेलवे), कृष्णकान्त लाल दास, विद्यानन्द दास (कवि; विशुद्ध गांधीवादी, खादी-जगत), निर्भय कान्त दास (खादी-जगत), पवन कुमार दास, कृष्ण विहारी दास (चाय बाग़ान), डॉ० महेन्द्र नारायण दास (पटना), हितेन्द्र नाथ दास, इन्द्र नाथ दास ओ श्री श्याम सुन्दर दास, **आहिल** सर्वश्री गीता कान्त दत्त, अमर कान्त दत्त (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), राजेन्द्र लाल दास, चन्द्र कान्त दत्त (दरभंगा कलेक्टरेट) ओ श्री उग्र नारायण लाल दास (सर्वे विभाग), **बनकट्टा** श्री प्रभुनाथ कर्ण (होली मिशन स्कूल, समस्तीपुर), **भागिरथपुर** श्री एम.एल.दास (रिज़नल कमिश्नर, प्रोविडेन्ट फण्ड विभाग, पटना), **समैला** सर्वश्री सत्यदेव लाल दास (मुज़फ़्फ़रपुर), प्रसिद्ध कैलाश निधि जी (दरभंगा कमिश्नरी ऑफिस), देवनाथ लाल दास (इन्जीनियर, नेपाल सरकार, काठमाण्डू) ओ जागेश्वर लाल दास (प्रिन्सिपल, नवोदय विद्यालय), **बलौर** सर्वश्री रामचन्द्र दास, द्वारिका लाल दास, मथुरा लाल दास (सेक्रेटरी, पेन्शनर्स युनियन), मधुसूदन दास (इन्दौर), सर्वनारायण दास (इनकम टैक्स विभाग), वीरेन्द्र

नारायण दास, उपेन्द्र नारायण दास, नित्यानन्द दास, उमेश चन्द्र दासद्वय, कृष्ण कुमार दास, राजकुमार दास (रेलवे), काली कुमार दास (ट्रेज़री ऑफिस), मधुकान्त लाल दास, चन्द्र कान्त लाल दास (स्टेट बैंक), अशोक कुमार दास (स्टेट बैंक) अमरनाथ कर्ण (पी.एच.ई.डी.), कन्हैयालाल दास (पटना), कौशल कुमार दास (नाट्यकला विशारद, पटना), बिनोद कुमार दास, दयानन्द लाल दास, प्रभाश चन्द्र दास, पवन कुमार दास-द्वय (जमशेद्पुर/सकरी), रमण कुमार लाल दास, रणजीत लाल दास 'कुमर जी' (दिल्ली), पंकज दास (इन्दौर), उदय चन्द्र लाल दास ओ देवेन्द्र लाल दास (भुटकुन बाबू 'नेताजी'), **बैगिनी** सर्वश्री राम अनुग्रह चौधरी, गजेन्द्र नारायण चौधरी, चन्द्र कान्त चौधरी (पीयरलेस इन्स्योरेन्स/जी.टी.एफ.एस. मल्टि सर्विसेज़) ओ मनीष चौधरी (एरिया मैनेजर, मेडिसिन्स), **मेहसारि** सर्वश्री वैद्यनाथ लाल, शशिनाथ लाल (इन्स्योरेन्स), रघुनाथ लाल (इन्स्योरेन्स), कृष्ण कान्त मल्लिक, ताराकान्त मल्लिक (टेलिकम्युनिकेशन) ओ डॉ० टी.एन.मल्लिक (सुप्रसिद्ध आइ सर्जन) **कमलपुर (फेंट)** सर्वश्री जय नारायण लाल दास (सर्वोदयी), संतोष बिहारी दत्त (मास्टर साहेब) ओ विमल विहारी दत्त (मास्टर साहेब), **रशिदपुर** सर्वश्री अच्युतानन्द दास (पोस्ट मास्टर; 'संत-प्रभु') ओ आद्यानन्द दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **लक्ष्मीपुर (मधेपुर)** श्री योगेन्द्र नारायण मल्लिक (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक; वरिष्ठ सदस्य, बिहार राज्य कर्ण कल्याण परिषद ओ प्रान्तीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, दिल्ली), **भवानीपुर** सर्वश्री लक्ष्मीकान्त मल्लिक 'शम्भु जी', रास विहारी मल्लिक, रत्न विहारी मल्लिक, नरेश नाथ मल्लिक (सेन्ट्रल बैंक), सुरेन्द्र नाथ दास (बहेड़ा/बोकारो), योगेन्द्र नाथ दास (बहेड़ा/बोकारो), ओ वीरेन्द्र नाथ दास (बहेड़ा/बोकारो), **इजोत** सर्वश्री भूपेन्द्र नारायण दत्त (इन्स्योरेन्स), नागेश्वर लाल दास (डाक व तार विभाग) ओ सुमन जी (सेन्ट्रल बैंक), **बेलाराही** सर्वश्री केदार नाथ दास (खादी-जगत), विश्वम्भर लाल दास (मास्टर साहेब), कपिलेश्वर लाल दास, धनंजय लाल दास (पटना), आदित्य नाथ दास, कृपा नाथ

दास, रामजी लाल दास (सी.आइ.), बद्री नारायण लाल दास, प्रदीप कुमार (दिल्ली) ओ शुभेन्दु प्रकाश (स्टेट बैंक), **गुर्म्हा** सर्वश्री विश्वेश्वर लाल दास 'बच्चा बाबू', अनिरुद्ध लाल दास (वन विभाग), यदुनाथ लाल दास, बैद्यनाथ लाल दास (टेलिकम्युनिकेशन), शशिनाथ लाल दास, रघुनाथ लाल दास **(तेनूघाट),** महेश्वर लाल दास (त्रिवेणी बाबू), शिवेश्वर लाल दास (जमशेदपुर), चन्देश्वर लाल दास, युगल किशोर लाल दास, अनिल कुमार दास (स्टेट बैंक), राजेश कुमार दास (पटना), इन्द्रानन्द लाल दास (जमशेदपुर), रामानन्द लाल दास (जमशेदपुर), आनन्द कुमार दास (जमशेदपुर), रमेश कुमार दत्त (जमशेदपुर), शैलेन्द्र लाल दास (जमशेदपुर), सुबोध कुमार दास (जमशेदपुर), सुधीर कुमार दास (जमशेदपुर), सुनील कुमार दास (जमशेदपुर) ओ शम्भु शरण दास (जमशेदपुर), **गोढ़ैला** श्री अमरेन्द्र कुमार'नेताजी' (मास्टर साहेब), श्री अमरेश कुमार लाल साहेब (डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेसन्स जज), **हैदरपुर** सर्वश्री रघुनाथ दास, विनीत जी (इनकम टैक्स, लखनउ), अमिताभ (अनिल) जी (पटना), नटराज (पप्पू) जी (पटना), कमल किशोर दास 'कमलू जी' (पटना), राजीव रंजन 'बब्बू' (पटना), डॉ. रणजीत रमन (पटना), रोहित राजन (पटना) ओ पिनाक जी (पटना), **शिविपट्टी** सर्वश्री जितेन्द्र कुमार लाल कर्ण (दिल्ली), अवध विहारी लाल दास, जगत नारायण लाल दास (पी.ए.टु कलक्टर, मधुबनी), कमल नारायण लाल दास, इन्द्र नारयाण लाल दास (भुवनेश्वर), अरविन्द मल्लिक ओ चतुरानन मल्लिक (वैज्ञानिक, भाभा वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्र, कोलकाता), **काको** सर्वश्री काली कुमार दास (कोलकाता) ओ विपिन कुमार दास (डाक विभाग), अशोक कुमार दास (धवौली, वार्ड नं. ८ जिल्ला धनुषा, नेपाल), **मोड़वारा** श्री नरेन्द्र कुमार लाल (समस्तीपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक), **मुर्तुजापुर** सर्वश्री बलभद्र मल्लिक (लहेरियासराय), के.एन.मल्लिक (इन्स्योरेन्स) ओ गोपेन्द्र नारायण मल्लिक, **सखवार** सर्वश्री कुलानन्द दास (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), मदनानन्द दास, चतुरानन दास, अमृतानन्द (भगवान) दास, कौशल्यानन्द दास,

शिवानन्द दास, गिरिजानन्द दास, उमानन्द दास, गोकुलानन्द दास, (विसर्ग) :डॉ. ज्ञानानन्द दास, तारानन्द दास, इन्द्रानन्द दास (श्री बाबू), रुद्रानन्द दास, दुर्गानन्द दास 'अमर जी' (ज्वायंट डाइरेक्टर, आर .पी.पी.एम.एम. साइन्सेज़, दिल्ली), प्रेमानन्द दास, कृत्यानन्द दास, भवानन्द दास 'चौवे जी', जयानन्द दास 'दुवे जी', काली चरण दास, श्यामाचरण दास, ताराचरण दास, विष्णु कुमार दास, अरुण कुमार दास, आशा कुमार दास, गुणानन्द दास (राज कुमार दास) 'बच्चन जी' (आर. बी. मेमोरियल हॉस्पिटल, लहेरियासराय), शरण कुमार दास, सत्यानन्द दास, चन्दन कुमार दास, दानी बाबू (दुर्गापुर), ओ जनानन्द दास (स्वदेशी फ़ैन्स, कलकत्ता), **सिमरी (राज नगर)** सर्वश्री घनश्याम लाल दास, भुवनेश्वर लाल दास (टाटा), रमेश कुमार लाल दास (एल. आइ.सी, पटना), संजय कुमार (विराट नगर, नेपाल) ओ मित्र नारायण लाल दास 'राम लला' (स्वास्थ्य विभाग), **उजान (बड़का गाँव)** सर्वश्री शेष नारायण लाल दास (खादी जगत), टेक नारायण लाल दास ('सर्चलाइट',पटना), जगन्नाथ दास, प्रो० रोहिणी रमण कर्ण (आसाम), योगेन्द्र नारायण दास 'दिनकर' ओ शक्ति नाथ लाल (इन्स्योरेन्स), **बलाट** सर्वश्री कुमार जी (के.के. दास, 'बाटा'), राधा रमण दास (इन्जीनियर, वीरगंज, नेपाल), दिनेश लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), चिर ञ्जीव लाल दास, योगेन्द्र लाल दास 'दाऊ जी' (पी.डब्ल्यु.डी.), माधव लाल दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब ओ वरिष्ठ ऑफिसर, एन.सी.सी.), अजय कुमार दास (इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि., बेगूसराय/पानीपत), आलोक कुमार दास (सैल, मुम्बइ), देवी लाल कर्ण (स्टेट बैंक), भोला बाबू, राम वल्लभ लाल दास, सुधीर कुमार दास, जयप्रकाश लाल दास सुप्रसिद्ध 'मामाजी' (दिल्ली), ओम प्रकाश लाल दास (दिल्ली), डॉ० गोपाल लाल दास (दरभंगा मेडिकल कॉलेज ऐण्ड हॉस्पिटल), सर्वश्री रघुपति लाल दास (पटना सेक्रेटेरियट), शम्भु कुमार दास, शैलेन्द्र कुमार दास (नॉर्थ बिहार क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक), अतुल चन्द्र, अमित चन्द्र, निखिल रञ्जन, शिवम् रञ्जन, ऋषभ, पिंकू, अनिल कुमार (इन्जीनियर, रेलवे),

अमरेन्द्र कुमार लाल 'अमर', (स्टेट बैंक), डॉ० अरविन्द कुमार लाल 'मोहन' (प्रोफेसर, पटियाला), आदित्य कुमार लाल (केमिस्ट, हिमाचल प्रदेश), भारत भूषण (इन्जीनियर, दिल्ली), हिमांशु भूषण (इन्जीनियर, पूना), किशोर भूषण 'ललित' (मुजफ्फरपुर), वीरेन्द्र कुमार दास (कोशी प्रोजेक्ट, दरभंगा), सुनील कुमार दास (मधुबनी कलक्टरेट), आशुतोष कुमार दास 'ललन' (जुट कॉर्पोरेशन), दीपक कुमार (व्यवसायी, बेगूसराय) ओ दिलीप कुमार दास (मैरीन इन्जीनियर), **कमरौली** सर्वश्री विश्वबिहारी दास 'बौआ जी' ('बाटा' वीरगंज, नेपाल), लाल बिहारी लाल दास (स्टेट बैंक), संत बिहारी लाल दास (जूट कॉर्पोरेशन), बिजय कुमार दास (क़ातिब), प्रो० पी.सी एल.दास (दिल्ली), उमेश लाल दास (इन्जीनियर, भारत/अमेरिका), डॉ. विनोद लाल दास (बोकारो), राजेश्वर लाल दास (राजस्थान), डॉ. मोहन लाल दास, रमेश चन्द्र लाल दास, डॉ. हिमांशु शेखर (अमेरिका), डॉ. सुधांशु शेखर (दिल्ली) ओ प्रभु नारायण दास (दिल्ली), **केउटी** डॉ० राधारमण दास, सर्वश्री भूप नारायण दास, राम अचल दास (डाक विभाग), राम उदार दास (आयुर्वेदाचार्य, सुप्रसिद्ध वैद्य, कोल इन्डिया), विमल कुमार दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), प्रेम कुमार दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), दिनेश लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), कामता बाबू (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), अशोक कुमार लाल (स्टेट बैंक), रामानन्द दास (जमशेदपुर), सत्येन्द्र कुमार कर्ण (कम्प्युटर सेक्सन) निर्मल कुमार दास (मास्टर साहेब), वीरेन्द्र कुमार लाल दास 'वीरु' (तिनटोलिया, विराटनगर, नेपाल), धीरेन्द्र कुमार लाल दास 'धीरू' (तिनटोलिया, विराटनगर, नेपाल), जितेन्द्र कुमार लाल दास 'जीतू' (तिनटोलिया, विराटनगर, नेपाल), ललन कुमार दास (ए.एस.एम., रेलवे) ओ सुमन कुमार दास (स्टेट बैंक), **सोहराय** श्री दिनेश नारायण मल्लिक (टेलिकम्युनिकेशन), **मालीपुर** श्री जगदीश चन्द्र कर्ण (टेलिकम्युनिकेशन), **चेचराहा** श्री गणेश लाल दास (टेलिकम्युनिकेशन), **कथवार** श्री भुवनेश्वर लाल दास (दरभंगा कलेक्टरेट), **बनगाँव** श्री ललन कुमार दास (स्टेट बैंक), **ओलीपुर सर्व**श्री गंगा नारायण दास ओ राम प्रसाद लाल दास,

रतनपुर सर्वश्री केदारनाथ मल्लिक, राजेन्द्र कुमार मल्लिक 'मंगनू बाबू', (आर.एम.एस.), दिनेश चन्द्र मल्लिक, (वरिष्ठ ऑफिसर, यु.को.बैंक), फूदन मल्लिक (मुन्सिफ़ मैजिस्ट्रेट, जमशेदपुर), कृष्ण मोहन मल्लिक 'ओकील' (बिजली विभाग), पशुपति मल्लिक (दरभंगा ट्रेज़री), प्रजापति मल्लिक (मास्टर साहेब, समस्तीपुर), चन्द्रपति मल्लिक 'सीताराम' (कर्ण कायस्थ समिति अध्यक्ष, बोकारो स्टील), प्रकाश कुमार मल्लिक (स्टेट बैंक), मिथिलेश कुमार मल्लिक (दरभंगा ट्रेज़री) ओ राज कृष्ण मल्लिक 'बम बाबू' (समस्तीपुर कलेक्टरेट), **तेनुआँ** श्री शशिभूषण कण्ठ (रिज़नल मैनेजर, स्टेट बैंक, दरभंगा), **कहुआ** सर्वश्री रघुपति लाल दास (मास्टर साहेब), काशी बल्लभ दास, देवेन्द्र कुमार लाल दास (एल.आइ.सी.) ओ अशोक कुमार लाल (ऑफिसर, स्टेट बैंक), **बिरौल** महाकवि श्री वैद्यनाथ दास ओ श्री कामेश्वर लाल दास (आदि डिफेन्स सर्विस; सम्प्रति स्टेट बैंक), **बिसहथ** सर्वश्री सुरेश लाल दास (स्टेट बैंक), श्याम सुन्दर दास (पी.डबल्यु. डी.), जगमोहन कण्ठ, आनन्द मोहन कण्ठ 'बन्दे जी' (बोकारो स्टील), गोपाल लाल दास, हिमांशु नन्दन कण्ठ (जमशेदपुर), प्रो० इन्दिरा नन्दन कण्ठ, आनन्द वर्धन कण्ठ (दिल्ली), कल्याण वर्धन कण्ठ (दिल्ली), ज्ञान वर्धन कण्ठ, मान वर्धन कण्ठ (चीफ़ सव-एडीटर, 'दैनिक जागरण', दिल्ली), सूरति लाल कण्ठ, सुखदेव कण्ठ, गंगानारायण कण्ठ, आदित्य कण्ठ, गजेन्द्र कण्ठ, उमेश कण्ठ, सुशील कण्ठ, पंकज कण्ठ, गोपाल मोहन कण्ठ, शिशिर कुमार कण्ठ, समीर मोहन कण्ठ, अच्युता नन्द कण्ठ ओ आभास चन्द्र कण्ठ, **शिशौनी** सर्वश्री राघव शरण दत्त (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक) ओ अविनाश चन्द्र (स्टेट बैंक), **बेरि** सर्वश्री मुक्ति नाथ चौधरी, कुलानन्द चौधरी, परमानन्द चौधरी, नित्यानन्द चौधरी 'प्रभु जी', विवेकानन्द चौधरी 'मनोज', खगेन्द्र नारायण चौधरी (डी.एस.पी. साहेब प्रसिद्ध 'दारोगा जी'), ब्रह्मानन्द चौधरी (सिल्क मिल, भागलपुर), शारदा नन्द चौधरी (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), रमानन्द चौधरी 'ध्रुव जी', श्यामानन्द चौधरी 'मोहन जी'

(डिप्टी कलेक्टर), विद्यानन्द चौधरी (सी.एम.पी.डी.आइ.एल.),उमानन्द चौधरी (ट्रेज़री ऑफिसर), भागिरथ चौधरी, अमरेश कुमार चौधरी 'अमर जी', अवधेश कुमार चौधरी 'बच्चन जी' (सुप्रसिद्ध पत्रकार, 'हिन्दुस्तान'), अखिलेश कुमार चौधरी, यदुनाथ चौधरी (डी.एस.पी.), वीरेन्द्र नारायण चौधरी, रामेश्वर चौधरी, त्रिपुरारी चौधरी, सुमन कुमार चौधरी ओ भागेश्वर चौधरी 'कन्हैया जी', **चिचरी** सर्वश्री मथुरा लाल दास, रामेश्वर लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), सभापति लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), सत्य नारायण दास (स्टेट बैंक), काली कान्त लाल दास (पश्चिमी कोशी नहर प्रोजेक्ट), वीरेन्द्र कुमार कर्ण (दिल्ली) ओ अजीत कुमार दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **श्रीपुर** श्री कमल नारायण दास (स्टेट बैंक), **श्रीपुर (दरभंगा)** श्री धरणीधर लाल कर्ण **रनवे** सर्वश्री नित्यानन्द लाल दास, लखन लाल दास (डाक विभाग) ओ श्री गोपाल लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **हरदवार** श्री तेज नारायण लाल दास, आइ.ए.एस. (कलक्टर, बाँका), **भदहर** सर्वश्री लक्ष्मीपति चौधरी 'महन्थ जी' (वरिष्ठ ऑफिसर, नेशनल इन्स्योरेन्स), दीनानाथ चौधरी 'बिजलीशियन' (पश्चिमी कोशी नहर), कामेश्वर चौधरी, शिव नारायण चौधरी, छीतन चौधरी, कृष्ण बिहारी चौधरी 'किशुन जी' (बिजली बोर्ड), हेम नारायण चौधरी 'बचनू', बाबू जी चौधरी, सहदेव नारायण चौधरी 'लाला', नागेन्द्र चौधरी (डी.टी.ओ. ऑफिस), दिनेश चौधरी (प्रिन्टिंग प्रेस, पटना), पुर्ण्यानन्द चौधरी, कृष्णानन्द चौधरी (वरिष्ठ ऑफिसर, नेशनल इन्स्योरेन्स, मुज़फ़्फ़रपुर), जगदानन्द चौधरी 'नूनू जी', सच्चिदानन्द चौधरी (रेलवे), पप्पू चौधरी, विनोद कुमार चौधरी, बच्चाजी चौधरी, चन्द्र भूषण चौधरी (इन्स्योरेन्स), प्रेम कुमार चौधरी **'लाल बाबू'** (पटना), **महेन्द्र चौधरी, दामोदर चौधरी, हितेन्द्र चौधरी ओ धीरेन्द्र चौधरी, सुल्तानपुर** सर्वश्री श्याम नारायण चौधरी (शिक्षा विभाग), कृष्णकान्त चौधरी, कृष्ण बिहारी चौधरी, अनन्त बिहारी चौधरी, विनय बिहारी चौधरी, राजीव लोचन चौधरी, वसन्त बिहारी चौधरी, गणेश नारायण चौधरी, प्रकाश नारायण चौधरी, सुभाष

नारायण चौधरी, प्रभास नारायण चौधरी, विभास नारायण चौधरी, उमेश नारायण चौधरी, चुन्नू चौधरी, मुन्नू चौधरी, अभिषेक कुमार, ऋषु, शानू, बब्बू ओ गुड्डू, **भड़ौरा** सर्वश्री रामानन्द लाल दास (मास्टर साहेब) ओ अरुण कुमार दास (टेलिकम्युनिकेशन), **अन्धरा** श्री ललित कुमुद जी (फ़ोरेन्सिक लेबोरेटरी, पटना), सुमन लाल दास ओ श्री हितनारायण दास (जमशेदपुर), **डखराम** सर्वश्री ब्रह्मदेव लाल दास, सुखदेव लाल दास, इन्द्रदेव लाल दास (सदाक़त आश्रम, पटना), शैलेन्द्र कुमार दास (माइ डीयर मैन, कलकत्ता), महादेव लाल दास (इन्स्योरेन्स), मारकण्डेय दास (टिम्बर कम्पनी), चिरंजीव दास (पीयर लेस इन्स्योरेन्स ऐण्ड फाइनैन्स), डॉ० हेमन्त कुमार दास 'ललन जी' (आर.बी.मेमोरियल हॉस्पीटल, लहेरिया सराय), गिरीश कुमार दास (आसाम), प्रभात कुमार दास (जमशेदपुर) ओ हेमकान्त लाल दास (एम.आर.), **सरहद** सर्वश्री चन्द्रकान्त लाल दास (स्टेट बैंक), सुरेश लाल दास, राजेश कुमार दास (दिल्ली) ओ गुणानन्द लाल दास (बिहार स्टेट फाइनैन्सियल कॉर्पोरेसन), **ओभ्फौल** सर्वश्री महेश लाल दास, पुनीत लाल दास, इन्द्रकान्त लाल कर्ण ओ हरि शंकर लाल दास (खादी जगत), **फेंट** सर्वश्री रमाकान्त दास 'बाउ' (रेलवे), लखन लाल दास, शारदानन्द दास 'परिमल' (दिल्ली), गोपी रमन दास, कमल नारायण दत्त (स्वास्थ्य विभाग), शम्भुनाथ दत्त (खादी जगत), तेजेन्द्र लाल दास, चन्द्र नारायण दत्त (बेगूसराय), अच्युतानन्द लाल दास (इन्जीनियर), सच्चिदानन्द लाल दास (इन्जीनियर), सुमन कुमार दत्त 'गुड्डू जी', राघव कुमार दत्त 'चिन्टू जी' रतन कुमार दत्त 'छोटू जी', अशोक लाल दास (ऑफिसर, स्टेट बैंक), ओ हरि शंकर लाल दास (जनकपुर, नेपाल), **हिरणी** सर्वश्री जय नारायण चौधरी, परम धीर-गम्भीर व्यक्ति, (स्वास्थ्य विभाग), अर्जुन लाल दास ओ सत्य नारायण चौधरी, **हरीपट्टी** सर्वश्री बैद्यनाथ लाल दास (फ़ार्मासिस्ट, औखद विभाग), मुन्ना बाबू, शंकर लाल दास (मार्केटिंग ऑफिसर, सिन्द्री), विद्यापति लाल दास (वरिष्ठ

ऑफिसर, स्टेट बैंक), पशुपति लाल दास, शंकर लाल दास 'दारोगा जी' (राँची), परमानन्द लाल दास (ई.एस.आइ.,पटना), राजेन्द्र लाल दास 'बच्चा बाबू (दिल्ली), वीरेन्द्र कुमार लाल 'लाल बाबू' (पटना), मनोज कुमार लाल दास (दिल्ली), राजा बाबू दास (दिल्ली), मोहन कुमार दासद्वय (दिल्ली) शेखर लाल कर्ण (स्टेट बैंक), उमा शंकर लाल कर्ण (स्टेट बैंक), शशिधर लाल कर्ण (स्टेट बैंक), सुमन बाबू, मिंकू बाबू, चुन्नू बाबू, मुन्नू बाबू, पप्पू बाबूद्वय, कुन्दन बाबू, चन्दन बाबू ओ के.के.एल.दास (जमशेदपुर), **दड़िमा** सर्वश्री वैद्यनाथ लाल दास (बिजली बोर्ड), राजकुमार लाल दास (मालपोत कार्यालय, वीरगंज, नेपाल) सुशील कुमार दास (बिजली बोर्ड), डॉ० अरुण कुमार लाल दास (होम्योपैथ), बी.के.एल.दास (वरिष्ठ ऑफिसर, ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर), रघुनाथ लाल दास (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), राम कुमार मल्लिक 'जीबू', मनोज कुमार दास 'बब्लू' ओ महेश दास 'डब्लू', (दूनू वीरगंज, नेपाल), **विजइ** सर्वश्री केदार नाथ दास (ओरिएण्ट फ़ैन्स, कलकता) ओ रमानाथ दास जी (कलकत्ता), **इमादपट्टी** सर्वश्री कृष्णवल्लभ दास, प्रमोद कुमार (दास) (डाक विभाग, पटना), सीताराम दास (पटना) ओ निर्भय कुमार (दिल्ली), **तारालाही** सर्वश्री प्रभुनाथ चौधरी (डॉक्टर, समस्तीपुर म्युनिसिपैलिटी), नेवालाल चौधरी (समाज शास्त्री), धनुषधारी चौधरी (बोकारो), रघुनन्दन चौधरी, ब्रजकिशोर लाल दास, चक्रधर लाल दास, रत्नपति चौधरी, जगदीश नारायण चौधरी (पटना इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट), डॉ० उमाशंकर चौधरी (होम्यो जगत, समस्तीपुर), अर्जुन नारायण चौधरी (सम्पादक, 'मिथिला महान', पटना/दिल्ली), अनिरुद्ध नारायण चौधरी, अच्युतानन्द चौधरी (प्रशासक, 'मारुति', दिल्ली), सची कुमार चौधरी, धीरेन्द्र कुमार चौधरी, रघुपति लाल दास (खादी जगत), भुवनेश्वर लाल दास, प्रमोद नारायण दास, अजित कुमार दास, टुना जी दास, चन्द्र शेखर लाल कर्ण 'मगन जी' (डाक विभाग), सुरेन्द्र लाल दास 'ललन', सुरेन्द्र लाल कर्ण 'सुरेश' (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब), दिनेश लाल दास

(डाक विभाग), मोहन लाल दास, विनोद कुमार दास, सुशील कुमार कर्ण, अनिल कुमार कर्ण, भरत कुमार दास (वी.एस.एफ. ऐण्ड सी.एस. कॉर्पोरेशन), विजय कुमार दास, प्रमोद लाल कर्ण 'बच्चा बाबू' (डिफेन्स सर्विस), दिगम्बर लाल दास, प्रमोद लाल कर्ण, विनोद लाल कर्ण, सुबोध कुमार कर्ण, विमल कुमार चौधरी 'कुमर जी', कमल कान्त चौधरी 'बच्चा बाबू', प्रभाकान्त चौधरी 'नरेश', रमाकान्त चौधरी 'गोविन्द', श्याम कुमार चौधरी 'श्याम' (बोकारो), प्रेम शंकर चौधरी, रमा शंकर चौधरी, दया शंकर चौधरी, जटा शंकर चौधरी, गोपालजी चौधरी, मोहनजी चौधरी, सुमनजी चौधरी, रमणजी चौधरी (रेलवे), सत्यम् (दिल्ली), शिवम् (दिल्ली), सुन्दरम् (दिल्ली) ओ आनन्दम् (दिल्ली), **रामपट्टी** सर्वश्री शिवनन्दन चौधरी (इण्डस्ट्री विभाग), महेश्वर प्रसाद कण्ठ (लब्ध प्रतिष्ठ तांत्रिक, दिल्ली), नर्मदेश्वर प्रसाद कण्ठ, दिनेश्वर प्रसाद कण्ठ, राजेश कुमार कण्ठ 'सुमन जी', गौरीशंकर कण्ठ (स्टेट बैंक), विष्णु शंकर कण्ठ (यु.को.बैंक), प्रो० जितेन्द्र नारायण चौधरी (कटिहार), सर्वश्री मुरलीधर चौधरी, अच्छे लाल चौधरी, हीरालाल चौधरी (सीनियर एकाउण्ट्स ऑफिसर, टेलिकम्युनिकेशन), राम नार ायण चौधरी, जीवेन्द्र लाल दास, मदन मोहन चौधरी (सुप्रसिद्ध ओकील साहेब), कृष्ण मोहन चौधरी (तान्त्रिक), धीरेन्द्र चौधरी (यूको बैंक) ओ कमल कुमार चौधरी (टिम्बर कम्पनी), **हरिपट्टी** सर्वश्री लक्ष्मण लाल दास, सच्चिदानन्द लाल दास (परम सुशील, धीर-गंभीर ओ लब्ध प्रतिष्ठ समाजशास्त्री, शिक्षा विभाग), विष्णु देव लाल कर्ण (सुप्रसिद्ध इन्जीनियर साहेब, इन्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन, रिफाइनरी, बरौनी) ओ हरिमोहन लाल दास (बिजली विभाग), **हनुमान नगर** सर्वश्री गणेश लाल दास (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक) ओ अवधेश नारायण लाल दास (पी.ए.टु कलेक्टर, मुज़फ़्फ़रपुर), **जितवारपुर** श्री रघुनाथ दत्त (रेलवे), **चहुटा** श्री विश्वनाथ दत्त (वरिष्ठ ऑफिसर, स्टेट बैंक), **मेघौल** सर्वश्री राम बल्लभ मल्लिक (रेलवे), विजय कुमार मल्लिक (वरिष्ठ ऑफिसर,

स्टेट बैंक), सतीश कुमार मल्लिक, सुशील कुमार मल्लिक (ऑफिसर, स्टेट बैंक), बलभद्र लाल दास (रेलवे), ओ शोभित लाल दास (बैंक ऑफ बड़ौदा), **बलहा** श्री पी.सी.वर्मा (वरिष्ठ ऑफिसर ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर), **खड़ौआ** सर्वश्री जीवछ लाल दास (टेलिफ़ोन रेवेन्यु एकाउण्ट्स), सीताराम लाल दास ओ हरेराम लाल दास, **शिवनगर** श्री प्रद्युम्न कुमार दास, **विरौल/बलभद्रपुर (लहेरियासराय)** डॉ० विनोद रञ्जन दास (डिस्ट्रिक्ट एनिमल हस्बैन्ड्री ऑफिसर), **मदनपुर** सर्वश्री बलदेव नारायण लाल, हरदेव नारायण लाल, राम कुमार लाल, संजय कुमार (इंजीनियर, रिलायन्स) ओ सीताराम लाल, **गनपतगंज (सहरसा)** ग्रुप कैप्टन डॉ० राम कुमार मल्लिक, **मनमोहन** सर्वश्री रामचन्द्र लाल दास (ऐडवोकेट, पटना हाइ कोर्ट) ओ शिवचन्द्र लाल दास, **पिहवाड़ा** सर्वश्री अम्बिका प्रसाद, बलराम लाल ओ अखिलेश प्रसाद, **अवाम** श्री जितेन्द्र नारायण दत्त (दिल्ली), **उसमामठ** सर्वश्री रामचन्द्र लाल दास, महेश चन्द्र लाल दास, देव चन्द्र लाल दास (बी.एस.एफ. ऐण्ड सी.एस.कॉर्पोरेशन), कृष्ण चन्द्र लाल दास, सुधीर कुमार, रमानन्द 'रेणु' (सुप्रसिद्ध लेखक ओ लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार), विश्वनाथ लाल दास, सच्चिदानन्द लाल दास, श्यामानन्द लाल दास, वेदानन्द लाल दास, सत्य नारायण लाल दास (एडवोकेट, पटना) ओ पुर्ण्यानन्द लाल दास, **छतनेश्वर** श्री जयगोविन्द दास, **लक्ष्मीपुर (पोहद्दी)** सर्वश्री जितेन्द्र कुमार दास (जमशेदपुर) ओ विश्वम्भर लाल दास, **टेकटारि** श्री विन्देश्वर लाल दास (सी.एम.कॉलेज), **अचलपुर** सर्वश्री राजेश कुमार कर्ण (दिल्ली) ओ राकेश कुमार कर्ण (दिल्ली) **लखनपुर** सर्वश्री कन्हैया मल्लिक, शिवजी मल्लिक, महेश लाल दास, सुरेश लाल दास (स्टेट बैंक), रमाशंकर मल्लिक (समाजशास्त्री), श्याम बिहारी मल्लिक, मदन जी मल्लिक, दिगम्वर प्रसाद मल्लिक (नाज़िर, बहेड़ी ब्लॉक), मोहन मल्लिक (खादी बोर्ड), यदुनाथ मल्लिक, व्रजनाथ मल्लिक (इंजीनियर), नरनाथ मल्लिक, प्रद्युम्न मल्लिक, सत्यवान मल्लिक, टुन्नी मल्लिक, मुन्नी मल्लिक, नागेन्द्र मल्लिक, प्रभु मल्लिक, प्रकाश मल्लिक (महान

क्रान्तिकारी ओ समर्पित समाज सुधारक), रघुनाथ मल्लिक, प्रमोद मल्लिक, सुबोध मल्लिक ओ मिथिलेश मल्लिक, लोकेश कुमार मल्लिक (बैंक ऑफ बड़ौदा), योगेश कुमार मल्लिक 'सदाचारी', मुकेश कुमार मल्लिक, रीतेश कुमार, नीलेश कुमार मल्लिक, विनय कुमार मल्लिक 'लाल बाबू', अरुण कुमार मल्लिक 'घनश्याम', मनोज कुमार मल्ल्कि, सुशील कुमार मल्ल्कि, विनीत विभूति (कुमार मल्लिक), निर्मल कुमार मल्लिक 'राधे-श्याम', कौशल कुमार मल्लिक, अजीत कुमार मल्लिक, ललित कुमार मल्लिक, प्रभात कुमार मल्लिक, प्रशान्त कुमार मल्लिक 'अप्पू', चन्दन कुमार मल्लिक ओ सन्नी मल्लिक, **लौफा** सर्वश्री शोभा कान्त लाल दास, सतंजीव लाल दास (बी.सी. सी.एल. कोलियरी), देवनारायण लाल दास (हाजीपुर), ओ कार्त्तिकेश कुमार दास ('मारुति', दिल्ली), **करही** श्री ज्ञान कुमार मल्लिक (दिल्ली) **लदहो** सर्वश्री विद्यापति लाल दास (ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर) ओ सुबोध कुमार दास (ग्रामीण बैंक, समस्तीपुर), **निमैठी** सर्वश्री विश्वनाथ लाल दास ओ महेन्द्र लाल दास, **माधोपुर** श्री अजीत कुमार सिन्हा, **हरौली** श्री संजय कुमार चौधरी (दिल्ली), **कुमरपट्टी** श्री राजेन्द्र नाथ दास, **बेलसंडी** श्री गणेश लाल दास (नागेन्द्र झा महिला कॉलेज), **माधोपुर (शीशो)** श्री सुशील कुमार लाल, **बलाट (राघोपुर)** डॉ० रुद्र नारायण दास, सर्वश्री रोहिणी रमण दास, घनानन्द दास 'सुशील बाबू', सुनील कुमार कर्ण, अनिल कुमार कर्ण, अजय कुमार कर्ण, अविनाश कुमार, यशनारायण ओ आदित्य नारायण, **झंझारपुर** डॉ० सुनील कुमार मल्लिक (सुप्रसिद्ध ऑर्थोपेडिक सर्जन, पटना), **पैरा** डॉ० सुशील कुमार दत्त (आर.बी.मेमोरियल हॉस्पिटल, लहेरिया सराय), सर्वश्री हरिश्चन्द्र दत्त (जनकपुर धाम, नेपाल) ओ मनोरंजन दत्त (जनकपुर धाम, नेपाल) **रामखेतारी** डॉ० सुधीर कुमार दास, **हरिपुर डीहटोल** सर्वश्री नवीन कुमार (दिल्ली), कुमार विमलेन्दु (दिल्ली) ओ अधीर कुमार मल्लिक (दिल्ली), **चैता रेवारी** श्री अमोद कण्ठ, आइ.पी.एस. (पुलिस कमिश्नर, दिल्ली), डॉ. के.के.कण्ठ (पटना), सर्वश्री उमेश चन्द्र कण्ठ (बिजली

विभाग) ओ सच्चिदानन्द कण्ठ (रेलवे), **हरिपुर** सर्वश्री वैद्यनाथ लाल दास, अरुण कुमार दास, मदन कुमार दास, प्रमिल कुमार दास, विनोद लाल कर्ण, प्रमोद कुमार दास, आमोद कुमार दास, सुधीर कुमार दास, सतीश कुमार दास, विकास कुमार, संजीव कुमार, चन्दन कुमार, आलोक कुमार, अभिषेक कुमार, राहुल कुमार, विभूति लाल दास, दीपक लाल, संदीप कुमार, अंशुमान कुमार दास, अनुभव कुमार दास, आमिका के. दास, आकांक्षा के. दास, मयंक कुमार ओ श्रृति के. दास, **भटरा** श्री गोपी रमण लाल दास (जनकपुर, नेपाल), **नागदह बलाइन श्री शिवेन्द्र कुमार दास** 'फूल बाबू' (कुनौली बेल्ही, नेपाल), **उत्तरा (बसवरिया)** डॉ. बालमुकुन्द लाल दास (होम्योपैथ), सर्वश्री चन्द्रशेखर लाल कर्ण (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब) ओ मुक्तेश्वर लाल कर्ण (सुप्रसिद्ध मास्टर साहेब) (तीनू गोटे लक्ष्मीसागर, दरभंगा) आओर हमर धियापुताक माम **भदहर** श्री सुरेन्द्र चौधरी; ई सब गोटे हमर अतिशय 'हित चिन्तक (परम मान्य)' छलाह आ छथि आओर एहि स अतिरिक्तो मिथिला भरि में मैथिल कर्ण कायस्थक बहुतो-बहुत गाम में हमर अनेकानेक 'गुरुजन (परम पूज्य)' आ 'हित चिन्तक (परम मान्य)' लोकनि छथि क्रमश: जिनके लोकनिक 'आशीर्वाद' आओर 'शुभकामना'क फल थीक ई पोथी ।

इति

एहि पोथीक रचनाक आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थक नाम	लेखक आ प्रकाशन
१.	मैथिल-कर्ण-कायस्थ-गोत्र-पञ्जी	श्री अनुग्रह लाल ठक्कुर; प्रकाशन जून सन् १९५२ ई. ।
२.	प्राचीन ग्रन्थ "सुकमलाकर"	श्री कमलाकर भट्ट; रचनाकाल साके १२३९ सन् १३१८ ई.।
३.	मिथिला दर्पण	श्री रास बिहारी लाल दास; रचनाकाल सन् १९१५ ई. ।
४.	गोत्र, प्रवर व उनसे हिन्दुओं का सम्बन्ध	स्वामी विवेकानन्द (भ्रमणशील परिव्राजक); रचनाकाल सन् १८८९-१८९३ ई. ।
५.	हिन्दू और उनके गोत्र प्रवर - एक परिचय	श्री राहुल सांकृत्यायन; रचनाकाल सन् १९३९ ई. ।
६.	मैथिल कर्ण कायस्थों के गोत्र एवं प्रवर	श्री बैद्यनाथ लाल दास; प्रकाशन सन् १९९४ ई. ।
७.	मैथिल कर्ण कायस्थक मूल-गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार	श्री सच्चिदानन्द लाल दास एवं श्रीमती शैल देवी ।
८.	मैथिल ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थक पंजीकरण	पं० श्री गणेश राय "विद्या भूषण" – सन् १९८१ ई. संस्करण; सन् १९९७ ई. संस्करण ।
९.	पञ्जीकार बाबू श्री अशर्फी लाल मल्लिकक प्रपितामह क पाँजि सँ उद्धृत	"मंगलाचरण","शान्ति-मन्त्र पाठ", "गोत्राध्याय" आ "प्रवराध्याय" (तालपत्र पर 'वैदेही' लिपि में) ।
१०.	प्रवराध्याय	पं० श्री मधुसूदन झा, व्याकरणाचार्य ।
११.	द्विरागमन	प्रो० हरिमोहन झा, विभागाध्यक्ष, दर्शन विभाग, पटना विश्व विद्यालय ।

क्र.सं.	ग्रन्थक नाम	लेखक आ प्रकाशन
१२.	संस्कार चन्द्रिका	विद्यामार्तण्ड डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (संसद-सदस्य ओ उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय) – संशोधित संस्करण सन् २००० ई. ।
१३.	समाज सुधार (मूल ग्राम आ डेरावली)	श्री श्याम सुन्दर लाल दास ।
१४.	कायस्थ वर्ण-निर्णय	डॉ० अंगन लाल सक्सेना (अनुवादक श्री बासुदेव लाल दास, एम.ए., पीएच.डी., वीरगंज, नेपाल); प्रकाशन : वि० सं० २०६५ सन् २००८ ई० ।
१५.	निर्णय सिन्धु :	श्री कमलाकर भट्ट – (अनुवादक म० म० श्री व्रज रत्न भट्टाचार्य; रिप्रिन्ट 2006) ।



परिशिष्ट

पत्र, निमंत्रण पत्र, आग्रह आ स्वीकार पत्र आओर स्वस्ति आदि लिखवाक विधि

खण्ड - १

(क) **सम्बोधन (सामान्य आग्रह आ निवेदन में) (पुरातन) :**

(१) (सर्वप्रथम) **कुलदेवता कैं :** शरणागत् दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
त्रिपुरा कालिका दुर्गा गिरिजा भवानी तथा।
एता: पञ्च भगिन्यस्ता भवन्ति वरदेवता।।
चरण कमलेषु प्रणामा: निवेदयति·······XX···········।

(२) (तत्पश्चात्) गुरु गोसाईं : गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु:
गुरुर्देवो महेश्वर:। गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै: श्री गुरुवे नम:।।
चरण कमलेषु प्रणामा: निवेदयति·········XX···········।

(३) पूज्य व्यक्ति (गुरुजन) कैं (यथा मातामह, श्वसुर, मौसा, पीसा आ मामा) कैं : हरिवदाराध्य प्रणति मात्रैक साध्य सठक्कुर श्री ......X..... चरण कमलेषु प्रणामाः निवेदयति श्री ......XX.....।
शतं कुशलंचाग्रे लिखवाक जे ...... ।

(४) समधि (जेठ वा छोट), बहिनोई आ सार (दूनू जेठ) आ साढ़ू (जेठ) कैं :
परमाराध्य बहुविनय साध्य सठक्कुर श्री ......X..... महाशयेषु सविनय नमस्कारा**:** निवेदयति श्री ......XX..... । शतं कुशलंचाग्रे लिखवाक जे .... ।

(५) साढ़ू (छोट) तथा बहिनोइ आ सार (दूनू छोट) कैं : अत्याराध्य अति स्नेह-साध्य सठक्कुर श्री ......X.....महाशयेषु सविनय नमस्कारा**:** निवेदयति श्री .....XX..... । शतं कुशलंचाग्रे लिखवाक जे .... ।

(६) मित्र वर्ग कैं : अत्याराध्य अति स्नेह साध्य सठक्कुर श्री......X..... महाशयेषु सविनय नमस्काराः निवेदयति श्री......XX..... । शतं कुशलंचाग्रे लिखवाक जे .... ।

(७) छोट भाई, बालक, भातिज, भागिन तथा जमाय प्रभृति कैं : परम कल्याण कोटि निलय सकल मंगलालय सठक्कुर चि० बाबू श्री ......X..... शुभोदयेषु शुभाशीषः निवेदयति श्री ......XX..। शतं कुशलंचाग्रे लिखवाक जे .... ।

(८) अपना परिवार में पिता, पित्ती आ जेठ भाई कैं (सामान्य पत्राचार में) :

स्वस्ति हरिवत् वन्दनीय सदा चरण अराधनीय श्री मान् बाबूजी/ काका जी/भाइ जी चरण कमलेषु इतः श्री ......XX..... क कोटि सः प्रणाम । एतय कुशल । अपना लोकनिक कुशल लिखव। बाद समाचार जे .... ।

X एतय जिनका सम्बोधन करवैन्ह तिनकर 'नाम' हेतैन्ह ।
XX एतय सम्बोधन कैनिहारक 'नाम' हेतैन्ह ।

(ख) **निमंत्रण (पुरातन) :** (उपरोक्त सम्बोधन में 'निवेदयति श्री .... ।' क बाद) :-

(१) मूड़न वा चूड़ाकरण में : ....*...... सम्वत्सरे ....*.... मासे ....*.... पक्षे ....*.... यां तिथौ तदनुसार खीष्टाब्द....+....सन् ....#.... ईस्वीयां मत्पुत्र चि० बाबू श्री ....@.... लालस्य/ दासस्य मुण्डन / चूड़ाकरण भावीत्यवगत्या त्रागत्य तदलंकरणीयं श्रीमद्भिर्भवद्भिः कृपयेति ।

(२) कन्यादान में : ....*...... सम्वत्सरे ....*.... मासे ....*.... पक्षे ....*.... यां तिथौ तदनुसार खीष्टाब्द....+....सन् ....#.... ईस्वीयां मत्कन्यकायाः पाणिग्रहणम्भावीत्यवगत्या त्रागत्य तत्पूर-णीयम्भवद्भिः श्रीमद्भिः कृपयेति ।

(३) वरक विवाह में : ....*...... सम्वत्सरे ....*.... मासे ....*.... पक्षे ....*.... यां तिथौ तदनुसार खीष्टाब्द....+....सन् ....#.... ईस्वीयां मत्पुत्र चि० बाबू श्री ...@..... लालस्य/दासस्य परिणयोऽयंभावीत्यवगत्या त्रागत्य तद्लंकरणीयं श्रीमद्भिर्भवद्भिः कृपयेति ।

(४) श्राद्ध में : : ....*...... सम्वत्सरे ....*.... मासे ....*.... पक्षे ....*.... यां तिथौ तदनुसार खीष्टाब्द....+....सन् ....#.... ईस्वीयां मन्मातुः (मत्पितुः / मद्भ्रातुः / ममभार्यायाः) आद्य श्राद्धम्भावी-त्यवगत्या त्रागत्य तत्सम्पादनीयं श्रीमद्भिर्भवद्भिः कृपयेति ।

(ग) * एतय सम्वत्सरक संख्या तथा मास/पक्ष तिथिक 'नाम' पड़त ।
+ एतय तारीख़क 'अंक' तथा अँगरेजी मासक 'नाम' पड़त ।
एतय अँगरेजी वर्षक 'अंक' पड़त ।
@ एतय वड़ुआ/वर क नाम पड़त।



खण्ड - २

(क) (१) हमरा स्वयं द्वारा निर्मित निमन्त्रण पत्र (मैथिली में)

श्री गणेशाय नमः ।

पूज्यवर/मान्यवर/बन्धुवर,

सादर/सविनय अभिवादन ।

अपने कैं विदित हो जे हमर बालकक मूड़न/चूड़ाकरण आगामी......x...... तदनुसार ....+....... क होयव निश्चित भेल अछि। अतः, अपने सँ प्रार्थना/निवेदन/आग्रह जे उक्त शुभ अवसर पर हमरा डेरा......&.......... (सपरिवार) पधारि/उपस्थित भऽ वडुआ कैं शुभाशीर्वाद दऽ कृतार्थ करी ।

साभार,

पता :- स्नेही विनीत,

फ़ोन नं. :- (...............)

कार्यक्रम ता०............।

......x...... तदनुसार ......+...... कुमरम ।

......x...... तदनुसार .....+...... मूड़न/चूड़ाकरण ।

(२) अपने कैं विदित हो जे हमर कन्या चि० सुश्री ....$..... क विवाह ....&&..... ग्राम निवासी बाबू श्री ....%..... क बालक चि० श्री ....@.... सँ आगामी ....x.... तदनुसार ....+.... क होयब निश्चित भेल अछि। अतः, अपने सँ प्रार्थना/निवेदन/आग्रह जे उक्त शुभ अवसर पर हमरा डेरा ....&.... (सपरिवार) उपस्थित भऽ कन्या (कनियाँ)-वर कैं शुभाशीर्वाद दऽ कृतार्थ करी ।

साभार,

अपन पता :- स्नेही विनीत,

फ़ोन नं. :- (.........................)

ता. ....।

कार्यक्रम

......x...... तदनुसार ......+...... कुमरम ।

......x...... तदनुसार .....+...... शुभ विवाह ।

......x...... तदनुसार ......+...... द्विरागमन ।

(३) अपने कैं विदित हो जे हमर बालक चि. बाबू श्री ....@.... क विवाह ....&&.... ग्राम निवासी बाबू श्री ....%.... क कन्या चि. सुश्री ....$.... सँ ....x.... तदनुसार ....+.... क होयव निश्चित भेल अछि। अतः, अपने सँ प्रार्थना/निवेदन/आग्रह जे उक्त शुभ अवसर पर (सपरिवार) हमरा डेरा ....&.... उपस्थित भऽ वर-कनियाँ कैं शुभाशीर्वाद दऽ कृतार्थ करी ।

साभार,

अपन पता :- स्नेही विनीत,

फ़ोन नं. :- (.........................)

ता. ....।

कार्यक्रम

......x...... तदनुसार ......+...... कुमरम ।

......x...... तदनुसार .....+...... शुभ विवाह ।

......x...... तदनुसार ......+...... द्विरागमन ।

......x...... तदनुसार ......+...... प्रीति भोज (Reception) ।

वि० द्र० :- विवाहक दिन .... (समय/बजे) में वरियाती हमरा डेरा ....&.... स ....&&.... क प्रस्थान करत ।

(४) ओहुना आनो सामान्य उत्सव/समारोह क अवसर परक निमन्त्रण पत्र :-

पुज्यवर/मान्यवर/बन्धुवर,

सादर/सविनय अभिवादन ।

अपने कैं विदित हो जे ....x.... तदनुसार....+.... क ....S.... ठाम ....^.... (उत्सव/समारोहक नाम) क आयोजन होवय जा रहल अछि। अतः, अपने सँ प्रार्थना/निवेदन/आग्रह जे उक्त अवसर पर उपस्थित भऽ कार्य-क्रम के सम्पादन करा उत्सव/समारोह के सफल बनावी/शोभा बढ़ावी ।

साभार,

अपन पता :- स्नेही विनीत,

फ़ोन नं. :- (.........................)

ता. ....।

(५) जीवनक अन्तिम सत्य :

विदित हो जे गत ....X....तदनुसार ....+.....क प्रातः/दिन/सायं/राति....(समय/बजे) हमर माताराम (पिता/पत्नी) स्वर्गवासी भऽ गेलीह/गेलाह जिनकर श्राद्ध-कर्म.....X.....तदनुसार .....+......हमरा डेरा/...S.....पर होयतैन्ह । अतः, अपने सँ प्रार्थना जे उक्त अवसर पर (सपरिवार) हमरा डेरा/.... S...आवि मृतात्माक शान्तिक हेतु भगवान सँ संग मिलि प्रार्थना करी आ श्राद्ध-कार्य सम्पादन करैवाक कृपा करी ।

साभार,

अपन पता :- स्नेही विनीत,

फ़ोन नं. :- (.........................)

ता. ....।

(ख) X मिथिलाक तिथि (यथा माघशुक्ल पंचमी शुक्र सम्वत् २०६४)।
+ अँगरेजी तारीख़ (यथा ५-२-२००८ ई० वा ५ फरवरी सन् २००८ ई०)।
$ 'कन्या' क नाम ।
@ 'वर' क नाम ।
% होवयवला समधिक नाम ।
&& होवयवला समधिक गामक नाम ।
& हमरा डेरा/(गामक नाम)।
S निर्धारित स्थानक नाम ।
^ उत्सव/समारोहक नाम ।



खण्ड - ३

(क) परिचय, उतेढ़ आ 'कन्या' वा 'वर'क शुचि-आचार (Bio-Data) कोनो आवश्यक नहिं जे लाले स लिखल जाय; कारियो स लिखल जा सकैछ ।

विवाहक दिनक 'कट' (कन्यागत आ वरागत दूनू पक्षक) लाल स लिखल जाय; द्विरागमनक 'कट' लालक अलावे पीयरो रंग स लिखल जा सकैछ ।

विवाहक 'कट' के पाछाँ लाल रंगक छिच्चा पड़क चाही किन्तु द्विरागमनक 'कट' के पाछाँ पीयर {('वसंती' (नारङ्गी नहिं)} रंगक छिच्चा पड़य ।

'कट'क कागतक ताव के चौड़ाई में (वामा-दहिना) पाँच बराबरि तह आ लम्बााई (ऊपर-नीचा) में मात्र बीच में मोड़क थीक । ताव पर सब स ऊपर 'श्री दुर्गा श्री माधव श्री गणेश जी सदा सहाय होथु' वा 'श्री गणेशाय नमः' लिखल जाय । तखन सब स निचला (पाँचम) तह पर वामा कात 'सिद्धिरस्तु ( )' क चेन्ह द क तकरा आगाँ (वामा स दहिना) विषम (५, ७ वा ९) पंक्ति में 'दिन'क विवरण लिखल जाय । लिखलाक पश्चात् ताव के दहिना-निचला कोन कनेक खोँटि देल जाय । ताव के बिचला मोड़लाहा लाइन पर (निचा स ऊपर 'श्री गणेशाय नमः' लग तक) "परमाराध्य बहु विनय साध्य सठक्कुरादिञ्छ्री मान्यादि वर्गेषु इहैवश्य नमस्कारांकमालिकाः प्रणामाः शुभाशीषः यथा क्रमेण शुभम्" लिखल जाय । ताव के पीठ (सादा) पर पाँच दूभिक मूड़ी स लाल (विवाह)/पीयर (द्विरागमन) रंगक छिच्चा देल जाय । ताव के सामने पृष्ठ (जाहि पर विवरण लिखल हो) पर पाँच मुट्ठी लाल धान, पाँच मूड़ी दूभि, पाँच टा हरदि आ द्रव्य दऽ, तकरा मोड़ि, लाल (विवाह)/पीयर (द्विरागमन) ताग स चारू कात स ससरफानी बान्ह बान्हि दी ।

'कट' के सिरागू लग राखि, प्रार्थना करैत जे "हे भगवती/भगवान, हम विवाह कार्य लाधि देल अछि, अपने ठाढ़ भ क आदि स अन्त तक सब कार्य सुचारु रूपें सम्पादन करा देवाक कृपा करू" प्रणाम क क ओतय स उठा क तखन पठावी ।

(ख) **पान-मसाला क भारा** (पञ्जीकार कैं)

(१) पानक भारा (कन्याँ पक्ष स) :-

श्री गणेशाय नमः ।

.... (स्थान)

.... (तारीख)

श्रद्धेय पञ्जीकार बाबू श्री .... (नाम) दास/मल्लिक जी,

सविनय नमस्कार ।

शतं कुशलंच आगाँ समाचार जे हमरा कन्याक प्रति अपने .... (नाम) गाम निवासी बाबू श्री .... (नाम) क बालक में उपन्यास देने छलहुं । उक्त कथा हमरा लोकनि कैं स्वीकार अछि ।

अतः, अपने सँ प्रार्थना जे वरागत कैं एहि बातक सूचना दियैन्ह जे ओ लोकनि आगामी .... (मास) .... (पक्ष) ....(तिथि) .... (दिन) संवत् .... (संख्या) तदनुसार.......... (तारीख) .... (मास) सन् .... (संख्या) ई० क प्रातः/पूर्वाह्न/दूपहर/अपराह्न/संध्या/राति ...... (बजे) .... (स्थान*) पर उपस्थित होयवाक परम कृपा करथि जतय अपने सिध्यान्त पढ़यवाक कृपा करव जाहि हेतु पान-मसालाक भार दऽ रहल छी । शेष शुभम् ।

भवदीय,

बाबू श्री ..... दास/मल्लिक जी,
पञ्जीकार, (.....................नाम) ।

....
.... (पता)

* मन्दिर (शिव मन्दिर छोड़ि), स्कूल/कॉलेज, मैदान, कम्युनिटी हॉल, विवाह भवन परिसर वा अन्य स्थान केर सम्पूर्ण पता (ठेकाना) लिखल जाय जतय पहुँचवा में कोनो कठिनाइ नहिं होइक ।

(२) पानक भारा (वर पक्ष स) :-

श्री गणेशाय नमः ।

.... (स्थान)

.... (तारीख)

श्रद्धेय पञ्जीकार बाबू श्री .... (नाम) दास/मल्लिक जी,

सविनय नमस्कार ।

शतं कुशलंच आगाँ समाचार जे हमरा बालकक प्रति अपने .... (नाम) गाम निवासी बाबू श्री .... (नाम) क कन्याँ में उपन्यास देने छलहुं । उक्त कथा हमरा लोकनि कैं स्वीकार अछि ।

अतः, अपने सँ प्रार्थना जे कन्यागत कैं एहि बातक सूचना दियैन्ह जे ओ लोकनि आगामी .... (मास) .... (पक्ष) ....(तिथि) .... (दिन) संवत् .... (संख्या) तदनुसार .... (तारीख) .... (मास) सन् .... (संख्या) ई० क प्रातः/पूर्वाह्न/दूपहर/अपराह्न/संध्या/राति ...... (बजे) .... (स्थान*) पर उपस्थित होयवाक परम कृपा करथि जतय अपने सिध्यान्त पढ़यवाक कृपा करव जाहि हेतु पान-मसालाक भार दऽ रहल छी । शेष शुभम् ।

भवदीय,

बाबू श्री ..... दास/मल्लिक जी,
पञ्जीकार, (.....................नाम) ।

....
.... (पता)

* मन्दिर (शिव मन्दिर छोड़ि), स्कूल/कॉलेज, मैदान, कम्युनिटी हॉल, विवाह भवन परिसर वा अन्य स्थान केर सम्पूर्ण पता (ठेकाना) लिखल जाय जतय पहुँचवा में कोनो कठिनाइ नहिं होइक ।

(ग) विवाह/द्विरागमनक दिनक मंजूरीक 'कट' के आदि में लिखल जयवाक 'स्वस्ति' (पुरातन)

(१) "असिति गिरि समस्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वी लिखित यदि गृहित्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।"

(२) "कर्पूरा न विभूषयन्ति पुरुषाः हरान चन्द्रोज्वलाः नस्नानं न विलेपनं नालं कृत्वा मूर्धना वाण्यैका सकलं करोति पुरुषाः असंस्कृता धार्यते छीयन्तेऽखिल भूषणानिसकलं वाग्भूषणं भूषणम् ।"

(३) "नित्यं ब्रह्म यथास्मरन्ति मुनयोद हंसायथा मानसं सानछा च स सल्लकी वनयुतां ध्यायन्ति रेवांगजाठ सुष्मा दर्शन लालसा प्रतिदिनं युष्मा स्मरामोवयः धन्याः को पिस वासरो हि मविता यथा ऽऽयोः संगमः ।"

(४) "सौजन्य चन्दन मलय यशोविभूषित मुवलय ।"

(५) "सुयश सुशोभित चन्द्र दिवाकर रश्मि सम भुजवल अतुल मृगेन्द्र, दानवीर विख्यात कर्ण नरेन्द्र अनुदिन राधितपद शिव गोविन्द ।"

(६) "इन्द्र सुशोभित जम्भ पर रावण पर ज्यों राम रघुराज कान्ह जिमि कंस पर तेज तम अंश पर तव सुयश सतत विभ्राम ।"

(७) "विश्व विदित तव गुण अनेक मूक सकल कविगण जतेक कुसुमाकर सम शोभित कण्ठहार याचक सकल प्रसन्न अपार ।"

(८) "चक्रपाणि चतुरानन विश्वनाथ अवतार दाता तुअ सर्वज्ञ सकल सृष्टि व्यवहार ।"

(९) "लौकिकता पंकजवली दिनकर शीलागार यशो निशाकर चन्द्रिका धवली कृत संसार ।"

(१०) "प्रकटित कुसुमित चातुरता खर्वित गर्वित गर्व विनय विभूषित धीरता शील वशीकृत सर्व ।"

(११) "लौकिक पंकज विपिन दिनेश भक्ति वशीकृत श्री कमलेश चारु चतुर्भज कुमुदिनि शेष नारायण वर विषय सुरेश ।"

(१२) "छिति प्रति सुन्दर इन्दु समान दान मान कत करिये बखान विद्यावुद्धि विवेक निधान सब गुण आगर चतुर सुजान ।"

(१३) "काव्य कमल वनमाल दिवाकर चन्द्र मुकुंद प्रकाश निशाकर लौकिकता कुसुमावलि मधुकर सदाचार संतोषित हरिहर ।"

(१४) "लौकिक रीति सरोरुह कानन भक्ति वशीकृत श्री पंचानन ।"

(१५) "नीति निकर कुमुदिन विन चन्द लौकिकता केलि मकरंद यश प्रकटित विकसित अरविन्द राधित चरण शम्भु गोविन्द ।"

(१६) "नीति निपुण गुणवन्त उजागर शरद रैन उद्योग निशाकर विद्याधर सुन्दर कितेश्वर हृदय विराजित गिरिजा शशिधर ।"

(१७) "सकल कलातुरि चातुरी रतिक पाल सुखपाल बुद्धि विवर्जित गजवदन शशिधर शोभित भाल ।"

(१८) "ज्योति दिवसमणि पंकज गुणगण मंडित बाम हरिपद पूजन विमल मति जाति मनोहर ग्राम।"

(१९) "विद्या गणपति ज्ञान महेश यशो सुधाकर नीति सुरेश कीर्ति प्रकाशित दिनमणि वृन्द शील गुणाकर श्री गोविन्द।"

(२०) "परम पुनीत नीतिभट नागर हृदय विभूषित नाम उजागर विद्यावान् सकल गुणखानी वसहिं सदा उर शम्भु भवानी।"

(२१) "विद्या वारिधि बुद्धि निधान कीर्ति प्रकाशित इन्दु समान नीति निपुण गोविन्द समान सब गुण आगर के नहिं जान।"

(घ) **हमर स्वयं द्वारा निर्मित 'स्वस्ति' (मैथिली में)**

(१) "अपने सब छी परम सुजान, बल बुधि विद्या के छी खान।
मानवता सँ परम महान, कऽ कि सकब हम स्तुति गान॥"

(२) "छी अपने सब लोक महान, बुधि-विद्या में परम निधान।
कऽ की सकव अहँक गुणगान, हमरा सब छी बुद्धि निदान॥"

(३) "दर्शन अपने लोकनिक हो से हमर सभक सौभाग्य होयत।
अवसर तकर शीघ्र भेटय त सौभाग्योक विकास होयत॥"

(४) "ज्ञान बुद्धि विवेके नहिं अनेक गुणक खान अछि,
तैं मान्यता समाज में अपने सबहिक महान अछि।
हमरा सब अकिञ्चन तैं स्थितियो निदान अछि,
एतय आवि सम्बन्ध जोड़ी त बुझव कल्याण अछि॥"

(५) "कल्पनों नहिं छल अपने लोकनि सँ होयत अनुवन्ध,
छी विपन्न हमरा सबहिं कऽ की सकव कोनो प्रवन्ध।
देल प्रश्रय ताहि स हम बहुत विधि अनुगृहीत छी,
ऋणी छी जीवन भरिक आओर हम कृत्यकृत्य छी॥"

(६) "छी कृपालु अपने सब अतिशय औ दयालु से हो परिपूर्ण,
तैं ने कृपा कयल हमरा पर सम्बन्ध जोड़ल अछि सम्पूर्ण।
ई अपने केर महानता थीक प्रश्रय देलहुं अछि परिपूर्ण,
नहिं त कहाँ अपनेक महत्ता हम त विपन्नता स चूर्ण॥
एहि सुकृति पर स्वीकारू अँह देल हमर ई साधुवाद,
हम अकिंचन दऽ कि सकै छी मात्र लक्ष कोटि धन्यवाद॥॥"

(७) "अपने सब सन के हो यशस्वी के हो विद्या बुद्धि निधान,
के हो नीति निपुण ओ मनस्वी चतुर सुजान परम गुणवान।
हमरा शब्द कहाँ स भेटत जे एहि सब गुण केर करव बखान,
क्षमा करव एहि त्रुटि पर हमरा अपने सब छी लोक महान॥"

(८) "मानवताक मूर्ति अपने सब, छी सब तरहें गुण सम्पन्न।
हमरा सब छी परम अकिञ्चन आओर छी सब तरहें विपन्न॥
सम्बन्धक जे बाट पकड़ि हमरा घर होयब स्थानापन्न,
हम सुख सँ नेहाल भऽ जायब, ओ जीवन भरि रहब प्रसन्न॥॥"

(९) "अपने लोकनिक दर्शन सँ, इ समाजो होइछ अति नेहाल।
कोना क हो दर्शन तेहि खातिर, सबहुं रहै छथि अति बेहाल॥
जोड़ि अपन सम्बन्ध अहाँ स, चाहि रहल छी हमहूँ दर्शन।
होइत भेंट, सेवा में अपनेक, करव हमहुं सब हृदय समपर्ण॥॥"

(१०) "अपने सबहक संग करव से साहस कहाँ जुटा पायव हम,
अपने सब सँ बात करब से भषो कहाँ आनि पायव हम।
अपने सब छी अति सुप्रतिष्ठित, छी हमरा सब परम अञ्किचन,
जँ संगत हो अपने सब सँ होयत संयोग काँच ओ काञ्चन॥
जँ अपने अपनायव हमरा, सम्भव थिक अपने पर लाञ्छन,
किन्तु पावि सत्संग अहाँके हमहूँ होयब कनक संग काञ्चन॥॥"

(११) "उक्ति नहिं जे गावि सकव हम अपनेक महिमा अगम अपार,
शक्ति नहिं जे पावि सकव हम कहियो अपने केर संस्कार।
व्यक्ति नहिं छी तै तरहक हम जे कऽ सकी अहँक सत्कार।
किन्तु गुणक ग्राही छी अपनेक जोड़ै छी सम्बन्धक तार॥
जौं पछ अपने कृपा करी त मोन में होय शक्ति संचार,
तार पकड़ि सम्बन्धक कऽ ली वैतरणीक पार उद्धार॥॥"

(१२) <u>(मात्र कन्या पक्षक द्वारा लिखल जयवाक (वर पक्ष द्वारा नहिं)</u> **:**

"अपने सब छी परम प्रतिष्ठित, अछि समाज में तैं यश गान।
मानवीय गुण अगम अपारे, अछि महिमो त महा महान॥
एक निवेदन पठा रहल छी, स्वीकारव हे कृपा निधान।
चित्रगुप्त केर सखा हमहुँ सब, माँगि रहल छी 'वर' क दान॥"

(१३) "छी अपने सब सब गुण आगर, आओर छी सब चतुर सुजान,
विद्या बुद्धि विवेकक निधि छी, छी आओर सब तरहें महान।
आशा ओ विश्वास करै छी, हमरो सभक होयत कल्याण,
आवि हमर डेरा अपने जँ जल हेरायव हमरा ठाम॥"

दिनक विवरण लिखवाक ढर्रा आगाँ पृष्ठ पर देल जा रहल अछि :-

(ङ) <u>(१) विवाहक दिनक मंजूरीक 'कट' (कन्याप्रद सँ) :</u>

कागतक ताव

* 'स्वस्ति'

कोन खोटल रहय

* "स्वस्ति" - (एतय उपरोक्त एकैस (पुरातन) आ तेरह (मैथिली में) अर्थात् ३४) में स कोनो एक टा स्वस्ति (जे पसन्द पड़य) लिखि ली आ तै स आगू जोड़ी " परमाराध्य बहु विनय साध्य सठक्कुरादिञ्छ्री {वर पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} .... तथा श्री .... तथा श्री......... तथा श्री............ तथा श्री .... महाशयेषु इतः {कन्या पक्षक पाँच गोटा क नाम (वयस क्रम में-In order of age)} श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... लालस्य/दासस्य नमस्काराङ्कमालिकाः प्रणामाः शुभाशीषः। शतं उभयोः कुशलञ्चाग्रे लिखवाक जे वैवाहिक दिवस .... (मास) .... (पक्ष)....... (तिथि) .... (दिन) संवत्......... (संख्या) तदनुसार .... (तारीख)......... (मास) सन् .... (संख्या) ईस्वीयां सुलग्न होइछ। उक्त दिवस चि० श्री वर लय हमरा डेरा उपस्थित होयवाक परम कृपा कयल जाय जे सुलग्न मध्य शुद्ध निर्वह बहुल गोचरेति॥ शुभम्॥"

(२) विवाहक दिनक मंजूरीक 'कट' (वर प्रद सँ):-

कागतक ताव →

श्री गणेशाय नमः ।

शुभम्

परमाराध्य

*^'स्वस्ति' परमाराध्य........

....

.............गोचरेति शुभम्

कोन खोंटल रहय ।

*^ "स्वस्ति" - (एतय उपरोक्त एकैस (पुरातन) आ तेरह (मैथिली में) अर्थात् ३४) में स कोनो एक टा स्वस्ति (जे पसन्द पड़य) लिखि ली आ तै स आगू जोड़ी "परमाराध्य बहु विनय साध्य सठक्कुरादिञ्छ्री { कन्या पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} .... तथा श्री .... तथा श्री......... तथा श्री............ तथा श्री .... महाशयेषु इतः {वर पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... लालस्य/दासस्य नमस्काराङ्कमालिकाः प्रणामाः शुभाशीषः । शतं कुशलञ्चाग्रे लिखवाक जे वैवाहिक दिवस .... (मास) .... (पक्ष)....... (तिथि) .... (दिन) संवत्......... (संख्या) तदनुसार .... (तारीख)........ (मास) सन् .... (संख्या) ईस्वीयां लिखल गेल से वेश । उक्त दिवस चि० श्री वर लय हमरा सबहिं अपनेक डेरा उपस्थित होयव अपने लोकनि उद्योगशील रहल जाय जे सुलग्न मध्य शुद्ध निर्वह बहुल गोचरेति ॥ शुभम् ॥"

(३) द्विरागमनक दिनक मंजूरीक 'कट' (वर प्रद सँ):-

श्री गणेशाय नमः ।

कागतक ताव

श्री गणेशाय नमः ।

शुभम्

परमाराध्य

*^'स्वस्ति' परमाराध्य........

....

.............गोचरेति शुभम्

कोन खोंटल रहय ।

* "स्वस्ति" - (एतय उपरोक्त एकैस (पुरातन) आ तेरह (मैथिली में) अर्थात् ३४) में स कोनो एक टा स्वस्ति (जे पसन्द पड़य) ←^ लिखि ली आ तै स आगू जोड़ी) "परमाराध्य बहु विनय साध्य सठक्कुरादिञ्छ्री {कन्या पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} .... तथा श्री .... तथा श्री......... तथा श्री............ तथा श्री .... महाशयेषु इतः {वर पक्षक पाँच गोटा क नाम (वयस क्रम में-In order of age)} श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... लालस्य/दासस्य नमस्काराङ्कमालिकाः प्रणामाः शुभाशीषः । शतं कुशलञ्चाग्रे लिखवाक जे द्विरागमनक दिवस .... (मास) .... (पक्ष)....... (तिथि) .... (दिन) संवत्......... (संख्या) तदनुसार .... (तारीख)........ (मास) सन् .... (संख्या) ईस्वीयां सुलग्न होइछ । उक्त दिवसक स्वीकृति देल जाय जे एक दिवस पूर्व चि० श्री वर समाङ्गक संग सवारीक व्यवस्था कैने अपनेक डेरा जयताह, अपने सबहिं सुलग्न मध्य विदा कै देल जाइन्ह बहुल गोचरेति ॥ शुभम् ॥"

(४) **द्विरागमनक दिनक मंजूरीक 'कट' (कन्या प्रद सँ):-**

कागतक ताव →

श्री गणेशाय नमः ।

शुभम्

परमाराध्य

^ 'स्वस्ति' परमाराध्य........

....

............गोचरेति शुभम्

* 'स्वस्ति'

← कोन खोंटल रहय ।

* "स्वस्ति" - (एतय उपरोक्त एकैस (पुरातन) आ तेरह (मैथिली में) अर्थात् ३४) में स कोनो एक टा स्वस्ति (जे पसन्द पड़य) लिखि ली आ तै स आगू जोड़ी "परमाराध्य बहु विनय साध्य सठक्कुरादिञ्छ्री {वर पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} .... तथा श्री .... तथा श्री......... तथा श्री........... तथा श्री .... महाशयेषु इतः {कन्या पक्षक पाँच गोटाक नाम (वयस क्रम में-In order of age)} श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... ओ श्री .... लालस्य/दासस्य नमस्काराङ्कमालिकाः प्रणामाः शुभाशीषः । शतं कुशलञ्चाग्रे कृपा पत्र अपनेक प्राप्त भेल आ कुशलादि वार्ता पाय परमानन्दित भेलहुँ तथा समाचार सँ अवगत भेलहुँ । द्विरागमनक दिवस .... (मास) .... (पक्ष)....... (तिथि) .... (दिन) संवत्.........(संख्या) तदनुसार .... (तारीख)........ (मास) सन् .... (संख्या) ईस्वीयां लिखल गेल से उचित, मनुष्य अपनेहिक हमरा सबहिं मायाक पुञ्ज । एक दिवस पूर्व चि० श्री वर समाङ्गक संग सवारी लेवौने आवधि सुलग्न मध्य विदागरी भऽ जैतनि बहुल गोचरेति ॥ शुभम् ॥"

पूजा-पाठ

किम्बदन्ति अछि जे हिन्दूक तैंतीस कोटि देवता छथिन्ह । कोन जन-गणना, कहियाक जन-गणना आ ककरा द्वारा कराओल गेल जन-गणनाक आधार पर तकर विश्वसनीय आ प्रामाणिक प्रमाण त उपलब्ध नहिं तथापि शास्त्रकार लोकनिक कृपा आ कलमक चमत्कार स ई विषय समाज द्वारा मान्यता प्राप्त अछि। ओना सामान्यतः देखय में अबैत अछि जे समाज मे वर्ष भरि में अधिक-स-अधिक पचीस स ल क पचास देवी-देवताक पूजा होइत छैन्ह; आश्चर्ये नहिं प्रत्युत् चिन्तो होइत अछि जे बाकी देवी-देवता सभ विना स्नान-भोजन के कोना जीवैत होयताह आ दिन कटैत होयताह !

पूजा में पुरोहितक प्रयोजन एहि हेतु जे अपने संस्कृत नहिं जनैत ... समस्त पोथी संस्कृते में अछि। एकर गूढ़ रहस्य छैक मात्र ... हमरा लोकनि कहियो पूजा-पाठक पोथी स्वयं देखवा- ... नहिं करैत छी । जँ पाँच-दस बेर ई कष्ट उठा लेव त ... **ा पुरोहितोक"** ई काज बहुत आसान आ सुलभ अछि; ... थी में भाषा-टीका (मैथिली/हिन्दी में) रहिते छैक । देवी- ... य षोड़शोपचार पूजाक विधि निम्न लिखित अछि जे देखि ... हित के स्वयं वर्षों भरि सभ देवी-देवताक पूजा कऽ सकैत ... ावश्यक नहिं जे पूजा संस्कृते में हो । पूजा मैथिली में (सब स बढ़ियाँ जकाँ) कयल जा सकैछ आ तकरो विधि हम संस्कृतक बाद मैथिली में लिखि रहल छी । जँ एहि अनुसार करी त घण्टों पुरोहित जीक प्रतीक्षा नहि करय पड़त । कोनो पूजाक कथा सूनव अनिवार्य नहिं , किन्तु यदि मोन नहिं मानय त पोथी में स स्वयं 'कथा' क भाषा-टीका पढ़ि लेल करी । अस्तु ।

सामान्य व्यावहारिक षोड्शोपचार पूजा (देवी-देवताक) - संस्कृत में

(१) स्नान क क दिन में पूव वा उत्तर मुहें आ राति में मात्र उत्तर मुहें आसन (कुश वा ऊनी) पर बैस वामा हाथ में बिचला दूनू आँगुर (मध्यमा आ अनामिका) क ऊपर आ दूनू कातक दूनू आँगुर (तर्जनी आ कनिष्ठा) क नीचा कुशक वेणी राखि आ दहिना हाथक आँगुर (अनामिका) में सोना, ताम वा कुशक पवित्री (अँगुठी) पहिरि आ मुट्ठी में कुशक तेकुशा (जकर अग्र भाग ऊपर रहय) ल क आ हाथ में गंगाजल (अभाव में अछिंजल वा उपलब्ध रहला पर अछिंजल में गंगाजल मिला) ल੭ "ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपि वा यःस्मरेत पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ऊँ विष्णुर्विष्णुः हरिर्हरिः पुण्डरीकाक्षः पुनातु" पढ़ि अपन माथ, हृदय सहित पूजा सामग्री आ स्थान कैं हाथक जल सँ सिक्त करी। ततः पर

(२) **पंच देवता पूजा** : {नीचा छपल क्रम संख्या ५ (आवाहन) स २१ (पुष्पाञ्जलि तक)} करी।

(३) **विष्णु पूजा** : (पुरुष ओ विधवा स्त्री मात्र द्वारा होय; सधवा स्त्री मात्र गौरी पूजा करथि (विष्णु पूजा नहिं) आ गौड़ पूजथिं) {नीचा छपल क्रम संख्या ५ (आवाहन) स २१ (पुष्पाञ्जलि तक)} करी।

(४) **संकल्प :** (तेकुशा, तिल आ जल ल क) "ऊँ अद्य (दिन में)/अस्यां रात्रौ (राति में) ....मासि........पक्षे......... यां तिथौ......... गोत्रस्य (पुरुष)/गोत्रायाः (स्त्री) मम .... दासः (पुरुष)/देव्याः (स्त्री) सकल कल्याणोत्पत्तिपूर्वक धनधान्य समृद्धि सकल मनोरथ सिध्यर्थं यथाशक्ति गन्धपुष्पधूपदीप ताम्बूल यज्ञोपवीतवस्त्र नानाविध अपुंग नैवेद्यादिभिः भगवति/भगवान.......(देवी/देवता के नाम) पुजनमहं (तत्कथा पठन/श्रवण) करिष्ये" पढ़ि पात पर राखल द्रव्य पर तिलजलतेकुशा राखि दी; फेर तेकुशा उठाली।

(५) **आवाहन :** (अक्षत ल क) (आन सब देवी-देवता कैं) "श्री ...... (एक वचन) इहागच्छ इहतिष्ठ/(वहु वचन) इहागच्छत इहतिष्ठत"; (तिल ल क) (केवल विष्णु कैं) "श्री विष्णु इहागच्छ इहतिष्ठ"।

(६) **पैर धोआयब :** (जल ल क) "एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनियानि श्री .... नमः"।

(७) **स्नान :** दूध/(अभाव में) गंगाजल/(अभाव में) अछिंजल (शंख में अथवा अर्घी में अथवा (अभाव में) हाथ सँ) "इदं दुग्ध/गंगाजल स्नानीयं श्री... नमः"।

(८) **(क) (जनेउ):**(मात्र पुरुषे पात्र कें) "इमे यज्ञोपवीतें वृहस्पति दैवते श्री...नमः"।

(ख) (आचमनी): (जल ल क) "इदमाचमनीयम् श्री...नमः"; जल देखा क बाहर फेकल जाय।

(९) **(क) (वस्त्र)** : (सब देवी-देवता कैं) "इदं पीत/वस्त्रम् श्री...नमः"।

(ख) (आचमनी):(जल ल क) "इदमाचमनीयम् श्री...नमः"; जल देखा क बाहर फेकल जाय।

(१०) **चाननः** (सब देवी-देवता कैं) "(क) इदं चन्दनम्/इदमनुलेपनम् (ख) इदं रक्त चन्दनम्/रक्तचन्दानुलेपनम् श्री...नमः" (रक्तचन्दन स्त्री पात्र कैं नहि)।

(११) **सिन्दूरः** (मात्र स्त्री पात्र कैं) "इदं सिन्दूरं/सिन्दूराभरणम् श्री...नमः"।

(१२) **अक्षत :** (क) "इदमक्षतम् (आन सब देवी-देवता कैं)/ (जव तिल) (ख) एते यवतिलाः (मात्र विष्णु कैं) श्री...नमः"।

(१३) **फूल :** (दूनू हाथे) (एक फूल) "इदं पुष्पम्/(दू फूल) इमे पुष्पे/(तीन वा अधिक फूल) एतानि पुष्पाणि श्री...नमः"।

(१४) **माला :** "इदं पुष्पमाल्यम् श्री...नमः"।

(१५) **तुलसी** : (एक) " इदं तुलसीपत्रम्/(दू) इमे तुलसीपत्रे/(तीन वा अधिक) एतानि तुलसीपत्राणि (दलानि) श्री...नमः"।

(१६) दूभि : (एक) "इदं दुर्वादलं/(दू) इमे दुर्वादले/(तीन वा अधिक) एतानि दुर्वा- दलानि श्री.....नमः" ।

(१७) बेलपात : (एक) " इदं विल्वपत्रं/(दू) इमे विल्वपत्रे/(तीन वा अधिक) एतानि विल्वपत्राणि श्री.....नमः" ।

(१८) धूप : "एष धूपः श्री.....नमः" *। *पृथक-पृथक सेहो कयल जा सकैछ । उत्सर्ग क क देखाओल जाय।

(१९) दीप :"एष दीपः श्री.....नमः" *। *पृथक-पृथक सेहो कयल जा सकैछ । उत्सर्ग क क देखाओल जाय। अथवा (२०) उत्सर्गो मे सम्मिलित अछि।

(२०) उत्सर्ग : (क) "(जल ल क) एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नानाविध नैवेद्यानि (सभ वस्तु कैं उत्सर्ग करैत/पृथक-पृथक उत्सर्ग से हो विहित अछि) श्री..... नमः"। (ख) आचमनी (जल ल क) "इदमाचमनीयम् श्री..... नमः" ; जल देखा बाहर फेकल जाय ।

(२१) पुष्पाञ्जलि : (किछु फूल ल क दूनू हाथे) "एष पुष्पाञ्जलिः श्री.....नमः" ।

(२२) कथा : स्वयं भाषा-टीका पढ़ि ली वा पुरोहित जी सँ सूनि ली ।

(२३) आरती : (थारी मे अक्षत आ औन्हल पानक पात पर दीप (तूर-घी सँ बनाओल) आ कर्पूरक गोटी (दूनू कैं प्रज्वलित क क) थारी कैं आगाँ मे राखि, ठाढ़ भ (अर्घा मे जल ल) "ऊँ चन्द्रादित्यौच धरणी विद्युदग्निस्तथैवच । त्वमेव सर्व ज्योतिषीं आर्तिक्यम्प्रतिगृह्यताम् । इदमार्तिक्यम् सांगाय सपरिवाराय ऊँ श्री ....नमः''। थारी के पहिने उत्सर्ग क क जल देवी-देवता पर चढ़ा ली आ तखन थारी हाथ में ल क पूजा कयल सब देवी-देवता कैं आ तुलसी चौरा, आकाश आ सिरागू में आरती देखा थारी देवी-देवता लग राखि पुनः उत्सर्ग क क जल देवी-देवता सब पर चढ़ा दी । (पहिने स्वयं आरती ल ली तखन अनका देखावी) ।

(२४) फेर पुष्पाञ्जलि : (किछु फूल ल क दूनू हाथे आ माथ झुका अति विनीत भाव सँ सब देवी-देवता कैं प्रार्थना करैत जेना जे आशीर्वाद/वरदान/ मान्यता (मनौती) माँगक हो से माँगि) "एष पुष्पाञ्जलिः सांगाय सपरिवाराय पूजित ऊँ श्री सर्व देवताभ्यो नमः" पढ़ि फूल पूजा पात पर बीच में चढ़ा दी ।

(२५) प्रदक्षिणा : दूनू हाथ जोड़ि पूजास्थल के चारूकात अथवा स्थल संकीर्ण रहला पर अपना आसने पर दहिन भागे घुमैत "ऊँ जानि कानि च पापानि ब्रह्म हत्या समानि च । तानि-तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे-पदे" (पढ़ैत चारि बेर घूमि क (अर्थात् प्रदक्षिणा क क) प्रणाम कऽ ली ।

(२६) विशेष प्रार्थना : ज कोनो मोनक वातक अर्जी करवाक हो त दूनू हाथ जोड़ि मनहिं मन उक्त प्रार्थना क माथ झुका प्रणाम कऽ ली ।

(२७) विसर्जन : (प्रत्येक बेर अर्घा में जल ल क) (एक वचन) "ऊँ .... (नाम) पुजितोऽषि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ पुनरागमनाय च/(द्वि वचन) ऊँ .... (दूनू देवी/देवताक नाम यथा सीतारामो/गौड़ीशंकरो) पुजितौस्थः क्षमेयाथाम स्वस्थानं गच्छतम् पुनरागमनाय च / (वहु वचन) .... (सब देवी/देवताक नाम) (यथा नवग्रह) पुजितास्थः क्षमध्वम् स्वस्थानं गच्छत् पुनरागमनाय च /(लक्ष्मी ओ सरस्वती में) ऊँ .... पुजितोऽषि प्रसीद क्षमस्व मयि रमस्व" पढ़ैत अर्घाक जल चढ़ावी ।

(२८) दक्षिणा : "दक्षिणा" पूजा-पाठ करैवाक 'पारिश्रमिक' थीक । यदि स्वयं (विना पुरोहितक) अपनहिं स पूजा करी त तखन 'दक्षिणा' क कोनो प्रश्ने नहिं उठैछ। अन्यथा (अक्षत ल क एक टा कुश पर) "नमो/ऊँ ब्राह्मणाय नमः (तीन बेर)"। फेर (तिल ल क दक्षिणाक द्रव्य पर) "ऊँ हिरण्याय नमः (तीन बेर)"। ततः पर "ऊँ अद्य (दिन में)/ऊँ अस्यां रात्रौ (राति में) कृतैतत् सांग

सायुध सवाहन सपरिवार भगवति/भगवन श्री .... पूजन (तत्कथा श्रवण/पठन) कर्म प्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यक हिरण्य मग्नि दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहंददे" (पढ़ि) तिल कुश द्रव्य पर राखि दी। तखन दक्षिणा हाथ में द क (जौं पुरोहित वा कोनो अन्य ब्राह्मण उपस्थित होथि तिनका) कहियैन्ह "प्रतिपन्न" आ ओ कहताह "स्वच्छन्नो भ व"। जँ कोनो ब्राह्मण वा पुरोहित उपस्थित नहिं रहथि त जखन जहिया हिनका लोकनि में स किनको स भेंट हो त ई क्रिया सम्पन्न कराओल जाय। आब सब कुशक परित्याग करी। आ

(२९) सव स पहिने स्वयं चरणामृत ल क अपन व्रत भंग करी। तखन अनका चरणामृत आ प्रसाद परसी/परसबावी।

- समाप्त -

सामान्य व्यावहारिक षोड़शोपचार पूजा (देवी-देवताक) - मैथिली में

(१) स्नान क क दिन में पूव वा उत्तर मुहें आ राति में मात्र उत्तर मुहें आसन (कुश वा ऊनी) पर बैस वामा हाथ में बिचला दूनू आँगुर (मध्यमा आ अनामिका) क ऊपर आ दूनू कातक दूनू आँगुर (तर्जनी आ कनिष्ठा) क नीचा कुशक वेणी राखि आ दहिना हाथक आँगुर (अनामिका) में सोना, ताम वा कुशक पवित्री (अँगुठी) पहिरि आ मुट्ठी में कुशक तेकुशा (जकर अग्र भाग ऊपर रहय) ल क आ हाथ में गंगाजल (अभाव में अछिंजल वा उपलब्ध रहला पर अछिंजल में गंगाजल मिला) ल क श्री विष्णु आ माँ गंगाक स्मरण करैत आ नाम लैत उक्त जल स माथ, हृदय, सम्पूर्ण शरीर, पूजाक समस्त सामग्री आ पूजा-स्थान के सिक्त करी (छीटी)।

(२) **पंच देवता पूजा** : {नीचा छपल क्रम संख्या ५ (आवाहन) स २३ (पुष्पाञ्जलि तक)} करी।

(३) **विष्णु पूजा** : (पुरुष ओ विधवा स्त्री मात्र द्वारा होय; सधवा स्त्री मात्र गौरी पूजा करथि (विष्णु पूजा नहि) आ गौड़ पूजथि) {नीचा छपल क्रम संख्या ५ (आवाहन) स २३ (पुष्पाञ्जलि तक)} करी।

(४) **संकल्प** : "आजुक दिन/आइ राति....मासक.....पक्षक .....तिथि में...............(गोत्र) क हम.........(नाम) दास/देवी सम्पूर्ण परिवारक सब तरहक कल्याणार्थ धनधान्य स समृद्धिक आ समस्त मनोरथक सिद्धिक हेतु यथाशक्ति सुगन्ध फूल धूप दीप पान सुपारी जनेउ वस्त्र विविध प्रकारक अपुंग नैवेद्य स अंग देवता सहित भगवती/भगवान श्री.......क पूजा आ कथा सुनवाक/पढ़वाक संकल्प कऽ रहल छी" पढ़ि तिल आ जल पात पर राखल द्रव्य पर राखि दी।

(५) **आवाहन** : (अक्षत ल क प्रार्थना पूर्वक) "श्री.......(भगवती/भगवान) हम अपने कैं एतय आवक प्रार्थना करैत छी, अपने आउ आओर एतय बैसवाक कृपा करू"; पात पर एक ठाम अक्षत राखी।

(६) <u>पैर धोआयव आ आचमनी</u> : (जल ल क) "श्री....... (भगवती/भगवान) एहि जल सँ पैर धोयल जाओ आओर आचमन कयल जाओ" ; राखल अक्षत पर जल छोड़ी ।

(७) <u>स्नान</u> : दूध/(अभाव में) गंगाजल/(अभाव में) अछिञ्जल (शंख में अथवा अर्घा में अथवा (अभाव में) हाथे सँ) "ई दूध/गंगाजल सँ अपने कैं स्नान करा रहल छी, कृपया स्वीकार कयल जाओ"; राखल अक्षत पर छोड़ी ।

(८) <u>(क) जनेउ पहिरावक</u> - (मात्र पुरुष पात्र कैं) (गेठियाओल जनेउ हाथ में ल क) "श्री वृहस्पतिक देल ई जनेउ धारण करवाक कृपा कयल जाओ"; जनेउ चढ़ावी (ख) (जल ल क) "कृपया आचमन कयल जाओ"स जल मात्र हुनका लग ल जा क देखा, बाहर फेकल जाय ।

(९) <u>(क) बस्त्र</u> (सब देवी-देवता कैं) ल क "श्री .... (भगवती/भगवान), एहि पीत वस्त्र के कृपया पहिरल जाओ"; वस्त्र चढ़ावी ।

(ख) (जल ल क) "कृपया आचमन कयल जाओ"स जल मात्र हुनका लग ल जा क देखा, बाहर फेकल जाय ।

(१०) **<u>चानन</u> :** (सभ देवी/देवता कैं) "श्री .... (भगवती/भगवान), ई चानन लगैवाक कृपा कयल जाओ"; चानन (फूल सँ) चढ़ावी ।

(११) **<u>रक्त चानन</u>** : (केवल पुरुष पात्र कैं; स्त्री पात्र कैं नहिं) "श्री .... (भगवान), ई रक्त चानन लगयवाक कृपा कयल जाओ"; रक्तचानन (फूल सँ) चढ़ावी ।

(१२) **<u>सिन्दूर</u>** : (केवल स्त्री पात्र कैं) "श्री .... (भगवती), एहि सिन्दूर कैं आभरण बनैवाक कृपा कयल जाओ"; सिन्दूर चढ़ावी ।

(१३) **<u>अक्षत</u>** : (सभ देवी/देवता कैं) (विष्णु कैं छोड़ि) "श्री .... (भगवती/भगवान), एहि अक्षत कैं कृपया स्वीकार कयल जाओ"; अक्षत चढ़ावी ।

(१४) **<u>जव-तिल</u>** : (केवल विष्णु कैं) "श्री .... (भगवान श्री विष्णु), कृपया एहि जव-तिल कैं स्वीकार कयल जाओ"; जव-तिल चढ़ावी ।

(१५) **<u>पुष्पाञ्जलि</u>** : (किछु फूल आँजुर में ल क दूनू हाथे) "श्री .... (भगवती/भगवान), ई पुष्पाञ्जलि कृपया स्वीकार कयल जाओ"; फूल चढ़ावी ।

(१६) **<u>माला</u>** : (दूनू हाथे) "श्री .... (भगवती/भगवान), ई फूलक माला चढ़ा रहल छी, कृपया स्वीकार कयल जाओ"; माला चढ़ावी ।

(१७) **<u>तुलसी</u>** : "श्री ...... (भगवती/भगवान), ई तुलसी पात कृपया स्वीकार कयल जाओ"; तुलसी पात चढ़ावी ।

(१८) **<u>दूभि</u>** : "श्री .... (भगवती/भगवान), ई दूभि कृपया स्वीकार कयल जाओ"; दूभि चढ़ावी ।

(१९) **<u>बेलपात</u>** : "श्री .... (भगवती/भगवान), ई बेलपात कृपया स्वीकार कयल जाओ"; बेलपात चढ़ावी ।

(२०) **<u>धूप</u>** : "श्री .... (भगवती/भगवान), इ धूप कृपया स्वीकार कयल जाओ"; धूप देखावी ।

(२१) **<u>दीप</u>** : "श्री .... (भगवती/भगवान), इ दीप कृपया स्वीकार कयल जाओ"; दीप देखावी ।

(२२) **<u>(क) सभ वस्तुक उत्सर्ग</u>** : (जल ल क) " "श्री .... (भगवती/भगवान), इ सभ वस्तु यथा गंध, फूल, धूप, दीप, पान-सुपारी आ यथाभाग अनेक प्रकारक नैवेद्य उत्सर्ग कऽ रहल छी जे कृपया स्वीकार कयल जाओ"; सभ वस्तु कैं उसरगि क जल चढ़ा देल जाय । (सभ नैवेद्य के पृथक-पृथक से हो उत्सर्ग करवाक विधान अछि) ।

(ख) **<u>आचमन</u>** : (जल ल क) "कृपया आचमन कयल जाओ"स जल, मात्र हुनका लग ल जा क देखा, बाहर फेकल जाय ।

(२३) **<u>पुष्पाञ्जलि</u>** : (किछु फूल आँजुर में ल क दूनू हाथे) "श्री .... (भगवती/भगवान), ई पुष्पाञ्जलि अर्पण कऽ रहल छी जकरा कृपया स्वीकार कयल जाओ"; आँजुरक फूल चढ़ा दी ।

(२४) **पूजाक कथा** : पोथी में स स्वयं ''भाषा-टीका'' पढ़ि ली ।

(२५) **आरती** : (थारी में अक्षत आ औन्हल पानक पात पर दीप (तूर घी स बनाओल) आ कर्पूर द क तथा दूनू के प्रज्वलित क क (लेसि क) थारी आगाँ में राखि, ठाढ़ भऽ अर्घा में जल ल) "श्री .... (भगवती/भगवान) सहित हे चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी, बिजली आ अग्नि, अपने सभ क्यौ ज्योतिर्मय थिकहुँ, हमर अर्पण कयल ई आरती सब अंग देवता सहित आ सपरिवार स्वीकार करवाक कृपा कयल जाओ" । थारी के उत्सर्ग क क जल देवी/देवता सभ पर द तखन उठा क आरती देखा फेर सिरागू/कुल देवता के आ तुलसी चौरा में आओर आकाश दिश आरती देखा फेर थारी राखि पुनः उत्सर्ग क क जल देवी/देवता सभ पर चढ़ा दी। **पहिने स्वयं आरती लऽ ली तखन अनका देखावी ।**

(२६) **फेर पुष्पाञ्जलि** : (किछु फूल आँजुर में ल क दूनू हाथे आ माथ झुका अति विनीत भाव सँ प्रार्थना करैत) "सभ देवी/ देवता, जिनकर अंगीभूत देवता सपरिवार सहित पूजा भेल अछि, कैं सादर प्रणाम" कहि पूजा पात पर बीच में चढ़ा दी ।

(२७) **प्रदक्षिणा** : दूनू हाथ जोड़ि पूजा-स्थल के चारूकात अथवा स्थल संकीर्ण रहला पर अपना आसने पर दहिन भागे घुमैत आ मनहिंमन अपना द्वारा कयल गेल अनुचित क्रिया-कलापक हेतु अपराधक क्षमा-प्रार्थना करैत चारि बेर घूमि क प्रणाम कऽ ली ।

(२८) **विशेष प्रार्थना** : ज कोनो मोनक बातक अर्जी करवाक हो त दूनू हाथ जोड़ि मनहिंमन उक्त प्रार्थना क माथ झुका प्रणाम कऽ ली ।

(२९) **पुजा विसर्जन** : प्रत्येक देवी/देवता कैं, जिनका आदि स अन्त तक पात पर पूजा कैलियैन्ह अछि, पृथक-पृथक, अर्घा में जल ल क ई कहैत जे 'पूजाक स्वीकारोक्ति में हमरा आशीर्वाद दिय, पूजा में रहल कोनो त्रुटिक हेतु हमरा क्षमा करू आ अपना

स्थान क प्रस्थान करू आ फेर अयवाक कृपा राखब'; अर्घाक जल चढ़ावी । श्री लक्ष्मी आ सरस्वती कैं क्षमा करू कहि क कहियैन्ह जे " हमरा में रमि जाउ" (ई नहिं कहियैन्ह जे अपना स्थान क प्रस्थान करू) ।

(३०) **दक्षिणा** : "दक्षिणा" पूजा-पाठ करैवाक 'पारिश्रमिक' थीक । यदि स्वयं (विना पुरोहितक) अपनहिं स पूजा करी त तखन 'दक्षिणा' क कोनो प्रश्ने नहिं उठैछ । अन्यथा दक्षिणा द्रव्य पात पर राखि हाथ में कुश, तिल, जल ल क ई कहैत जे "श्री ....भगवती/भगवानक पूजा करक (आ कथा सुनवाक/पढ़वाक) हेतु पारिश्रमिक (दक्षिणा) अर्पण करैत छी", तिल, कुश, जल सब द्रव्य पर छोड़ि दी । जँ ब्राह्मण/पुरोहित क्यौं उपस्थित रहथि (अन्यथा जखन भेंट होथि) त हुनका हाथ में उक्त द्रव्य दऽ कहियैंन्ह "प्रतिपन्न"। ओ उक्तर देताह "स्वच्छन्नो भ व" । आ तकरा बाद :

(३१) **व्रत भंग : सब स पहिने अपने स ल क वा ककरो आनक द्वारा देल, चरणामृत ल क सर्व प्रथम अपन व्रत भंग करी; तखन अनका चरणामृत आ प्रसाद परसी/परसबावी ।**

समाप्त ।

सूची – अंगीभूत देवता लोकनिक

१. **हरिताली**

प्रथम गौड़ पूजि ली आ नियमानुसार मात्र उमा "गौरि" क पूजा करी ।

२. **चौठचन्द**

(क) गणपत्यादि पंच देवता पूजा (ख) विधवा - विष्णु पूजा
सधवा - गौरी पूजा आ
गौड़ पूजव

संकल्पक पश्चात् (ग) रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजा।

३. **श्री अनन्त पुजा**

(क) सुर्यादि पंच देवता पूजा

(ख) पुरुष ओ विधवा-विष्णु पूजा
सधवा-गौरी पूजा आ गौड़ पूजथि
संकल्पक पश्चात्

(ग) सुर्यादि नवग्रह पूजा
(घ) इन्द्रादिदशदिक्पालाः पूजा
(ङ) **श्री अनन्त पूजा**
(च) श्री बलभद्र पूजा
(छ) श्री सुमन्त पूजा
(ज) श्री दीक्षा पूजा
(झ) श्री पुरुषोत्तम पूजा
(ञ) श्री हृषिकेश पूजा
(ट) श्री पद्मनाभ पूजा
(ठ) श्री माधव पूजा
(ड) श्री वैकुण्ठ पूजा
(ढ) श्री श्रीधर पूजा
(ण) श्री त्रिविक्रम पूजा
(त) श्री मधुसूदन पूजा
(थ) श्री वामन पूजा
(द) श्री केशव पूजा
(ध) श्री नारायण पूजा
(न) श्री दामोदर पूजा
(प) श्री गोविन्द पूजा ।

४. **जितिया**

(क) श्री जीमूतवाहन पूजा
(ख) चिल्हि (चिल्ही) पूजा
(ग) श्रृगालि (गिदड़िनी) पूजा
(हिनका सिन्दुर दियैन्ह)
(घ) पर्कटीवृक्ष (पाकड़िक गाछ)क पूजा
(ङ) बाहुट्टार पूजा
(च) मरुस्थल (मरूभूमि) पूजा ।

५. **दीयावाती (दीपावली)**

(क) गणपत्यादि पंच देवता पूजा
(ख) विधवा - विष्णु पूजा
सधवा - गौरी पूजा आ
गौड़ पूजथि
संकल्पक बाद
(ग) श्री लक्ष्मी पूजा
(घ) श्री इन्द्र पूजा
(ङ) श्री कुबेर पूजा
(च) श्री दक्षिण काली पूजा ।

६. श्री चित्रगुप्त पूजा

(क) श्री गणेश पूजा
(ख) **श्री चित्रगुप्त पूजा**
(ग) श्री यम पूजा
(घ) श्री यमुना पूजा (सिन्दूर अर्पण)
(ङ) श्री लेखिनी पूजा (सिन्दूर अर्पण)
(लेखिनी के पीत वस्त्र देल जाय) ।

७. श्री सरस्वती पूजा (वसन्त पंचमी)

(क) सुर्यादि नवग्रह पूजा
(ख) इन्द्रादिदशदिक्पालाः पूजा
(ग) **श्री सरस्वती पूजा**
(घ) श्री लक्ष्मी पूजा
(ङ) श्री गणेश पूजा
(च) पुस्तक पूजा
(छ) मस्याधार पात्रम् (दोआति) पूजा
(ज) लेखिनी पूजा/सत्वेसमसीक
लेखन्यैं नमः
(Fountain Pen)।

८. श्री वट सावित्री पूजा

(क) श्री गणेश पूजा (ख) श्री गौरी पूजा
(ग) श्री ब्रह्मणा सह सावित्री पूजा ।

९. श्री सत्य नारायण (भगवान) पूजा

(क) गणपत्यादि पंच देवता पूजा
(ख) पुरुष ओ विधवा - विष्णु पूजा
सधवा गौंरी पूजा आ गौड़ पूजथि
संकल्पक पश्चात्
(ग) श्री लक्ष्मी पूजा (सिन्दूर)
(घ) श्री सरस्वती पूजा (,,)
(ङ) श्री आदिपुरुष पूजा
(च) श्री अनादिपुरुष पूजा
(छ) श्री इन्द्रादिदशदिक्पालाः पूजा
(ज) श्री नवग्रह पूजा
(झ) श्री ससीतरामलक्ष्मण पूजा
(ञ) **श्री सत्य नारायण पूजा**
(ट) श्री गौरीशंकर पूजा
(ठ) श्री हनुमत्–महावीर पूजा
(ड) संक्षिप्त ब्रह्मा पूजा ।

- समाप्त -

श्री गणेशाय नमः

१ मूड़न (मुण्डन)

सूची सामग्रीक

(१) **वस्त्रादि (विभिन्न काजक)** : बरुआक दोस्तारकक पीयर बस्त्र
पुरोहितक-डेराडोरि - १; धोती - १ जोड़
पूजा (सिरागू) कैनिहारक डेराडोरि - १; धोती - १ जोड़
" " कैनिहारिक साड़ी - १; (साया,ब्लाउज); लहठी
पसाहिन " " " " "
केश लेनिहारिक " " " "
बरुआक वस्त्र - धोती/पैन्ट, गंजी, कुर्ता, टोपी, पैताबा, जूता, छाता, इत्यादि।

(२) सिरागू पूजा :

फूल	अरवा चाउर
फूलक माला	सिरागूक अँचरी,
बेलपात (बिल्वपत्र)	मौरी आ चनवा बदलव
गंगाजल	
चानन	कलश (जलभरल, 'पाइ', सुपारी)
चनरौटा	धूमन/अगरबत्ती
दूध (गाइक)	नैवैद्य : लड्डू; अन्य मधूर; फल-फलहरी
घृत (")	चिक्कस (आँटा) (पूरीक हेतु)
तिल/अक्षत	खीर (तस्मै)
जौ	कडू तेल/दीप
पान (छुट्टा ओ लगाओल)	छागर/पाठी/मधूर (इच्छानुसार)
सुपारी (भाँगल)	सिन्दूर
कर्पूर	अँकुरी (केराव)
गुड़	चीनी
संकल्प क द्रव्य	दक्षिणाक द्रव्य
भोज-भात, इत्यादि ।	हजामक मेहनताना, इनाम, इत्यादि।

श्री गणेशाय नमः

२ चूड़ा-करण

सूची सामग्रीक

(१) मड़वा : बाँस; खरही, खढ़; जौर; रंग आ जन।

(२) वस्त्रादि : (विभिन्न लोकक)

'श्री'क वस्त्र

'अभ्युदय'क वस्त्र

बरुआक दोस्तारकक पीयर वस्त्र

ब्रह्माक-डेराडोरि-१; धोती-१ जोड़

आचार्यक " १ " १ "

बरुआक-धोती (पीयर)-१ जोड़ (पसाहिनक)

" " - १ जोड़ (कुमारक)

" " - (चूड़ाकरण भेला पर) - डेराडोरि-१; धोती-१ जोड़; गंजी; कुर्ता; डोपटा (चद्दरि); पाग (लाल); छाता

देवता-पितर नेओतनिहारिक- साड़ी-१; (ब्लाउज, साया); लहठी

पसाहिन केनिहारिक - साड़ी - १; (ब्लाउज, साया); लहठी

केश लेनिहारिक - साड़ी - १; (ब्लाउज, साया); लहठी

हजामक-डेराडोरि, गंजी; कुर्ता, गमछा, भोजन, सीधा, पारिश्रमिक आ इनाम।

(३) **पसाहिन :**	(४) **कुमरम :**	
धोती (पीयर)	कुमारक धोती (बरुआक)	
कम्बल	मधुखाँड़ (दही आ हरदि पुरैनक पात पर)	
माली	बिहारि-बसात बाँन्हक-सरबा, नरी, पाई आ सुपारी चुल्हा	
तेल-कषाय (उवटन)	सूप/चँङेरा	हाथी
ऐना / कजरौटा	अरवा चाउर	पुरहर
कंघी	करची	पातिल
सिन्दूर	जनौ	केराक पौंछ
नारिकेरिक तेल।	पान आ सुपारी	कोहा
	दूध	चीनी।

कुल देवताक पूजा-कुलानुसार

अर्थात सिरागू पूजा ठीक मूड़ने जकाँ (एहि हेतु कृपया मूड़नक लिस्ट में 'सिरागू पूजा' देखू)।

(५) **जुटिका-बन्धन (कुमरमक राति में) :**

चानन चनरौटा, काजर गुआ माला साहीक काँट

अस्तुरा बरुआक : धोती, गंजी, कुर्ता, चद्दरि (डोपटा), डेराडोरि, पाग (लाल), अँगुठी, मौजा आ जूता।

(६) मातृका पूजा :

फूल	अरवा चाउर
फूलक माला	कलश (जल भरल, पाइ, सुपारी)
बेलपात (बिल्व पत्र)	तुलसीपात धूमन
गंगाजल	अगरबती /दिया सलाइ
चानन	दीप
चनरौटा	नैवेद्य : फल फलहरी मधूर (विभिन्न)
दूध (गाइक)	जौ, पान (छुट्टा ओ लगाओल), सुपारी (भाँगल), सिन्दूर,
घृत (गाइक)	कर्पूर, गुड़, चीनी, दूभि, मधु,

तिल/अक्षत आसनी, केराक पात, केरा, गोबर (गाइक)
पुरोहितक भोजन, पुरोहितक भोजन दक्षिणा
ओ पुरोहितक पूजाक दक्षिणा।

(७) **मड़वा पर :**

गोबर (गाइक), दूभि, श्री/श्रीक वस्त्र, अभ्युदयक वस्त्र, ब्रह्माक डेराडोरि आ धोती, आचार्यक डेराडोरि, धोती आ पवित्री, पुरोहितक डेराडोरि आ धोती, केश लेनिहारिक साड़ी आ लहठी, ब्रह्म संतोष (बडुका में अरबा चाउर), तिल, पान, सुपारी, पीढ़ी, हजामक पहनावा (सम्पूर्ण)/डाली/ अरवा चाउर आ नगद निछाउर।

होम क सामग्री : सूची

श्रुव, तिल, कुश, समिधा, (होमक लकड़ी) (आक,आम, गुल्लरि, चिड़चीड़ी आ बेल), चँगेरा – ४, चूड़ा करणक दक्षिणा,
हजामक पारिश्रमिक, ब्राह्मण भोजन (प्रति बरुआ x आठ ब्राह्मण), स्वजाति भोजन (भोज भात)

(८) **चारिम दिन 'टूरन' आ देवता पितर सौंपनाइ।**

एक प्रर्थना

किम्बदन्ति अछि जे मात्र तीन कोस पर भाषा आ सामाजिक विधि–व्यवहार में अन्तर पड़ि जाइछ। दोसर अनभिज्ञता क कारणें ई सूची पूर्ण नहिं भेल अछि। जानकार आ पुरोहित लोकनि कैं धन्यवाद जनिका लोकनि सँ सूनि क आ पूछि क हम एहि सूचीक कोनहुना निर्माण कैलहुं अछि। हमर प्रार्थना जे अपन भिज्ञता आ अनुभव दक्षताक आधार पर एकरा परिपूर्ण कऽ लेल जाय आ हमरा द्वारा एकरा निर्माण में भेल अनेकानेक त्रुटिक हेतु हमरा अनपढ़ आ अनभिज्ञ जानि क्षमा कयल जाय।

खेराजपुर (दरभंगा)
५ अप्रील सन् १९८१ ई.। **कमलधर दास।**

३. विवाह दान

(क) सिध्यान्त- सूची सामग्रीक

(१) **सिध्यान्त में गेनिहार** : ब्राह्मण, पञ्जीकार, प्रपितामह/पितामह/बाप-पित्ती/भाइ-बन्धु, निकट सम्बन्धी, गौँआँ-घरुआ, संगी-साथी/क्लोज़्ड एसोसिएट्स, खवास आ हजाम।

(२) **सिध्यान्त में वस्त्रादि** : धोति - १ जोड (लोटा उठौनिहारक), साड़ी -१ खण्ड , ब्लाउज -१, साया - १ आ लहठी (कन्याक)। पैर ओड़ारनिहारिक साड़ी (साया , ब्लाउज) आ लहठी। नारिकेरिक तेल, सिन्दूर, पान-मशाला। लोटा उठौनिहार के चूड़ा, दही, चीनी आ मधूरक भोजन।

(३) **सिरागू (कुल देवता) स सिध्यान्त-स्थान क प्रस्थान** : सिरागू लग राखक आ ओतहि स प्रणाम क क उठाबक :–

फूल	पान-मशाला परसवाक परात (ट्रे)
माला - ३ टा	अगरबत्ती/दिया सलाई
पल्लव - (आमक) - १टा	सतरञ्जी/जाजिम
सिन्दूर (भगवतीक हेतु आ	पान (लगाओल)
पश्चात् व्यवहारक हेतु)	सुपारी (भाँगल)
डाला	ज़र्दा (काला पत्ती/पीला पत्ती/
पाग	३००/तुलसी/अन्य)
डोपटा (चद्दरि)	सिगरेट/बिड़ी
सोवरना	
अतरदान/अतर/सेन्ट/तूर (रूइ)	किसमिस
गुलाब पास/गुलाब जल	छहौड़ा
खिलबट्टी/मशालाक पैकेट	नारिकेर

लौंग, अराँची (इलायची छोटी)	काजू
दालचीनी	अखरौट
शीतल चीनी	पिस्ता
सौंफ	मखान
नवका फैशन मे	टाँफी
चिनियाँ बादाम (मूँगफली)	मिसरी अन्यान्य ।
काबूली बादाम	

(४) **सिध्यान्त स्थान में जलपान (जँ आवश्यक बूझि पड़य)**

फल-पाकल केरा/सेव/समतोला (नारंगी), अंगूर आ अन्य ।

मधूर - रसगुल्ला/पैनतोवा (गुलाब-जामुन), अन्यान्य ।

नमकीन - खास्ता कचौड़ी/शमोसा (सिंघारा)/मिक्सचर आदि ।

ड्रिंक्स (पेय) – चाय/कॉफी/कोल्ड ड्रिंक्स (गरमी में) ।

पान - मशाला आदि ।

(५) **सिध्यान्त-स्थान जयवाक सवारी :** बैलगाड़ी/रिक्सा/ताँगा टेम्पो/टैक्सी/कार/बस/रेल गाड़ी, इत्यादि ।



(ख) विवाह (कन्याँ क)-सूची सामग्रीक

(१) **पसाहिन में कन्याक वस्त्र** : साड़ी - १ खण्ड (पीयर रंगक), ब्लाउज-१ साया-१ आ लहठी -१ जोड़ ।

(२) **पसाहिन केनिहारिक वस्त्र :** साड़ी -१ खण्ड, ब्लाउज -१, साया -१ आ लहठी - १ जोड़ ।

(३) **पसाहिन में नारि परिछनिहारिक वस्त्र** : साड़ी -१ खण्ड ।

(४) **पसाहिन :**

सिन्दूरक गद्दी	माली
रीबन (लाल/पीयर/हरियर/ कमलपत्ती)	कषाय (जीर, कर्पूर, जटामसी, कडूतेल)
करछुल्ली (काजर-पूरित)	तेल (सुगन्धित)
ऐना	तेल (नारियल)
कंघी (काठक) आ ककबा	चँगेरा (पसाहिनक)
	पटिया (रंगीन, पसाहिनक)
	तौलिया आदि , आदि ।

(५) **कुमरम में पुरोहितक वस्त्र :** डेराडोरि - १ आ धोती - १ जोड़ ।

(६) **कुमरम में विविध लोकक वस्त्रादि :** कन्या के द्वोस्तारकक पीयर वस्त्र ।

कन्याक साड़ी - १ खण्ड, साड़ी - १ खण्ड (दूध नहैवाक)

देवता-पितर नेओतनिहारिक- साड़ी - १खण्ड

लाबा भुजनिहारिक साड़ी- १ खण्ड

लाबा भुजनिहारक - डेराडोरि- १ आ धोती - १ जोड़

कन्यादान केनिहारक - डेराडोरि- १ आ धोती - १ जोड़ ।

अन्यान्य वस्तु : (लाबा भुजनिहारिक)-ब्लाउज, साया, चूड़ी, लहठी, अलङ्करण,अन्य सामग्री- (विभवानुसार)- यथा थारी-लोटा ।

अन्यान्य वस्तु : (लाबा भुजनिहारक)- अण्डरवीयर, गंजी, कुर्ता, चद्दरि (डोपटा), पाग, अलङ्करण, उपहार, अन्य सामग्री (विभवानुसार) यथा मोबाइल, कैल्कुलेटर, कम्प्युटर ।

(७) **कुमरम में गोसाउनिक पूजा पृथक-पृथक वंशमें भिन्न-भिन्न तरह स होइछ। एक सामान्य रूप एना अछि** :-

कुमरम मे गोसाउनिक पूजा : सिरहर पर लाल साड़ी, लहठी आ सिन्दूर–टिकुली

फूल आ फूलक माला	अँचरी (आँचर)
बेलपात (बिल्वपत्र)	कटोरी (अँचरीक) (पुरान आ नव)
केरा क पात	झाँप
गंगाजल	पाट
दूध (गाइक)	धूमन
घी ('')	अगरबत्ती/दियासलाइ
तिल	नैवेद्य
जव	लड्डू
मखान	पाकल केरा
मरीच	चिक्कस (आँटा) (पूरी क
पान (छुट्टा ओ लगाओल)	हेतु) आ खीर (तस्मै)
सुपारी (भाँगल)	कडू तेल
सिन्दूर/पिठार	छागर/पाठी/मधूर
कर्पूर	(इच्छानुकूल)
अँकुरी (केरावक)	संकल्पक द्रव्य
गुड़	दक्षिणाक द्रव्य
चीनी	इत्यादि, इत्यादि।
अरवा चाउर	

(८) **कुमरम में विविध विधि :**

दही	विधि
हरदि	आ बिहारि-बसात बान्हक
बाँस क पात	सुपारी, डोरा आ पैसा

प्याली (माटिक)-४
चूड़ा, बूट (फुलाओल) आ
नारिकेरिक तेल।

(९) **कुमरम में विविध वस्तु :**

तामा	कोनी-बेनी (रंगीन)
कठौत	धान (लाल)
उखरि	धान क मोढ़ि
मूसर	चुल्हा (माटिक)
सपरी	करची (काँच)
हैंठी	केराक कोषा (वेदी लग)/केराक पात
कोनियाँ (रंगीन)	केराक छोट गाछ
चँगेरा	सूप
चूड़ा	फूल
चानन	कोहा-२ (लावा भूजय में आ देवता पितर न्यौतै में)
घैल-२ सिरहर (भगवती लग आ कोबर में)	नव थारी
हाथी (माटिक)	सिन्दूर
हाथी के उपरका पुरहर (सूगा सहित)	सोहगैली
शनिक काठी	साहीक काँट
पातिल – २ टा	साँख/सन
ढकना-२/सरवा	डोरि
दीप (चौमुख)-२ टा/श्री दीप	गुआमाला
काछुक (कछुवाक) खपलोइया	बेरसरि झप्पा, आदि

कन्याक हेतु (सिउँथ न्योतवा काल) :-

पुतली	केचुआ
साया	रीबन
नारि चुमेनाई	

वेदीक हेतु :- बाँसक छिपाठी पर केराक कोषा आ होमक लकड़ी ।

विवाह दिन : वरियातीक नगर-विश्राम स्थान पर वरियाती पहुँचला पर स्वागत में :-

इजोत	जग/मग	विस्कुट
सिगरेट/बीड़ी	सतरंजी	गिलास-४-५
चाय-काँफी (जाड़में)	दिया सलाइ	जाजिम ।
साबुन (हाथ धोयवाक)	कोल्ड ड्रिंक्स (गर्मी में)	
दू पैघ बाल्टी जल	पान-सुपारी-ज़र्दा	

(१०) मड़वा पर अरिपनक पुरौंत : अरवा चाउर आ रुपैया ।

(११) दीप लेसिनिहारिक वस्त्रादि : साड़ी-१, ब्लाउज-१, साया-१ आ चूड़ी/लहठी ।

(१२) मातृका पूजा :

चानन-चनरौटा	दिया सलाइ	सुपारी (१९ टा आ भाँगल)	गंगाजल
फूल/माला	बेलपात/तुलसीपात	मधूर/केरा	दूध/घृत (गाइक)
अक्षत	दीप	सिन्दूर	सुपारी (भांगल)
तिल	अरवा चाउर	केराक पात	कर्पूर
जव (जौ)	कलश (जल भरल, पाइ आ सुपारी)		
दूभि	गोबर (गाइक)	गुड़/चीनी घी	धूमन/अगरबत्ती
मधु	पान (छुट्टा १९ टा ओ लगााओल)	आसनी	
फल-फलहरी	पुरोहितक भोजन, पुरोहितक भोजन दक्षिणा, पुरोहितक पूजा दक्षिणा।		

(१३) **आम-महुक विवाह** : आरतक पात आ नरी (लाल ताग), सुपारी, अरवा चाउर, सिन्दूर आ पिठार ।

(१४) **जन-सम्वाद वाहकक भोजन** : जे वरियातीक लेल बनल होइक अन्यथा चूड़ा, दही, चीनी आ अँचार ।

(१५) **वरियाती परिछनिक हँकार** : गाम में आ परिछनि (सरियाती द्वारा) केनिहारक पाग, डोपटा (चद्दरि), आमक पल्लव, सोवर्णा (जल पूरित) आ पेट्रोमेक्सक व्यवस्था ।

(१६) **दरवजा पर वरियाती के पायर धोआएब** : धोऔनिहार-कन्याक भाय आ खवास वा हजाम, सामग्री-दूध, जल, अँगपोछा (तौलिया) आ अढ़िया ।

(१७) **वरियातीक सम्मान** :

गुलाब जल	पान, सुपारी, ज़र्दा (विविध)
अतर/सेन्ट/स्प्रे	पान-मशाला
जलपानक पैकेट	सिगरेट-बीड़ी
चाय/कॉफी/कोल्ड ड्रिंक (गरमी में- अर्थात् शर्वत इत्यादि)	दिया सलाइ इत्यादि ।

(१८) **शाँकरक हँकार (वरियाती के) आ शाँकर नेनाइ** :- खवासनी हाथी-जानक डाला आ कलश (जल पुरित) ल क ।

(१९) **वरक परिकामिनी** :

डेराडोरि चादर (रेशमी वा सूती-गर्मी में) (ऊनी-जाड़ में)

धोती (साधारण) १ जोड़ मौजा (पायताबा)

पहुँची	कलम (**अनिवार्य;** आओर किछु हो वा नहिं)
चानन	औंठी (अँगुठी-सुवर्ण)/जंजीर (चेन-सुवर्ण)
काजर	घड़ी
माला	जूता/चप्पल (कारी नहिं)
जांघिया (अण्डर वीयर)	रेडियो
गंजी	टी.वी.
कुर्ता	मोटर साइकिल/स्कूटर
रुमाल	" (विभवानुसार)
डोपटा (चद्दरि) (लाल रंगक गोटा-किनारी लागल)	कम्प्युटर (विभवानुसार)

ब्रीफ़ केस/**सूट केस**/**वी०आइ०पी० :** (जाँघिया (अण्डर वीयर), गंजी, सूट, सफ़ारी सूट, टाइ, रुमाल, तौलिया (बड़का आ छोटको), ऐना, कंघी, स्नो, पाउडर, सुगन्धित तेल, साबुन (स्नान/कपड़ा), तास, टॉर्च, कैलकुलेटर, शेविंग सेट, कैमरा आ अन्यान्य सौन्दर्य प्रसाधन आ सामग्री (विभवानुसार)।

(२०) वर क परिछनि (स्त्रीगण द्वारा) सामग्री :

काछु (कछुआ)क खपलोइया	अरवा चाउरक ठक-बक-१ टा
बाती (टेमी)	अरवा चाउरक मुठरा- ५ टा आ दाबि
आमक पात- १० टा	चानन/रोड़ी
गोबरक ठक-बक १ टा	काजर
गोबरक मुठरा - ५ टा	पान (लगाओल) जल (लोटा में)।

(२१) वर चारि बेर मड़वा घूमि क कोवर जयताह जतय नैना योगिन (चारि टा डाली में अरवा चाउर, सुपारी आ रुपैया ल क) होयत आ कनियाँ चीन्हय वला (कन्या निरीक्षण) विधि होयत।

(२२) वर कोबर सँ बाहर, आँगन में आवि (पटिया पर पाँचटा छुट्टा पान बिछाओल रहत) पन-विछिक विधि करताह ओ ओतहि बाँसक सीढ़ी पर नहछू होयत आ वर अठोङर करताह (हजाम वरियाती स माँगि क आठ टा रंगल सुपारी आ लाल तागक नरी अनताह)।

(२३) तकरा बाद वर मड़वा पर औताह आ धोती बदलि कैएक टा मंत्र पढ़ताह जे पुरोहित पढ़ौथिन तकरा बाद गोत्राध्याय क हँकार देल जेतैन्ह (वरियाती के)। ता वर कैं डेराडोरि, धोती (खूब बढ़ियाँ)-१ जोड़, पहुँची आ जन्म-गेंठ (सुपारी ५, हरदि ५, दूभि ५ आ नगद ५/-) देल जेतैन्ह। कन्या कैं गहना पहिरा मड़वा पर आनल जायत।

विशेष द्रष्टव्य कतहु-कतहु वर गोत्राध्याय स पूर्वहिं वेदी लग जाय पहिने अग्नि प्रज्वलित क॑ अबैत छथि तखन मड़वा परक विधि प्रारम्भ होइत छैन्ह।

(२४) गोत्राध्यायक हँकार (वरियाती कैं) : एक व्यक्ति पाग, डोपटा, सोवर्णा में जल ल क आँगनक प्रवेश-द्वार पर ठाढ़ भ क वरियाती लोकनिक आगवानी करथि।

मड़वा पर :-

मधुपर्क (थारी में दही, दूध,	चानन
घी, मधु आ चीनी द क)	केराक पात
संख	धूमन
तिल	अगरवत्ती
जौ (जव)	पान क पतौड़ा (बरियातीक हेतु)
अक्षत	

गोत्र—प्रवराध्यायक बाद वरियाती लोकनि कैं चाय-पान दरवजा पर।

(२५) **सिन्दूर-दानक सामग्री** (वेदी लग) (वरियाती स माँगि क)

साँख	पुतली	सोहगैली
साया	सन	लाबा
सपारी	कोनी-बेनी	शनिक काठी
पुरैन-पात	साहीक काँट	तामा (काठक वा द्रव्यक) (दुर्वाक्षत आओर चुमाओनक हेतु)
लहठी	गुआ माला	केचुआ

बेरसरि झप्पा दही, जल आ केरा (चुमाओनक हेतु)

लाल धान/दूभि/अक्षत (दुर्वाक्षत आओर चुमाओनक हेतु)

(२६) **घोघट के हँकार** (दरवजा पर वरियाती के) : (एक व्यक्ति पाग, डोपटा, सोवर्णा में जल ल क आँगन के प्रवेश द्वार पर ठाढ़ भ वरियातीक आगवानी करथि)।

मड़वा पर :-

(क) खाली डाला, धूमन, अगरबत्ती, अक्षत, दूभि, धान, तामा

(ख) ज़खन गहना चढ़ि जाय तखन घोघट देनिहार के हँकार (वरियाती में) आ

(ग) लोटा में जल आ पीढ़ी (घोघट देनिहार के पैर धोयबाक हेतु)। **घोघट**।

(घ) घोघट भेलाक बाद दुर्वाक्षत आ पान क पतौड़ा (वरियाती के) देल जाय।

(२७) **वर क चुमाओन** (स्त्रीगण लोकनिक द्वारा) आ कोवर जायब। कोवर जाय पटिया झाड़ब आओर आन-आन स्त्रीगणक विधि।

(२८) **वरियातीक भोजन** : एक साँझ/दू साँझ/तीन साँझ - जेना जे व्यवस्था रहय। यदि दू साँझ, त :- प्रात भेने-प्रातः कालीन दातमनि/टुथ पाउडर/टुथ पेस्ट, साबुन (स्नान / कपड़ा), सुगंधित तेल, ऐना, कंघी, जलपान, चाय-बिस्कुट, पान-सुपारी, सिगरेट आ दिया सलाइ (वरियाती के) देल जाय।

(२९) **वरियातीक भोजन (सौजन्य) (दिन में)** : जेना जे व्यवस्था रहय।

सौजन्य भोजन में सामान्यतया : भात, दालि, तरकारी (विविध), घृत अदौरी, बड़ी, माछ/मांस, दही, चीनी तथा सकरौरी होइछ।

(३०) **वरियाती क विदाइ** (सूची सामग्रीक) : शाँकर आ दक्षिणा; प्रति (थारी, लोटा, बाटी, गिलास; भातक बासन, दालिक बासन, अढ़िया, तमघैल, बाल्टी, लोहिया, छोलनी, करछु, पिकदानी) वा मूल्य आ दक्षिणा; गाय/महिष/बरद वा मूल्य आ दक्षिणा; सोहागक वापसी किछु अपना तरफ स द्रव्य मिला क; समधि विदाइ; समधि (मातृ पक्ष) कैं फराके विदाइ; कन्यादान कैनिहार (दक्षिणा स वृहत्), आन-आन घरवासी (आँगन क) वा पट्टीदार; गहना क वापसी; पाथेय आ खवासक बिदाइ।



(ग) चतुर्थी-सूची सामग्रीक

(१) **चतुर्थी दिन** : पूजाक सामग्री; भगवती के पातरिक सामग्री; आ वर क सामग्री {(डेराडोरि-१, जँघिया (अण्डर वीयर)-१, पहुँची-१, धोति-१ जोड़, गंजी, कुर्ता, पाग, डोपटा (चद्दरि)}, इत्यादि ।

(२) **चतुर्थीक राति** : यदि वर भोज-भात करय चाहथि आ ताहि अनुसारे खर्च देथि त भोज-भात आ गोला पूजाक आयोजन होअए। ओना वर द्वारा दातव्य होइछ :-

सिरहर	पटिया झड़ाइ
सिरा सलामी (सिरागू)	चतुर्थी (भोज-भातक हेतु)
पालो तर	गोला पूजा (दीवान जी लोकनिक सँझुका पेय)
नैना-योगिन	थारी उनटयवा काल (सार वर्गक हेतु)
कारा (कन्याक मायक)	कोवर-माँड़व (खवासिनक)
विधिकरी	पुरोहितक दक्षिणा (चतुर्थी पूजाक)
देहरि छेकाओन	सवारी भाड़ा
जूड़ा खोलवाक	कन्या-विधि (वरक तल्लुक) ।

(घ) सूची विवाह सामग्रीक

(१) **अन्नादि :**

चाउर (अरवा)	धान
चाउर (उसना)	धान (लाल)
दालि (राहड़ि)	चिक्कस (आँटा)
दालि (बूट)	सुज्जी
दालि (मूँग)	मैदा
गहूम	बेसन (बूटक/मूँगक)
चूड़ा	उड़ीद (अदौरीक)।

(२) **मसालादि :**

हरदि	जमाइन	स्याहजीरा	पोस्ता दाना
धनी	सोंठि	किचेन मसाला	कस्तूरी मेथी

जीर	जाफ़र	मीट मसाला	जलजीरा
मरीच	हींग	काश्मीरी मिर्च	पँच फोरना
सोंफ	सरिसव	जयपत्री (जावित्री)	अराँची (इलायची) (बड़की)
लौंग	मूँगफली	पिस्ता	" " (छोटकी)
दालचीनी	तेजपात	" बादाम	शीतल चीनी (कबाब चीनी)
मेथी	केशर	काबुली बदाम	मिरचाइ (सुखाएल)
मंगरैल	अमचूर	चिरौंजी दाना	अन्यान्य।

(३) **दूध - दही आदि** :

दूध (दहिक हेतु)	दूध (गाइक) (पूजा पाठक हेतु)
" (छेना/मधूरक हेतु)	पनीर
" (चायक हेतु)	मक्खन
,, (सकरौरीक हेतु)	इत्यादि ।

(४) **झोरक वस्तु** (तैयार करवाक)

अदौरी	सजौरी
तिलौरी	मुरौरी
दनौरी	बड़ी
कुम्हरौरी	इत्यादि ।

(५) **तेलादि** :

सुगन्धित तेल	घी (शुद्ध)
कड़ू तेल	डाल्डा
मटिया तेल	धारा (रिफाइण्ड) आ अन्य ।

(६) **मेवादि** :

किसमिस	काजू
छहौड़ा	कास्टर्ड (पैकेट)
नारियल	अन्य।

(७) **फलादि** : पाकल केरा/सेव/अंगूर/मखान आ अन्यान्य।

(८) **मधूरादि** : रसगुल्ला, पैनतोवा (गुलाब जामुन) आ अन्यान्य।

(९) **अँचारादि** :

तिल	आलू
आद	मिरचाइ
आम	धात्री (औरा)
अमड़ा	सजमनि (रायताक हेतु) आ अन्यान्य।

(१०) **सलादक सामग्री** :

टमाटर	आद	चुकन्दर
प्याज	मुरै	बन्धा गोभी
खीरा	नेबो	बतिया (ककड़ी)
गजरा	सेव	अन्यान्य।

(११) **मत्स-मांसादि** : माछ/मांस/मुर्गा।

(१२) **रंगादि** : हरियर/केसरिया/पीयर (बसंती) (नारंगी)/चम्पइ/ लाल/ गुलाबी, इत्यादि।

(१३) **विविध वस्तु** (सामग्री) :

पापड़ (लिज्जत/हल्दीराम/बिकानेर/अन्य) मीठा सोडा

खैर (कथ)	खावर सोडा
सुपारी (सौंस)	तबक (पान)
सुपारी (भाँगल)	तबक (मधूर)
नीमक (सामान्य)	खीराक बीया
" (सेन्धव)	मखान
" (काला)	चाय पत्ती/कॉफी
आमिल	दिया सलाइ
मटर (हरा) पैकेट	पात (सामान्य)
चीनी	" (थारी)
तेखुर	" (बाटी)
हाइड्रो	छेना-पानी

छेना कपड़ा (मारकिन)-३ मीटर।

(१४) **व्यञ्जनादि (तरकारी सब)** :

आलू	लहसून
कोबी (फूल)	साग
कोबी (बन्धा)	ओल
कोबी (ओल)	मखान
परोड़	मिरचाइ (हरियर)
राम झिंङुनीं (भिण्डी)	धात्री (औरा)
सजमनि	धनीक पात
कदीमा	काँच आम
काँच केरा	नेबो (कागज़ी)
पाकल "	" (जमीरी)
भाँटा (बैगन)	कटहर
खम्हारु (तडुआक)	मुरै
टमाटर	आ अन्यान्य (अपना पसिन स)।
प्याज	

(१५) **डोमक बासन** : कोनी-बेनी/पौती-पेटार/बीयैन/चँगेरा-चँगेरी/ डाला-डाली/कोनियाँ (रंगीन)/अखरा छिट्टा/अन्यान्य।

(१६) **कुम्हार क बासन** :

कोहा-३+	ढकना-२
तौला-५+	मटकूरी-५
खोंर -३+	प्याली
घैल-२+	दीप (सामान्य)
हाथी-१+	दीप (चौमुख)
पुरहर (सूगा सहित)	कोसिया-५
पातिल-२	अथरा (छाँछ)-३
पुरैन-पात	अन्यान्य।

(१७) **हजामक सामग्री** : आमक पात/नहरनी/आ तूर (रुइ)/जौर ।

(१८) **जन क हेतु सामग्री** (मड़वा बान्हक): खरही/खढ़/जौर आ बाँस।

"टेन्ट हाउस स"

(१९) सामियाना/कनात/त्रिपाल/पण्डाल/पण्डाल (वाटर-प्रूफ)।

(२०) वर्तनादि :

टोपिया (झँपना सहित) (बड़ा)	गमला
" (" ") (छोटा)	डब्बुक
नाद (कड़ी) (बड़ा)	ट्रे (परात)
" (") (छोटा)	ड्राम (पानी का)
कराही (बड़ी)	जग (मेटेल)/जग (प्लास्टिक)
" (छोटी)	मग (") /मग (")
करछुल	कप (चीनी मिट्टी)/(पियो-फेंको)
छोलनी (बड़ी आ छोटी)	गिलास (मेटेल)/शीशा/(पियो-फेंको)
बाल्टी (" " ")	इत्यादि ।

(२१) **चुल्हादि** : चुल्हा (माटिक/ईंटाक/गैसक)/जारन (पत्थर कोइला;चार कोल)/सिलिण्डर (गैसक)/**जेनेरेटर** ।

(२२) **पारिश्रमिक** : कुली/मजदूर/जन/कारीगर (हलुवाइ) ।

(२३) **भाड़ादि** : मकान (रहबाक आ विवाह-स्थल)/विविध सवारी/आ विविध ट्रान्सपोर्टसनक ।

(ङ) वर क विदाइ—सूची सामग्रीक

(१) वरक विदाइक हेतु सामग्री :

डेराडोरि – १	मौजा (पायताबा) – १ जोड़
जँघिया (अण्डरवीयर) – १	तकिया क खोल – १ टा
धोती (बढ़ियाँ) – १ जोड़	खूँटक झाबा
गंजी – १	तौलिया – १
कुर्ता – १	डोरि (कोनटा में)

डोपटा (चद्दरि) (सूती/ऊनी) – १	पहुँची
रुमाल – १	जूता/चप्पल – १ जोड़
थारी – १	कम्बल – १
लोटा – १	सतरंजी – १
बाटी – १	बिछाओनक चद्दरि – १
गिलास – १	तकेया – १
चम्मच – १	धोती (सामान्य) (विदाइक) – १ जोड़

साड़ी (वरक संग-हुनका मायक हेतु) – १; भार (विविध सामग्रीक)।

(२) ब्रीफ़ केस : (अन्दर के सामान सहित) जेना विवाह में देल गेल छैन्ह (कृपया एहि हेतु विवाहक लिस्ट देखू) ।

(३) डालाक सामग्री :

धान	रुमाल – १
बाटी – ५ टा	तकेया खोल – १
मधूर (पाँच तरहक)	तामा (पितरक) – १
काचक गिलास – १ (चीनी भरल)	ऐना – १
फूलक " – १ (" ")	कंघी – १
पान (ढोली) – १	सुगंधित तेल – १ शीशी
सुपारी (लाल में रंगल) – ५ टा	साबुन (स्नान/कपड़ा)- (एक-एक)
बाटी (पिठार भरल) – १	छाँछ (दही भरल) – १

(४) बिखजी :

चूड़ा – १ चँगेरा	तड़ल (तरुआ सब) :-
पक्वान्न :- टिकरी (खजूर)	आलू
पिडुकिया	कोबी
निमकी	पड़ोर
मखान (चीनी में पागल)	सजमनि
सुखबड़ी	कदीमा

चँगेरी (बिखजी क)/इत्यादि, इत्यादि ।

(५) भार (विविध वस्तुक आ विभिन्न संख्या में विभवानुसार) ।

(च) **द्विरागमन-सूची सामग्रीक**

(१) वरक सब सामग्री (डाला, बिखजी सहित) : वरक विदाइये जकाँ एहू में।

अतिरिक्त ताहि स :-

(२) पेटार में :-

थारी	चाय पत्ती
बाटी	चीनी
लोटा	साड़ी-१ (वरक मायक हेतु)
गिलास	जलपानक छिपली
कैश रौल (रोटीक)	" लोटकी
हाँसू	" गिलास
करछु	छोलनी
छूरी	कैंची
सरौता	दाबि
रही	चकला
बेलना	साँच
कद्दूकस	चाउर
दालि	तरकारी (विविध) (काँच)
मसाला (विविध) (पैकेट में) (साबुतो आ पिसलो)	
जाफ़र	हींग
पापड़	तिलौरी
दनौरी	अदौरी
फुलौरी	चिप्स।
बेसन	

(३) **पूजाक पेटी में** :- (सामग्री)

छिपली	कटोरी
धूपदानी	अगरबत्ती

चानन	अगरबत्ती स्टैण्ड
*तौलिया (मुहँ पोछनाक) (मुहँ पोछना क पेटी में)	
" (पूजा क)	
चनरौटा	रामायण
हनुमान चालिसा	गीता
सुन्दर काण्ड	सूर्य पुराण
मिसरी (डिब्बा में)	किसमिस (डिब्बा में)
लोटकी (पूजाक)	आसनी।

(४) **मुँह पोछनाक पेटी में** :-

*तौलिया (ऊपर लिखल)	स्नो
ऐना	पाउडर
कंघी	आलता
करछुल्ली	नेल पालिश
सुगंधित तेल	साबुन (स्नान/कपड़ा)।

(५) **विविध सामग्री** :-

कीचेन सेट	बेड होल्डाल (दुजनियाँ) (डबल बेडक)
अढ़िया (पैर धोयवाक)	पलङ्ग (") (")
बाल्टी (पैघ) (स्नानक)	टेबुल
चौकी (काठक-छोट) (स्नानक)	,, (ड्रेसिङ्ग)
गोबरौर (निपिया हेतु)	,, (डाइनिंग)
चुल्हा (गैस)	कुर्सी
प्रेशर कूकर	सोफा
टी सेट	आलमारी
शर्वत सेट	पालट के साड़ी-१ खण्ड
आयरन (प्रेस)	भड़फोरीक साडी -१ खण्ड
स्टोव	अलावे परिवार में लोकक कपड़ा

सिलाई मशीन	वरक विदाइक धोती-१ जोड़
पंखा (बिजली)	द्विरगमनियाँ वरियातीक विदाइक धोती-१ जोड़
मछ्ही लोहिया	इत्यादि , इत्यादि ।

,, छोलनी

,, करछु

कम्बल (दुजनियाँ)(डबल बेडक)

सतरंजी (") (" ")

जाजिम (") (" ")

तोशक (") (" ")

चद्दरि (ओढ़वाक)– २ टा

सीरक (रजाइ) (दुजनियाँ)(डवल बेडक)

मशहरी (दुजनियाँ) (डबल बेडक)

(६) **महफा मे** :

थारी – १	लोटा – १
" में पू (पूआ) – ५ टा	बाटी – १
छोट पौती – १	गिलास – १
गुड़	सिन्दूर (माली में)।

(७) **भार** :- विविध वस्तुक आ विभिन्न संख्या में (विभवानुसार) ।



(छ) विवाह (वरक)-सूची सामग्रीक

(मात्र 'कन्या'क विवाह स 'अन्तर'क पूर्ण विवरण)

(१) **पसाहिन** : वरक डेराडोरि आ धोती - १ जोड़ ।

(२) **कुमरम** : वर के दोस्तारकक पीयर वस्त्र ।

" " डेराडोरि आ धोती - १ जोड़ ।

(३) **विअहुतलि सामग्री** :

शांकरक थारी (चीनी आ सुपारी - ५ सहित) आ साड़ी, ब्लाउज़, साया, सिन्दूरक पुड़िया आ नगद

सिरहरक सुपारी - १ आ नगद

अठोङ्गरक सुपारी (लाल रंग में रङ्गल - ८) आ नरी (तागक लाल रंगक) विअहुतलि साड़ी, ब्लाउज़, साया, लहठी आ सिन्दूरक पुड़िया

डाला - १, बोहनी - २, अरवा चाउर आ लाबा

टारी में गाइक घी - ५० ग्राम

साँख, सोहगैली, गुआ माला, बेरसरि झप्पा, सन-सैनी, सुपारी, सोन, ऐना, कंघी, कीया (सिन्दूरक), कोनी-बेनी, मटिया सिन्दूर - २५० ग्राम, डोरि (लाल) - २५ (पीयर) - ५

घोघट के साड़ी (पटोर), ब्लाउज़, साया, लहठी, गहना- सोन/ चानी, सोहाग (नगद) आ सिन्दूरक पुड़िया आ गहना वापसीक सिन्दूरक पुड़िया।

वर (विवाहक हेतु विदा होयताह) :– पहिरि क :

डेराडोरि, जँघिया, मौजा, धोती, गंजी, कुर्ता, लाल डोपटा, मौर, रुमाल, हींग, सेन्ट, लोटा, गिलास आ बिछाओन ल क ।

वर के विदा करू :- पीढ़ी, चुमाओनक डाला, पुरहर-पातिल, दहीक छाँछ, पान (छुट्टा)- ५, सुपारी - ५, तामा में दूभि-धान, राइ-जमाइन, हावा-बसातक डोरि, चूड़ा-दही आ चीनी ।

(४) **वरियाती प्रस्थान क गेला पर :-** सिरहर भरनाइ आ दीप लेसनाइ

गुड़ौंध :- दश टा ऐहब-शूहब के चूड़ा, दही आ गुड़क भोजन।

बघड़ौंछ : (प्रात भेने) उपरोक्त व्यक्ति सब कैं खीर, पूड़ी, दालि, भात आ तरकारीक भोजन।

(५) **चतुर्थी** :

कनियाँक साड़ी	बिधिकरी
ब्लाउज़	कारा (कन्याक मायक)
साया	नैना योगिन
लहठी	पटिया झड़ाइ
सिन्दूरक पुड़िया	कोवर-माँड़ब (खबासिनक)
अन्य प्रसाधन/ब्रीफ केस	देहरि छेकाओन (सारिक)
कनियाँ मायक साड़ी	चतुर्थी (भोज-भातक हेतु)
	गोला पूजा (दिवानजी
नगद :-	लोकनिक सँझुका पेय)
सिरहर	थारी उनटावय पर (सार वर्गक हेतु)
सिरा सलामी (सिरागू)	पुरोहितक दक्षिणा
पालो तर	सवारी-भाड़ा
जूड़ा खोलक	कनियाँ-विधि

(६) **वरियाती गेनिहारक** : भोजन आ सवारी संग में बाजा-गाजा, लाइट आ सजावट।

(७) **बाट क हेतु** : चाय, जलपान, सिगरेट, सलाइ, इत्यादिक हेतु फुटकर खर्चक हेतु पोख़्ता नगद।

(८) **द्विरागमन** :

दही-माछक भार	कनियाँ मायक हेतु साड़ी
सिन्दूरक पुड़िया	सवारी
मधूर	राह-खर्चक हेतु नगद
द्विरगमनियाँ साड़ी	इत्यादि।

(९)**सारक विदाइ** :

वस्त्र, पाथेय आ राह-खर्चक नगद।

१० **खवासनीक विदाइ :**

वस्त्र, पाथेय आ राह-खर्चक नगद।

एक प्रार्थना

किम्बदन्ति अछि जे मात्र तीन कोस पर भाषा आ सामाजिक विधि-व्यवहार में अन्तर पड़ि जाइछ। दोसर अनभिज्ञता क कारणें ई सूची पूर्ण नहिं भेल अछि। समाजक स्त्रीगण लोकनि कैं धन्यवाद जनिका लोकनि स सूनि क आ पूछि क एहि सूचीक कोनहुना निर्माण कैलहुँ अछि। हमर प्रार्थना जे अपन भिज्ञता आ अनुभव-दक्षताक आधार पर एकरा परिपूर्ण कै लेल जाय आ हमरा द्वारा एकरा निर्माण में भेल अनेकानेक त्रुटिक हेतु हमरा अनपढ़ आ अनभिज्ञ जानि क्षमा कयल जाय। कृपया भनसिया (कारीगर) स पूछि क वस्तु सबहक मात्रा निर्धारित कयल जाय, ई हमर दोसर प्रार्थना।

खेराजपुर (दरभंगा)

२५ मार्च सन् १९८५ इ०। **कमलधर दास**

(ज) बटसावित्री-सूची सामग्रीक

काजर पहिरि स्नान, पटोर पहिरव नहाय खाय- अरवे-अरवाइन ।

गौरी नैवेद्य :- पान छुट्टा (एक टा पर हरदिक गौर बना क) पक्वान्न (ठकुआ, चौकठी, घुमौआ (जिलेवी जँका गोलका) फल-फलहरी (आम, लीची (अनिवार्य), सेव, नारङ्गी, लताम, केरा आदि)

बोहनी माटिक (ताहि में उड़ीदक वड़ के माला)

बोहनी माटिक २ (कनियाँ-पुतरा लेल) कनियाँ (कपड़ा के) बोहनी वाली १ जोड़ दोसर सादा १ जोड़ बूट (फुलाओल-अंकुरी), पान-सुपारी, पातिल (अरबा चाउर युक्त), माली में सिन्दूर घोरल, लहठी (पातिल में), धान के लाबा, वीयनि-५ (बाँस के), वीयनि-कनियाँ (कपड़ा)-५ (कागज के), डाली-५ (बाँस के), फूलडाली (बाँस के)-१

बस्त्रादि : कनियाँ-नूआ (साड़ी), साया, ब्लाउज़ (आङ्गी); कनियाँक माय/सासुक लेल साड़ी

विविध (श्रृंगारक) : ऐना, कंघी, तेल (सुगन्धित), साबुन (देह/वस्त्र), आलता, नेल पालिश, बिन्दी, क्रीम, पाउडर आ अन्य प्रसाधन ।

भार (विभवानुसार) : पक्वान्न (ठकुआ, पिड़ुकिया, खजूर, अंकुरी, इत्यादि), मधूर (जे सम्भव हो), फल (केरा, आम आ लीची), चूड़ा, दही, चीनी ।

इति ।

(झ) मधुश्रावणी-सूची सामग्रीक

काजर पहिरि स्नान, पटोर पहिरव नहाय खाय- अरवे-अरवाइन

गौरी नैवेद्य : पान छुट्टा (एक टा पर हरदिक गौर बना क) पक्वान्न (ठकुआ, चौकठी, घुमौआ (जिलेवी जँका गोलका) ७

फल-फलहरी (आम, सेव, नारङ्गी, लताम, केरा आदि)

बूट (फुलाओल-अंकुरी), पिठार (पीसल) कटोरी में/पान-सुपारी, मानक पात पर १०८ नाग (लिखि क) मानक पात पर १४ टा फूल (पीसि क), सिन्दूर (घोड़ि क), चानन (घसि क), काजर (पारि क), कुसुम के फूल (पीसि क), मेंहदी (पीसि क), फूल (ओरहुल, गुलाब, कनैल, तग्गड़ पीसि क), हरदि (पीसि क घोरल), अन्यान्य फूल सब जे उपलब्ध हो (पीसि क)

डाली-७ (एक टा डाली पर अंकुरी, अरवा चाउर, धानक लाबा, जमीरी नेबो, पाइ-चनाइ के)

पनपथिया-७, कोसिया-१४ (सात टा में दही पौड़ल आ सात टा धानक लाबा भरल), छाँछी-१ (दही युक्त) (चनाइ के) मटकूरी (बैरसी)-१ (दही युक्त) (चनाइ के), जाही-जूही (सब फूलक पात, बाँसक पात)

रुपैया १५, सुपारी (गोट)-१५ आ धान, धनी (केचुआ में बान्हल)

तामा (पितरिया) में धान, धनी, दूभि, बेलक ठाढ़ि (काठी) (सोहाग मथैक)

सफरी में सिन्दूर (मटिया) आ सुपारी

कजरौटा (चानीक) में काजर पारि क

गँथवा क गारा में पहिरय लेल

पातिल में (लहठी, अरवा चाउर, गौर बनाओल, पक्वान्न सब (नैवेद्य वला), पूआ-२ (आँखि झाँपक हेतु), पान-२, आरतक पात-२ (ईहो दूनू आँखि झाँपक हेतु), आरतक पात-४ (पृथक), पान (छुट्टा)-४ (पृथक) (एहि दूनू में भूर क क ठेहुन पर दै लेल), टेमी-४ (आरतक पातक), चानन (घसि क टेमी क स्थान (ठेहुन) पर लगावक हेतु) आ सिन्दूर घोरल)।

पूजाक सामग्री : दूधक दाम आ चीनी, छीपली-१, लोटकी-१, धूपदानी-१, अगरदानी-१, दीप-१, आचमनी (चनन काठी)-१, थारी (फुलही करौतरि खाइक) आ खीर बना क ।

वस्त्रादि : साड़ी (कनियाँक)-२ (एक टा नीक, दोसर सामान्य), साया, ब्लाउज़, साड़ी (कथा कहनिहारिक)-१, आँखि झँपनिहारिक)-१ आ (टेमी देनिहारिक)-१

एहि स वृहत परिवार में आन सब स्त्रीगण आ बच्ची आ बहुत छोट बच्चाक लेल बस्त्र - साड़ी, सूट, फ्रॅाक, शर्ट-पैन्ट, इत्यादि।

श्रृंगारक सामग्री : ऐना, कंघी, तेल (सुगन्धित), साबुन (देह/वस्त्र), आलता, नेल पालिश, बिन्दी, क्रीम, पाउडर आ अन्य प्रसाधन

भार : पक्वान्न (ठकुआ, पिडुकिया, खजूर, अंकुरी इत्यादि)
मधूर (जे सम्भव हो आ जतवा व्यवस्था भऽ सकय)
केरा, आम, कटहर आ अन्यान्य जे कोनो (फल)
चूड़ा, दही, चीनी, इत्यादि।

इति ।

(ञ) कोजागरा (सूची सामग्रीक)

(१) **वरक पहनावा** :-

जँघिया (अण्डरवीयर)-१	चद्दरि (ओढ़ना) (ऊनी)-१
धोती-१जोड़	कमीज़ (ऊनी)-१
गंजी १	बण्डी (ऊनी)-१
कुर्ता (सूती) -१	कोट (ऊनी) १
कुर्ता (ऊनी) -१	रुमाल -१
मौजा (पयतावा) (सूती)-१जोड़	टाई -१
" (") (ऊनी)-१जोड़	जूता/चप्पल/आ खराम-१-१ जोड़।

(२) **खेल क सामान** :-

पच्चीसी (गोटी सहित)	कौड़ी (सामान्य)-पाँच टा
चौपड़ि (" ")	ताश
शतरंज (" ")	लूडो (विभिन्न प्रकारक)
कौड़ी (चानीक) पाँच टा	अन्यान्य (इन्डोर खेल) ।

(३) **विविध सामाग्री** :-

कम्बल (दू जनियाँ)	तेल (सुगंधित)
सतरंजी (" ")	साबुन (स्नान/कपड़ा)
तोशक (" ")	स्नो
जाजिम (" ")	पाउडर (टैल्कम)
सीरक (" ")	नेल क्लिपर
तकेआ	बेड होल्डाल
तौलिया	ब्रीफ़केश (अन्दर के सामान सहित जेना विवाह में देल गेल छैन्ह – कृपया एहि हेतु विवाहक लिस्ट देखू) ।
छड़ी	चानीक कटोरी (पूजाक हेतु)
छाता	चानीक सराय (पूजाक हेतु)
टॉर्च	" चननकाठी (" ")

ऐना	श्रीखण्ड/रक्त चानन (पूजाक हेतु)
कंघी	चनरौटा (पूजाक हेतु)।
शेविंग सेट	

(४) **डालाक सामग्री :-**

डाला - १	बाटी (फूलक) - ४ टा
रुमाल - १	पान दान - ४ टा
तकेया खोल - १	गिलास (शीशा) (चीनी भरल) - १ टा
टेबुल क्लॉथ - १	गिलास (फूल) (चीनी भरल) - १ टा
धान (कम-स-कम ५ किलो)	पान - एक ढोली।
दही - एक छाँछ	

(५) बिखजी :-

चूड़ा	मखान (चीनी में पागल)
टिकरी (खजूर)	मधूर (विविध प्रकारक)
पिडुकिया	तडुआ (विविध व्यञ्जनक)
निमकी	बड़ी पकाओल (सुख बड़ी)।

(६) **व्यवहार** : (परिवारक)

सब पुरुषक हेतु धोती

" स्त्रीगण (कन्या सहित)क हेतु नूआ (साड़ी)

" बालकक हेतु शर्ट-पैन्ट

" अन्य कन्याक हेतु सलवार-समीज (रेडीमेड) अथवा कपड़ा ।

(७) **भार-दौर** :

मखान	खजूर
चूड़ा	पिडुकिया
दही	निमकी
खाजा	लड्डू

अन्यान्य मधूर सबहक फल : केरा आ अन्यान्य फल-फलहरी, इत्यादि।

(ट) भतराइस (तुसारी)-सूची सामग्रीक

काजर पहिरि स्नान कऽ पटोर पहिरव ।

नहाय-खाय : खिचड़ी (अरवा चाउर आ उड़ीदक दालिक)

गौरी नैवेद्य : तिलवा

अनुबेर (अरवा चाउर आ उड़ीदक दालि के मिला क पीसि क रोट)।

ठकुआ (जँ निस्तार होअय त, **अन्यथा नहिं**)।

पनपथिया-५ (एक टा में फूल, माला, फल सब (केरा, सेव, नारंगी, लताम आदि)।

चौरबी (छोट कोहा में अरवा चाउर आ लहठी, सिन्दूर (माली में घोरल), पानक पात पर गौर बना क)।

कोनियाँ (छोटकी रंगीन) में अनुबेर के रोटी (जे पुजवा काल पातिल पर राखि देल जायत)।

ढेरी में पाँच टा पानक पात पर सिन्दूर (एक टा पर), सुपारी-५ (दोसर पर), तिल (तेसर पर), उड़ीद (सौंस) (चारिम पर) आ अरवा चाउर (पाँचम आ सब स निचला पर) ।

करोतरि : थारी (फूल) में आमक पातक दौना बिछा क भात, दालि, तरकारी (पहिल बेर-५), (दोसर बेर-१०), (तेसर बेर-१५), (चारिम बेर-२०) आ (पाँचम बेर-२५), बड़, बड़ी, माछ, दही, इत्यादि ।

साँझ पूजव : प्रवास : अरवा चाउर फुला क थोड़ेक हरदि आ थोड़ेक बेलपात के (पृथक-पृथक थोड़ेक चाउर में हरदि द क आ थोड़ेक चाउर में बेलपात द क) कूटि क अलगजोड़ी में राखल जाय । गोबरक ठाँव पर साँझ आ **तुसारी** (भोर क) पूजव ।

उत्सर्ग (केवल निस्तार में) : कोहा-२५, पनपथिया-२५, चौरा (पीढ़ी पर -कपड़ा स झाँपल) ।

वस्त्रादि : कुमारिक हेतु कपड़ा आ साउसक हेतु साड़ी तथा भाइक हेतु धोती ।

चारू पहर राति में चारि बेर निस्तार पूजव

कुमारि भोजन।

इति ।

गृह प्रवेश-सूची सामग्रीक

१. **वास्तु पुरुष** (लक्ष्मी-नारायण) (सुवर्ण सहित
पंच रत्नक आ मजबूत) १
पंच रत्न १
गहना (लक्ष्मी क) (यथा सम्भव)

२. **जनेउ** (नारायण ओ पुरोहित) २
डेराडोरि (पीयर) (नारायण, पुरोहित ओ गृहपति) ३

३. **लक्ष्मीक आभूषण** (विभवानुसार)।

४. **लक्ष्मीक श्रृंगार सामग्री** : सिन्दूर-१ गद्दी, बिन्दी-१ पैकेट, ऐना-१, ककबा-१, तेल (सुगन्धित)-१, साबुन (देह/वस्त्र)-२, लहठी-१ जोड़।

५. **गृह लक्ष्मीक** : सिन्दूर (सधवा)-१ गद्दी, बिन्दी (सधवा)-१ पैकेट, लहठी-१ जोड़ ।

६. **वस्त्रादि** : धोती (नारायण)-१ जोड़, धोती (पुरोहित आ गृहपति)-२ जोड़, कुर्ता (पुरोहित आ गृहपति)-२, गंजी (पुरोहित आ गृहपति)-२, अंगपोछा (गमछा) (नारायण)-१, अंगपोछा (गमछा) (पुरोहित आ गृहपति)-२, साड़ी (धरित्री लक्ष्मी)क-१ खण्ड, साड़ी (गृह लक्ष्मीक)-१ खण्ड, चद्दरि (डोपटा) (पुरोहितक)-१, अण्डरवीयर (गृहपतिक)-१, परिवार (गृहपतिक अलावे)क सब क्यौ नव वस्त्र धारण करथि त उत्तम, एकरंगा (लाल)-अढ़ाइ-स-पाँच मीटर, वस्त्र (पोपलिन-पीयर)-सावा मीटर, वस्त्र (उजर)-सावा मीटर ।

७. **चौकी** (काठक-पूजाक)-१, पीढ़ी (काठक-पूजाक)-१ ।

८. **ध्वजा (नवग्रहक)**-९, ध्वजा (हनुमानक)-१, ध्वजा टाँगक करची-१० ।

९. **रस्सी** (नारिकेरक) आ पात (आमक) - बन्दनवार बनावक हेतु, जाहि स पूरा मकान घेरल जाय ।

१०. **पंच गव्य** (गाइक दूध, दही, गोंत, गोबर आ घी)।

११. **पंच पल्लव** - आमक (जे सब कलश में पड़त), वर, पीपर, पाकड़ि आ गुल्लड़ि ।

१२. **सप्त धान्य** : तिल (कारी) – २५० ग्राम, जौ (जव) – २५० ग्राम, गहूम – २५० ग्राम, बूट – २५० ग्राम, मूँग – २५० ग्राम, साम – २५० ग्राम , केराव – २५० ग्राम , उड़ीद – २५० ग्राम ।

१३. **गाय (बाछी/बाछा सहित)** आँगन में बान्हल जाय (कम-स-कम पाँच-छौ घंटा क हेतु; यदि परमानेन्ट नहिंयो होय)।

१४. **पूजाक सामग्री** : फूल – यथेष्ठ, फूलक माला – १५, चानन : श्रीखण्ड आ रक्त, तुलसी क पात– (नीक मात्रा में), दूभि (दुर्वादल) – (नीक मात्रा में), बेलपात (बिल्वपत्र) – (नीक मात्रा में), केराक पात – ५, केराक गाछ – ५, दीप (चौमुख) – १, दीप (एकमुख) – १५, पान छुट्टा –२५, पान लगाओल – २५+... , सुपारी (सौंस) – ६५, सुपारी भाँगल – ..., लौंग – ५० ग्राम, अराँची (छोट) – ५० ग्राम, पंच मेवा – १ पुड़िया, रोड़ी (चानन) – १ पुड़िया, सर्वौषधि – १ पुड़िया, सप्त मृत्तिका (सात पुरक माटि) – १ पुड़िया, जाफर (जायफल) – १, जौ (जव) – १२५ ग्राम, अक्षत (अरबा चाउर) – अढ़ाइ किलो, उड़ीद (सौंस दाना) – २५० ग्राम, सरिसो (सरिसव – पीयर) – १०० ग्राम, धान (कलश तरक हेतु) अढ़ाइ किलो, कुश, गंगाजल, तीर्थजल (कोनो तीर्थ), पिठार, आसनी (पुरोहित, गृहपति आ गृहलक्ष्मी) – ३, मौलि – १, रक्षासूत्र – १, पटमौरि – २, अतर (इत्र) – १, गुलाल (लाल, पीयर), साकल्य (चलानी) – २ किलो, गरीगोला (सुखायल) – ३, नारिकेरि (जल भरल नारियल) – ७, गुड़ वा शक्कर – २५० ग्राम, गाइक घी – २५० ग्राम, घी (सामान्य) – ५०० ग्राम, आरतक पात – ५, मटकूरी (गाइक दही भरल) – १, कोसिया (माटिक) – १०, ढकना (माटिक)....*, कलश (माटिक) पैघ – ७ (प्रमुख प्रवेश द्वार ओ प्रमुख सयन कक्ष (गृहपतिक) जाहि में पूजा होयत) क अभ्यन्तर चारू कोन में आ बीच में पूजाक (२+५) छोट.....*) चन्दन चूर्ण – ५० ग्राम, अगर (धूप) बत्ती – ५ पैकेट, धूमन (गुग्गुल) – १०० ग्राम, धूप सरर – १ किलो,

मधु – १ शीशी, चाउरक चूर्ण –(उज्जर, लाल, पीयर आ हरियर) प्रत्येक – १२५ ग्राम, लोहाक काँटी (२") – ४, वेदी बनावक – ईंटा – २५, बालु आ चिकनि माटि – १० किलो, नव चुल्हा – १, पितरक बासन (दूध औंटवाक) – १, पितरक बासन (तस्मै रान्हक) – १, **नव घर में भानसक पूर्ण व्यवस्था**, नैवेद्य (पूजा में) : फल-फलहरी, मधूर आदि, आरतीक व्यवस्था : कर्पूर – १० पैकेट; घीक बाती; पानक पात।

१५. **विविध** : दीप.....* आ दीयठि (लावन;दीप Stand) देल जयबाक चाही प्रत्येक कक्ष (कोठली) में; खास क प्रमुख कक्ष में अनिवार्य। कलश....* – प्रत्येक कक्ष (कोठली) क प्रवेश द्वार पर छोट कलश में जल, द्रव्य, सुपारी आ आमक पल्लव पर एकमुखी दीप जरैत रहय (गृह प्रवेश आ पूजा आरम्भ होयवा स पूर्वहिं स आ भरि राति)। जहाँ-जहाँ बड़का कलश रहय ताहि में जल, द्रव्य आ सुपारी दऽ, कलश पर ढकना दऽ ताहि पर अरवा चाउर आ लाल वस्त्र में लपेट क जलपूर्ण नारियल........* पर एक मुख दीप देवाक थीक। प्रत्येक कलश थोड़े- थोड़े धान पर राखल रहय।

१६. **गृह-प्रवेश आ पूजा** में सामान्यतया गृहपति अपना सासुर स आ गृहलक्ष्मी अपना नैहर स आयल नव वस्त्र पहिरथि आ प्रवेश स पूजा तक खूब प्रसन्नचित्त रहथि। पूजा स पूर्व यथेष्ठ फलाहार (दूध सहित) कऽ लेथि जाहि स खूब मन (ध्यान स आ एकाग्रचित्त भ क) स पूजा करथि।

१७. **हवन (आरतीक पश्चात्) (नवग्रहक) सामग्री** –
घृत, जौ (जव), तिल, मधु के अलावे सुखायल लकड़ी : आम (बेसी क), अकौन, पलाश, शनि, पीपर, गुल्लड़ि, खैर (कथ), शमी आ चिरचिरी।

१८. **पुरोहितक भोजन (पूजोपरान्त)** : खूव श्रद्धापूर्वक कराओल जाय। तत्पश्चात् भोजन दक्षिणा ओ कर्म दक्षिणा तथा आवय-जाय के सवारी भाड़ा देल जाय। तत्पश्चात् हुनका पैर छूवि प्रणाम कऽ किछु दूर तक अरियाति क विदा कयल जाय।

१९. गृह प्रवेश, पूजा, हवन तथा पुरोहितक भोजनोपरान्त स्वयं से हो फेर फलाहार (दूध, चीनी, मधूर सहित) करी; आ

२०. **समाजक दश-बीस-पचीस-पचास वा अधिक गोटा कैं** स्वयं सब पात पर जा-जा कऽ आग्रह पूर्वक भोजन करावी, जे लोकनि आँगन-दरवजा पर हाथ धो (जल हेराय) घर के पवित्र करताह। अपने कैं आशीर्वाद देताह आओर शुभकामना करताह।
समाजक सब गोटे कैं पान-सुपारी दऽ सम्मान पूर्वक अरियाति क विदा करियैन्ह।

२१. तत्पश्चात् अपनहुँ दूनू गोटे भोजन करी।

२२. **विशेष द्रष्टव्य :** चर (Movable), अचर (Constant) आ द्विस्वभाव (उभय लग्न) - १२ राशिक १२ लग्न निम्न प्रकार होइछः-
चर – मेष, कर्क, तुला, मकर;
अचर – वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ; आ
द्विस्वभाव – मिथुन, कन्या, धनु, मीन।
गृह प्रवेश 'अचर' (Constant) अर्थात 'वृष', 'सिंह', 'वृश्चिक' आ 'कुम्भ' लग्न में करी।

२३. एहि सँ विशेष बातक हेतु आदरणीय पुरोहित (आचार्य) जी सँ परामर्श कयल जाय।

नोट : *चिह्नित वस्तु सबहक, आवश्यकतानुसार, गनि क, जेना जे प्रयोजनीय हो, ताहि संख्या में प्रबन्ध होयवाक चाही।

परामर्श दाता विद्वान :-
"पं० श्री रामचन्द्र मिश्र,
56/800, शास्त्री नगर,
(शास्त्री जी के पार्क से पूरव)
दूसरा रोड, अंतिम क्वार्टर,
झोपड़ी के पास, पटना।
फोन : मोबा. 9835693265
(श्री पंकज जी)''।

एकादशी उद्यापन– सूची सामग्रीक

१. **भगवान (दामोदर/नारायण)** (सुवर्णक) – १, पंच रत्न – १ पुड़िया, **लक्ष्मी (चानीक)** – १, गहना (लक्ष्मीक) – (यथा सम्भव)।

२. **जनेउ** (भगवान, ब्रह्मा, आचार्य, पुरोहित आ व्रत केनिहार– यदि पहिरैत होथि) – ५+१२, डेराडोरि (पीयर) (भगवान, ब्रह्मा, आचार्य, पुरोहित आ व्रत केनिहार) – ५।

३. **लक्ष्मीक** : सिन्दूर – १ गद्दी, कीया/सफरी – १, लहठी – १ जोड़, चूड़ी – १ जोड़।

४. **व्रतीक** (यदि सधवा) : सिन्दुर –१ गद्दी + ५ गद्दी, (निज) कीया/ सफरी – १, लहठी – १ जोड़, चूड़ी – १ जोड़।

५. **मण्डप** (काठक वा केरा गाछक), खाट (काठक वा फोल्डिंग) – १, चौकी (काठक-छोट, पूजाक) – १, पीढ़ी (काठक सवा हाथ × १ हाथ)–१, श्रुव (खैरक डेढ़ बीतक) – १ ।

६. **सखारी** (श्रृंगारक सामग्री सहित) सामग्री : ऐना – १, कंघी – १, तेल (सुगन्धित) – १, साबुन (देह/वस्त्र) – २ ।

७. **पूजा क सामग्री** : पवित्री (औंठी) – ४, अर्घा – १, चननकाठी – १, सराइ – १, पंचपात्र – १, चानन (श्रीखण्ड) – १, चानन (रक्त) – १, चनरौटा – १, गीता पुस्तक (आवरण सहित) – १

८. **वस्त्रादि** : धोती (नारायणक) – १ जोड़, धोती (ब्रह्मा, आचार्य, आ पुरोहित) – ३ जोड़, धोती (व्रत केनिहारक)– १ जोड़, धोती (सखारी में) – १ जोड़, धोती (सय्या पर) – १ जोड़, साड़ी (लक्ष्मीक) – १ खंड, साड़ी (व्रतीक) – १ खंड, साड़ी (सय्या पर) – १ खंड, साड़ी (सखारी में) – १ खंड, साड़ी (कुम्हैनक) – १ खंड, साया (लक्ष्मी) – १, साया (व्रती) – १, कुर्ती (ब्लाउज़) लक्ष्मी – १, कुर्ती (ब्लाउज़) (व्रती) – १, आसनी – ४, गमछा (ब्रह्मा, आचार्य, पुरोहित आ व्रत केनिहार)-४,

एकरंगा (कलश) - ५ मीटर, एकरंगा (पताका) - १ मीटर, कपड़ा (मारकिन-पीयर) - २ मीटर।

९. **सय्या** : कम्बल – १, सतरंजी – १, चद्दरि (बिछाओनक) – १, चद्दरि (ओढ़क) – १, तकेआ (गेरुआ) – १, तकेआ खोल – १, मशहरी – १, मशहरीक डंडा – ४, सेजबन्द – ४, खराम (पुरुष में) – १ जोड़, जूता (पुरुष में) – १ जोड़, जूती (स्त्री में) – १ जोड़, छाता – १ ।

१०. **बासनादि** : भातक – १, दालिक – १, लोहिया – १, छोलनी – १, करछु – १, अढ़िया – १, तमघैल/बाल्टी – १, थारी – १, बाटी – १, लोटा – १, गिलास – १, हाँसू – १, चकला-बेलना (स्त्री) १-१, लालटेन (लैम्प) – १, चुल्हा – १ ।

११. **पूजा क अन्य सामग्री** : कुश, तिल, जव, गंगाजल, फूल, फूलक माला – २५, तुलसी, दूभि, बेलपात, पल्लव (आमक) – ५, पंच पल्लव (आम, बड़, पीपर, पाकड़ि आ गुल्लरि) प्रत्येक ५ टा क, बंदनवार, पिठार, आसनी, मंडप, चौकी (पूजाक), श्रुव, सप्त मृत्तिका – १ पुड़िया, सर्वौषधि – १ पुड़िया, पंचमेवा – १ पुड़िया, पंच सुगंध (हटाकरण) – १ पुड़िया, किसमिस – १०० ग्राम, छहौड़ा – १०० ग्राम, नारिकेरि – १०० ग्राम, काजू – १०० ग्राम, अखरोट – १०० ग्राम, अगरबत्ती (पंचबटी वा अन्य) – १० पैकेट (उद्यापन काल तक लगातार जरैत रहय), लौंग - ५० ग्राम, अराँची (छोट) - ५० ग्राम, मधु - १ शीशी, गरीगोला - १, शक्कर - १२५ ग्राम, रोड़ी - १०० ग्राम, हरदि चूर्ण - १०० ग्राम, जाफर - ६, नारिकेरि (जलदार) - ५, मौरी - १, मौलि - १ पैकेट, पान (छुट्टा) - १९, पान (लगाओल) - ५० खिल्ली, सुपारी (सौंस) - १९, सुपारी (भाँगल) - २५० ग्राम, धूमन - १०० ग्राम, गुग्गुल - १०० ग्राम, धूप शरर - ५०० ग्राम, कर्पूर - १० पैकेट, उड़ीद (पृथक) - १०० ग्राम, सरिसो

(पीयर) - १०० ग्राम, नीमक (सेन्धव) - १ पुड़िया, रंग (लाल, पीयर ओ हरियर) - प्रत्येक ४ पुड़िया क, अक्षत (अरवा चाउर) - १० किलो, चाउर (रंगल) - १ किलो।

१२. **सखारी में अन्य सामग्री** : धोती – (पुरुष) १ जोड़, साड़ी (स्त्री में) – १ खंड, माठ, तिलबा, चुड़लाइ, श्रृंगार सामग्री।

१३. **नैवेद्य** :

फल : केरा, सेव, नारंगी इत्यादि

मिसरी, मधूर, मखान, पूड़ी (घृत स बनल), पू (घृत स बनल), तस्मै (पायस), लड्डू, चौरठ, शीतल प्रसाद, चूड़ा, दही, चीनी।

१४. **नैवेद्यक अन्य सामग्री** :

पंच गब्य	**पंचामृत**
गाइक गोंत, गोबर, घी, दूध आ दही।	गाइक घी, दूध, दही, मधु आ शक्कर।

१५. **सप्तधान्य** :

तिल - अढ़ाई किलो, गहूम - सवा किलो, बूट - सवा किलो, मूंग - सवा किलो, उड़ीद - सवा किलो, केराव - सवा किलो, साम - सवा किलो, जव (जौ) - सवा किलो।

१६. **मालिन स** : फूल, फूलक माला – २५, मौरि – १।

१७. **बरही स** : खाट (वा बाजार स फोल्डिंग) – १, चौकी (छोट-पूजाक) – १, पीढ़ी (सवा हाथ × एक हाथ) – १, स्त्रुव – १, खराम (पुरुष में) – १ जोड़।

१८. **लहेड़ी स** : लहठी (लक्ष्मीक) – १ जोड़, लहठी (सधवा व्रतीक) – १ जोड़, चूड़ी (लक्ष्मीक) – १ जोड़, चूड़ी (सधवा व्रतीक) – १ जोड़।

१९. **कुम्हार स** : द्वारपाल : जय –१, विजय –१, सुशील –१, पूर्णशील –१,

विविध : दीप (चौमुख) – ७ (५+२), कोसिया – ७ (५+२), ढकना – ७ (५+२), कलश (घैल) – ७ (प्रधान २+५), कोहा (दही) – १०, आवा (सब तरहक बासन मिला क) - २५ टा।

२०. **डोम स** : डाली – १४ (उत्सर्ग काल फल आ मधूर स युक्त), पौती (पेटार) – १, सखारी – १ (उत्सर्ग काल सब सामग्री स युक्त)।

२१. **नवग्रहक हवन के लकड़ी** : आम, अकौन, पलाश, शनि, पीपर, गुल्लड़ि, खैर (कथ), चिरचिरी, शमी।

२२. **कर्मान्त** : गोदान (गाय-पृष्टावरण सहित) वा मूल्य, गोदानक दक्षिणा, भूयसी (न्यूनाधिक)।

२३. **भोजन दक्षिणा** : ११ ब्राह्मणक।

२४. **कर्म दक्षिणा** : ब्रह्मा, आचार्य, पुरोहित।

२५. आवय-जाइक भाड़ा (जँ ब्रह्मा, आचार्य आ पुरोहित बाहर सँ भाड़ा क क आयल होथि)।

इति।

पारिवारिक (बाज़ार स कीनि क आनक) माहवारी

खर्चक-सूची सामग्रीक

माहवारी सूची बाज़ारक

चाउर : अक्षत (अरवा)
उसना
अरवा
बहारन (परवा/मुर्गी दाना)

दालि : राहड़ि/बूट/मूंग/उड़ीद/मसुरी/खेसारी/कुर्थी/राजमा/ मशरूम चूड़ा, **तिल** (कारी, उजर), जव (जौ), **नीमक** (टाटा/ताजा / अन्नपुर्णा/ कैप्टन कुक), सेन्धव आ काला नीमक, **दूध-दही, चीनी/** मिश्री/गुड़/शक्कर, चिक्कस (आँटा)/सुज्जी/मैदा, बेसन, सातु (सतुआ), मधु/अमौट, **पापड़** (लिज्जत/बिकाजी/हल्दीराम), **चायपत्ती** (लीफ़/गोल दाना/ डस्ट / रेड लेवेल/टाटा/प्रिमियम गोल्ड, लीली, लोप्चु, ब्रुक बाण्ड, लिप्टन, ताजा, इत्यादि), **अगर बत्ती** (धूप बत्ती) : चन्दन/मोगरा/गुलाब/ सुगंधी/पंचवटी, धूमन/गुग्गुल/धूप सरर/लोहवान, **अनिक** (दूध पाउडर), **सुधा** (घी पैकेट/दूध पैकेट/दही पैकेट/पेड़ा पैकेट/कलाकन्द पैकेट/गुलाब जामुन पैकेट/रसगुल्ला पैकेट, अन्यान्य), दाना (पोस्ता), तेखुर आ मखान।

मसाला : हरदि, जीर, मरीच, धनी, तजिपात (साधारण/लौंग पात), मेथी, मंगरैल, जमाइन, सरिसो (पीयर), रैंची, सौंफ, पँचफोरना, हींग, मिरचाइ, **गरम मसाला** : लौंग, अराँची (छोटकी/बड़की), दालचीनी, शीतल चीनी (कबाब चीनी), स्याह जीरा (शाह जीरा), जयपत्री (जावित्री), सोंठि, जाफर (जायफल)।

तेल : कड़ू (सरिसो / रैंची), नारियल, केओ कारपिन, तिल, चमेली, हिन्द, लाल, महा नारायण, बनफूल, नीम, तीसी, अंडी (रेंड़ी), डिठबरन, मटिया (किरोसिन), घी (शुद्ध), डालडा, धारा रिफाइन्ड,फिनाइल।

बिस्कुट : मीठा, नमकीन, नारियल, ऑरेन्ज, (अनमोलक बटर बेक) पावरोटी (ब्रेड), केक।

भूजा : मुरही (फरही), खोभी (रामदाना), चाउर, मकै, चूड़ा, बूट, धान, माढ़, मूंग-दालि, लाई, चुड़लाई, तिलबा (तिलकुट)।

टुथ पेस्ट/पाउडर : कोलगेट (छोटा/बड़ा), फोरहेन्स (छोटा/ बड़ा), पेप्सोडेन्ट (छोटा/बड़ा), केभीफास्ट (छोटा/बड़ा) लाल मंजन, **टुथ ब्रश** (अनेकानेक), खड़िका (टुथ पिक)।

वैटरी (टॉर्च) : इवरेडी, निप्पो, एस्ट्रेला, जीप, वी.पी.एल., शक्ति।

पॉलिश (जूता) : ब्लैक, ब्राउन, किवि, सी.बी. (चेरी ब्लासम)।

ट्वायलेट वाशर : हर्पिक, एसिड, अन्यान्य।

धियापुता : सेव (चिज्जी), छहौड़ा, किसमिस, चिनियाँ बादाम (मूंगफली), किसमीबार, टॉफी, चाकलेट, मधूर, अन्यान्य।

साबुन : लक्स ह्वाइट (साधारण, इन्टरनेशनल, अन्यान्य), डेटॉल, जय, रेक्सोना, हमाम, पामोलिव, पीयर्स, मोती, लिरिल, लाइफ ब्वाय, नीम, सनलाइट, ओ.के., रिन, डॉक्टर, अन्यान्य।

डिटर्जेन्ट पाउडर : सोडर (सामान्य), सर्फ, रिन, ह्वील, घड़ी, विम (VIM)।

टैल्कम पाउडर : पौण्ड्स, चन्दन, क्युटिक्युरा, **बेबी पाउडर** (जॉनसेन ऐण्ड जॉनसेन), अन्यान्य।

स्नो क्रीम : अफ़ग़ान, फेयर ऐण्ड लवली (बड़ी/छोटी), विक्को, पौण्ड्स, शेविंग क्रीम (अनेकानेक)।

श्रृंगार सामग्री : ऐना, कंघी (जनानी/मर्दानी), हेयर बैंड, हेयर क्लिप, नेल पॉलिश, लिप-स्टिक, आल्ता, रीबन, काजर, मेहदी, चानन, बिन्दी (लैक्मे आ अन्यान्य), **ब्लेड :** टोपाज, 7'O क्लॉक, जिलेट, **हेयर डाइ** (केस रंगवाक), **सेन्ट :** चन्दन, कनक, कान्ता, कदम्ब, केवड़ा, गुलाब, इन्टिमेंट, फिरंदौस, मज़मुआ, इत्यादि।

अँचार : आम, अमड़ा, कटहर, बड़हर, लहसून, परोड़, आलू, सीम, नेंबो, टुस्सी (पाकड़िक आ अन्यान्य)।

बेसनक : बड़ी, अदौरी, कुम्हरौरी, चरौरी, मुरौरी, तिलौरी, दनौरी, फुलौरी, तिसियौरी, सजौरी, मटरदाना (हरियर), सोयाबीन (न्युट्री नगेट्स, न्युट्री मील, मील मेकर, आदि) ।

तरकारी : आलू (लाल), कोबी (फूल, बन्धा (पत्ता), ओल-कोबी), परोड़, घेरा (तरोइ), भाँटा (गोल (बैंगिनी), लम्बा (बैंगिनी), हरियर (लम्बा) सुतपुतिया आ अन्य, झिंगुनी, राम झिंगुनी (राम तरोइ, भिण्डी), सजमैन (लौकी, कद्दू, घीया), कदीमा, कुम्हर (शिश कोंहरा), टमाटर, टिण्डा, चठैल (देशी), कैता, कुण्डली (कुन्द्री), करैल (हरियर/उज्जर), बोंरा, फरुहा, छीमी (मटर/केराव), गाजर, मुरै, प्याज, लहसून, डाँट, नेंबो (कागज़ी/जमीरी), धात्री (औरा), पत्थर चूर, मिरचाइ (हरियर), सीम (डेढ़वा, घिवहा, चतरा (उज्जर/हरियर), रहरिया, कवछुआ, तरुवी), मुनिगा (सोहिजन), खीरा (बालम/सोहाँस), धनी पात ।

कन्द : आद, ओल (देशी/मद्रासी), सलगम (सफेद, लाल, हरियर), खम्हाडु, तेकुना, अरबी (अरुइ/पेप्ची), सुथनी, अल्हुआ, कच्चू, केसौर, सारुख, घेंचुल, भेंट, कमलगट्टा आदि-आदि ।

साग : प्याजक, लहसूनक, आलूक पात, आलू साग, पालक, बथुआ, बूट, खेसारी, केराव, मटर, गेन्हारी, ठढ़िया (हरियर, लाल साग), चौराइ, अरिकंचन, लाउफ़, नोनी, अरवी पात, भुटका, अमड़ोड़ा, घौका, झल्ला, पटुआ, पोरो (लाल/हरियर), कुसुम, करमी (खेतवला छोटका/पानिवला बड़का), सरहँच्ची, फुटिया, दनुफ (गुम्मा), सरिसो, रैंची, कदीमाक मूरी, मेंथी, तिलकोर, सूर्यमुखी, गधपुरैन ओ अन्यान्य ।

मत्स-मांस : माछ (अनेकानेक), मांस, चिकेन (मुर्ग़ा), अण्डा (मुर्ग़ी/हाँस)।

फल : तरबूजा, तरबूजा (कजला), खरबूजा, पहलेल, फूँटि, खीरा (बालम/सोहाँस), बतिया (ककड़ी), केरा (पाकल/काँच), लताम,

समतोला (नारँगी, सन्तरा), मोसंम्मी, अँगूर, बेदाना, बैर, सरीफ़ा, आँता (सीताफल), हरफा, जलपाई, कदम्ब, पपीता, आम, कटहर, लीची, जामुन, बड़हर, सेव, सपाटू, सतालू, नाख, नासपाती, अनन्नास आ अन्यान्य ।

मेवा (सुखा) : किसमिस, छहौड़ा, नारियल, काजू, पिस्ता, बादाम (काबुली), अखरोट, मोरब्बा (पेठा), मधूर, इत्यादि ।

बिल्स : बिजली बिल आ टेलिफोन बिल, आदि ।

विविध वस्तु : गैस सिलिण्डर, बिजली बल्ब (प्लग, सौकेट, तार, इत्यादि), सूई, ताग, लहठी, चूड़ी, सिन्दूर, छूरी, कैंची, चम्मच, काँटा, हाँसू (कचिया/तरकारी/मछही), खन्ती, खुरपी, कोदारि, टेंगारी, कुरहरि, पेंचकस, करछु, छोलनी, चुट्टा (रोटी/अगितप्पा), टाकु (टकुआ), तब, टॉर्च/बैटरी, चकला, बेलना, तामा, छन्ना (दूध-बड़ा), छन्ना (चाय-छोटा), कजरौटा, तास, ताला, कद्दुकश, डोल (बाल्टी), मौनी, चँगेरा/चँगेरी, फूलडाली, पनपथिया, सूप, चालनि, कोनियाँ, पंखा (ताड़क), बीअनि (बाँसक), लालटेन (बत्ती, शीशा, बर्नर), मोमबत्ती, **बच्चासबहक :** पेन्सिल, कलम, काँपी, कटर आ इरेज़र, **कुम्हारक बासन, डोमक बासन,** घड़ीक चेन, बेल्ट (घड़ीक/डाँड़क), बटन, कुरुस, काँटा, झाडू (फूल/नारियल), दिया सलाई, गैस लाइटर, डेट्टॉल, सैवलॉन, टिंक्चर, बैन्ज्वायन जूता, चप्पल, खराम, मौजा, जँघिया, गंजी, स्वेटर, मौफलर, रूमाल, तौलिया, कम्बल, चद्दरि (ओढ़बाक/बिछैवाक), तकिया (खोल सहित) इत्यादि, इत्यादि ।

वर्तनादि : थारी, बाटी, लोटा, गिलास, तमघैल, अढ़िया, रही, सरौता, पनबट्टी, पिंकदानी, लैम्प, लोहिया इत्यादि ।



श्री गणेशाय नमः ।

जीवनक 'अन्तिम सत्य मृत्यु' (अशौच) आ श्राद्ध-सूची सामग्रीक

१. मृत्यु भेला पर (वा होइत काल) तुलसी-चौरा लग बाछीक गोबर स ठाँव क क कुश बिछा क मृतक के उत्तर सिरमें मुँह पूब दिश क क सुता दी। गाँव में कठियारी जैबाक हँकार पठा दी। दाह संस्कार क सामान जुटाबी :-

गंगोट	घृत – २५० ग्राम
गंगाजल	चानन (लकड़ी) – २०० ग्राम
मुंज (क डोरी) – ४ हाथ	धुमन – १०० ग्राम
कोहा (मभोला) – १	अगर बत्ती – १ पैकेट दिया सलाइ –१
कौड़ी – ५ टा	धूप-सरर (होमाद बनाओल)–१ किलो २५० ग्राम
तिल – २५० ग्राम	मारकिन (कनेक गप्स) कपड़ा – १४.२६ मि.

गोइठा, खढ़, भलासी, जारन (काँच; अभाव में सुखायलो)

सधवाक संस्कार में : सिन्दूरक गद्दी आ लहठी अनिवार्य।

नव बाँसक ठठरी पर मृतक के श्मसान घाट ल चली। कर्ता अपना हाथ में गोइठा पर आगि नेने चलथि। कर्ता स्वयं स्नान क क एगारह हाथक मृतक के जे नव वस्त्र देल जेतैन ताहि में स पाँच आंगुर चौड़ा वस्त्र फाड़ि क उत्तरीय पहिरथि। आ बाकी के बीस हाथ में स चारि-पाँच आँगुरक अन्तर (छोट-पैघ) क क दू टुकड़ा करथि आ मूँजक डेराडोरि पहिरि पैघ टुकड़ा के अधोवस्त्र (धोती) आ छोट टुकड़ा द्वितीय वस्त्र लेल राखथि वा ओढ़ि लेथि। कोहा में जल भरि आ ताहि में तिल आ गंगाजल मिला पूब मुँहें ठाढ़ भ मृतक के माथ दक्षिण दिशा में क क "ऊँ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गंगां

च यमुनां च सरिद्वराम। कौशिकिं चन्द्रभागाञ्च सर्वपाप प्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयुं गण्डकीं तमसां तथा। धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा" मंत्र पढ़ि तीन बेर मृतक के स्नान करावथि। तखन मृतक के चिता पर उत्तर सिरमें किन्तु मुँह पूव दिशा में क क वामा करोटे (स्त्रीगण कैं उत्तर सिरमें किन्तु उत्तान (चित्त) क क) सुतावथि। (सधवा स्त्री के पति (स्वामी) स मांग में सिन्दूर करा खोंइछा (आँचर) में सिन्दूरक गद्दी, लहठी आ आन-आन उपकरण (प्रसाधन) द क चिता पर देल जानि)। कर्ता वामा हाथ में प्रज्वलित ऊक ल क प्रथम मुखाग्नि दैत (पूव स दच्छिन, पच्छिम आ उत्तर होइत) चित्ता के चारू कात तीन बेर घूमथि आ प्रत्येक बेर **मुखाग्नि** के अलावे चारू कात स चितो में आगि देथि आ अंतिम बेरक बाद ऊक उत्तर दिशा में फेकि देथि।

२. **पँच कठिया** : कठियारी गेनिहार सब क्यौ चिता स विमुख दिशा दिस घूमि क पँक्ति में ठाढ़ होथि आ "ऊँ क्रव्यादयः नमस्तुभ्यम्" कहि क अपना पाछाँ चिता दिस फेकथि। पाँच टा काठी (वामा हाथक ठुट्ठी स नापि क तीन टा आ दहिना हाथक ठुट्ठी स नापि क दू टा) पाँचो दूनू हाथे एके बेर में फेकथि।

३. **घाट पर आवि** हाथ-पैर मटिया-धो एक डूब नहा क हाथ में तिल आ जल ल क "ऊँ अद्य (दिन में)/अस्यां रात्रौ (राति में)....... गोत्रस्य/गोत्रायाः मम ...... (जिनका-जे सम्बन्ध में होथि) .... (मृतक के नाम) प्रेतः/प्रेताः एष तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्" पढ़ि उल्टा हाथे हाथक **तिल** जल में फेकि दी। स्नान क क सब क्यौ तितले (भिजले) वस्त्र पहिरने आँगन आबी।

४. **आँगन आवि** वामा हाथक कनगुरिया आँगुर स "ॐ लौहबद् दृढ़कायोस्तु" पढ़ि क लोहा छूवी; "ओंमश्मेव स्थिरो भुयासम्" पढ़ि क पाथर छूवी; "ओमग्निर्नः शर्म यच्छतु" पढ़ि क आगि छूबी आ तत्पश्चात् जलक स्पर्श करी – प्रत्येक तीन बेर।

विशेष द्रष्टव्य :

५. **प्रेत-कर्म घाटे परक वैधानिक** (तैं महापात्र अपन नाम कहैत छथि, अपन गोत्र कहैत छथि आ अपन पैर पुजबै छथि आ दान लैत छथि) आ तैं **सार्थक**।

आँगनक प्रेत-कर्म अवैधानिक (तैं पुरोहित अपने स्वयं उपस्थित रहितो ने अपन नाम कहताह ने गोत्र, बल्के कुश पर 'नमो ब्राह्मणाय नमः' पढ़बैत छथि; कुश के दान द क हमरा की लाभ !) **तैं सर्वथा निरर्थक**।

श्राद्ध वैदिक कर्मकाण्ड नहिं थीक। कोनो वेद में श्राद्धक चर्च नहिं अछि। पौराणिक कर्मकाण्ड क क यदि करितो छी त श्राद्ध पद्धति में **केवल सय्या-दान** लिखैत अछि जे **सार्थक**। बर्तन-वासन वा अन्य कोनो उपकरण दान करवाक कोनो अर्थ नहिं **तैं पूर्णतया निरर्थक**।

आँगन में सय्या-दान आ सय्या-दानक अलावे कोनो उपकरण दान करवाक अर्थे समाज के मूर्ख बना क युगों-युगों स **शोषण** कयल जाइत रहल अछि एखन पर्यन्त। किन्तु आब लोक एहि सब दिश किछु ध्यान देलक अछि आ अध्ययन कयलक अछि आ कऽ रहल अछि तैं कैएक ठाम **आँगन में सय्या-दान** आ सय्या स पृथक आन कोनो उपकरणक दान के **परित्याग कैलक अछि**।

अपना कर्ण कायस्थो समाज में उपरोक्त परित्यागक कैएक टा उदाहरण नीक-नीक गाम में भेटैछ।

सप्तधान्य केवल आँगन में होइत अछि जखन कि विहित आ वैधानिक घाटे परक थीक।

६. **सूची सामग्रीक**- (सय्या-दान यदि घाट आ आँगन दूनू ठाम करी त वस्तु सब दू टा क अन्यथा एके टा क)

सय्या

खाट – २, कम्बल – २, सतरंजी – २, जाजिम – २, तकेया – २, तकेया खोल – २, चद्दरि (ओढ़ना क) – २, कम्बल(ओढ़ना क) (जाड़ में)

– २, मशहरी – २, सेजबन्द – ८, धोती (सय्या पर) १ जोड़+, १ जोड़ (सखारी में) (पुरुष में), साड़ी (सय्या पर) १ खण्ड+, १ खण्ड (सखारी में) (स्त्री में), धोती (पुरुष में)–घाट पर, १–१ जोड़ (तेराति आ क्षैार), साड़ी (स्त्री में)–घाट पर, १–१ खण्ड (तेराति आ क्षौर), आसनी – ४ टा।

बासन–वर्तन

भातक – २, दालिक – २, लोहिया – २, करछु – २, छोलनी – २, थारी – २, लोटा – २, बाटी – २, गिलास – २, तमघैल वा बाल्टी – २, अढ़िया – २, थारी (छोट) – २४, लोटा (छोट) – २५, थारी (फूल) (मुखक) – १, लोटा (फूल) (मुखक) – १, बाटी आ गिलास (फूल), (मुखक)–१-१ टा, पिण्ड-सलाका – १।

पुजोपकरण

चानन – २, चनरौटा – २, अर्घा – २, चननकाठी – २, सराय – २, पंचपात्र – २, धूपदानी – २; घंटी – २, पवित्री – ३+१ (पुरोहित) काञ्चन पुरुष – १।

विविध सामग्री

छाता – २+२ (डोमक), छड़ी (केवल पुरुष में) – २, खराम (केवल पुरुष में) – २, जूता/जूती (स्त्री)– २ जोड़ चाकू (केवल पुरुष में) – २, सरौता – २, लैम्प/लालटेन – २, हाँसू – २, ऐना – २, कंघी – २+२ (काठक), साबुन (स्नान) – २, साबुन (वस्त्र क) – २, तेल (सुगंधित) – २, पञ्च मेवा - २ पुड़िया, पञ्च सुगंध (हटाकरण) - २ पुड़िया, गीता पुस्तक – २, नीमक (सेन्धव) – २ पुड़िया, (लवण–लौह–कार्पस; कार–वास्तिक), चकला (स्त्री में) – २, सखारी (मञ्जुषा) – २ (डोमक), बेलना (स्त्री में) – २, सिन्दूर गद्दी (स्त्री में) –२+१९ (सधवा स्त्री में), ऐंठा (रीबन) (स्त्री में)–२+१९ (सधवा स्त्री में), चूड़ी (स्त्री में) – २ जोड़+१ जोड़, ताबा (स्त्री में) – २, चुल्हा – २, डेराडोरि – ५ (उजर –३, पीयर–२)।

वस्त्रादि अलावे

धोती – ४ जोड़, (महापात्र, कर्ता, पाचक आ पुरोहित), धोती – २ जोड़, (पीयर रंगक कर्ता आ पाचकक द्वादशा दिन चुमाओनक हेतु), धोती (मुखक) (पुरुष)–१ जोड, साड़ी (मुखक) (स्त्री)– १ खण्ड

साड़ी – १ खण्ड (कर्ता पत्नी/पिण्ड कुटनिहारिक)

जाँघिया –२, गंजी –२, कुर्ता – २,. चद्दरि –२ आ पाग – २

(ई पाँचो वस्तु कर्ता आ पाचकक)।

कपड़ा (मारकिन) थान – ३९ मीटर में स:

	क्षौर	एकादशा	द्वादशा
पंच देवता	सवा हाथ	सवा हाथ	सवा हाथ
विष्णु पूजा	सवा हाथ	सवा हाथ	सवा हाथ
काञ्चन पुरुष		सवा हाथ ।	

गीता आवरण – सवा बीत चौडा पूरा चौड़ाई में स काटि क दू टुकड़ा ।

गो पृष्ठ – अढ़ाइ-अढ़ाइ हाथक दू टुकड़ा ।

अन्न (सप्त धान्यक) : तिल अढ़ाइ किलो

गहूम	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
उड़ीद	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
केराव	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
जौ	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
साम	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
मूँग	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)
बूट	सवा किलो + सवा किलो (घाट आ आँगन)

गुड़ – सवा किलो (सखारी में तिलबा-माठक हेतु)

नारियल (सौंस आ जल पूरित) – ३ टा (घाट–२ आ आँगन–१)

फल (कर्म पर-एकादशा : घाट आ आँगन आ द्वादशा दिन घाट पर)

मधूर (कर्म पर-एकादशा :घाट आ आँगन आ द्वादशा दिन घाट पर)।

घर परक व्यवस्था में (विविध सामग्री)

कुश तिल जौ गंगाजल गंगौट अक्षत दीप बाती कडूतेल तूर (रूइ) टकुरीक सूत कम्बलक सूत अगरबत्ती शरर (धूप) दिया सलाइ मधु उड़ीद सरिसव मखान सुपारी (भाँगल) पान (लगाओल) केराक कन्द गाइक गोंत, गोबर, दूध, दही आ घृत फूल (उज्जर; अभाव में पीयर) पीपरक पात (तेराति दिन ३५ आ क्षौर दिन ५५) कटहरक पात (एकादशा दिन ५५ आ द्वादशा दिन १००) तिलबा आ माठ (सखारी में एकादशा दिन) अँकुरी (केराव फुलाओल) पिण्ड (कूटल)-(तेराति ४ पिण्ड, क्षौर ७ पिण्ड, एकादशा १ पिण्ड आ द्वादशा २५ पिण्ड) पाकल केरा (तेराति ५, क्षौर ७, एकादशा ११ आ द्वादशा २५) काँच केरा (तेराति ५, क्षौर ७, एकादशा ११ आ द्वादशा २५) बड़-बड़ीक घाइठ (बेसन) मसाला सब (पुड़िया में) चूड़ा, दही आ चीनी (तीनू उत्सर्गक हेतु) अँागन आ घाट (एकादशा) आ घाट (द्वादशा) अरवा चाउर, दालि आ तरकारी तेल मसाला सहित (ई सब वस्तु उत्सर्गक हेतु) आँगन आ घाट (एकादशा) आ घाट (द्वादशा), अरवा चाउर दालि आ तरकारी तेल मसाला सहित (पात्र आ पुरोहित के उपाइत (सीधा) – (एकादशा दिन) आ पात्र के (द्वादशो दिन) ।

७. **तेराति** (घाट पर) :

(क) माटिक कसोला (छोटकी मटकुरी) झँपना सहित (अस्थि सञ्चयक हेतु); पीयर वा उज्जर टुकड़ा (अस्ति बान्हक हेतु)
दूध (गाइक) चिता विसर्जनक हेतु तुलसीक गाछ (वैष्णव के विशेष क) विसर्जित चिता पर रोपक हेतु
कर्ताक हाथ में लोटा (अछिञ्जलक हेतु)
कर्ताक बामा हाथ में गोइठा पर आगि ।

(ख) बालु कुश तिल जौ घी (गाइक) गंगाजल गंगौट अक्षत दीप बाती कडू तेल मधु उड़ीद सरिसव अगरबत्ती शरर (धूप) दिया सलाइ पान (लगाओल) सुपारी (भाँगल) गाइक गोंत,

गोबर, दूध, दही आ घी पाकल केरा काँच केरा पिण्ड (कूटल) फूल (उज्जर, अभाव में पीयर) पीपरक पात ३५ टा ओल बड़-बड़ीक घाइठ (बेसन) तूर (रूइ) टकुरी (दस्सी)क सूत कम्बलक सूत केराक कन्द धोती (पुरुष में) १ जोड़ साड़ी (स्त्री में) १ खण्ड थारी (छोट) १ टा लोटा (छोट) १ टा चूड़ा, दही आ चीनी (उत्सर्गक हेतु) चाउर, दालि, तरकारी, तेल, मसाला (उत्सर्गक हेतु) चूड़ा, दही आ चीनी (पात्रक भोजन हेतु) चाउर, दालि, तरकारी, तेल आ मसाला पात्र के उपाइत (सीधाक हेतु) पात्र कैं भोजन दक्षिणा पात्र कैं कर्म दक्षिणा आ पात्र कैं आवय-जाय के भाड़ा।

८. **क्षौर (नह-केश)** : (घाट पर)

तेराति दिनक (ख) सूचीक सब सामग्रीक अलावे :- पंच देवताक पूजाक हेतु वस्त्र–सवा हाथक टुकड़ा, विष्णु पूजाक हेतु वस्त्र – सवा हाथक टुकड़ा आ पात्र कें भोजन, पात्र कें भोजन दक्षिणा, पात्र कें कर्म दक्षिणा आ पात्र कैं आवय-जाय के भाड़ा।

९. **एकादशा : (घाट पर)** (क्षौर दिनक सामग्री सब के अलावे) आ अन्तर :

सय्या क सामान सब (मात्र एक भाग–घाट परक हेतु)

वासन–वर्तन सब (मात्र एक भाग–घाट परक हेतु)

आसनी – ३ (कर्ता, पाचक आ महापात्र)

धोती - ३ जोड़ (कर्ता, पाचक आ महापात्र)।

विविध सामग्री : डेराडोरि – ३ (कर्ता, पाचक आ महापात्र), पुजोकपरण सब (मात्र एक भाग – घाट परक हेतु) काञ्चन पुरुष संगहि पूजाक हेतु सवा हाथक टुकड़ा वस्त्र, एक थारी (छोट) आ एक लोटा (छोट), मुखक : थारी (फूल), बाटी (फूल), लोटा (फूल) आ गिलास (फूल)

फल सखारी में (तिलबा-माठ) मधूर

नारियल (जल–पूरित) – २।

वस्त्र–धोती (पुरुष में) (मुखक थारी पर) – १ जोड़

” साड़ी (स्त्री में) (मुखक थारी पर)– १ खण्ड।

अन्यान्य विविध सामग्री सब (मात्र एक भाग–घाट परक हेतु)।

सप्त धान्य – (मात्र एक भाग–घाट परक हेतु)।

तिल (पृथक उत्सर्गक हेतु) – (मात्र एक भाग–घाट परक हेतु)

कटहर क पात – ५५ टा।

बाछी/गाय/वा मूल्य (जँ बाछी/गाय त गोपृष्ठ क वस्त्र–अढ़ाइ हाथ क टुकड़ा)।

पिण्ड कूटल – ५०० ग्राम	पाकल केरा – ११
पान (लगाओल) – ११ टा (कर्म)	काँच केरा – ११
सुपारी (गोटा) – ११ टा (कर्म)	अरवा चाउर– अढ़ाइ किलो
पान लगाओल आ सुपारी (खण्ड) (आगन्तुक लोकनिक हेतु)	बाँडक तूर (रूइ) टकुरीक सूत कम्बल क सूत।

<u>द्रव्य (आवश्यक)</u>

सय्या पर – ११	संकल्प – १५	गायक मूल्य –
तर्पण – ११	पात्रक पैर पुजाइ – ११	गोदानक दक्षिणा (पृथक)
सखारी में – ५	वर्ष भोज्य – १५	छठम दान
छागरक मूल्य – १५	भूयषी (न्युनाधिक) – ११।	

<u>वि.द्र.</u> : एगारह ब्राह्मण स उत्तीर्ण (महापात्र स, **नहिं कि आन ब्राह्मण स) तैं एकादशा दिन घाट पर छ महापात्र आ द्वादशा दिन घाट पर सात महापात्र कैं भोजन करावी** जकर निमंत्रण हुनका एक दिन पहिनहिं दऽ देल करियैन्ह। एक बात बहुत प्रमुखता स ध्यान राखक

थीक जे **श्राद्ध में महापात्र के छोड़ि पुरोहितक कोनो टा भूमिका (Roll) नहिं होइछ**। एगारह के बदला दूनू दिन मिला क तेरह महापात्रक भोजन 'सम्पुट' (Mounted) ब्राह्मण-भोजन भेल से बूझू।

महापात्र लोकनिक भोजन; भोजन दक्षिणा, कर्म-दक्षिणा आ आवय-जायक भाड़ा।

१०. **एकादशा** : (आँगन में)

घाटे पर स मिलैत-जुलैत जतबा वस्तुक (किछु वस्तु सब के छोड़ि) एक भाग जे घाट पर दान भेल अछि तकरे दोसर भाग आ नारियल जलयुक्त (मात्र एक)क संग दान करवाक थीक। श्री पुरोहित जी भोजन नहिं करताह तैं भोजन-दक्षिणा नहिं होय। मात्र गोदानक दक्षिणा पृथक आ कर्म-दक्षिणा देल जाय।

११. **द्वादशा श्राद्ध कर्म** : (घाट पर)

ऊपर लिखित पंचदेवता आ विष्णु पूजा-सामग्री सहित कर्मक सब सामग्री घाट पर आवै यथा सब थारी (छोट), सब लोटा (छोट), कपड़ाक थान पिण्ड-सलाका आ श्राद्ध स सम्बन्धित अन्यान्य सब सामग्री जे महापात्र कहथि।

द्रव्य : (आवश्यक)

पूजा (पञ्चदेवता आ विष्णु) संकल्प – २	उत्तरीय तोड़ाइ – २५ वा ५१
कर्म संकल्प (१९) – १९	गायक मूल्य –
कर्म दक्षिणा (१९) – २५	गोदानक दक्षिणा (पृथक) –
४४	महापात्र लोकनिक भोजन, भोजन
छाजन – – १५	दक्षिणा, कर्म दक्षिणा – १५१ आ
पिण्डच्छेदन – –११	आवय-जायक भाड़ा।

(१२) **द्वादशा :** (आँगन में)

वारिपूर्ण कलशाधिष्ठित

शांति कलश गणेशक पूजाक संकल्प – १/२५

चुमाओन (घर स) (कर्ता – ११ आ पाचक – ११) – २२

पूजाक दक्षिणा (पुरोहित के) – ११

पुरोहितक भोजन आ भोजन-दक्षिणा देल जाय। जँ दूर स आयल होथि त आबय-जायक भड़ो देल जाय।

१३. **कुम्हार क बासन** :

दीप	कोहा (मशालाक)
कोसिया	तौला (दहीक)
कोहा (अरगासनक)	घैल।

१४. **डोम क बासन** :

छाता (बाँसक)– २	चँगेरा
सखारी (मञ्जुषा) – २	छिट्टा।

१५. **कर्ता** – मत्स-मांस (माछ-मांस); दही-चीनी। कर्ताक संग ई भोजन हो।

□

एक प्रार्थना

किम्बदन्ति अछि जे मात्र तीन कोस पर भाषा आ सामाजिक विधि-व्यवहार में अन्तर पड़ि जाइछ। दोसर अनभिज्ञता क कारणें ई सूची पूर्ण नहिं भेल अछि। पूज्य महापात्र लोकनि कैं धन्यवाद जनिका लोकनि स सूनि क आ पूछि क हम एहि सूचिक निर्माण कैलहुँ अछि। हमर प्रार्थना जे अपन भिज्ञता आ अनुभव-दक्षताक आधार पर एकरा परिपूर्ण कै लेल जाय आ हमरा द्वारा एकरा निर्माण में भेल अनेकानेक त्रुटिक हेतु अनपढ़ आ अनभिज्ञ जानि क्षमा कयल जाय। भोज-भात सम्बन्धी कृपया भनसिया (कारीगर) स पूछि क वस्तु सबहक मात्रा निर्धारित कयल जाय, ई हमर दोसर प्रार्थना।

खेराजपुर (दरभंगा)
५ मइ सन् १९८७ ई०　　　　　　　　　　कमलधर दास।

– समाप्त –